Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधुर

एकदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167981
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त (1894-1989) शिक्षा : एम. एस-सी.

8 दिसम्बर, 1894 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में जन्मे श्री गुरुदत्त हिन्दी साहित्य के एक दैदीप्यमान नक्षत्र थे। प्रथम उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं। विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये। वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है। साहित्य के माध्यम से वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का उनका प्रयास निस्सन्देह सराहनीय रहा है।

वह उपन्यास-जगत के बेताज बादशाह थे। अपनी अनूठी साधना के बल पर उन्होंने लगभग दो सौ से अधिक उपन्यासों की रचना की और भारतीय संस्कृति का सरल एवं बोधगम्य भाषा में विवेचन किया। उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नही जा सकता।

श्री गुरुदत्त के साहित्य को पढ़कर भारत की कोटि-कोटि जनता ने सम्मान का जीवन जीना सीखा है। उनके सभी उपन्यासों के कथानक अत्यन्त रोचक, भाषा अत्यन्त सरल और उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु जन-शिक्षा भी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के साहित्य-संस्कृति संगठन 'यूनेस्को' के अनुसार श्री गुरुदत्त हिन्दी भाषा के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखक रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यबोध
उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशन

प्रकाशकः
सत्यबोध
(इंप्रिन्ट ऑफ नीलम जासूस कार्यालय)
40, ज्योति अपार्टमेण्ट्स, सेक्टर -14 विस्तार,
रोहिणी, दिल्ली-110085
Ph.: 9311377466 | 8595667924
E-mail: neelamjasoos@gmail.com

R
• 89·9143
GUR - V

© ईशान दत्त
इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की अनुमति के बिना पुनः मुद्रित करना, प्रति निकलवाना, रिकॉर्ड करना अथवा किसी भी अन्य माध्यम से पुनः उपयोग करना निषिद्ध है।

प्रथम संस्करणः 2021
ISBN: 978-93-91411-60-2

आवरणः गगन शर्मा
मूल्यः 250 रुपये

मुद्रकः
सुबोध भारतीय ग्राफ़िक्स, दिल्ली
Ph.: 9310032466

हमारी सभी पुस्तकें निम्न वेबसाइट्स पर उपलब्ध हैं:
www.neelamjasoos.com
www.amazon.in
www.flipkart.in

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

विधुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

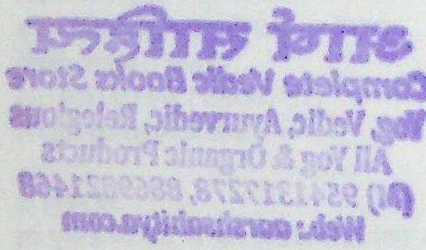

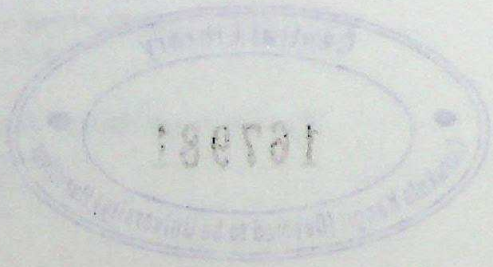

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

:1:

'जीजा जी! हम जुड़वां बहनें थीं।'

'हाँ! यह तुम्हारी बहन ने विवाह के उपरान्त पहली रात ही बताया था।'

पच्चीस-छब्बीस वर्ष का एक युवक, जो अभी-अभी श्मशान भूमि से अपनी पत्नी का दाह-संस्कार कर लौटा था और अपने सगे-सम्बन्धियों को, जो उसके साथ मरघट तक गये थे और उसे घर तक छोड़ने आये थे, विदा कर घर की बैठक में बैठा एक युवती से बातें कर रहा था।

युवती थी रोहिणी, युवक की पत्नी मोहिनी की जुड़वाँ बहन।

रोहिणी का विवाह मोहिनी के विवाह से कुछ मास ही पूर्व हुआ था और दुर्भाग्य से उसके पति रवि बजाज का देहान्त विवाह के कुछ ही मास उपरान्त एक दुर्घटना में हो गया था। घर में उसके देवर का जन्मदिन मनाया जा रहा था। मेहमानों के बैठने के लिए शामियाने लग रहे थे कि मकान की मुण्डेर पर रखी एक ईंट शामियाने की रस्सी से खिसकी और प्रांगण में खड़े रोहिणी के पति रवि के सिर पर पड़ी। इससे उसका देहान्त हो गया और रोहिणी कुछ मास ही विवाहित जीवन भोग कर विधवा हो गयी।

रोहिणी की जुड़वाँ बहन मोहिनी का विवाह रोहिणी के विधवा हो जाने के उपरान्त ही हुआ था।

रोहिणी के माता-पिता ने यत्न किया था कि विधवा लड़की का पुनः विवाह कर दें, परन्तु नहीं हो सका। रोहिणी ने अपने पुनर्विवाह का डटकर विरोध किया था।

यह सन 1925-26 के दिन थे। हिन्दू समाज में विधवा का जीवन एक अति मुसीबत समझा जाता था। रोहिणी के पिता गिरिधारी लाल आर्यसमाज के सम्पर्क में थे और विधवा विवाह में आपत्ति नहीं समझते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह रोहिणी के पति रवि के देहान्त के चार-पाँच महीने पीछे की बात है। रोहिणी की माँ कंचन एक दिन रोहिणी की ससुराल उसे लेने जा पहुंची। वैसे रोहिणी को अपनी ससुराल में किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। उसने अपना जीवन ऐसा बना रखा था, जैसे बुझा दीपक धुआँ छोड़ रहा हो। वह ऐसे दीपक की भाँति धुआँ करती हुई मौन घर में विचरती थी।

ससुराल वाले भी उसकी इस अवस्था में उससे सहानुभूति रखते हुए उसे कुछ कहते नहीं थे। सब चुपचाप उसकी आवश्यकताएँ पूर्ण करते रहते थे।

जिस दिन रोहिणी की माता कंचन रोहिणी को लेने आयी, रोहिणी की सास ने पूछ लिया, 'बहिनजी! कुछ काम है जो लड़की को ले जा रही हैं?'

कंचन ने बताया, 'रोहिणी के पिता इसके लिए कोई नया वर ढूंढ रहे हैं।'

'मैंने', रोहिणी की सास दयावन्ती ने कहा, 'इस विषय में बहू से बात की थी। रवि का छोटा भाई महेन्द्र है। वह मान गया है, परन्तु बहू नहीं मानती। यह कहती है, महेन्द्र को वह सगा भाई ही समझती आ रही है। इस पर हम चुप कर गये।'

कंचन ने बताया, 'रोहिणी के पिता एक प्रस्ताव लेकर आये हैं। लड़का एम. ए. पास कर अभी-अभी उनके कार्यालय में नौकर हुआ है और शीघ्र ही अफसर बनने वाला है।

'लड़का घर पर आया है और रोहिणी के पिता ने भेजा है कि इसे लाकर लड़के को दिखा दूँ।'

'तो लड़की से पूछ लिया है?' रवि की माँ ने पूछ लिया।

कंचन ने बताया, 'अभी तो नहीं पूछा। यह घर ले जाकर उसे बताऊँगी।'

रोहिणी की सास चुप कर रही।

रोहिणी ने ससुराल से आते हुए मार्ग में माँ से पूछा, 'माँ! कुछ विशेष काम है?'

'तुम्हारे पिताजी ने बुलाया है।' माँ ने कहा।

'किसलिये?'

'उन्होंने मुझे बताया नहीं। बस यही कहा है कि रोहिणी को ले आओ। कुछ काम है।'

रोहिणी के मन में आशंका तो हुई थी कि कहीं इस एकाएक बुलावे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण उसके पुनर्विवाह का प्रस्ताव न हो; परन्तु जब माँ ने कुछ नहीं बताया तो वह भी चुप रही।

घर पहुँच रोहिणी ने बैठक में पिता के पास एक युवक को बैठे चाय लेते देखा।

रोहिणी नहीं जानती थी कि यह कौन है। इस कारण वह प्रश्नभरी दृष्टि में माँ का मुँह देखने लगी। पिता ने उसकी दृष्टि का अर्थ समझ कहा, 'आओ रोहिणी! बैठो। यह मेरे एक मित्र के सुपुत्र हैं। यह यहाँ आये थे तो मन में विचार आया कि तुम्हारा इनसे परिचय करा दूँ।'

रोहिणी समीप ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठी तो माँ भी एक अन्य कुर्सी पर बैठ गयी और रोहिणी के लिए भी प्याले में चाय बनाने लगी।

रोहिणी को मार्ग में आते हुए जिस बात का संशय हुआ था, वह पुष्ट होता दिखाई दिया। परन्तु बुझे दीपक को पुनः प्रज्ज्वलित करने के लिए दियासलाई का प्रयोग नहीं हो सका।

कुन्दनलाल एक ही दृष्टि में भाँप गया कि यह लड़की समझ रही है कि किस मतलब के लिए यह बुलाई गयी है। इस पर, उसने योजनानुसार अपना परिचय देना आरम्भ करते हुए कहा, 'लालाजी! मैं ट्यूशन करता हुआ अपनी शिक्षा चलाता था। विद्यार्थी जीवन में हाथ से मुख की ही चिन्ता रही। कभी भी जेब में दस पैसे फालतू नहीं आये। जो कुछ किंचित मात्र आय होती थी, उससे अधिक खर्चा पहले ही तैयार हो जाता था।'

इतना बता कुन्दनलाल ने सामने रखे प्याले को उठा उसमें से दो-तीन चुस्कियाँ लीं और ध्यान से रोहिणी की रूप-राशि को देख पुनः कहा, 'उन दिनों की कठिनाई का अधिक वर्णन कर मैं आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता। मेरा मतलब यह है कि जीवन की कठिनाइयों के होने पर भी मैं एम.एस.सी. की परीक्षा में प्रथम रहा हूँ और प्रथम स्थान पर ही अर्जी करने पर हायर ग्रेड में नौकरी पा गया हूँ।

'मैं कल ही एकाउण्टेंट जनरल के निमन्त्रण पर उनके घर पर चाय लेने गया था और मिस्टर रोलिन्सन ने मुझे आश्वासन दिया है कि मैं अगले मास गैजेटिड आफिसर बना दिया जाऊँगा।'

'रोलिन्सन मेरे स्वर्गीय पिताजी से भलीभाँति परिचित थे और उन्होंने कहा था कि पिताजी का कार्यालय में रिकार्ड बहुत अच्छा था। केवल मैट्रिक होते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी वह दफ्तर में हरदिल-अजीज थे।'

अब पुनः कुन्दनलाल ने प्याले में से चुस्कियाँ लेते हुए रोहिणी की ओर मुग्ध दृष्टि से देखा।

रोहिणी अब तक इस नाटक का उद्देश्य भलीभाँति समझ गयी थी। वह अपने व्यवहार का निश्चय कर रही थी और उन शब्दों का चयन कर रही थी, जिनसे प्रस्ताव किये जाने पर वह उत्तर देना चाहती थी।

बात कुन्दनलाल ने ही जारी रखी। उसने कहा, 'लालाजी! आप तो जानते हैं कि इस समय मुझे अढ़ाई सौ रुपये मिलते हैं और गैजेटिड आफिसर बनने पर एकदम पाँच सौ रुपये हो जायेंगे।

'माँ की उत्कट इच्छा है कि अब मुझे विवाह कर लेना चाहिये। इसके लिये ही आपकी सेवा में भेजा गया हूँ। मैं अब बाईस वर्ष का हो चुका हूँ और माँ ने आपको पिताजी का परम मित्र समझ मुझे आपकी शरण में भेजा है।'

इतना कह कुन्दनलाल पुनः चाय लेने लगा।

अब रोहिणी के पिता ने इस नाटक में अपने अभिनय का भाग अदा करने के लिए मुँह खोला। उसने कहा, 'रोहिणी और मोहिनी मेरी दो लड़कियाँ हैं मोहिनी तो इस समय ससुराल में है और यह बेचारी रोहिणी विधवा है।'

बात बीच में ही काटकर रोहिणी ने कहा, 'पिताजी! मैं अपना परिचय स्वयं दिये देती हूँ। आपको यह कथा सुनाने में कष्ट होगा। आप चाय लीजिये, मैं इनको सब बात बता देती हूँ।'

उसने बिना पिता के कुछ कहने की प्रतीक्षा किये कहना आरम्भ कर दिया 'भाई साहब! देखिये, पिताजी के घर में दो ही लड़कियाँ थीं और उन्होंने दोनों का ही विवाह कर दिया है। दोनों अपनी ससुराल में सुखी हैं।

'हाँ, मेरे मामा की एक लड़की सुमित्रा अविवाहित है, परन्तु वह अभी ग्यारह वर्ष की है। यदि पिता जी मामा जी से सिफारिश करें तो बात तय हो सकती है, परन्तु मामा जी आर्यसमाजी हैं और वह लड़की का विवाह अभी चार वर्ष उपरान्त करेंगे। इस पर भी यदि यत्न किया जाये तो सगाई हो सकती है।

'सुमित्रा की माँ ने दहेज देने के लिए भी बहुत कुछ एकत्रित कर रखा है।'

गिरिधारी लाल रोहिणी के बातों का सूत्र अपने हाथ में लेने पर विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। उसने बीच में ही बात रोकने का यत्न किया, परन्तु रोहिणी ने पिता को हाथ के संकेत से रोककर अपना कथन जारी रखा। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे कहा।

'मामा जी की लड़की सुमित्रा इस समय छठी श्रेणी में पढ़ती है और सदा अपनी श्रेणी में ऊँचे नम्बर लेकर पर पास हुआ करती है।

'क्यों माँ?' रोहिणी ने समीप बैठी माँ को सम्बोधित करते हुए कहा, 'कैसा रहेगा इन से सुमित्रा का सम्बन्ध? मैं समझती हूँ कि पिताजी अपने मित्र और कार्यालय के साथी के पुत्र की सिफारिश कर देंगे।

'यदि यह भाई साहब मुझे कहें तो मैं इनके विषय में सुमित्रा के कान में मधुर शब्द कहने का वचन देती हूँ।'

अब रोहिणी की माँ कंचन बोली, 'परन्तु रोहिणी! कुन्दनलाल जी तो तुमसे विवाह की इच्छा करने लगे हैं।'

'परन्तु माँ! भूल गयी हो? अभी छः मास हुए तुमने मेरा विवाह तो कर दिया था। पिताजी के समधी पाँच सौ के लगभग बराती लेकर आये थे। बहुत रात गये तक खाना-पीना चलता रहा था।

'मामा जी के तो घर पर स्थान बहुत ही बड़ा है और वह चाहें तो पाँच सौ से ऊपर बरातियों को एक ही पंगत में बैठाकर भोजन करा सकते हैं।'

अब गिरिधारी लाल ने बातों के सूत्र को पुनः अपने हाथ में लेते हुए कहा, 'परन्तु रोहिणी बेटी! तुम भी तो विवाह सुख से वंचित अकेली हो और तुम्हारे जीवन में वह अभाव यह कुन्दनलाल पूर्ण करने के विचार से अर्जी कर रहा है।'

'परन्तु पिताजी!' रोहिणी ने कहा, 'आपको मेरे जीवन में कहीं कुछ अभाव दिखाई दे रहा है? मैं समझती हूँ कि आपकी दृष्टि में दोष उत्पन्न हो रहा है। आपको अपना चश्मा बदलवाने की आवश्यकता हो गयी है।

'मेरा विवाह तो हो चुका है और मेरे जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं है। इन भाई साहब को मामा जी के घर ले जाइये। वहाँ बात हो जायेगी।'

इतना कह रोहिणी अपने कहने के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उठी और कमरे से निकल गयी।

बैठक में बैठे तीनों व्यक्ति उसे जाते देखते रहे। रोहिणी के बैठक घर से चले जाने के उपरान्त बात कुन्दनलाल ने ही कही, 'तो लाला जी! अब मुझे चलना चाहिए।'

उत्तर कंचन ने दिया, 'हाँ! मेरी राय है कि तुम अपनी माता जी को भेज दो। वह इसे मिलेंगी तो तुमसे अधिक उचित ढंग से बात कर सकेंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्दनलाल के चले जाने के उपरान्त गिरिधारीलाल ने अपनी पत्नी कं कहा, 'तुमने अपनी लड़कियों को कुछ नहीं सिखाया।'

कंचन ने परेशानी में पति के मुँह पर देखते हुए कहा, 'पढ़ाया सिखाया तं बहुत कुछ था, परन्तु जिस अवस्था के लिए पढ़ाया था, वह ही बदल गयी है।'

'मन को, बदलती परिस्थिति में अनुकूल करने की विधि नहीं सिखाई?'

'वह भी सिखाई है।' कंचन का उत्तर था, 'वह यह कि कठिनाई पड़ने प धैर्य और साहस से कठिनाई का सामना करना चाहिये और मैं समझती हूँ कि यहं रोहिणी कर रही है।

'लड़की ने तो पढ़ा-लिखा ठीक ही है। यह तो जमाने ने अपने तौर-तरीके बदल लिये हैं। आज से दस-बीस वर्ष पहले आप भी इस व्यवहार की प्रशंस किया करते थे। मुझे स्मरण है, आपने ही कहा था कि हिन्दुओं में एक स्त्री क विधवा रहकर पति की स्मृति में जीवन धर्म-कर्म में लगा देना एक महान यज्ञ है इससे जातीय जीवन बहुत ऊँचा उठ रहा है।

'बस, यही वह कर रही है। बदल तो आप गये हैं।'

गिरिधारीलाल पत्नी की डाँट सुन चुप कर गया। पत्नी ने पुनः कहा, 'भल आपको रोहिणी की चिन्ता क्यों लग रही है? आपने उसे अपने घर से विदा क दिया है। जिनके घर में है, उन्होंने, जहाँ तक मुझे ज्ञात है, इसे घर से नहीं निकाला

'मुझे इसकी सास ने बताया है कि उसने इसको अपने देवर से विवाह क लेने के लिए कहा था, परन्तु यह नहीं मानी और इसके न मानने पर भी उस घर में इसकी प्रतिष्ठा कम नहीं हुई।'

'परन्तु', अब गिरिधारीलाल ने अपनी पत्नी से कहा, 'व्यावहारिक बा यही है कि कामनाओं की पूर्ति के लिए वैध उपाय होने चाहिये।'

कंचन ने मुस्कराते हुए पूछा, 'किसकी कामनाएँ?'

'लड़कियों की?'

लड़कियों के मन की बात भला आप क्या जानते हैं? कभी आपने लड़क बनकर देखा है?'

गिरिधारीलाल हँस पड़ा और बोला, 'यह सौभाग्य परमात्मा ने नहीं दिया। मैं तो पुरुष की कामनाओं का ही चिन्तन कर सकता हूँ।'

'तो फिर आप अपना काम करिये। इसी कारण मैंने आपके मित्र के पुत्र कं कह दिया है कि अपनी माँ को भेज दे। वह उसकी बात को आप से और इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक से अधिक अच्छी तरह समझा सकेगी। कामनाएँ जो एक स्त्री के मन में होती हैं, उनका अनुमान पुरुष कैसे लगा सकते हैं?'

'परन्तु तुमने भी तो उसे समझाने का यत्न नहीं किया?'

'यह इस कारण कि मैं एक स्त्री का विवाह, उसका गौण कर्म समझती हूँ?'

'और मुख्य क्या समझती हो?'

'यह आपको नहीं बताऊँगी। आपमें उसके समझने की बुद्धि प्रतीत नहीं होती। वह मुख्य कार्य मैं कर रही हूँ। आप उसको नित्य देखते भी हैं, परन्तु पुरुष-बुद्धि रखने के कारण अनुभव नहीं करते।'

गिरिधारीलाल को पत्नी की डाँट सुनने का स्वभाव था। इस कारण सदा की भाँति वह उठा और भ्रमण करने बाहर निकल गया।

:2:

रोहिणी की माँ उठी और घर के भीतर रोहिणी के कमरे में जा पहुंची। उसका विचार था कि रोहिणी वहीं होगी। माँ के घर में उसने अपना कमरा बन्द कर रखा था। वहाँ उसके सोने के लिए। पलंग तथा बिस्तर के अतिरिक्त मेज-कुर्सी थी और एक छोटी-सी अलमारी में चालीस-पचास पुस्तकें थीं।

जब माँ रोहिणी के कमरे पहुँची तो रोहिणी अपनी पुस्तकों को एक चादर में बाँध रही थी। माँ उसे पुस्तकें बाँधते हुए देखती हुई विचार करने लगी कि यह क्या कर रही है। माँ की ओर ध्यान किये बिना रोहिणी अपने कार्य में लीन रही। अपनी पुस्तकें उसने चादर पर रख लीं। अपना फाउन्टेन पैन, स्याही की बोतल और कुछ खाली कागज़ चादर पर रख सबकी गठरी बाँधने लगी तो माँ से नहीं रहा गया। उसने पूछा, 'रोहिणी! इनको कहाँ लिये जा रही हो?'

'जहाँ जा रही हूँ।'

'वहाँ तो पहले भी जाया करती थीं! इनको साथ क्यों ले जा रही हो?'

'माँ! अब दुबारा यहाँ नहीं आऊँगी।'

'क्यों?'

'पिताजी को मेरा यहाँ इस रूप में रहना रुचिकर नहीं प्रतीत हो रहा।'

'यह तुम्हारा अनुमान है न?'

'हाँ, और अनुमान प्रत्यक्ष प्रमाण पर आधारित है। और माँ! तुमने सब कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानते हुए बिना बताये बलि चढ़ाने के लिए मुझे उपस्थित कर दिया था!'

'परन्तु रोहिणी! तुम्हें यह भी तो विचार करना चाहिए कि मैं उनकी पत्नी
और उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकती।'

'और माँ! अब जो मुझे रोक रही हो, यह भी उनकी आज्ञा से ही है?'

'नहीं। परन्तु मैं जानती हूँ कि तुम्हारा जाना वह पसंद नहीं करेंगे।'

'तो मेरे घर से सम्बन्ध तोड़ने पर नाराज होंगे?'

'मैं ऐसा ही समझती हूँ।'

'परन्तु क्यों? मैंने यह कमरा इस कारण अपने अधिकार में रखा हुआ थ
कि कदाचित मुझ विधवा के लिए ससुराल में स्थान का अभाव हो जाये तो मैं यह
आकर रह सकूँ। अब पिताजी ने मेरा दूसरा ठिकाना विचार करना आरम्भ क
दिया है। इससे उनके मनोभावों को समझ ही मैं यह स्थान खाली कर रही हूँ।'

'मैं समझती हूँ कि तुम्हारा यह विचार गलत है। ऐसी बात उनके मन में नह
है। इस पर भी वह तुम्हारे सुख की बात ही विचार कर रहे प्रतीत होते हैं।'

बातें करती हुई रोहिणी गठरी बाँध रही थी। अब उसने गठरी को अन्ति
गाँठ दी और घर के सेवक रोहनूं को आवाज दे दी। रोहनूं आया तो उससे क
दिया, 'रोहनूं! जाओ, एक ताँगा ले आओ।'

रोहनूं जिला कांगड़ा का रहने वाला था। वह कई वर्ष से इस घर में सेवा
कार्य कर रहा था। वह विचार नहीं कर सकता था कि लड़की माँ-बाप से रूठक
जा रही है। इस कारण वह रोहिणी का आदेश सुन घर से बाहर ताँगा लेने चल
गया।

पूर्व इसके कि माँ कुछ कहे, रोहिणी ने ही कहा, 'माँ, देखो! यदि कभ
पिताजी ने नाराज़ हो मुझे कह दिया कि मैं उनका कहना नहीं मानती तो जाउ
जहन्नुम में, तो फिर तुम क्या करोगी?

'एक अति साध्वी पत्नी होने के नाते उनकी बात से इन्कार कैसे कर सकोगी
मुझे जहन्नुम में जाने से रोक नहीं सकोगी। और मुझे उनकी आज की बात से या
समझ आया है कि मुझे इस घर से स्वेच्छा से पृथक हो जाना चाहिये।

'इस पर भी मेरा अभिप्राय यह नहीं कि तुम अथवा पिताजी कभी मिलन
चाहोगे तो मिलने से इन्कार करूँगी अथवा तुम यहाँ बुलाओगी तो आऊँगी नहीं
घर से सम्बन्ध तोड़ने का अर्थ केवल यही है कि मुझे अब यहां से किसी प्रका
की आशा नहीं करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वास्तव में यह विचार तो उस समय ही उत्पन्न होना चाहिये था, जब मुझे डोली में बैठा तुमने यहाँ से विदा किया था। यहां अपने लिये कमरा बन्द करने की न तो मुझे आवश्यकता थी और न ही मेरा अधिकार था।'

माँ समझ नहीं सकी कि उसे क्यों रोके? वास्तव में वह पहले भी विचार किया करती थी कि वह एक मिथ्या धारणा के कारण वहाँ कमरा बन्द किये हुए है।

ये वे दिन थे, जब अभी हिन्दू कोड बिल पारित नहीं हुआ था और माता-पिता यह समझते थे कि उन्होंने लड़की को दहेज देकर उसके हक-हकूक का प्रतिकार चुकता कर दिया है।

शताब्दियों से हिन्दू रीति-रिवाज ये थे कि विवाह के उपरान्त लड़की का पिता के घर से कुछ लेने-देने का अधिकार नहीं है। वैसे विशेष अवसरों पर, माता-पिता तथा भाई जीवन-भर स्वेच्छा से देते रहते हैं। वह किसी अधिकार के कारण नहीं, वरन लड़की से स्नेह के कारण होता था। रोहिणी ने भी इसी भाव को प्रकट करने का यत्न किया था।

रोहिणी के माता-पिता का घर लाहौर में लाहौरी दरवाजे के कुछ भीतर जाकर एक गली में था। रोहनूं ने लाहौरी दरवाजे के बाहर जा ताँगा पकड़ कर लाने में पाँच मिनट ही लगाये।

जब उसने आकर बताया कि वह ताँगा ले आया है तो रोहिणी ने किताबों की गठरी उठवाई और माँ से कहा, 'माँ! मैं फिर मिलूँगी।' इतना कह वह घर से चल दी।

रोहिणी की सास अनारकली बाजार में अस्पताल रोड पर रहती थी। इस कारण ससुराल पहुंचने में लगभग तीन-चार मिनट ही लगे। उसने ताँगे वाले को आठ आने दिये और गठरी उठाकर स्वयं घर के भीतर चली गयी।

रोहिणी की सास का विचार था कि रोहिणी माँ के साथ गयी है तो अवश्य कुछ दिन वहाँ रहेगी। इस कारण वह उसके जाने के उपरान्त निश्चिन्त होकर घर के काम-काज में लग गयी थी।

महेन्द्र, रवि का छोटा भाई, रोहिणी का देवर, पिता के साथ पुस्तकों की दुकान पर बैठता था। वह और उसका पिता दुकान पर गये हुए थे और महेन्द्र की बहन सुभद्रा अपनी ससुराल अमृतसर में थी। रोहिणी की सास दयावन्ती घर में अकेली-अकेली अनुभव करने लगी थी। रोहिणी के सास-श्वसुर का रोहिणी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवर से उसका विवाह करने के प्रस्ताव में मुख्य कारण यही था कि वे शीघ्रातिशी परिवार की वृद्धि चाहते थे।

जब रोहिणी ने महेन्द्र से विवाह करना अस्वीकार किया तो वह यत्न कर लगी थी कि किसी अच्छे घर से महेन्द्र के लिये लड़की मिल जाये।

उस दिन रोहिणी हाथों में एक गठरी उठाये हुए आई तो वह विस्मित रह गई

'तो तुम आ गयी हो?' सास ने रोहिणी को भीतर आते देख पूछ लिया।

'हाँ, माँ जी!' रोहिणी ने उत्तर दिया।

'और यह क्या उठा लाई हो?'

'अपना कुछ शेष वहाँ रह गया था, उसे भी ले आई हूँ।'

'क्यों?'

'उस घर से सम्बन्ध विच्छेद कर आई हूं माँ जी! एक मिथ्या धारणा से बँध हुई, उस घर में एक कमरे पर अधिकार किया हुआ था। मिथ्या का ज्ञान हुआ त कमरा खाली कर दिया है।'

दयावन्ती समझ गई। रोहिणी की माँ उसे बता गई थी कि रोहिणी के पित उसके लिए वर ढूंढकर लाये हैं। वह रोहिणी के विचार जानती हुई समझ रही थ कि रोहिणी ने वहाँ भी विवाह से इन्कार किया है और माँ ने अथवा उसके पिता कुछ कहा है, जिससे वह माता-पिता से लड़ आई है। इस कारण उसने गम्भी मुख बना कहा, 'तो माँ से लड़ आई हो?'

'मैं लड़ कर नहीं आई। परन्तु उस घर से सम्बन्ध तो विवाह के समय ह टूट गया था। एक झूठा नाता समझ रही थी। आज उस झूठे नाते का अन्त कर आ हूँ। वैसे माता-पिता का सम्बन्ध तो शरीर से है। जब तक यह शरीर रहेगा, तब तक सम्बन्ध भी रहेगा।'

यद्यपि दयावन्ती इस मीमाँसा को नहीं समझी, इस पर भी चुप कर रही। वैसे तो वह उसका ससुराल से भी सम्बन्ध झूठा ही समझती थी। पति के देहान्त के उपरांत उसका अपने श्वसुर के घर से क्या सम्बन्ध रह सकता है, वह समझ नहीं सकी थी। इस पर उसने कहा, 'ठीक है! तुम आ गई हो तो यहाँ कुछ रौनक प्रती होने लगी है। अन्यथा मैं अकेली-अकेली अनुभव करने लगी थी।'

रोहिणी अपने काम में लग गई। वह पुनः माँ के घर नहीं गई।

माँ कभी-कभी उसे ससुराल में ही मिलने आती रहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन व्यतीत हो रहे थे। रोहिणी की सास दयावन्ती ने अपने दूसरे लड़के का विवाह कर दिया। नई बहू घर में आई। इससे घर में चहल-पहल बढ़ गई और दोनों स्त्रियों को एक तीसरी के घर आ जाने से सुख अनुभव हुआ।

परन्तु यह सुख अस्थाई ही था। महेन्द्र की बहू सगुनी नाम की ही सगुनी थी। स्वभाव की वह लोभिन थी और कटुभाषी थी।

महेन्द्र का विवाह हुए अभी दो मास ही हुए थे कि रोहिणी को अनुभव होने लगा कि महेन्द्र की बहू उसको देख माथे पर त्यौरी चढ़ाने लगी है। आखिर एक दिन बात हुए बिना नहीं रह सकी।

रोहिणी उस दिन अपनी बहिन मोहिनी से मिलने उसके घर जाना चाहती थी। उसने अपनी सास से पूछ लिया, 'माताजी! मोहिनी से मिलने को जी कर रहा है। मैं आज मिलने को जाऊँ?'

यह एक सामान्य सी बात थी। जब भी उसे मोहिनी से मिलने जाना होता था, वह औपचारिक रूप में सास से पूछ लिया करती थी और सास जाने की स्वीकृति दे दिया करती थी।

आज सगुनी सास के पास बैठी थी। उसने रोहिणी की बात सुनी तो नाक चढ़ा मुख दूसरी ओर कर लिया।

'क्यों बहन सगुनी! क्या बात है? तबीयत तो ठीक है?' रोहिणी ने पूछ लिया।

सगुनी ने तो उत्तर नहीं दिया, दयावन्ती ने कह दिया, 'इसे तुम्हारा बहन के घर जाना ठीक प्रतीत नहीं हो रहा।'

'क्या खराबी समझ में आ रही है बहन?'

'यह कहती है, इससे लोक निन्दा होगी।'

'उसकी चिन्ता मूर्खों को होती है। और मैं मूर्ख नहीं हूँ।' रोहिणी ने कहा और फिर सास से बोली, 'मैं दीपक जलने से पहले आ जाऊंगी।'

मोहिनी का पति रत्नचन्द हाई कोर्ट में प्रैक्टिस करता था। पंजाब में पहले चीफ कोर्ट ही थी और उसके मुकद्दमे कलकत्ता हाईकोर्ट में जाते थे अथवा प्रिवी-कौंसिल में लंदन जाते थे। परन्तु सन 1921 के सुधारों के उपरान्त पंजाब के चीफ कोर्ट का स्तर मद्रास, बम्बई, कलकत्ता, इलाहाबाद इत्यादि हाईकोर्ट के बराबर हो गया था। रत्नचन्द एक अति श्रेष्ठ वक्ता तथा कानूनी दलील करने वाला माना जाता था। उसकी प्रैक्टिस अच्छी थी और अच्छी आय होती थी। लाहौर में निकल्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोड पर एक कोठी में शान-शौकत से वह रहता था।

रोहिणी का मोहिनी से जल्दी-जल्दी मिलने जाने का एक कारण यह भी थ कि मोहिनी अकेली अनुभव करती थी और रोहिणी के मिलने आने से उसे बहु संतोष और सुख मिलता था।

उस दिन सगुनी के नाक चढ़ाने और मुख मोड़ लेने तथा अपनी सास के मुख से इसका कारण सुन वह समझी थी कि घर में विलक्षण स्वभाव का प्राणी आ गया है।

इस पर भी उसने विचार किया कि यदि सगुनी समझदार होगी तो समझ जायेगी कि रोहिणी को लोक-निन्दा की चिन्ता नहीं है।

परन्तु बात वहीं पर समाप्त नहीं हुई। रोहिणी सायँकाल घर लौटी तो उसकी सास दयावन्ती ने कहा, 'बहू! छोटी बहू ने तुम्हारी बात पर बहुत गिला किय है?'

'किस बात का?' रोहिणी ने पूछ लिया।

सास ने बताया, 'तुमने कहा था न कि लोक-निन्दा की चिन्ता मूर्ख करते है और वह चिन्ता कर रही थी। इस कारण वह समझती है कि तुमने उसे मूर्ख कह है।'

'तो वह मेरी निन्दा करती है?'

'वह तुम्हारा वहाँ जाना निन्दनीय मानती होगी, तभी तो उसने कहा होगा।

रोहिणी ने कहा, 'माँजी! मुझे बहन सगुनी की चिन्ता नहीं। मैं आपसे पूछत हूँ कि आप क्या समझती हैं?'

'मैं कुछ नहीं समझती। तुम नये जमाने की लड़कियाँ न जाने क्या समझत हो।

'देखो रोहिणी बेटी! मैं कभी विधवा रही नहीं। इस कारण मैं तुम्हार मनोभावना का अनुमान नहीं लगा सकती। हाँ, इतना जानती हूँ कि जब मेर विवाह हुआ था, तब लाहौर में विधवाएँ उज्ज्वल चादर नहीं ओढ़ती थीं। यदि घ में कभी कोई मैली चादर नहीं होती थी, तो चादर को सलेटी रँग लेती थीं, जिसस लोग समझ लें कि वह विधवा है।

'और तुम तो दूध समान श्वेत सलवार, कुर्ता और चुनरी तथा गुरगाबी पह घूमती हो।'

'माँ जी! तो अब पता चल गया है न कि आपका अनुमान गलत है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इसी कारण सगुनी को संदेह है।'

सगुनी वहाँ ही बैठी थी। इस कारण रोहिणी ने सगुनी से ही पूछ लिया, 'क्यों बहन! किस बात से ऐसा संदेह करने लगी हो? क्या प्रमाण है मेरे विषय में ऐसा समझने का?'

अब सगुनी ने कह दिया, 'बहनजी! सुगन्धि से फूल की पहचान होती है। इसी प्रकार आपके हाव-भाव और अपने जीजाजी के घर में जल्दी-जल्दी जाने से और क्या समझा जा सकता है?'

रोहिणी असमंजस में पड़ गयी। वह सास-बहू के पास से उठ अपने कमरे में चली गयी। अब तो उसको ऐसा अनुभव हुआ कि उसके पाँव तले से मिट्टी खिसक रही है। वह माँ से लड़कर उसका घर छोड़ आयी थी। कभी-कभार माँ मिलने आती थी, परन्तु उसने उसे अपने घर पर आमंत्रित नहीं किया था। पिता तो उससे उस दिन के पश्चात मिला ही नहीं था।

वह अपनी सास पर बहुत भरोसा करती थी, परन्तु अब सास का आश्रय भी रेत की भीत की भांति गिर रहा प्रतीत हुआ था।

अपने कमरे में जा द्वार भीतर से बंद कर अपने पलंग पर लेट, वह इस परिस्थिति पर विचार करने लगी। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

वैसे वह एम. ए. पास कर चुकी थी। दोनों बहनें एक ही कॉलेज और एक ही श्रेणी में पढ़ती हुई एक ही साथ परीक्षा में उत्तीर्ण हुई थीं।

कॉलेज में पढ़ते हुए दोनों ने विचार किया था कि पढ़ाई को सार्थक कैसे करेंगी। दोनों का एक ही विचार था कि घर-गहस्थी में जीवन व्यतीत करेंगी और पढ़ाई का फल स्वाध्याय करते हए ज्ञानार्जन करेंगी।

रोहिणी का विवाह पहले हुआ। दुर्भाग्य की बात यह हुई थी कि विवाह के कुछ ही महीने उपरान्त वह विधवा हो गयी। उसका पूर्ण जीवन का उल्लास समाप्त हो गया और वह एक बुझे दीपक की भांति घर को बदसूरत करने वाली बन गयी।

इस दिन की घटना ने तो उसके मस्तिष्क को भारी ठोकर लगायी थी और वह तीव्र गति से भविष्य के विषय में विचार करने लगी।

रात भोजन के समय सगुनी ही उसको बुलाने आयी। रोहिणी अभी तक भीतर से द्वार बंद किये मन को स्थिर कर अपने भविष्य का कार्यक्रम बना रही थी।

सगुनी ने द्वार खटखटाया तो उसने भीतर से पूछा, 'कौन?'

'माँ जी भोजन के लिये बुला रही हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आती हूँ।'

इस उत्तर को सुन सगुनी आश्वस्त हो रसोई घर में चली आयी। वह मन में शंका करने लगी थी कि कहीं वह आत्महत्या न कर बैठी हो अथवा करने का विचार कर अनशन न कर रही हो।

जब रोहिणी की स्पष्ट आवाज़ आयी कि आती है तो वह रसोई घर में पहुंच और अपनी सास से बोली कि वह आ रही है।

रसोई घर में लाला सन्तराम और उसका लड़का महेन्द्र भी बैठे थे। पिता ने ही पूछा, 'क्या कर रही थी?'

'भीतर से द्वार बंद था।' सगुनी ने रहस्य को गहरा करने के लिए कह दिया।

'देखो भाग्यवान!' सन्तराम ने अपनी पत्नी को कह दिया, 'बहुत पढ़ी लिखी लड़की है। उससे बहस नहीं करनी चाहिये। तुम उसकी बात का उत्तर नहीं दे सकोगी।'

'पर पिताजी! आज तो वह माताजी की बात का उत्तर नहीं दे सकी थी।' सगुनी ने अपनी चौकी पर बैठते हुए कह दिया।

'कैसे...?' सन्तराम पूछना चाहता था कि किस बात का उत्तर नहीं दे सकी थी कि इस समय रोहिणी आ गयी। सन्तराम बात बीच में ही रोककर रोहिणी से पूछने लगा, 'क्यों बहू! तुम्हें माँ ने क्या कहा था?'

वह कुछ और कहना चाहता था कि उसकी दृष्टि रोहिणी के मुख पर चली गयी। उसकी आँखें लाल हो रही थीं। वह रोती रही थी। इस पर उसने बात अधूरी छोड़ पूछ लिया, 'तो तुम रो रही थीं?'

रोहिणी अपने लिये लगी चौकी पर बैठ गयी।

उसने चौकी के समीप रखे गिलास में से पानी के दो घूँट पिये और कहा, 'पिताजी! माँजी की एक बात पर कुछ रोष हो आया था और उस रोष को रोकने में आँसू टपकने लगे थे। जब टपकने लगे तो फिर रुके ही नहीं। बहुत कठिनाई से इनको रोक पायी हूँ।'

'क्यों दयावन्ती! क्या कहा था तुमने?'

'कुछ विशेष नहीं। वही जो प्रायः सासें नये जमाने की बहुओं को कहती रहती हैं।

'यह बहन के घर जा रही थी। मैंने कहा था, वहाँ अधिक जाना ठीक नहीं। इसका बहनोई अभी युवा ही है और इसकी बहन इस जितनी सुन्दर नहीं है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो यह बात है? और रोहिणी बेटी! तुम जाना चाहती हो?'

'अब तो नहीं; परन्तु फिर कभी चित्त कर सकता है। परन्तु पिताजी! अब मैं वहाँ तब तक नहीं जाऊँगी, जब तक वहाँ जाने की सामर्थ्य प्राप्त नहीं कर लूंगी।'

'क्या सामर्थ्य प्राप्त करना चाहती हो?'

'यह अभी चित्त में स्पष्ट नहीं हुआ। विचार कर रही हूँ। जब मन में कुछ स्थिर हो जायेगा और तब आपको जानने की रुचि हुई तो बता दूँगी।'

'देखो रोहिणी, मैं तुम्हारे जीजा बलूजा साहब को जानता हूँ। मेरा एक मुकद्दमा वह कर रहे हैं। बहुत ही हँसमुख व्यक्ति हैं। मैं उनको बहुत ही भले विचार का व्यक्ति समझता हूँ। इस कारण मैं तुम्हारे वहाँ जाने में आपत्ति नहीं करता।'

रोहिणी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। रोहिणी की सास और देवरानी भी नहीं बोलीं, चुप रहीं।

बातों का विषय लड़के ने बदल दिया। उसने कहा, 'बलूजा साहब आजकल 'रंगीला रसूल' का मुकद्दमा हाईकोर्ट में कर रहे हैं और उसकी बहुत विचित्र खबरें निकल रही हैं।'

'क्या?'

'हजरत मुहम्मद साहब के जीवन की बहुत-सी बातें वकील साहब कोर्ट में बता रहे थे। अदालत के रीडर का लड़का मेरा मित्र है और वह अपने पिता से सुनी बातें मुझे बता रहा था। वे बातें किसी भले आदमी की नहीं हैं।'

'बेटा! रसूलों को सब मुआफ होता है। हम दुनियादार लोग उनकी ऊँचाई तक नहीं पहुंच सकते।'

'देखो! यू. पी. के एक गवर्नर बटलर साहब हैं। वह सूबे के गवर्नर हैं और उनके विषय में भी लोग बातें करते हैं। सुना है इलाहाबाद के एक वकील से उनका बहुत मेल-जोल है और दोनों रंगीली तबीयत रखते हैं। परन्तु बड़े लोगों की बातें नहीं करनी चाहिये। वे पुस्तकों में तो छपनी ही नहीं चाहिये।'

'जिस दिन शोर मचा था, मैंने अपनी दुकान में से ढूंढकर उसकी सब प्रतियाँ मिट्टी का तेल डाल जला डाली थीं।'

'तो', महेन्द्र ने पूछ लिया, 'वकील साहब को मुकद्दमा नहीं लड़ना चाहिये?'

'व्यर्थ है। अंग्रेजी सरकार मुसलमानों की रियायत करती है और हाईकोर्ट प्रकाशक को सात वर्ष का कठोर दण्ड देगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का चुप कर रहा।

भोजन समाप्त हुआ तो सब अपने-अपने कमरों में आराम करने चले गए

:3:

अगले दिन प्रातः के अल्पाहार के उपरान्त रोहिणी ने एक बन्द लिफाफ नौकर राधेलाल को देते हुए कहा, 'यह डाकखाने में ले जाओ। वहाँ टिकट बेचने वाले से पूछ लेना, कितने का टिकट लगेगा। उतने का टिकट लगा, इसे डाक के डिब्बे में डाल देना।'

दयावन्ती के सामने ही उसने राधे को लिफाफा और एक रुपया दे दिया राधेलाल गया तो दयावन्ती ने पूछ लिया, 'कहाँ चिट्ठी भेज रही हो?'

'माताजी! अपने कॉलेज के प्रिंसिपल को लिखी है। एक बात उनसे पूछ करनी थी। वह पूछी है।' मोहिनी और रोहिणी दोनों आर्य कन्या महाविद्यालय बी. ए. तक पढ़ रही थीं। वहाँ से बी.ए. उत्तीर्ण कर दोनों फोरमैन क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ी थीं और उन्होंने एम.ए. वहीं से किया था। कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल मिस थापर की बातें रोहिणी घर पर किया करती थी। इस कारण दयावन्ती को इस पत्र में कुछ विशेष बात प्रतीत नहीं हुई।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे और अब रोहिणी ने बहन मोहिनी के घर जाना भी छोड़ दिया। आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रिंसिपल को पत्र गये लगभग बीस दिन हुए थे कि डाकिया एक पत्र लाया और राधेलाल पत्र ले भीतर लाया तो सगुनी सामने खड़ी थी। राधेलाल ने पत्र सगुनी के हाथ में दे दिया और कहा 'डाकिया दे गया है।'

सगुनी ने पत्र पर पता पढ़ा। नाम रोहिणी देवी का लिखा था। नाम पढ़ उसकी दृष्टि लिफाफे के ऊपर चली गयी। डाक के टिकटों के ऊपर छपा था-'ऑन हिज़ मैजेस्टीज़ सर्विस।'

सगुनी समझ नहीं सकी कि यह चिट्ठी रोहिणी को किसने भेजी है। इतना तो निश्चय था कि वह पत्र रोहिणी के जीजा का नहीं था। वह अभी मन में विचार ही कर रही थी कि वह पत्र खोल पढ़े अथवा न कि उसकी सास दयावन्ती वहाँ आ गयी और सगुनी के हाथ में पत्र देख पूछने लगी, 'यह किसका है?'

'रोहिणी बहन का है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167981
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar
R 084.9143 GUR-U

'तो उसको दे दो।'

'पर माँजी! यह सरकारी पत्र है।'

'तो?' दयावन्ती ने पत्र हाथ में लेकर कहा, 'उसे यहाँ बुला लाओ और उससे ही पूछेगे कि यह किसका है?'

रोहिणी आई तो माँ के हाथ में एक लिफाफा देख समझी कि मिस थापर का पत्र होगा। उसने पत्र के लिए हाथ बढ़ाया। दयावन्ती ने पत्र देते हुए पूछ लिया, 'किसका है?'

रोहिणी ने पत्र पर एक कोने में डायरेक्टर ऑफ ऐजुकेशन लिखा पढ़ा तो कह दिया, 'यह सरकारी है। देखती हूँ क्या है। मैं तो समझी थी कि मिस थापर का है।'

वहीं खड़े-खड़े रोहिणी ने पत्र खोल डाला और पढ़ कर कहा, 'इसमें शिक्षा विभाग के डायरेक्टर ने लिखा है कि मुझे लड़कियों के कॉलेज में इतिहास पढ़ाने पर नौकरी के लिए नियुक्त किया गया है।'

'तो तुमने वहाँ अर्जी की थी?'

'नहीं माँजी! मैंने तो आर्य कन्या महाविद्यालय के प्रिंसिपल को लिखा था। मैंने कहा था कि आजकल सर्वथा खाली हूँ और यदि मुझे कॉलेज में पढ़ाने का काम दिया जाये तो मैं केवल गुजारे लायक वेतन पर काम कर दूँगी।

'परन्तु यह मिस थापर का पत्र नहीं है। मैं नहीं जानती कि यह कैसे आ गया है।'

'अवश्य मिस थापर ने वहाँ कहा होगा?' दयावन्ती ने अनुमान बताया।

'हो सकता है। इसमें लिखा है कि पत्र मिलते ही कॉलेज की प्रिंसिपल से मिलूं और यह पत्र दिखाकर काम आरम्भ कर दूँ।'

'तो तुम सरकारी कॉलेज में काम करोगी?'

'कल वहाँ जाकर देखूगी और यदि चित्त किया तो करूंगी।'

दयावन्ती चुप कर रही। उसे उस रात की बात याद आ गई जब रोहिणी ने अपने श्वसुर से कहा था कि वह सामर्थ्य संचय कर रही है। जब सामर्थ्य संचय कर सकेगी तब जीजा से मिलने जायेगी। वह विचार कर रही थी कि यह सामर्थ्यवान बन गई है। परन्तु इसका उसकी बहन से मिलने जाने का क्या सम्बन्ध है? इतना वह जानती थी कि उस दिन के पश्चात वह मकान से बाहर नहीं गई थी। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह समझ नहीं सकी कि यह किस प्रकार हो गया है।

रोहिणी स्वयं भी समझ नहीं सकी थी कि यह कैसे हो गया है। वह खरबूजे खरीदने की इच्छा कर रही थी और मिल गई है आमों की टोकरी।

उसने सरकारी स्त्रियों के कॉलेज के प्रिंसिपल से मिलने से पहले मि थापर से मिलने का विचार बना लिया। यह जनवरी की दो तारीख थी। क्रिसम और नव-वर्ष की छुट्टियों के उपरान्त सरकारी कार्यालय खुल चुका था। अ अगले दिन वह घर से आठ बजे जाने का कार्यक्रम बनाने लगी। उसका विचार कि पहले महाविद्यालय की प्रिंसिपल मिस थापर से मिलेगी और पीछे ही सरका कॉलेज की प्रिंसिपल के पास जायेगी।

रात को भोजन के समय उसके श्वसुर ने कहा, 'रोहिणी बेटी! कॉलेज क नौकरी मिल गई है क्या?'

'हाँ, पिताजी! परन्तु मैं नहीं जानती कि यह कैसे हो गया है। मैंने वहाँ अ भी नहीं की थी।'

'तो कब जाओगी?'

'कल प्रातः काल यहाँ से पहले मिस थापर से मिलूँगी और फिर वहाँ सरकारी कॉलेज में प्रिंसिपल मिस रौबर्ट्सन से मिलूँगी। दोनों की बातें सुन औ काम जानकर ही निश्चय करूंगी।'

'मैं समझता हूँ', सन्तराम ने कह दिया, 'ठीक ही हो रहा है। जब विवा नहीं करना तो कुछ काम करना चाहिए और कॉलेज के काम से अच्छा काम अ कोई नहीं हो सकता।'

'तो आप इसे आशीर्वाद दे रहे हैं?' दयावन्ती ने कह दिया।

'जब तुमने इसके पाँव में बेड़ियाँ डाल दी तो इसे उनको तोड़ने का य करना ही चाहिए था। यह इसमें सफल हो रही है।'

दयावन्ती को अपने उस दिन के कथन का स्मरण हो आया तो वह चुप क रही।

सगुनी इस घटना से प्रसन्न थी। वह मन-ही-मन विचार कर रही थी कि रोहिणी बहन अपना पृथक मकान भी ले ले तो और भी अच्छा होगा।

रात सगुनी और महेन्द्र में बात हो गई। उसने पूछा, 'क्या बात हुई थी भा और माताजी में, जिसका यह परिणाम हुआ है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगुनी ने सब बात बता दी। इस पर महेन्द्र ने कहा, 'तो तुमने भाभी के चरित्र पर संदेह किया था?'

'मैंने यह कहा था कि इससे लोक-निन्दा होगी। यह बात तो माताजी ने कही थी कि हमें उसके कथन पर विश्वास नहीं है।'

महेन्द्र को यह पसंद नहीं था। उसको इस बात में तो आपत्ति नहीं थी कि वह नौकरी कर रही है। परन्तु वह यह भी नहीं चाहता था कि वह इस घर को छोड़ने के लिए नौकरी करे। वह जानता था कि रोहिणी का पति, उसका भाई एक धनी आदमी था। वह सरकारी निर्माण विभाग में सुपरिन्टेडेण्ट था और उसका अच्छा-खासा वेतन था। उसे विदित था कि उसके भाई के धन से दुकान को भी सहायता मिली है। कम-से-कम वह सब-कुछ भाई की पत्नी का भाग है और उसे मिलना चाहिए।

उस समय तो उसने अपनी पत्नी से कुछ नहीं कहा; परन्तु अगले दिन प्रातःकाल ही वह पिता के कमरे में चला गया। पिता स्नानादि से अवकाश पर पूजा पा बैठने वाला था।

महेन्द्र को आया देख उसने पूछ लिया, 'कैसे आये हो?' मै यह पूछने आया हूँ कि भैया का कितना धन दुकान में लगा है?'

'संब दुकान पर लिख रखा है। ठीक-ठीक स्मरण नहीं। परन्तु बीस हजार से कम नहीं हो सकता।'

'मै यह कहने आया हूँ कि यह भाभी को मिल जाना चाहिए?'

दयावन्ती बोल उठी, 'आज इसकी क्यों याद आ गई है?'

'पिताजी! मुझे उस दिन की बात स्मरण आई है जब भाभी ने कहा था कि वह बहन से मिलने की सामर्थ्य संचय कर लेगी तो जायेगी। अब वह सेवा-कार्य कर धन पैदा कर पृथक मकान में रहेगी और फिर जिससे चाहे मिलने जायेगी।

'हमें यह प्रेरणा देनी चाहिए कि इस सामर्थ्य के लिए उसे नौकरी करने की आवश्यता नहीं।'

दयावन्ती ने कह दिया, 'रवि के धन पर उसका अधिकार कैसे हो गया? वह परिवार का धन है। परिवार के धन का जो मालिक होगा, वह ही उसका मालिक होगा।'

सन्तराम ने कहा, 'मैं उस दिन की इसकी बात को समझ नहीं सका था। समझ जाता तो यह धन देकर उसे उस दिन ही सामर्थ्यवान बना देता और तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे वह जो चाहे करती। अपना मुख उज्ज्वल करती अथवा काला करती।

'परन्तु महेन्द्र! अब वह धन मिलने पर भी नौकरी करना नहीं छोड़ेगी। औ फिर मैं सोचता हूँ कि यह धन उसको क्यों दिया जाये? जाओ, अपना काम करो बिखर गये दूध को इस प्रकार नहीं बटोरा जा सकता?'

'तो इस बिखर गये दूध को कैसे बटोरियेगा?' महेन्द्र का प्रश्न था।

उत्तर दयावन्ती ने दिया, 'वह आज प्रिंसिपल से मिलने गई है। अब उ मिल लेने दो और अपना निश्चय कर लेने दो। पीछे विचार करेंगे।'

परन्तु दयावन्ती अपनी चतुराई का मिथ्या अनुमान लगा रही थी। रोहिण घर से गई तो मिस थापर की कोठी पर जा पहुँची। थापर कॉलेज के अहाते में ह रहती थी।

मिस थापर रोहिणी को पहचानती नहीं थी। इस कारण उसने पूछ लिय 'तुम कौन हो और कैसे आई हो?'

रोहिणी ने बताया, 'मैं आपकी छात्रा रोहिणी हूँ। आज से तीन सप्ताह पहल मैंने आपको एक पत्र लिखा था कि मैं सर्वथा खाली हूँ और कॉलेज में पढ़ाई क काम करने के लिए अपने को योग्य समझती हूँ। इस कारण मुझे इतिहास, अंग्रेज अथवा हिन्दी पढ़ाने पर लगा दीजिये। जो कुछ भी वेतन कमेटी निश्चय करेगी, मु स्वीकार होगा।'

मिस थापर को याद आ गया। उसने कहा, 'मैंने तुम्हारा पत्र कॉलेज क प्रबन्धक कमेटी को भेज दिया था। हमारी कमेटी के एक सदस्य श्री रत्नचन बलूजा हैं। उन्होंने पत्र देखा और पढ़कर कह दिया कि इसको सेवा-कार्य नह देना चाहिए। इस कारण तुम्हारी अर्जी नामंजूर हो गई थी।'

'परन्तु मुझे कल यह पत्र मिला है।' रोहिणी ने 'डायरेक्टर ऑफ ऐजुकेशन का पत्र निकालकर दिखा दिया।

मिस थापर ने पत्र लेकर पढ़ा और वापस करते हुए कहा, 'तो मैं तुमक बधाई देती हूँ। इस कारण कि यहाँ से वहाँ अच्छा वेतन मिलेगा और काम क करना पड़ेगा।'

'मैं तो यह समझी थी कि कहीं आपने मेरा पत्र वहाँ तो नहीं भेज दिया थ ?'

'मैं क्यों भेजती?'

'तो यह कैसे हो गया? मैं यही समझने आई थी। मैं समझती हूँ कि डायरेक्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब से मिलकर पूछ लूँ।'

'परन्तु मेरी राय मानो तो कॉलेज के प्रिंसिपल से मिलकर चार्ज ले लो। काम आरम्भ कर दो। यह पीछे पता चल जायेगा कि यह कैसे हुआ है।'

रोहिणी वहाँ से ताँगे में सरकारी कॉलेज के प्रिंसिपल के पास चली गई।

वह वहाँ ठीक दस बजे पहुंची। प्रिंसिपल अपने क्वॉर्टर से निकल कार्यालय में पहुंची ही थी कि रोहिणी ने अपना नाम एक कागज के टुकड़े पर लिख कर भीतर भेज दिया।

प्रिंसिपल के पास 'डायरेक्टर' की चिट्ठी की नकल आई हुई थी।

इस कारण उसने रोहिणी को भीतर बुलाया और सिर से पाँव तक देखा। फिर उसे पसंद कर बैठने को कह पूछा, 'तो आप काम पर आ गई हैं?'

'जी! परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरी नियुक्ति किस प्रकार हुई है? मैंने तो इस नौकरी के लिए अर्जी की नहीं थी।'

'यह मैं नहीं बता सकती। हमने जगह खाली की सूचना डायरेक्टर साहब को भेज दी थी। उन्होंने पोस्ट के लिए गैजेट किया था। सब अर्जियाँ वहीं गई थी और वहाँ से ही आप नियुक्त होकर आई।

'मेरे पास भी इस चिट्ठी की नकल आयी है और मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।'

रोहिणी विस्मय में प्रिंसिपल का मुख देखती रह गई। एकाएक प्रिंसिपल उठी। रोहिणी को ले वह कार्यालय में चली गई। उसने क्लर्क को कह दिया, 'मिसेज रोहिणी कार्य करने आ गई हैं। इनको टाइम-टेबल बता दो और सिलेबस की एक प्रति दे दो।'

रोहिणी को कार्यालय में बैठा कर प्रिंसिपल अपने कमरे में चली गई।

क्लर्क ने दस मिनट में आवश्यक कागज तैयार कर दिये। उसने वह पत्र जो प्रिंसिपल के पास आया था, लेकर सर्विस पर हाजिर होने को नोट किया और फिर रोहिणी को इतिहास की सीनियर प्रोफेसर श्रीमती रंगा अय्यर के पास टाइम-टेबल के लिए भेज दिया।

रोहिणी को उसी दिन काम पर लगा दिया गया। तीन पीरियड वह श्रेणियों में जाती रही और वहाँ की छात्राओं के परिचय प्राप्त करती रही। तत्पश्चात वह कॉलेज के पुस्तकालय से पढ़ाई के सम्बन्ध की कुछ पुस्तकें लेकर घर को चल दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन के अढ़ाई बजे थे और कॉलेज चर्च रोड पर था। वहाँ से पैदल ही व
अपने घर अस्पताल रोड को चल पड़ी। चर्च रोड से माल और वहाँ से अनारकल
बाजार। अनारकली बाजार में उसे कुछ चंचलता अनुभव होने लगी थी। लो
जल्दी-जल्दी लाहौरी दरवाजे की ओर जा रहे थे। कुछ दुकानदार दुकानें बन्द क
रहे थे।

वह समझ नहीं सकी कि यह क्या हो गया है। परन्तु वह जल्दी-जल
अपने घर की ओर बढ़ रही थी, अस्पताल रोड जाने वालों की संख्या बढ़ रही थी
वह अपने मकान की ओर घूमी थी कि आगे रास्ता भीड़ से रुका हुआ मिल
विवश मार्ग से एक ओर हटकर उसे खड़ा हो जाना पड़ा। समीप खड़े एक प्रौढ़ावस्थ
के व्यक्ति से उसने पूछा, 'भापा! क्या हुआ है? लोग यहाँ एकत्रित क्यों हो रहे है

'तो तुम नहीं जानतीं?'

'जी नहीं।'

'महाशय राजपाल की किसी मुसलमान ने हत्या कर दी है।'

विद्युत की चमक की भाँति उसके मन में भी प्रकाश हुआ। वह समाचार प
में महाशय जी पर मुकद्दमे की बात पढ़ चुकी थी। महाशय जी ने एक छोटी-स
पुस्तक छपवायी थी। नाम था-'रंगीला रसूल'। मुसलमानों ने उस पुस्तिका क
जप्त करने और लेखक तथा प्रकाशक को दण्ड देने की न्यायालय में याचिका क
थी। इस पर मुकद्दमा हाईकोर्ट तक गया था।

इस मुकद्दमे की महाशय जी की ओर से पैरवी उसके जीजा ने की थी औ
महाशय जी छोड़ दिये गये थे। मुकद्दमा करने वाले वकील की बहस भी समाचार
पत्र में संक्षेप में छपी थी।

न्यायालय ने कहा था कि पुस्तक में सब बातें सप्रमाण और सत्य लिखी है
इस कारण पुस्तक लिखने और छापने वाले कानून से अपराधी नहीं कहे ज
सकते। हिन्दुस्तान की कानून की किताब में कोई कानून नहीं, जिससे सत्य-सत
लिखने अथवा छापने वाले को दण्ड दिया जा सके। यदि सरकार लोगों के मनोद्‌गा
को रोकने के लिए कानून बनाना चाहती है तो पहले कानून बनाये और पी
मुकद्दमा करे।

यह वह समाचार पत्र में पढ़ चुकी थी। इस कारण महाशय राजपाल क
हत्या की बात सुन वह सब समझ गयी।

उसे पन्द्रह-बीस मिनट तक खड़ा रहना पड़ा और फिर बहत बड़ी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशय जी के शव की अर्थी के साथ-साथ आयी और अनारकली बाजार की ओर निकल गयी। वहाँ सब एकत्रित लोग भी अर्थी के साथ चल पड़े।

जब लोग चले गये और मार्ग खाली हो गया तो रोहिणी भी अपने घर को चल पड़ी।

घर पर उसका श्वसूर और देवर भी आये हुए थे। रोहिणी बैठक घर में पहुंची तो पूर्ण परिवार को वहां एकत्रित देख वह भी वहीं बैठ गयी।

बात सन्तराम ने ही की, 'तुम कहाँ थीं? बाहर तो रास्ता रुका हुआ है?'

'जी! मैं कॉलेज गयी थी। वहाँ मुझे काम पर लगा दिया गया है।

'आज पढ़ाई तो करा नहीं सकी। पढ़ने वाली छात्राओं से परिचय प्राप्त कर ही चली आयी हूँ। कल से नियम से पढ़ाई कराऊँगी।'

'मैं समझता हूँ कि ठीक ही हो रहा है। तुम्हारा दिल लगा रहेगा। पढ़ती-लिखती तो तुम पहले भी थीं। अब और ज्यादा अपने काम में लग सकोगी।'

'यह काम मुझे पसंद नहीं।' दयावन्ती ने कहा।

'तो तुम्हें क्या पसंद है?'

'घर का काम-काज ही औरतों को शोभा देता है?'

'तो राधेलाल को निकाल उसके स्थान पर बहू से काम लेना चाहती हो?'

'पर मैं भी तो घर का काम करती हूँ?'

'क्या करती हो? शौच, स्नान, खाना-पीना और सोना? यही तो करती हो? यह बहू अब भी किया करेगी।'

बात महेन्द्र ने बदल दी। उसने कहा, 'पिताजी! महाशय राजपाल की यह हत्या तो ठीक नहीं हुई।'

'और हो ही क्या सकता था? जब जनता-जनार्दन को रुष्ट किया जाये तो यह परिणाम निकलना ही था।'

'परन्तु पिताजी! जनता तो मातम मना रही है। दस-बीस हजार अर्थी के साथ जाने वाले सब रो रहे थे।' रोहिणी ने कहा।

'तो लोग चले गये हैं?' सन्तराम ने रोहिणी से पूछ लिया।

'जी! मैं मन्दिर के पास मार्ग अवरुद्ध होने से ठहर गयी थी। अब अर्थी गयी है तो घर आ सकी हूँ।'

पिता ने बात बदल दी। वह लड़के से कहने लगा, 'महेन्द्र! जरा बाजार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर देखो, दुकानें खुलने लगी हैं या नहीं?'

'तो आपने दूसरी दुकानें बन्द होते देख दुकान बन्द कर दी थी?'

'हाँ! जब दुकानें बन्द होने लगी तो मैंने भी बन्द करने की आज्ञा दे दी। मुझे इत्यादि तो पहले ही जाने के लिए उत्सुक थे। इस कारण मैं भी दुकान बन्द कर घ आ गया।'

'तो आपको इस हत्या से शोक नहीं?' महेन्द्र ने कुछ उद्विग्न हो पूछा।

'शोक क्यों हो? जब कोई व्यक्ति दूसरों का दिल दुखाये तो उसकी प्रतिक्रि होती ही है।'

'यह एक ऐतिहासिक घटना हुई है।' रोहिणी ने कह दिया, 'इसका प्रभा देश के भविष्य पर हुए बिना नहीं रहेगा।'

'मैं भी यही समझता हूँ।' सन्तराम ने कह दिया।

रोहिणी का यह अभिप्राय नहीं था। परन्तु वह कभी भी अपने श्वसुर के सा बहस नहीं करती थी, यद्यपि वह उनके दृष्टिकोण को ठीक नहीं समझती थी।

:4:

रोहिणी से उसकी सास और श्वसुर ने उसके कॉलेज में काम और वेतना के विषय में नहीं पूछा। न ही उन्होंने यह जानने की इच्छा प्रकट की कि वह कि प्रकार यह सरकारी सेवा-कार्य पा गयी है। यदि वे पूछते भी तो वह बता न सकती थी। इस पर भी घर में एक प्राणी था जो यह जानने में उत्सुक था। वह सगुनी। उसके मन में यह संदेह बना हुआ था कि इस काम को दिलाने में रोहि के जीजा बलूजा साहब का सहयोग है। उस रात उसने अपने पति महेन्द्र से कह 'आपकी भाभी बहुत चतुर प्रतीत होती है!'

'क्यों?'

'उसने माताजी को कहा था कि मिस थापर को पत्र लिख रही हैं। पर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने पत्र अपने जीजाजी को लिखा था और उस पत्र में नौकरी के लिए अर्जी की थी। साली के जीजा जी ने साली को नौकरी दिलवाई और अपने मेल-जोल का मार्ग सुलभ कर लिया है।'

'तो फिर क्या हुआ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हुआ यह कि घर में एक छिनार औरत पल रही है।'

'इस पलने से स्वतंत्र होने के लिए ही उसने यह नौकरी की है। अब माताजी को उसे दो रोटी प्रातः और दो रोटी रात को नहीं देनी पड़ेंगी।'

'तो उसे घर से भी निकाल दो?'

'परन्तु घर मेरा नहीं है। माताजी से कहो।'

'मैं कहूँगी तो उसका गलत अर्थ लिया जायेगा।'

'क्या अर्थ लिया जायेगा?'

'यही कि मैं अपने परिवार में अपने सिवाय किसी का दावा नहीं समझती?'

'तो कोई और भी दावेदार है?'

'जब तक रोहिणी बहिन है, वह कुछ तो हिस्सा अपने पति की सम्पत्ति में रखती है।'

'कम-से-कम उसे निर्वाह के लिए परिवार को देना चाहिए।'

'यदि वह अपने जत-सत पर कायम रहे तब ही तो उसको निर्वाह के लिए मिलना चाहिए।'

'तुम तो बहुत कानून जानती हो!'

'मैं कानून नहीं पढ़ी, परन्तु मेरे पिताजी वकील हैं।'

'ओह! तो तुम इस विषय में उनसे राय करती रहती हो?'

'हाँ'

'और वह क्या कहते हैं?'

'वह कहते थे कि एक विधवा को रोटी, कपड़ा और मकान की सुविधा तब तक मिलती है, जब तक वह जत-सत पर कायम रहते हुए विधवा के रूप में रहे।'

महेन्द्र को समझ आया कि कदाचित सगुनी के पिता ने इसके मन में यह बात डाली है कि भाभी को बदनाम कर दिया जाये तो यह परिवार के आश्रय को भी नहीं पा सकेगी।

अगले ही दिन महेन्द्र दुकान पर गया और दुकान के हिसाब के रजिस्टर देखने लगा। उसका पिता अभी दुकान पर नहीं आया था। महेन्द्र ने देख लिया कि उसके स्वर्गवासी भाई रवि के, दुकान में इक्कीस हजार नौ सौ दस रुपये जमा हैं। रवि की मृत्यु के बाद पूँजी सन्तराम एण्ड सन्स के नाम कर दी गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब महेन्द्र ने बैंक के खाते में देखा। बैंक के चल खाते में तीस हजार ऊपर रुपया जमा था। इस कारण उसने चेक बुक निकाली और इक्कीस हजार सौ दस रुपये का एक चेक रोहिणी के नाम लिखा, पिता के दुकान पर आने प्रतीक्षा करने लगा।

सन्तराम कचहरी गया हुआ था। उसका एक मुकद्दमा हाईकोर्ट में चल रहा था और मिस्टर बलूजा उसकी ओर से वकील था।

मुकद्दमे के लिये जाने में अभी देरी थी। इस कारण सन्तराम हाईकोर्ट के रिसेप्शन रूम में बलूजा साहब से रोहिणी के विषय में बात करता रहा।

मुकद्दमा जब उपस्थित हुआ तो मुकाबले के वकील ने एक अर्जी पेश कर दी और उस पर विचार के लिए दो महीने की तारीख पड़ गयी। इस प्रकार सन्तराम को दुकान पर आने में मध्याह्नोत्तर तीन बजे गये। इस समय महेन्द्र ने पिता के सामने रोहिणी के नाम काटा चेक रख दिया।

'यह क्या है?' सन्तराम ने पूछा।

'भैया का दुकान में जमा रुपया है। वह भाभी को मिल जाना चाहिए।'

'क्यों?'

'यह उसका ही है। उसे दे दीजिये और फिर वह चाहे तो अपने नाम पर दुकान को उधार दे सकती है।'

सन्तराम ने चेक फाड़कर दो टुकड़े कर कहा, 'अपना काम करो। तुम रोहिणी के रुपये के अभी उत्तराधिकारी नहीं हुए। इस कारण मैं इस विषय में तुम्हारी राय नहीं मानूंगा।'

'यह अन्याय है पिताजी! मैं इसके प्रतिकार में आज से अनशन कर दूँगा।'

'क्या मतलब?'

'भूख हड़ताल कर दूँगा।'

'तो तुम भी महात्मा गांधी बनोगे?'

'महात्मा गांधी तो नहीं। हाँ, मैं इस दुकान की आय का खरीदा अन्न का एक दाना खाना भी पाप समझता हूँ।'

'ठीक है! मैं तुम्हारे श्वसुर को कहूँगा कि वह तुम्हारे खाने पीने का प्रबन्ध कर दे।'

'उनकी बात उनसे करूंगा। अभी तो आपको कह रहा हूँ कि दुकान पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमा भैया का रुपया भाभी को दे दीजिये। नहीं तो मैं भूखा रहकर प्राण छोड़ दूँगा।'

'बहुत मूर्ख हो तुम!'

'कुछ भी कहिये। यह बुद्धिमत्ता और मूर्खता की बात नहीं है। यह पुण्य और पाप की बात है।'

पिता मुख देखता रह गया। इस पर उसने पुत्र को नरम करने के लिए कह दिया, 'मैंने बलूजा को रोहिणी की नौकरी के विषय में बताया था। बलूजा का कहना है कि वह इस बात को जानता है। उसने ही उसकी नौकरी के लिए यत्न किया था।

'मैंने पूछा कि रोहिणी उनसे मिलती रहती है क्या? वह कहने लगा, वह तो मिली नहीं, परन्तु उसने अपने विचार से ही उसकी सहायता कर दी है।

'देखो महेन्द्र! बलूजा क्लबों में जाने वाला पंछी है और मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं। मैं समझता हूँ कि रोहिणी को अब अपना घर पृथक कर लेना चाहिए अथवा अपने माता-पिता के घर चले जाना चाहिए।'

'परन्तु पिताजी! मेरी बात का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।'

'तुम भी तो उसकी गोरी खाल पर मुग्ध हो रहे प्रतीत होते हो।'

इस पर महेन्द्र को क्रोध चढ़ आया और वह उठ कर अपने घर को चल दिया।

सन्तराम का विचार था कि यह अपनी भाभी के मोह-जाल में फंसा हुआ है। इस कारण यह समझ कि यह मोह-जाल रोहिणी के अपने पृथक घर बनाने पर छूट जायेगा, वह इस समय चुप कर रहा। दुकान के काम में लगा तो उसने लड़के के घर चले जाने पर विचार करना छोड़ दिया।

पहले भी महेन्द्र पाँच बजे दुकान से चला जाया करता था। कभी घर को और कभी मित्रों से मिलने। सबने एक बैठक रेलवे रोड पर ली हुई थी और वहाँ मित्र-मण्डली इकट्ठी हुआ करती थी।

परन्तु महेन्द्र आज उस बैठक पर नहीं गया। मन में पिता के व्यवहार से ग्लानि अनुभव करता हुआ वह सीधा घर जा पहुँचा।

घर की बैठक-घर में सगुनी, उसकी माता दयावन्ती, रोहिणी और रोहिणी की बहन मोहिनी बैठी बातें कर रही थीं।

महेन्द्र ने सामान्य रूप में रोहिणी की बहन मोहिनी को हाथ जोड़ नमस्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही और ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे को जाने लगा तो माँ ने बुला लिय
'महेन्द्र!'

महेन्द्र बैठक से निकलता-निकलता रुक, घूमकर प्रश्न-भरी दृष्टि से माँ
ओर देखने लगा।

'यह देखो,' दयावन्ती ने कहा, 'तुम्हारी भाभी एक प्रस्ताव लेकर आ
है?'

'क्या?'

'इसके कॉलेज की प्रिंसिपल ने कहा है कि यदि कॉलेज हॉस्टल
सुपरिंटेण्डेण्ट का पद स्वीकार करे तो इसके वेतन में एक सौ रुपये की वृद्धि हो
और वहाँ रहने को एक कमरे का सैट मिल जायेगा। पहली सुपरिंटेण्डेण्ट च
गयी है। उसके स्थान पर वह उसकी नियुक्ति करना चाहती है।'

'उसके लिये क्या वेतन मिलेगा?' महेन्द्र का प्रश्न था।

उत्तर रोहिणी ने दिया, 'यह प्रोफेसर-शिप का प्रारम्भिक वेतन अढ़ाई
रुपये है और वहाँ सुपरिंटेण्डेण्ट बनने पर साढ़े तीन सौ मिलेंगे।'

'और भाभी क्या चाहती हैं?'

रोहिणी ने कहा, 'भैया! मैंने अभी हाँ अथवा न नहीं की। मैंने मिस रौबर्ट्स
को कहा है कि मैं अपने घरवालों से बात कर बताऊँगी।'

'और भाभी! तुम बहन से बात करने गयी थीं?'

'नहीं, मोहिनी तो मुझे कॉलेज में मिलने आयी थी। इसे कहीं से पता च
गया था कि मैं कॉलेज में नियुक्त हो गयी हूँ, तो मुझे मिलने कॉलेज में आ गय
वहाँ से ही हम दोनों यहाँ आयी हैं।'

'माँ! तुम क्या चाहती हो?'

'मैंने रोहिणी को कहा है कि इसने यह नौकरी हमारे कहने से स्वीकार न
की और मकान के विषय में भी इसे हमसे राय करने की आवश्यकता नहीं।'

पूर्व इसके कि महेन्द्र कुछ कहे, सगुनी ने कह दिया, 'मैंने बहनजी
उनकी इस नौकरी पर बधाई दी है।'

'तो तुम भाभी को घर से निकालने का विचार करने लगी हो?' महेन्द्र
पत्नी से प्रश्न था। फिर उसने भाभी से पूछा-'और भाभी! तुम क्या चाहती हो

'भैया! बहन सगुनी ने एक दिन कहा था कि सुगन्धि से फूलों के होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता चल जाता है। माताजी के घर के वातावरण से मुझे यह समझ आया था कि यहाँ की सुगन्धि के मैं योग्य नहीं पायी जा रही हूँ इस कारण मुझे इस घर को छोड़ने का विचार बनाये लगभग एक मास हो चुका है। इस पर भी यहाँ माताजी को स्वीकृति से आयी थी और उनकी स्वीकृति से ही जाऊँगी।'

दयावन्ती ने कह दिया, 'मेरी इस विषय में कुछ राय नहीं है। महेन्द्र के पिताजी से पूछ लेना?'

'माताजी! मेरा सम्बन्ध आपसे है, उनसे नहीं।'

'मैं इस विषय में कुछ राय नहीं दे सकती।'

इस पर मोहिनी ने कहा, 'दीदी! अपने जीजाजी से राय कर लो।'

'नहीं बहन! मैं इसकी भी आवश्यकता नहीं समझती। मैं कल यहाँ से अपना सामान ले कॉलेज हॉस्टल को चली जाऊंगी।'

'तो तुम प्रिंसिपल को स्वीकृति दे आयी हो?' दयावन्ती ने पूछ लिया।

'नहीं माताजी! मैं मोहिनी बहन से कहूँगी कि मिस रौबर्ट्सन को टेलीफोन कर दे कि मैं कल प्रातः साढ़े आठ बजे हॉस्टल में जा पहुँचूंगी।'

'तो वह मान जायेगी?'

'कोई कारण नहीं कि न माने।'

सब चुप रहे। मोहिनी ने ही कहा, 'तो अब मैं चलती हूँ। कल तुम्हें हॉस्टल में ही मिलूँगी।'

दयावन्ती ने कहा, 'मोहिनी बेटी! चाय बन रही है।'

'माताजी! मैं वकील साहब की घोड़ा-गाड़ी में आयी हूँ। मुझे घर जाते ही वह गाड़ी कोर्ट में भेजनी है, जिससे चार बजे तक उनके पास पहुँच सके।' मोहिनी गयी तो दयावन्ती ने बातों का विषय बदलने के लिए कह दिया, 'रोहिणी! तुम्हारी बहन गर्भ से प्रतीत होती है?'

'वह कहती थी कि चौथे महीने में है।'

मोहिनी के चले जाने के उपरान्त जब महेन्द्र उठ अपने कमरे को जाने लगा तो सगुनी ने कहा, 'चाय आ रही है।'

'मैं नहीं लूंगा।'

'क्यों?'

'मैं पिताजी से लड़ आया हूँ और यदि पिताजी ने मेरी बात नहीं मानी तो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।'

माँ और उसकी दोनों बहुएँ अवाक् देखती रह गयीं।

महेन्द्र उठा तो पत्नी ने उसका हाथ पकड़ उसे रोकते हुए कहा, 'पह बताइये कि किस बात पर झगड़ा हुआ है?'

'रात वह आयेंगे तो पूछ लेना।' इतना कह झटका दे उसने अपना हा छुड़ाया और अपने कमरे में चला गया।

वह गया तो सगुनी ने कह दिया, 'यह सब इन बहनजी का ही पैदा कि झगड़ा है।'

'इसीलिए' रोहिणी ने कहा, 'मैं अपना काला साया यहाँ से ले जाने जल्दी कर रही हूँ। परमात्मा का धन्यवाद है कि मुझे सिर छुपाने को स्थान मि रहा है।'

इतना कह रोहिणी भी उठी और अपने कमरे में चली गयी।

जब दयावन्ती और सगुनी रह गयीं तो दयावन्ती ने कहा, 'मुझे विदित न था कि यह इतनी जल्दी निश्चय करती है और फिर इतनी जल्दी प्रबन्ध करती है

'यह सब इनके जीजा की करनी है।'

'कुछ भी हो। घर से रौनक जा रही मालूम हो रही है।'

'माताजी! आप भी खूब हैं। एक विधवा को घर की रौनक मानती हैं अ सधवा को घर की स्टूल-कुर्सी भी नहीं?'

'जाओ,' दयावन्ती ने कह दिया, 'घरवाले से पता करो कि वह क्यों पि से झगड़ आया है।'

सगुनी भी उठी और अपने कमरे को चल दी।

महेन्द्र पलंग पर विचार-मग्न लेटा हुआ था। सगुनी उसके समीप बैठ पूछ लगी, 'दुकान पर क्या बात हुई है?'

'भैया का इक्कीस हजार रुपया दुकान में जमा है। मैं वह भाभी को दे दे चाहता हूँ। पिताजी देना नहीं चाहते। इस कारण दो में से एक बात करूंगा। या मैं पृथक कारोबार करूँगा अन्यथा भाभी को उसका रुपया दिलवाऊँगा।'

'परन्तु यह रुपया बहन जी का कैसे हो गया?'

'जैसे मेरा सब कुछ तुम्हारा?'

सगुनी कहना चाहती थी कि उसके हक-हकूक तो पति के जीवित रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हैं, मरने पर कुछ नहीं। परन्तु वह यह कह नहीं सकी।

वह अपने विधवा होने की बात कैसे कहती? इस पर उसने बात बदल दी। उसने पूछा, 'आपकी पहली तजवीज मुझे पसंद है।'

'वही रात मैं पिताजी से कहने वाला हूँ।'

'परन्तु अब तो चाय ले सकते हैं?'

'नहीं; अनशन करने की बात दुकान पर कह कर आया हूँ।'

'परन्तु दुकान से पृथक्ता की बात आते-आते मार्ग में विचार की है। यह तो तब कहूँगा जब पिताजी नहीं मानेंगे।'

'पर मैं कह रही हूँ कि मेरे चाय लेने का समय हो गया है और आपके बिना मैं चाय नहीं ले सकती।'

'और अगर मैं दुकान से क्लब चला जाता तो लेती अथवा नहीं?'

'तब यह सोचती कि आप अपने मित्रों के साथ ले रहे हैं। अब तो यह बात नहीं है।'

'तुम समझ लो कि मैं क्लब में गया हुआ हूँ।'

'और अपनी आँखों को झूठ बता रही समझ लूँ।'

'मान लिया कि वकील की बेटी हो। परन्तु मैंने संकल्प किया है, या तो भैया का इक्कीस हजार रुपया भाभी को दिलवाऊँगा, नहीं तो पिताजी से पृथक दुकान करूंगा। उसकी पूंजी के लिए बीस हजार माँगूंगा।'

सगुनी पति के गले में बांहें डालकर बोली, 'मैं चोरी-चोरी आपके लिए खाने को यहाँ ले आती हूँ। माताजी को पता नहीं लगने दूँगी।'

'तो धोखा दोगी?'

'आपके लिए यह भी कर सकती हूँ।'

'नहीं। मैं तो अब अन्न-जल तब लूँगा, जब पिताजी दो में से कोई एक बात मान लेंगे।'

सगुनी का प्रेम-प्रलाप आलिंगन भी जब निष्प्रभाव रहा तो उसे क्रोध आ गया। क्रोध में वह लपक कर पलंग से उठी और समीप खड़ी हो बोली, 'मैं सब समझ गयी हूँ कि आप भी भाभी से प्रेम करते है और उसे रुपये देकर उससे सम्बन्ध बनाना चाहते हैं। मैं यह सब सहन नहीं कर सकती।' इतना कह वह कमरे से बाहर निकल गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:5:

मोहिनी अपने पति रत्नचन्द बलूजा के कहने पर ही रोहिणी से मिलने ग थी। पहले दिन सायंकाल बलूजा ने कहा था, 'रोहिणी आज से काम पर लग ग है।'

'कैसे पता चला है?'

'मैंने 'डायरेक्टर आफ ऐजुकेशन' को टेलीफोन किया था। वह मेरा क्ल का साथी है। उससे कहा था कि पता करे कि रोहिणो देवी कॉलेज काम पर आ हैं अथवा नहीं। उसने पता कर बताया था कि वह इस समय क्लास ले रही है

'यह तो बहुत ही अच्छा हुआ है?'

'तुम्हारी बहन के विषय में मैं तब से ही विचार कर रहा था, जब रवि देहान्त हुआ था। पीछे जब तुमने बताया कि वह माता-पिता से लड़कर उ सम्बन्ध विच्छेद कर गयी है तो मैंने निश्चय कर लिया कि मैं उसकी सहाय करूंगा। मैंने क्लब में डायरेक्टर से बात की। वह कहने लगे कि लड़कियों सरकारी कॉलेज में इतिहास के प्रोफेसर का स्थान खाली है, उसे कहो कि अ कर दे।

'मैंने पूछा कि बिना अर्जी के नियुक्ति नहीं हो सकती। उसका कहना था, क्यों नहीं सकती? वह सब कुछ कर सकता है।

'मैंने कहा कि तब कर दो। उसने अपनी डायरी में रोहिणी का नाम औ पता लिख लिया और फिर उसकी नियुक्ति हो गयी।

'मुझे विदित था कि उसे आज उपस्थित होने के लिए लिखा गया है। इ कारण आज मैंने बारह बजे उससे पूछा था और यह बताया है कि वह आज काम पर आ गयी है।

'मैं चाहता हूँ कि कल तुम उससे कॉलेज में मिलने जाना। मुझे संदेह है उसकी सास उसके काम करने को पसंद नहीं करेगी और शायद उसके घर झगड़ा भी हो। यह तुम पता करना।'

'तो अपनी घोड़ा-गाड़ी दोपहर को यहाँ भेज दीजियेगा।'

इस प्रकार मोहिनी एकाएक रोहिणी से मिलने उसके कॉलेज में जा पहुं

रोहिणी डेढ़ बजे अन्तिम क्लास लेकर क्लास-रूम से निकल स्टाफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर जा रही थी कि मोहिनी पति की घोड़ागाड़ी में आ पहुँची। रोहिणी उसे देख हैरान रह गयी और समझ नहीं सकी कि मोहिनी को किस प्रकार उसके यहाँ आने का समाचार मिला है।

रोहिणी बरामदे में ही स्टाफ-रूम के बाहर खड़ी हो गयी। दोनों बहनें मिलीं तो पहले बात रोहिणी ने की। उसने कहा, 'मोहिनी! कुछ पेट में बना रही लगती हो?' रोहिणी को उसका पेट फूल रहा अनुभव हुआ था।

मोहिनी ने कहा, 'इसी के लिए तो माँ ने घर से निकाला था।'

'तब ठीक है।'

'परन्तु तुम ठीक नहीं प्रतीत होती?'

'क्या खराबी देखी है तुमने मुझ में?'

'तुम इस स्वाभाविक काम से इन्कार कर यह ऊसर में बरसने चली आयी हो?'

'तो यह ऊसर है? कभी हम भी तो ऐसी ही थी?'

'अब घर चलोगी?'

'मुझे प्रिंसिपल ने पढ़ाई के उपरान्त बुलाया है। जरा सुन लूँ कि अब और क्या हुक्म सादर कर रही हैं?'

'तो मैं अपनी गाड़ी में बैठती हूँ। तुम मिलकर आ जाना।'

रोहिणी प्रिंसिपल के कमरे में गयी और पांच मिनट में लौट आयी। तब तक मोहिनी घोड़ा गाड़ी में उसकी प्रतीक्षा करती रही।

रोहिणी ने गाड़ी में बैठते हुए बताया कि प्रिंसिपल उसे हॉस्टल की सुपरिंटेण्डेण्ट का काम करने के लिए कह रही है।

'तो फिर?'

'मैंने कहा है कि घरवालों से पूछकर ही स्वीकार कर सकती हूँ। मोहिनी! मैं जानती हूँ कि सास और देवरानी दोनों प्रसन्न होंगी। इस पर भी मैं कह आयी हूँ कि पूछूंगी। यह एक 'फॉरमैलिटी' है।

'प्रिंसिपल ने पूछा है कि कब तक पता चलेगा।

'मैंने कहा है कि मध्याह्नोत्तर चार बजे तक टेलीफोन से सूचित कर दूँगी।'

'टेलीफोन कहाँ से करोगी?' मोहिनी ने पूछ लिया।

'वह तुम अपनी कोठी से कर देना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो तुम वहाँ चलोगी?'

'नहीं, मैं अब अपनी सास के घर जा रही हूँ। वहाँ उनसे बातकर अन्ति निर्णय तुमको बता दूँगी। तुम अपने घर से टेलीफोन कर देना।'

'मतलब यह कि मैं तुम्हारे घर चलूँ?'

रोहिणी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'इतना तो मेरे लिए कर ही सकती हो'

दोनों हँसने लगीं। घोड़ागाड़ी अनारकली बाजार की ओर चल पड़ी।

वहाँ जिस सुगमता से रोहिणी को घर छोड़ने की स्वीकृति मिली, यह दे मोहिनी चकित रह गयी। वह वहाँ से घर पहुंची तो उसका पति लौटकर घर आ चुका था और अपनी बैठक में बैठा हुआ था।

मोहिनी वहाँ से कॉलेज के प्रिंसिपल को टेलीफोन करने लगी तो बलूजा पूछ लिया, 'किसे टेलीफोन कर रही हो?'

'रोहिणी के कॉलेज की प्रिंसिपल को।'

'क्यों?'

मोहिनी ने टेलीफोन उठा ऐक्सचेंज वालों को प्रिंसिपल का नम्बर व सम्बन्ध बनाने के लिए कह दिया। टेलीफोन का सम्बन्ध बना तो उसने कह दि 'मैं रोहिणी देवी की बहन बोल रही हूँ। वह कल हॉस्टल के सुपरिन्टेण्डेण्टि का चार्ज लेने प्रातः साढ़े आठ पहुँच जायेगी।'

'वह स्वयं कहाँ है?' मिस रौबर्ट्सन ने पूछा।

'अपने घर पर है। उसके घर पर टेलीफोन नहीं है। मेरे घर पर है। इ कारण मैं अपने घर से आपको सूचित कर रही हूँ।'

'ठीक है।'

फोन बन्द हुआ तो बलूजा ने पूछ लिया, 'तो उसकी सास ने आपत्ति न की?'

'वह और उसकी देवरानी दोनों ही इससे प्रसन्न हो रही हैं?'

'मैं यही आशा करता था। हिन्दुओं के घर में विधवा एक नहूसत सम जाती है। यह हमारी जाति की विडम्बना है।'

इसका उत्तर मोहिनी ने नहीं दिया। उसने बात बदलकर कह दिया, 'मैं व उसे हॉस्टल में मिलने के लिए कह आयी हूँ। एक महीने के उपरान्त इस प्रक मिलकर जी नहीं भरा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ठीक है। कहो तो कल भी गाड़ी भेज दूँ।'

'भेज दीजियेगा। अब तो अपने साथ किसी अन्य का बोझा भी उठाकर चलना पड़ता है।'

'एक ओर लाला सन्तराम का परिवार है और दूसरी ओर तुम्हारे माता-पिता हैं। पिता की बात लड़की को स्वीकार नहीं हुई तो वह रूठ गये हैं।'

'माताजी तो उससे मिलने जाती रहती हैं।'

'अब वह भी जाना छोड़ देंगी?'

'परन्तु मैं तो उसे नहीं छोड़ रही?'

'उसमें कारण तुम दोनों का नौ मास तक इकट्ठे एक ही पलने में झूलना है।'

मोहिनी मुस्कराई और चुप कर रही।

अगले दिन मोहिनी दो बजे के लगभग रोहिणी को मिलने गयी। चपरासी से पूछने पर उसने रोहिणी का कमरा दिखा दिया।

रोहिणी प्रातः का अल्पाहार लेकर गयी थी और अब कुछ लेने का विचार कर रही थी कि मोहिनी ने दरवाजे पर थाप दी। रोहिणी ने दरवाजा खोल मोहिनी को देखा तो गले मिलने लगी।

दोनों गले मिलकर खूब हँसी। एकाएक रोहिणी को विचार आया कि क्या दोनों के हँसने का कारण एक ही है? उसे समझ आया कि यह सम्भव नहीं।

रोहिणी ने कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, 'मैं तो हँसी हूँ तुम्हारे माँ बनने की सम्भावना पर और तुम क्यों हँसी हो?'

'मैं हँसी हूँ', मोहिनी ने कहा, 'यहाँ अनायास ही तुम्हारे कइयों की माँ बन जाने पर।'

'तब ठीक है। मैं प्रातःकाल का अल्पाहार सब लड़कियों के साथ ले रही थी और पैंतीस से ऊपर लड़कियों की संरक्षिका बन जाने पर मैं एक प्रकार का गर्व अनुभव कर रही हूँ। यह स्थिति मन को बहुत ऊपर चढ़ाने वाली है।'

'तो लड़कियों से परिचय हो गया है?'

'हाँ! अभी केवल देखा-देखी ही हुई है। इनमें से पच्चीस तो हिन्दू हैं। सात ऐंग्लोइण्डियन हैं। तीन मुसलमान लड़कियाँ हैं। मैंने उनको कह दिया है कि प्रातः का ब्रेकफास्ट और रात का डिनर यदि सब इकट्ठे लिया करें तो बहुत अच्छा होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस शर्त पर सब मान गयी हैं कि जब जो रात को हॉस्टल में होंगी, वे
साथ भोजन किया करेंगी। कुछ लड़कियाँ अपनी अतिथियों के साथ भोजन क
हैं।

'मैंने उनको कहा है कि उनके जो गैस्ट हुआ करेंगे, यदि वे चाहेंगी तो वे
हमारे साथ ही खाना ले सकेंगे।

'यह बात पहले से भिन्न है। पहले सब लड़कियाँ पृथक-पृथक अथ
तीन-तीन चार-चार की मंडलियों में भोजन लिया करती थीं।

'प्रातः का अल्पाहार भी वे पृथक-पृथक ही लिया करती है, परन्तु
कहने पर वे मान रही हैं।

'मैं इस सम्मिलित भोजन को बहुत महत्त्व देती हूँ। अपने श्वसुर के घर में
मैंने रात का खाना सबके इकट्ठे बैठकर खाने का निश्चय कराया था।'

रोहिणी ने बात बदल दी। उसने कहा, 'माताजी को सूचित करना चाहि
कि मैं अब यहाँ रहती हूँ। कैसे होगा? मैं तो वहाँ जाऊंगी नहीं।'

'क्यों?'

'पिताजी मुझसे नाराज हैं और माताजी कहती थीं कि वह पतिव्रता स्त्री
पतिव्रता का अर्थ वह भेड़-बकरी होना समझती है। इस कारण मैं नहीं चाहती
पिताजी को नाराज कर मैं उनके घर जाऊँ।'

मोहिनी मुस्करायी और बोली, 'मैं उनको बता दूँगी। मुझे भी उनसे मि
बहुत दिन हो गये हैं। मैं यत्न करूँगी कि आज ही माताजी से मिलने जाऊँ।'

रोहिणी ने चाय मँगवायी और मोहिनी के सामने ही हैड रसोइये को बुला
बताया कि रात का खाना सबका कॉमन-रूम में होगा। प्रातः की भाँति सबके लि
एकदम मेजें लगेंगी और एकदम खाना परोसा जायेगा।

रसोइये ने कहा, 'परन्तु बहिनजी! कुछ माँस खाती हैं, कुछ नहीं खाती

'उनकी सीटें पृथक-पृथक होंगी।'

'पर आप किस ग्रुप में होंगी?'

'मैं माँस नहीं खाती।'

'तब ठीक है।' रसोइये ने कहा और चला गया।

रोहिणी ने कहा, 'यह तो ईश्वर की कृपा है कि बिना किसी प्रकार का व
भोगे इतना बड़ा परिवार मिल गया है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु रोहिणी! पेट में यह पल रहा भी एक विशेष प्रकार की मधुर स्थिति है। मैं तो इसके स्वप्न भी लेने लगी हूँ।'

'और कैसा दिखाई दिया है?'

'एक लड़का है। रूप-राशि तुम्हारे जीजाजी की है, परन्तु एक 'मिनिएचर पिक्चर' ही है।'

रोहिणी मुख देखती रह गयी। एकाएक बोल उठी, 'एक मेरे लिए भी निर्माण कर देना।'

'बहिन! तुम स्वयं क्यों नहीं प्रयत्न करती? पिताजी तो कह रहे थे कि विवाह कर लो।'

'नहीं मोहिनी! मुझे विवाह-कर्म में बिल्कुल रुचि नहीं। पहले भी नहीं थी। जब तुम्हारे जीजाजी चाहते थे तो कर्तव्य समझकर मान जाती थी। जैसे मुख में मिश्री की डली रखने से अनुकूल संवेदना होती है, वैसे ही उस क्रिया पर अनुभव होता था। परन्तु इसके लिए ऐसे ही कभी लालसा नहीं रही, जैसे मिश्री के लिए कुछ लालसा नहीं।'

'ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वजन्म में अत्याधिक मिश्री खाकर आयी हो।'

इस प्रकार की बातें पहले बहनों में नहीं हुई थीं। दोनों चाय के उपरान्त एक घंटा भर बैठी बातें करती रहीं। पीछे मोहिनी गयी तो एक लड़की कुरैशी आ गयी।

वह कॉलेज की स्टूडेण्ट यूनियन की प्रेजिडेण्ट थी और हॉस्टल में ही रहती थी। उसने कहा, 'बहिनजी! कल हमारी यूनियन की साप्ताहिक मीटिंग होगी। प्रिंसिपल ने कहा है कि कल आपको 'ऐड्रेस' करना होगा।'

'किस 'सब्जेक्ट' पर बोलना होगा?'

'सब्जेक्ट' तो आप ही बतायें। जो आप कहेंगी मैं कल कॉलेज में बोर्ड पर लिखकर लगा दूँगी।'

'तो लिख लो हिस्टरी ऐण्ड फिक्शन।'

'बहुत खूब! आधा घंटा आपका लेक्चर होगा। एक घंटा स्टुडेण्ट्स का प्रोग्राम होगा। पूरी मीटिंग डेढ़ घंटा चलेगी।'

'ठीक है। घोषणा कर दो।' वह गयी तो एक अन्य छात्रा शकुन्तला रैना आयी। उसने कहा, 'मैं एक बात आपसे निवेदन करने आयी हूँ।'

'बताओ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हम छात्राएँ भोजन करते समय भाँति-भाँति के मजाक करती रहती हैं। इ कारण सबका एक संगत में भोजन असुविधाजनक होगा।'

'तो तुम अपनी बातें सबके सामने नहीं कर सकती?'

'प्रत्येक व्यक्ति अपना-अपना स्वभाव और रहस्य रखता है।'

'तो ऐसी बातें खाने के अतिरिक्त किसी अन्य समय में कर सकती हो परन्तु मैं एक बात बताती हूँ कि जो बात कोई अपनी माँ के सामने नहीं क सकती, वह बात करने योग्य होती ही नहीं।'

इस पर मिस रैना मुस्कराई और बोली, 'तो क्या हम अपने पति के सा करने वाला कर्म भी माँ को बता सकती हैं?'

'आवश्यकता पड़े तो सभ्य भाषा में बताना ही होता है।'

'यह हमारी 'फिलॉसफी आफ लाइफ' नहीं है?'

'देखो रैना! मैं हॉस्टल की मदर की पदवी पर अपने को अनुभव करती और चाहती हूँ कि आप मेरे साथ अपनी सब बातें स्पष्ट, सत्य और बिना लुकाव छुपाव के करें। जो बात नहीं करने की, वह मैं समझती हूँ तुम्हारे परस्पर करने क भी नहीं। यदि इस पर भी करना चाहो तो इस 'कॉमन टाइम' के अतिरिक्त समय किया करो। मैं रोक नहीं सकूँगी। परन्तु भोजन का समय तो मेलजोल का सम होता है। इस समय को व्यर्थ की बातों में गँवाना नहीं चाहिए।'

'अन्य लड़कियाँ भी यही चाहती हैं।'

'आज तो भोजन एक साथ होगा। भोजनोपरान्त आप सबकी आपत्ति सुनूँगी और अपने मन की बात भी कहूँगी। तब इस विषय पर विचारकर भविष्य लिए निर्णय किया जायेगा।'

रैना इससे संतुष्ट हो चली गयी।

रोहिणी को ऐसा समझ आया कि अन्य लड़कियाँ भी हैं जो इस प्रबन्ध क आपत्तिजनक समझती हैं। इस कारण उसने भी अपनी एक योजना बना ली।

रात को भोजन के समय सब बोर्डर उपस्थित थीं। वे भोजनोपरान्त 'ग्रा डिबेट' होने की सम्भावना समझती थीं।

हॉस्टल के कॉमन रूम में बीस के लिए निरामिष भोजन का प्रबन्ध था अ सामिष भोजन करने वालों की मेजें पृथक थीं।

ठीक साढ़े आठ बजे घंटा बजा और पाँच मिनट में सब छात्राएँ एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। आज प्रिंसिपल मिस रौबर्ट्सन भी वहाँ खाने आयी थीं। उनको भी किसी ने मिसेज रोहिणी बजाज की योजना और लड़कियों की आपत्ति की बात बताई थी। वह हॉस्टल में शान्ति व्यवस्था चाहती थी इस कारण किसी प्रकार का मतभेद होने पर मध्यस्थ बनने का विचार कर समय पर आ पहुंची थी।

भोजन करते हुए इधर-उधर की बातें होती रहीं। रोहिणी और रोबर्ट्सन भी छात्राओं के साथ बैठ, उन जैसा ही भोजन करती रहीं। भोजन समाप्त होते ही रोहिणी ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा-

'बहनों! विवाह होने पर मैं जब ससुराल गई थी तो अपनी ससुराल में पहली रीति मैंने यह चलाई थी कि प्रातः का अल्पाहार तथा रात का भोजन परिवार के लोग इकट्ठे लिया करें।

'मेरे श्वसुर ने इसे स्वीकार किया और यह प्रथा उनके घर पर आज भी है। परिणाम सुखद् ही है। हम उस समय अपने अन्तरंग भावों को प्रकट करने में सफल होते हैं।

'यह ठीक है कि सब लोग सब बातों से सहमत नहीं होते थे, परन्तु इससे हममें अपने विरुद्ध बात धैर्य से सुनने और उसका उत्तर देने का अभ्यास हो रहा था।

'अब मैं भाग्यवश आपके बीच आ गई हूँ। मैं वही बात यहाँ चाहती हूँ। मुझे मिस रैना ने बताया है कुछ लड़कियाँ इस पर आपत्ति कर रही हैं?

'इस कारण मैं चाहती हूँ कि इस विषय में आप सबकी राय जानूँ।'

सबसे पहले रैना ही बोली। उसने कहा, 'मैं यहाँ सबके सामने अपनी कुछ निजी बातें नहीं करना चाहती। इस कारण खाने के समय अपनी सहूलियत और रुचि के अनुसार मैं अपने साथी चाहती हूँ।'

इसके उपरान्त एक-एक कर पाँच लड़कियों ने यही बात कही। इस पर प्रिंसिपल ने हँसते हुए कहा, 'तो तुम सब प्राइवेट बातें करना अपना अधिकार मानती हो?'

इस पर एक नरूला उठ कहने लगी, 'मैडम!' उसने प्रिंसिपल को सम्बोधन कर कहा, 'हम सब नहीं! मैं समझती हूँ कि हम में बहुत हैं जो अपनी कुछ भी प्राइवेट बात कहने अथवा करने के लिए नहीं रखती।'

इस पर सब हँसने लगीं। उसने आगे कहा, 'संसार में प्राइवेट दो ही व्यवहार हैं। एक पीनल कोड में अपराध, दूसरे पति-पत्नी का सम्बन्ध। मैं समझती हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम पीनल कोड में कहे अपराध नहीं करेंगी। इसके लिए हम स्वीकृति भी न
माँगती। और दूसरा है पति-पत्नी कर्म। यहाँ यदि कोई विवाहिता है तो वह पति
मिलने की छुट्टी भी पा जाती है। इस कारण मुझे मिस रैना की युक्ति समझ में न
आयी।

'हमारे हॉस्टल की सुपरिन्टेंडेण्ट एक युवती ही हैं और हमारे जैसे
मनोद्‌गार रखती होंगी, यह मेरा विश्वास है।'

नरूला के उपरान्त दोनों प्रकार के विचारों वाली अपने विचार प्रकट कर
रहीं। अन्त में रोहिणी ने कहा, 'भोजन का अवसर एक सामाजिक व्यवहार क
अवसर है। मैं चाहती हूँ कि हम सब परस्पर सम्बन्ध गहरे करें।

'परन्तु यह सम्बन्ध कोई बलपूर्वक नहीं बनाया जा सकता। अतः मेरा य
खुला निमन्त्रण है कि मेरे साथ भोजन करने वाली बहनें मेरी मेज पर आक
भोजन करेंगी तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। कदाचित उनको भी मेरे आनन्द क
प्रतिक्रिया प्राप्त होगी।'

'इस कारण मेरी यह व्यवस्था है कि रसोईघर में एक रजिस्टर खुला रहे
और जो चाहे, जिस दिन चाहे, कॉमन रूम में खाने के लिए अपना नाम लि
जाया करे। उसके लिए कॉमन रूम में खाना लग जाया करेगा। मैं भी अपना नाम
जिस दिन सबके साथ भोजन करने की इच्छा करूँगी, रजिस्टर पर लिख दि
करूँगी।

'प्रातः का अल्पाहार वैसे ही करेंगे, जैसे पहले होता रहा है।'

इस पर प्रिंसिपल ने रोहिणी से पूछ लिया, 'इससे लाभ क्या होगा? कॉम
रूम में खाने वाली धीरे-धीरे कम हो जायेंगी और अन्त में तुम अकेली रह जाओगी'

रोहिणी का कथन था, 'जो स्थिति अब है, उससे कम नहीं होगी। मैं अके
तो इस समय भी हूँ। परन्तु मैं समझती हूँ कि मनुष्य में एक मनोवृत्ति है सामाजिक
की। उसको पनपने का अवसर मिलेगा।'

इस योजना में किसी को आपत्ति नहीं हुई। अगले दिन रसोईघर में ए
रजिस्टर रख दिया गया। उसके एक पन्ने पर उस दिन की तिथि लिखी थी और उ
पर यह लिखा था कि रजिस्टर प्रातःकाल से मध्याह्न के दो बजे तक खुला रहेग

उस दिन रोहिणी ने सर्वप्रथम अपना नाम उस पर लिखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:6:

स्टूडेंट्स यूनियन की सभा में रोहिणी का व्याख्यान हुआ। उसका प्रथम वाक्य था, 'इतिहास फिक्शन से अधिक सत्य होती है।' रोहिणी ने कई उदाहरण देते हुए बताया, 'इतिहास जो समय पर लिखा जाता है, वह देखने वाले की दृष्टि, सुनने वालों की कानों की शक्ति से सीमित होता है और उसका अर्थ लिखने वालों की बुद्धि की सीमा का परिचय देता है।

'मनुष्य की दृष्टि समान नहीं होती। न ही सुनने की शक्ति तथा साधन समान होते हैं। इस कारण एक ही घटना का वृत्तान्त विभिन्न लेखक भिन्न-भिन्न लिखते देखे जाते हैं। इनमें से कौन-सा वृत्तान्त सत्य है और कौन-सा वृत्तान्त झूठ है, घटना के पीछे इतिहास लिखने वाले प्रमाण और युक्ति से जोड़-तोड़ लगाकर लिखते है।

'परिणाम यह होता है कि किसी भी घटना का वृत्तान्त लेखक की योग्यता और उसके जोड़-तोड़ करने की योग्यता का परिचय देता है। इस कारण घटना के वृत्तान्त की सत्यता दावे से नहीं कही जा सकती।

'इसके विपरीत एक कहानी लेखक, कहानी की घटनाएँ तो काल्पनिक ही लिखता है। परन्तु वह विशेष परिस्थितियों में कर्म और उसका फल युक्ति से वर्णन करता है। यहाँ कर्म और फल ही ती वस्तुस्थिति है, जिसके लिए इतिहास लिखा तथा पढ़ा जाता है और वह एक उपन्यास में अधिक युक्तियुक्त, अधिक स्वाभाविक और अधिक स्पष्टता से बताया जा सकता है।

'मैं इतिहास के ग्रन्थों से ऐतिहासिक उपन्यासों को अधिक उपकारी मानती हूँ।'

'प्राचीन हिन्दू समाज ने इसका एक समाधान निर्माण किया था। वह समाधान है पुराण। पुराण ऐतिहासिक उपन्यास है। उनमें ऐतिहासिक कर्मों और उनके फलों पर कहानियाँ लिखी गयी हैं।

'इसमें से एक कहानी मैं आपको सुनाती हूँ।

'कहानी है सीता की अग्नि-परीक्षा की। सीता रावण जैसे राजा की कैद में एक वर्ष के लगभग रही थी। राम ने युद्ध कर उसे छुड़ाया था। इस कारण एक सामान्य व्यक्ति को संदेह होना स्वाभाविक था कि वह रावण की भोग सामग्री बनी थी अथवा नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस पर, रामायण का लेखक लिखता है, राम का कहना था कि वह सीता को अयोध्या लेकर जायेगा तो उसकी प्रजा, उसकी पवित्रता पर संदेह करेगी। इस कारण वह उसको अपने साथ ले जाकर राज्य नहीं कर सकता।

'इस पर सीता ने कहा था, 'तो मेरे कथन की परीक्षा कर ली जाये?'

'परीक्षा की गयी! लिखा है कि जलती अग्नि में सीता बैठ गयी और अग्नि ने उसे नहीं जलाया। इस पर यह सिद्ध हो गया कि वह सती-साध्वी है।

'इसे अग्नि-परीक्षा का नाम दिया जाता है। अग्नि-परीक्षा का अभिप्राय अग्नि में बैठना भी हो सकता है। इसका अभिप्राय रावण के दास-दासियों से साक्षियाँ और उनसे उत्तर-प्रत्युत्तर करना भी हो सकता है।

'इस कारण अग्नि-परीक्षा का वाक्य भौतिक अग्नि में बैठना नहीं रहा। यह वाक्य अन्तरंग जाँच, साक्षियों के वक्तव्य की तर्क से परीक्षा का द्योतक हो गया है। अतः अग्नि-परीक्षा एक प्रक्रिया हो गयी है जो इतिहास तो नहीं है, परन्तु एक तर्क-वितर्क का विषय है।

'इस प्रकार एक काल्पनिक कहानी एक उपकारी इतिहास बन गया है।'

इस प्रकार आधे घंटे के वक्तव्य के उपरान्त छात्राओं के प्रश्न हुए और रोहिणी ने यथासम्भव उनके उत्तर देने का यत्न किया।

यह शनिवार का दिन था। इस दिन रोहिणी के माता-पिता, जीजा रत्नचन्द बलूजा और मोहिनी मिलने आ पहुँचे।

मोहिनी इन सब को लेकर आयी थी। रोहिणी उनको अपने कमरे में ले गयी। जब सब बैठ गये तो पिता ने कहा, 'मेरा तुम्हारे प्रति रोष मिट गया है।'

'परन्तु पिताजी! रोष किस कारण था?' रोहिणी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

'यह इस कारण था कि तुम अपनी सास के घर में विधवा के रूप में रहती हुई अपना जीवन व्यर्थ गँवा रही थीं।'

'पिताजी! प्रत्येक स्थान और अवसर अपने-अपने काल में उपयोगी होता है। उस समय वह स्थान और वहाँ का वातावरण भी अपना लाभ रखता था। उससे लाभ उठाने में मुझे ईश्वर की सहायता मिली है।'

मोहिनी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'परन्तु तुम्हारी वर्तमान स्थिति तो तुम्हें जीजा जी ने निर्माण की है?'

'ठीक है! परन्तु जीजा जी को इसकी प्रेरणा भी तो मेरे, माँ के घर के स्थान पर ससुराल में रहने न दी है। यदि मैं माँ के घर रही होती तो कदाचित इनके मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विषय में विचार करने का अवसर ही उत्पन्न नहीं होता।'

इस पर मोहिनी ने बताया, 'आज प्रातः काल तुम्हारे श्वसुर वकील साहब से मिलने कोठी पर आये थे। वह एक नई समस्या लेकर उपस्थित हुए थे।'

'क्या समस्या थी?' रोहिणी ने उत्सुकता से पूछा।

'वह पूछ रहे थे कि तुम्हारा अपने पति की सम्पत्ति में कितना अधिकार है?

'उन्होंने बताया कि तुम्हारे देवर ने उनके घर में भूख-हड़ताल कर रखी है। भूख हड़ताल में उसका प्रयोजन यह है कि उसकी दुकान में रवि जी के इक्कीस हजार रुपये जमा हैं।

'महेन्द्र चाहता है कि वह धन तुमको दे दिया जाये और लालाजी पूछने आये थे कि इसमें कानून क्या कहता है।'

'तो जीजाजी! आपने उनको क्या बताया है?'.

बलूजा साहब बोले, 'मैंने बताया है कि कानून तुमको गुजारा, जो लगभग पचास रुपये महीना हो सकता है, दिलवा सकता है। सम्पत्ति में तुम्हारा किसी प्रकार का हक नहीं है।'

'तो जीजाजी! आप उनसे कह दीजिये कि मैं अब उनसे पचास रुपये महीना भी नहीं मागूँगी?'

रत्नचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुम तो नहीं माँग रहीं। परन्तु महेन्द्र कहता है कि उस धन पर तुम्हारा अधिकार है और इसे परिवार तथा दुकान में रखना पाप है। पाप-पुण्य का निर्णय कानून नहीं करता। परिस्थिति और प्राकृतिक नियम इसका निर्णय करते हैं। इस कारण, वह कहता है कि वह उस दुकान की कमाई का एक-एक दाना पाप से सिंचा हुआ है। वह चाहता था कि उसको दुकान से पृथक कर दिया जाये और उसको पृथक काम करने के लिये इक्कीस हजार रुपये पूंजी के रूप में दिये जायें।

'पिता का कहना है कि इतना रुपया दुकान से निकाल देने पर दुकान चल नहीं सकेगी। महेन्द्र कहता है कि दुकान तो वैसे भी चलनी निरर्थक हो जायेगी, जब वह अनशन कर प्राणान्त कर लेगा।'

'तो इससे मैं क्या कर सकती हूँ?' रोहिणी ने पूछा।

मोहिनी ने कहा, 'तुम्हारे जीजाजी उनकी इस समस्या को सुलझाने में लीन हैं। आज सायंकाल वह पुनः वहाँ जा रहे हैं।'

'मुझे अब उनके इस झगड़े में रुचि नहीं। जिस दिन मोहिनी मेरे साथ वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी थी, उस दिन मोहिनी के चले आने के उपरान्त महेन्द्र ने कहा था कि व
अपने पिता से लड़ आया है और यदि उसकी बात न मानी गयी तो वह भूख
रहकर प्राण छोड़ देगा।'

रोहिणी के पिता गिरिधारीलाल ने कहा, 'मैंने वकील साहब को इस
उपाय बताया है। लिखा-पढ़ी करके दुकान का मालिक महेन्द्र को बना दें औ
पिता को दुकान पर वेतनधारी मैनेजर बना दें। पिता-पुत्र इकट्ठे घर में रहें।'

रत्नचन्द हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, 'यह तो हाथ को पीछे से घुमाक
नाक पकड़ने वाली बात है।'

अब रोहिणी ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'कुछ मूर्ख हाथ घुमाक
नाक पकड़ना पसंद करते हैं।'

दो घंटा भर सब वहाँ रहे और पीछे ये लोग विदा हुए।

रत्नचन्द ने जाते हुए कहा, 'मैं पाँच बजे सन्तराम को मिलने का वचन
चुका हूँ। मैं पिताजी का सुझाव भी उनको बता दूँगा और कदाचित बात बन जा
वैसे मुझे तो यह प्रतीत हो रहा था कि पिता पुलिस में रिपोर्ट लिखाना चाहता है कि
उसका पुत्र आत्म-हत्या कर रहा है और उसे रोका जाये। इसी विषय में मुझसे रा
करना चाहता है।'

'और आप क्या चाहते हैं?'

'मैं अनिश्चित मत हूं। यदि मेरे घर में कोई भूख हड़ताल करे तो मैं पुलिस
रिपोर्ट नहीं करूंगा और भूख हड़ताल करने वाले से समझौता करूंगा। वह
कुछ ऐसे ढँग से जिससे भूख हड़ताल करने वाले को अपनी भूल समझ आ
जाये।'

पाँच बजे के लगभग सब रोहिणी से विदा हुए। मोहिनी घोड़ागाड़ी में अप
माता-पिता को छोड़ने लाहौरी दरवाजे तक जाना चाहती थी। रत्नचन्द भी उ
गाड़ी में अनारकली बाजार में सन्त राम की दुकान पर जा पहुँचा।

सन्त राम बलूजा साहब को लेकर दुकान के पीछे के कमरे में चला गय
वह स्टाक रूम का हिसाब किताब रखने के लिए कार्यालय था। वहाँ बलू
साहब को बैठाकर सन्तराम ने कहा, 'अभी-अभी घर का सेवक राधेलाल आ
है और बता गया है कि महेन्द्र की अवस्था शोचनीय हो रही है। आपके समझ
पर वह नमकीन जल चम्मच चम्मच कर लेने लगा है, परन्तु बिना अन्न के
दुर्बलता बढ़ती जाती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह तो स्वाभाविक ही है।'

'तो अब मुझे क्या करना चाहिए?'

'देखिये लाला जी! कानून तो कचहरी में चलता है और मैं जानता हूँ कि वह व्यक्ति की बेसमझी का समाधान नहीं। आपकी समस्या पर मैंने कानून से हटकर विचार किया है। यदि ध्यान से सुने तो मैं बताता हूँ।'

'बताइये! मैं आपको एक बुद्धिमान व्यक्ति मानता हूँ।'

'तो सुनिये। आप दुकान महेन्द्र के नाम बदल दें। उसे हिब्बानामा लिखकर दुकान का मालिक बना दें।

'आप दुकान के मैनेजर बन जाइये। वेतन दो सौ रुपये महीना निश्चय कर लीजिये और महेन्द्र को कहिये कि दुकान का काम वह चलाये।'

'तब तो वह वही करेगा जो मुझे करने को कह रहा है अर्थात रोहिणी को इक्कीस हजार दे देगा।'

'परन्तु दुकान भी तो चलाने की बात करेगा। यह उसकी बुद्धि पर छोड़ दीजिये कि वह क्या करेगा।'

'हम सब भूखे मर जायेंगे।'

'आप उसमें मैनेजर जो होंगे।'

उस दिन तो सन्तराम नहीं माना, परन्तु अगले दिन सन्तराम बलूजा साहब से मिलने आया और महेन्द्र के नाम दुकान का हिब्बानामा लिखने के लिये कहने लगा।

बलूजा ने कहा, 'इसमें मेरी पांच सौ रुपये फीस जमा कर दीजिये और मैं यह हिब्बानामा परसों रजिस्टर करवा दूँगा।'

'परन्तु लड़के की भूख हड़ताल तो आज तुड़वानी होगी।'

'तो आप उन पांच सौ रुपयों के साथ एक पत्र मेरे नाम लिखिए कि आप दुकान और घर की सब सम्पत्ति महेन्द्र के नाम गिफ्ट कर रहे हैं और इस विषय में आवश्यक कागज बनवाऊं। तब मैं भूख हड़ताल तुड़वा सकूँगा।'

सन्तराम बहुत परेशान प्रतीत होता था। बलूजा ने मुंशी से कह कर एक पत्र सन्तराम की ओर से लिखवाया। उस पर उसके हस्ताक्षर करवाये। सन्तराम ने पांच सौ रुपये मुंशी के पास जमा करवाये तो बलूजा वह पत्र लेकर सन्तराम के घर जा पहुंचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधा घंटा महेन्द्र से पृथक में बात कर उसने उसे संतरे का रस लेने के लिये तैयार कर दिया।

दयावन्ती रस लायी तो रत्नचन्द बलूजा ने पूछ लिया, 'महेन्द्र की पत्नी कहाँ है?'

'वह रूठ कर मायके गयी हुई है।'

'क्यों?'

'वह समझती है कि उसका पति अपनी भाभी से प्रेम करता है और ऐसे दुश्चरित्र पति के पास वह नहीं रह सकती।'

रत्नचन्द ने महेन्द्रनाथ के मुख पर देखा तो महेन्द्र ने मुस्कराते हुए कहा, 'वह ठीक समझती है। परन्तु उस प्रेम में भावना क्या है? मैं भाभी से प्रेम करता हूँ परन्तु बहन जैसा। वह मूर्ख इस भावना को समझ नहीं सकी।'

रत्नचन्द मुस्कराते हुए चला आया।

:7:

सगुनी का पिता मदनमोहन साहनी भी वकील था और सगुनी उससे राय कर ही व्यवहार कर रही थी।

सगुनी के विवाह के कुछ दिन उपरान्त ही मदनमोहन ने अपनी लड़की के भविष्य को सुधारने के लिये अपनी योग्यता का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया था।

उसे जब ज्ञात हुआ कि महेन्द्र के माता-पिता ने महेन्द्र से रोहिणी का विवाह प्रस्तावित किया था और वह प्रस्ताव रोहिणी ने स्वीकार नहीं किया था तो वह रोहिणी का सम्बन्ध उसके जीजा जी से समझने लगा था। अतः उसने ही सगुनी को भड़काया और रोहिणी को बदनाम करने की चेष्टा की।

इस सब का परिणाम ही हुआ था कि रोहिणी कॉलेज में नौकरी करने की योजना बना बैठी थी।

परन्तु अब महेन्द्र ने नया झगड़ा आरम्भ कर दिया था। मदनमोहन समझ गया था कि संसार में प्रत्येक घटना की चिकित्सा कचहरी और सरकारी कानून है। इस कारण महेन्द्र की बात सुन उसने लड़की को कह दिया कि पति का घर छोड़ कर आ आओ और मैं तुम्हारे पति को विवश कर दूँगा कि वह तुमसे सुलह करे।

'कैसे?' सगुनी का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बलूजा और रोहिणी बदनाम होंगे। उनके सम्बन्ध की चर्चा चली तो बलूजा साहब की प्रैक्टिस को हानि पहुँचेगी। दूसरी ओर अपनी इज्जत बचाने के लिये तुम्हारा पति तुम्हारे सामने नाक से लकीरें खींचने लगेगा।'

सगुनी अपने पिता को रत्नचन्द बलूजा से कम योग्य नहीं समझती थी। इस कारण वह चुपकर रही।

भूख हड़ताल बृहस्तिवार को आरम्भ हुई थी और मंगलवार तक चलती रही। महेन्द्र का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा तो उसने पुलिस में रिपोर्ट कर दी कि सन्तराम का लड़का आत्म-हत्या करने का यत्न कर रहा है।

इस रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि मंगल के दिन पुलिस ने महेन्द्र के वारण्ट बनवाये और सन्त राम के घर पर छापा मारा।

पुलिस आयी तो महेन्द्र खीलों का पानी ले रहा था।

पुलिस के साथ एक सरकारी डॉक्टर भी था। उसने महेन्द्र से पूछ लिया 'तो तुम खुदकशी कर रहे थे?'

'हां! परन्तु अब मैं अन्न ले रहा हूं।'

'इस पर भी खुदकशी करने का यत्न एक अपराध है और तुम्हारे वारण्ट हैं। कोई ज़ामिन हो तो हाजिर जमानत पर छोड़े जा सकते हो।'

इस पर सन्तराम को दुकान से बुलाया गया और उसने अपने एक पड़ोसी की जमानत पर महेन्द्र को छुड़वा लिया। इस प्रकार यह झगड़ा समाप्त हुआ।

जिस दिन महेन्द्र स्वस्थ होकर दुकान पर जाने लगा, सन्तराम ने पुत्र से पूछा, 'अब बाप को नौकर कब रखोगे?'

महेन्द्र ने मुस्करा कर कहा, 'पिता जी! दुकान तो अब मेरे नाम हो ही गयी है। वकील साहब ने आपके हक में एक शर्त लिखवा ली है। वह यह कि आप चाहें दुकान पर काम करें, चाहे न करें, मैं आपको दो सौ रुपया महीना जीवन-पर्यन्त दूँगा।'।

'तो तुम यह भी देना नहीं चाहते थे?'

'मैं तो इससे कुछ अधिक ही देने का विचार रखता था, परन्तु वकील साहब ने इतना ही उचित समझा है। मैं यह चाहता हूं कि आप अब घर पर बैठ भगवान का भजन किया करिये। दो सौ रुपये के अतिरिक्त मैं घर का खर्च भी दिया करूंगा।'

'और वह खर्च किसे दोगे?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पहले की भांति माँ को।'

'तो तुम माँ को भी नौकर रखना चाहते हो?'

'पिताजी! माँ पहले मुझे खाना कपड़े देती थी तो मेरी नौकरी करती क्या? और अब तक आप मुझे और मेरी पत्नी को दो सौ रुपये देते थे तो नौकर रखा हुआ था क्या?'

सन्तराम इसका उत्तर नहीं दे सका और चुप कर रहा।

महेन्द्रनाथ ने दुकान का चार्ज लेते ही पहला काम यह किया कि रोहिणी एक पत्र लिखा और उस पत्र के साथ एक प्रोनोट लिखकर भेज दिया।

पत्र रोहिणी को मिला तो वह उस पत्र और प्रोनोट को लेकर मोहिनी के जीजा जी से राय करने जा पहुंची। सायंकाल पांच बजे चाय के समय वह पहुं चाय लेते हुए महेन्द्र का पत्र जीजा जी के सम्मुख रख उसने पूछ लिया, 'यह आपकी राय से हो रहा है क्या?'

रत्नचन्द ने लिफाफे से पत्र निकाल पढ़ा। उसमें लिखा था।

'मातातुल्य भाभी के चरणों में महेन्द्र का नमस्कार पहुँचे।

'मैं अपनी बुद्धि से यह समझा हूं कि आपने जब दूसरा विवाह करने इन्कार किया था तो आप भैया की विधवा के रूप में जीवन व्यतीत करने विचार रखती हैं। इसका अर्थ यह है कि आप हमारे घर का अटूट अंग बन रहना चाहती हैं। आप किसी बालक को गोद लेकर पुत्र भी बना सकती हैं वह आपका पुत्र भैया का भी पुत्र माना जाना चाहिये।

'इस सबका अर्थ मैं यह समझा हूँ कि आप भैया की सम्पत्ति उत्तराधिकारिणी हैं। और आप किसी को गोद लें तो वह भी भैया की सम्पत्ति उत्तराधिकारी होना चाहिये।

'अभी तक भैया की सम्पत्ति दुकान में इक्कीस हजार रुपये जमा है और धन एकदम दुकान से निकालकर दिया नहीं जा सकता। इस कारण यह धन पहले भैया के नाम था, अब आपके नाम रजिस्टर में दर्ज कर लिया गया है। धन आपसे उधार लिया मानकर उसका बैंक सूद आपको दे दिया जाया करेग

'यदि इस धन में से कुछ कभी आपको आवश्यकता हो तो उचित नोटि पर वह धन आपको दिया जा सकेगा।

'ईश्वर की कृपा रही तो शीघ्र ही दुकान को इस स्थिति में ले आऊँगा आपका रुपया आपको लौटाया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप इस प्रोनोट की और मेरे पत्र की पहुँच की सूचना भेजें।'

रत्नचन्द ने पत्र पढ़ा और पढ़कर कहने लगा, 'मैं नहीं समझता था कि यह लड़का इतना समझदार है।'

'परन्तु जीजाजी! मैं इस धन को स्वीकार नहीं करुँगी।'

'अस्वीकार करने का अभी समय नहीं आया। इस कागज के टुकड़े का कुछ मूल्य नहीं है। इसका मूल्य तो तब बनेगा, जब महेन्द्र इसका धन देने जायेगा अथवा इसको वसूल करने के लिए तुम कचहरी में दावा करना चाहोगी। अन्यथा इस कागज के टुकड़े का कुछ मूल्य नहीं।'

'तो मैं क्या करूं?'

'यह तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।'

रोहिणी इस सुझाव पर गम्भीर विचार में मग्न हो गयी।

विचार कर उसने कुछ निश्चय किया और चुप कर रही। यह कुछ वैसा ही निश्चय था, जैसा उसने उस दिन लिया था, जब उसकी सास ने कहा था कि उसके जत-सत पर किसी को विश्वास नहीं आ सकता।

उस दिन भी वह चुप रह कार्य करने पर उद्यत हुई थी। आज भी वह चुप रहकर कार्य करने की बात विचार करने लगी थी।

उसने प्रोनोट और पत्र उठाकर पुनः अपने पर्स में रख लिया और चाय लेकर कॉलेज हॉस्टल को लौट गयी। वहाँ पहुँच उसने महेन्द्र को उसके पत्र का उत्तर देते हुए लिखा, 'भैया महेन्द्र! तुम्हारा पत्र और उसके साथ एक प्रोनोट मिला।

'मैं समझती हूँ कि तुम मुझे अपने घर का अंग मानते हो, वह मैं हूँ। भाग्य से तुम्हारे बड़े भाई साहब से मेरा विवाह हुआ था और यज्ञ वेदी पर बैठे हुए मैंने वचन दिया था कि जीवन-भर मेरा उनसे सम्बन्ध रहेगा। यह नहीं कि उनका सम्बन्ध मुझसे रहेगा। मैंने तो यही वचन दिया था कि मेरा सम्बन्ध एक सती-साध्वी पत्नी के रूप में आजीवन रहेगा। इस कारण वह इस समय कहाँ हैं, यह मेरे विचार का विषय नहीं है। मेरा सम्बन्ध उनसे है। मेरा सम्बन्ध मन और जीवात्मा का है। इसका तुम्हारे परिवार की सम्पत्ति अथवा उनकी अपनी सम्पत्ति से नहीं। यह जीवात्मा का जीवात्मा से सम्बन्ध है।

'इस कारण तुम्हारे प्रोनोट को न तो मैं अपना समझती हूँ, ही उससे कुछ पाने का विचार रखती हूँ।

'वैसे तुम भाई हो और भाई, बहन को कभी कुछ देगा तो बहना इन्कार नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी। परन्तु वह तुम्हारे पिता के परिवार की सम्पत्ति अथवा तुम्हारे भाई सा
की सम्पत्ति से सम्बन्ध नहीं रखता। यह बहन-भाई के बीच की बात होगी।

'इस पर भी मैं तुम्हारा भेजा प्रोनोट लौटा नहीं रही। जब कभी तु
लड़का होगा और उसके किसी शुभ अवसर पर तुम मुझे स्मरण करोगे तो मैं व
प्रोनोट उसके गले में बाँध दूँगी। उसे ही में अपना लड़का समझ लूँगी।

'सगुनी बहन से झगड़ा करने की आवश्यकता नहीं। उसे जाकर अपने
ले आओ। मैं समझती हूँ कि यदि उसमें लेशमात्र भी मानवता हुई तो वह तुम
संकेत मात्र से चली आयेगी।'

महेन्द्र ने पत्र का उत्तर नहीं दिया और प्रतिमास वह इक्कीस हजार रुपये
साढ़े चार प्रतिशत के हिसाब से ब्याज अठहत्तर रुपये बारह आने उसके खाते
जमा करने लगा।

छः महीने के उपरान्त ब्याज की रकम चार सौ बहत्तर रुपये आठ आने व
तो महेन्द्र ने भाभी के बैंक में खाते का नम्बर पता किया और उसमें यह राशि ज
करा दी।

रोहिणी को तीन सौ पचास रुपये मासिक वेतन तथा हॉस्टल के प्रबन्ध
ऐलाउंस मिलता था। उसमें से उसका सवा सौ रुपये महीना व्यय होता था। शे
धन वह पंजाब नेशनल बैंक में जमा कराने लगी थी।

उसे कॉलेज में एक दिन बलूजा साहब का टेलीफोन आया। वह टेलीफो
सुनने लगी तो उसके जीजा ने बताया, 'रोहिणी! तुम्हारी बहन ने एक स्वस्थ औ
सुन्दर लड़के को जन्म दिया है। वह तुम्हें स्मरण कर रही है।'

'ओह! परन्तु जीजाजी! कल ही तो मैं उसके पास बैठी थी और इस
कोई लक्षण दिखायी नहीं दिया था।'

'हाँ! आज प्रातःकाल उसे कुछ कष्ट अनुभव हुआ था। लेडी डॉक्टर
आने के पन्द्रह मिनट उपरान्त बच्चा हो गया। माँ और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं।'

'मैं आ रही हूं।'

रोहिणी ने ताँगा किया और बलूजा साहब की कोठी पर जा पहुँची।

रोहिणी ने बहन को आराम से लेटे देख उसने हँसते हुए कहा, 'बहन! तु
एक सीढ़ी आगे निकल गयी हो।'

'हाँ! मैं भी ऐसा ही अनुभव करती हूँ। परन्तु जीवन में पहली बार मुझे कु
ऐसा अनुभव हुआ है कि मेरा दिल बैठ रहा है। मुझे कछ ऐसा अनुभव हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इस दिशा में भी मैं तुमसे एक पैर आगे ही रहूँगी।'

'सत्य?' रोहिणी ने इसे मजाक समझ पूछ लिया, 'किस स्थान पर बैठ रहा है? कुर्सी पर अथवा सोफा पर?'

'तुम्हारे सिर पर?' मोहिनी ने कहा, 'डॉक्टर कह रहा था कि यह एक हल्का-सा दिल का दौरा है। यह मेरे रक्त अधिक निकल जाने के कारण हुआ है और शीघ्र ही मैं ठीक हो जाऊँगी। परन्तु...' मोहिनी कहती-कहती रुक गयी।

'परन्तु क्या?'

'कुछ नहीं। फिर बताऊँगी। यह देखो, तुम्हारे जीजाजी ने एक नर्स मेरी सेवा के लिए रख दी है। यह चौबीस घंटे मेरे पास रहेगी।'

इस समय लेडी डॉक्टर जच्चा-बच्चा को देखने आयी। उसने स्टेथस्कोप लगा दिल की अवस्था देखी ओर कह दिया, 'चिन्ता की बात नहीं है। अब दिल की गति ठीक चल रही है।'

रोहिणी सायं सात बजे तक वहाँ रही और फिर हॉस्टल में रात के खाने के समय जा पहुँची।

कुछ दिन हुए उसने अपनी पास बुक बैंक में जमा-निकासी दर्ज कराने के लिए भेजी थी। वह उसकी अनुपस्थिति में डाक द्वारा आयी थी। उसने पास बुक और चेक बुक का मिलान किया और बैंक की पासबुक में एक रकम चार सौ बहत्तर रुपये आठ आने की अधिक जमा देख वह चकित रह गयी। उसने समझा कि भूल से किसी अन्य व्यक्ति की धन-राशि उसके हिसाब में जमा हो गयी है।

अगले दिन वह कॉलेज के उपरान्त बहन की खबर लेने गयी। मोहिनी सब प्रकार से स्वस्थ थी। बच्चा भी मजे में सो रहा था। वह उसके हृदय की गति की बात पूछना चाहती थी, परन्तु उसने जान-बूझकर नहीं पूछी। वह डरती थी कि हृदय की बात पूछने पर मोहिनी इस भयंकर रोग के परिणाम पर विचारने लगेगी। इससे पुनः दौरा पड़ सकता है। वह दो बजे आयी हुई छः बजे हॉस्टल में लौट आयी।

इसी प्रकार बारह-तेरह दिन तक वह नित्य बहन का सुख-समाचार लेने जाती रही। तेरहवें दिन जब गयी तो उस दिन मोहिनी स्नानकर प्रसूति-गृह से बाहर निकली थी। आज रोहिणी को वह नित्य से अधिक दुर्बल और पीत मुख दिखाई दी। उसने बहन से इस बात का उल्लेख नहीं किया। परन्तु जीजा जी से पृथक में उसने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हॉस्टल को लौटने वाली थी कि रत्नचन्द ने कह दिया, 'चलिये रोहि जी! मैं आपके कॉलेज की ओर ही जा रहा हूँ। आपको भी अपनी घोड़ा-गाड़ी ले चलता हूँ।'

रोहिणी ने इसको सुअवसर जान मान लिया। जब दोनों घोड़ागाड़ी में कॉले हॉस्टल की ओर जा रहे थे तो रोहिणी ने पूछ लिया, 'आज मोहिनी कुछ नित्य अधिक गम्भीर और पीत मुख दिखाई दी है?'

'हाँ', बलूजा साहब ने बताया, 'आज फिर इसे आध घंटे के लिये दिल दौरा पड़ा है।'

'यह क्या हुआ है?'

'मैं समझता हूँ कि शरीर में कुछ खराबी उत्पन्न हो गयी है। जो डॉक्टर ज नहीं सकी। कल डॉक्टर ऐण्डरसन से इसका चैकअप कराऊँगा।'

रोहिणी को भी इससे चिन्ता अनुभव हुई थी। उसने बात बदल दी अ बच्चे की बात आरम्भ कर दी।

'बस, उसी की तो चिन्ता है।' बलूजा साहब ने कहा, 'बेचारी ने नौ मास विपुल प्रयत्न से उसका निर्माण किया है और उसका सुख भोगने से ही वह वंचि हो रही है।'

इसके उपरान्त पूर्ण मार्ग-भर वे दोनों चुपचाप अपने-अपने विचारों में लं रहे। जब गाड़ी हॉस्टल के अहाते के बाहर पहुंची और रोहिणी गाड़ी से उत लगी तो बलूजा ने कहा, 'मुझे तो भविष्य अंधकारयुक्त दिखाई देने लगा है। ए तुम ही उसमें प्रकाश की किरण दिखाई दे रही हो।'

रोहिणी भी भयंकर आशंका से ग्रसित चिन्ता में डूबी हुई थी। उसे जीजा की बात का कुछ उत्तर नहीं सूझा। उसने कहा, 'मैं अभी कुछ दिन नित्य बहन मिलने जाया करूँगी।'

इतना कह वह गाड़ी से उतर हॉस्टल को चल दी।

:8:

हॉस्टल में कॉमन रूम में एक साथ भोजन करने की उसकी योजना प्रिंसिप की आशा के विपरीत सफल हो रही थी। हॉस्टल में इस समय सैंतीस लड़कि थीं। उनमें से प्रायः रात का खाना सुपरिन्टेंडेंट के साथ एक ही मेज पर खाने च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती थीं। इनकी संख्या न्यूनाधिक तो होती रहती थी, परन्तु चौबीस-पच्चीस से अधिक ही रहती थीं। अब मिस रैना और उसकी साथी ने भी कभी-कभी इस सहभोज में सम्मिलित होती रहती थीं।

उस दिन प्रिंसिपल मिस रोबर्टसन भी कॉमन रूम के भोज में सम्मिलित होने के लिये नाम लिख गयी थीं। इस कारण रोहिणी के अपने कमरे में पहुंचते ही हैडकुक ने उसे आकर यह सूचना दी, तो रोहिणी ने कह दिया, 'आज कोई स्पेशल डिश बन जानी चाहिये।'

'प्रिंसिपल साहिबा ने कहा है कि आज भोजन करने वालों के लिए 'ग्रिल्ड चिकन' बनना चाहिये। इसका खर्च वह अपने पास से दे गयी हैं।'

'और मैं कहती हूँ कि सबके लिये बादाम पिस्ते वाली बढ़िया खीर की डिश बनायी जाये और उसका खर्चा मैं दूँगी।'

हैड-कुक मुस्करायी और चली गयी।

खीर की डिश सबके लिये थी, परन्तु 'ग्रिल्ड चिकन' तो केवल नौन-वैजिटेरियन्स के लिये थी। इस कारण आमिष भोजन करने वालों को दुहरे लाभ की चर्चा खाने की मेज पर होने लगी।

मिस रौबर्टसन ने कुक से पूछा, 'यह खीर आज का नोर्मल मीन्यू है अथवा स्पेशल?'

'स्पेशल है। सुपरिन्टेंडेण्ट बहनजी ने अपने पास से इस सबके लिये खर्च दिया है।'

'रोहिणी जी!' प्रिंसिपल ने पूछ लिया, 'यह किस उपलक्ष्य में है?'

'आपके छः मास के उपरान्त हमारे इस सहभोज में सम्मिलित होने की प्रसन्नता में।'

मिस रैना बोल उठी, 'इससे हम माँस खाने वालियों को दुहरा लाभ हुआ है। प्रिंसिपल साहिबा के आने से हमें दो स्पेशल डिश खाने को मिल रही हैं।

प्रिंसिपल ने कह दिया, 'और शाकाहारी खाने वालों को इससे घाटा रहा है।'

'इसमें कारण है।' रोहिणी ने कह दिया, 'हम सब प्राणियों को समान भाव से देखते हैं और माँसाहारी हमसे यह भेदभाव रखते है।

इस पर तो माँस खाने और न खाने के हानि-लाभ पर बात होने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन करते हुए 'ग्रिल्ड चिकन' के स्वाद की प्रशंसा होने लगी तो हि
नरूला ने खीर के गुणों का वर्णन करना आरम्भ कर दिया।

रोहिणी चर्चा से पृथक रहकर मुस्कराती हुई देखती रही। छात्राएँ जब परस्
हँसी-मज़ाक कर रही थीं तो प्रिंसिपल ने कह दिया, 'रोहिणीजी! आपको मुर्
खाने में आपत्ति किसलिए है?'

'इससे प्राणी की हत्या होती है। परमात्मा ने इसके शरीर और आत्मा
संयोग बनाया है। इसमें परमात्मा का कुछ प्रयोजन अवश्य है, यद्यपि वह प्रयोज
हम जानते नहीं। अतएव उस प्रयोजन में विघ्न डालने से प्राकृतिक नियमों
विरोध होता है और यह पाप है।'

'इस कथन में कई 'फैलेसीज़' (मिथ्यात्व) हैं।' रौबर्ट्सन का कहना थ
'प्रथम यह है कि कोई परमात्मा है क्या, जिसने यह आज्ञा दी है कि मुर्गियाँ क
दूसरे, मुर्गी में आत्मा और शरीर का मेल। हम तो समझती हैं कि पशुओं
जीवात्मा होता ही नहीं।

'तीसरे, मुर्गी का जीवन समाप्त करने से किस प्राकृतिक नियम का विरो
हुआ है?

'चौथे, पाप नाम की कोई वस्तु संसार में है क्या?

'और भी 'फैलेसीज' हैं, परन्तु इतनी तो स्पष्ट रूप में समझ में आ रही हैं

सब छात्राएँ ध्यान से रोहिणी का उत्तर सुनने के लिए उसका मुख देख
लगीं।

रोहिणी खीर का एक चम्मच मुख में डाल मुस्कराते हुए प्रिंसिपल का मु
देखने लगी। मिस रैना ने समझा कि रोहिणी आज निरुत्तर हो गयी है। इससे व
बोल उठी, 'बहन रोहिणी जी ने एक दिन हमें समझाया था कि पाप क्या है। पर
हम कुछ न समझती हुई उत्तर नहीं दे सकी थीं। आज हम चाहती हैं कि व
प्रिंसिपल जी को समझा दें तो हम समझ जायेंगी।'

'मैं', रोहिणी ने खीर गले से नीचे उतार एक घूँट जल से मुख साफ कर
हुए कहा, 'मैं खीर के स्वाद का संवहन नहीं कर सकी थी। इस कारण चुप थी।
आपत्तियों को एक-एक कर लें तो बात समझ में आ जायेगी। बहुत-से प्र
भिन्न-भिन्न विषयों के एकदम कह देने से मस्तिष्क में विभ्रम उत्पन्न हो जाता है

'प्रथम आपत्ति है कि परमात्मा ही नहीं है। यदि आज का विचार इस ए
प्रश्न पर सीमित कर दिया जाये तो आपत्तियों का मुख्य अंश समाप्त हो जायेग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हिन्दुओं के एक शास्त्र में यह कहा है कि वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस जगत का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और इस जगत के विषय में प्रथम बात जो हम देखते हैं, वह यह है कि इसमें दो प्रकार के पदार्थ हैं- शरीरी और अशरीरी।

'शरीरी को हम आजकल की भाषा में जीवधारी और अशरीरी को जीवन-रहित कहते हैं। इनको अंग्रेजी में 'ऐनिमेट' तथा 'इनएनिमेट' कहते हैं।

'हमारी ज़बान में इनको चेतन और अचेतन कहा है। एक का दूसरे में बदल नहीं हो सकता।

'चेतन से ही चेतन उत्पन्न हो सकता है। इन दोनों में अन्तर तो किसी अन्य दिन बताऊँगी। परन्तु आज अचेतन की बात ही कर रही हूँ।

'आप में से कुछ लड़कियाँ साइंस पढ़ती हैं। उन्हें न्यूटन के गति के सिद्धान्त का पता होगा कि प्रकृति का कोई भी कण खड़ा है तो खड़ा ही रहता है और जो चलता है, तो सीधी रेखा में एक स्थिर गति से चलता ही रहता है, जब तक कि कोई दूसरी शक्ति उसका विरोध न करे। यह नियम स्वयं सिद्ध है। हम पृथ्वी पर इसे अनुभव कर सकते हैं। ग्राउण्ड में एक गेंद रख देते हैं और इसको ठोकर मारने वाला कोई न हो तो वह सदियों तक भी वहाँ पड़ा रहेगा और हिलेगा नहीं।

'जब यह है तो इन सूर्य, चन्द्र, तारागण इत्यादि को गति देने वाला जो है, वह ही परमात्मा है। इतने बड़े बड़े प्रकृति के पिण्डों को कोई अति महान शक्ति ही है, जो गति देती है और फिर गोलाकार मार्ग पर चला रही है। यदि कोई महान शक्ति न हो तो पहले तो वे चलेंगे ही नहीं और फिर चलेंगे तो सीधे मार्ग पर ही चलेंगे। चक्राकार गति में नहीं घूमेंगे। ऐसा करने वाला परमात्मा है।'

'तो परमात्मा एक शक्ति है?' प्रिंसिपल ने पूछ लिया।

'हाँ! परन्तु एक ज्ञानवान शक्ति। यह इस कारण कि जो इस पेचीदा संसार को बिना किसी दुर्घटना के चला रहा है, उसमें ज्ञान और बुद्धि तो होनी ही चाहिये।'

'यदि हम न मानें तो क्या होगा?' प्रिंसिपल का अगला प्रश्न था।

'वही जो इस पृथ्वी को गोल न मान, चपटी मानने वाले के साथ होता है।'

इस पर सब लड़कियाँ हँस पड़ी। प्रिंसिपल इस कथन का अभिप्राय नहीं समझ सकी।

मिस नरूला ने हँसते हुए पूछ लिया, 'बहनजी! यदि मैं पृथ्वी को चपटी कहूँ तो क्या होगा?'

'यह प्रधानाचार्य जी से ही पूछ लो। मुझे इसमें कुछ नहीं कहना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियाँ खिल-खिलाकर हँसने लगीं। परन्तु प्रिंसिपल ने कह दिया, 'दो बातों में कोई तुलना नहीं है? एक तो वैज्ञानिक तथ्य है दूसरा केवल मन-गढ़ कथन।'

रोहिणी ने कहा, 'आपका कहना ठीक हो सकता है, परन्तु यह मेरी कु का उत्तर नहीं है। कहते हैं प्रकृति में संकुचन (कंसनट्रेशन) आरम्भ हुई तो यूनिवर्स का बनना आरम्भ हुआ। मेरा प्रश्न यह है कि प्रकृति में संकुचन कि आरम्भ की? इसे करने वाला कोई होना चाहिये। जो कोई भी वह होगा, व बलवान और बुद्धिमान होगा। तभी तो यह सब कुछ बन गया है।'

'यह अपने-आप हो गया है। प्रकृति में ही कुछ ऐसा है कि ऐसा सम समय पर होता रहता है।'

'तब तो न्यूटन से भी अधिक बुद्धिमान वैज्ञानिक हमारी प्रिंसिपल साहि हैं। न्यूटन कह गया है कि प्रकृति का प्रत्येक टुकड़ा खड़ा है तो खड़ा ही रहत अथवा चलता है तो सीधी रेखा में और स्थिर गति से चलता ही रहता है, जब कोई इसमें परिवर्तन करने वाली शक्ति न हो।'

प्रिंसिपल को ऐसा प्रतीत हुआ कि रोहिणी ने उसका अपमान कर दिया एक शुद्ध ऐंग्लो जाति की स्त्री को एक हिन्दुस्तानी स्त्री ने उसकी छात्राओं सम्मुख मूर्ख सिद्ध कर दिया है। इससे वह खाने के उपरान्त गम्भीर भाव में उ और चुपचाप अपने क्वॉर्टर को चल दी।

रोहिणी भी मोहिनी की चिन्ता में प्रिंसिपल से हुई बात को भूल गयी।

मोहिनी की चिकित्सा हृदय रोगों के विशेषज्ञ डॉक्टर ऐण्डसरन से होने ल और वह कुछ ही दिनों में स्वस्थ तथा सबल प्रतीत होने लगी।

रोहिणी नित्य बहन से मिलने तीन से पांच बजे के भीतर जाया करती और छः बजे से पूर्व हॉस्टल में लौट आया करती थी।

प्रिंसिपल से परमात्मा के विषय में चर्चा को रोहिणी भूल चुकी थी। लग दो सप्ताह व्यतीत हो चुके थे। एक दिन वह सायं छः बजे मोहिनी के घर से ल तो मिस नरूला उससे मिलने के लिये उसके कमरे के बाहर बरामदे में ख उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

रोहिणी आई तो उसने नरूला की ओर प्रश्न भरी दृष्टि में देखा। नरूला कहा, 'बहन जी! एक विशेष बात है।'

'क्या?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कमरे में चलिये, बताती हूँ।'

दोनों कमरे में पहुँची तो रोहिणी स्वयं बैठ और नरूला को बैठा पूछने लगी, 'हां! अब बताओ! क्या बात है ?'

'आज मिस रैना सुरैया से कह रही थी कि आपकी सेवाएँ कॉलेज में समाप्त हो रही हैं।'

'अच्छा! क्यों?'

'वह कह रही थी कि आप काल्पनिक कहानियों को इतिहास से अधिक विश्वसनीय मानती हैं।'

'परन्तु यह बात तो छः मास पूर्व कही गई थी?'

'मुझे कुछ और समझ आ रहा है?'

'क्या?'

'उस दिन परमात्मा पर चर्चा करते हुए आपने कहा था कि परमात्मा को न मानना ऐसी ही बात है जैसे कि पृथ्वी को चपटा मानना। प्रिंसिपल साहिबा पृथ्वी को चपटा मानने वालों को मूर्ख समझती हैं। इससे आपने उन्हें भी मूर्ख कहा है। वह परमात्मा को नहीं मानतीं।

'रैना का कहना है कि प्रिंसिपल ने आपके विपरीत रिपोर्ट कर दी है।'

'तो तुम समझती हो कि मुझे यहाँ से छुट्टी मिल जायेगी?'

'हां! वह अंग्रेज की बच्ची है और आप हिन्दुस्तानी। आज-कल 'डायरेक्टर आफ ऐजुकेशन' एक मुसलमान मुहम्मद कासिम है और आप हिन्दू हैं।'

'मुझे यहां की नौकरी छूट जाने का शोक नहीं होगा, यद्यपि कुछ कष्ट अवश्य होगा।'

'तो मैं आपको एक उपाय बताती हूँ।'

'क्या?'

'सूबे के चीफ मिनिस्टर से आपके जीजा जी की घनी मित्रता है। आप उनसे कहलवाइये।'

रोहिणी गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी।

नरूला लाहौर के एक वकील की लड़की थी और वह इस कारण हॉस्टल में रहती थी क्योंकि उसकी माँ नहीं थी और विमाता से उसकी बनती नहीं थी।

रोहिणी ने सतर्क हो कहा, 'नरूला! धन्यवाद। मैं विचार करूँगी कि कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिए अथवा नहीं।'

:9:

रोहिणी की विशेषता यह थी कि वह निश्चयात्मक बुद्धि रखती थी। मिस नरूला के जाने पर वह विचार करने करने लगी कि उसकी स्थिति क्या है और इस स्थिति में उसे क्या करना उचित है। उसे निश्चय करने में देर नहीं लगी। तीन-चार मिनट में ही वह मन में निर्णय कर निश्चिन्त हो काम में लग गयी। अगले दिन अल्पाहार ले, वह कॉलेज में अपने काम पर जाने से आधा घंटा पूर्व प्रिंसिपल के कमरे में जा पहुँची।

मिस रोबर्ट्सन रोहिणी को देख कुछ बेचैनी अनुभव करने लगी।

बात रोहिणी ने ही आरम्भ की। उसने कहा, 'यदि आपके पास चार-पांच मिनट का अवकाश हो तो मैं कुछ अपनी निजी बात पूछने आयी हूँ। यदि इस समय अवकाश न हो तो फिर कभी आ सकती हूँ।'

प्रिंसिपल ने कुछ स्वस्थ चित्त हो कह दिया, 'मैं इस समय सर्वथा खाली हूँ। बताइये, क्या चाहती हैं?'

रोहिणी ने बिना प्रिंसिपल के कहे स्वयं ही उनकी मेज के समीप रखी कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'मुझे ज्ञात हुआ है कि पिछले सप्ताह रात के खाने पर हमारी ज्ञान चर्चा पर आपको दुःख हुआ है।'

'तो वह ज्ञान-चर्चा थी?'

'जी! मेरी 'वोकेबुलरी' (शब्दावली) में उसे ज्ञान-चर्चा ही कहते हैं। हम विश्व की एक महान समस्या पर विचार कर रहे थे। संसार के सब लोग दो श्रेणियों में बँटे हुए हैं और उन श्रेणियों में भेद उसी विषय का है जिस पर वार्तालाप होने लगा था।'

रौबर्ट्सन ने कहा, 'मैं यह समझी थी और अब भी समझ रही हूं कि परमात्मा की बात जाहिलों में चर्चा का विषय है। संसार उसके बिना चल रहा है और उससे स्वतंत्र रह कर जीवन चलाने वाले लोग राज्य कर रहे हैं तथा परमात्मा के विषय पर विचार करने वालों में असंख्य मतभेद हैं।

'आज भूमण्डल पर शासन वे लोग कर रहे हैं जो परमात्मा आत्मा के पचड़ों में न पड़ते हुए अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिणी मन में विचार कर रही थी कि वस्तुस्थिति उससे सर्वथा उलट है। परन्तु वह आज बहस करने नहीं आयी थी। उसने कहा, 'मुझे ज्ञात हुआ है कि उस दिन की चर्चा पर आप नाराज हैं।'।

'यह आपको किसने कहा है?'

'किसी ने भी कहा हो। मैं इस पर विश्वास न करती हुई आप से पता करने आयी हूँ। अब आपके मुख से उस दिन की बात को जाहिलों की बात कहते सुन यह तो पता चल गया कि उस दिन की चर्चा आपको रुचिकर नहीं थी।

'चर्चा मैंने आरम्भ नहीं की थी। इस पर भी मैंने कुछ कहा था। मुझे सूचना देने वाले ने कहा है कि आप मेरे उस दिन के उस वाक्य पर नाराज़ हैं।'

'मेरी नाराजगी की बात छोड़िये। नाराज और प्रसन्न यदि हूँ तो कॉलेज के काम को त्रुटिपूर्ण अथवा संतोषजनक देखकर हूं।'

'तो बात ठीक है? कारण कुछ भी हो, आप मुझसे असन्तुष्ट हैं?

'आपके काम से, आपसे नहीं?'

'और उस काम के विषय में मुझसे पूछताछ किये बिना आपने उच्चाधिकारियों को मुझे सेवामुक्त कर देने की बात लिखी है?'

'यह कार्यालय का रहस्य है। मैं आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि आपको यह किसने बताया है?'

'इस विषय में कुछ नहीं बताऊँगी। कारण यह है कि उस व्यक्ति के विषय में आप कुछ करेंगी अथवा नहीं, मैं नहीं जानती। मुझे इसके जानने में रुचि भी नहीं। मैं तो यह कहने आयी हूं कि यदि आप चाहें तो मैं अभी अपना त्यागपत्र दे सकती हूँ। मेरा स्वभाव है कि मैं जहां भी रहती हूँ, अपने को एक स्वतंत्र जीव मान कर रहती हूँ।

'काम ईमानदारी से करती हूं और उसके अतिरिक्त मैं अपने को संसार में स्वतंत्र और सबके बराबर का प्राणी मानती हूं।'

प्रिंसिपल ने बात बदल दी। उसने कहा, 'कॉलेज में आपकी पढ़ाई के विषय पर ही आपत्ति है। आप कुछ ऐसा समझती हैं कि जो भूमण्डल के सभ्य और विद्वान लोग नहीं मानते । इस कारण मैंने रिपोर्ट की है कि आपके स्थान पर कोई सही दिमाग टीचर कॉलेज में भेज दी जाये।'

'और मैं डिसमिस होने से पहले ही त्यागपत्र को अधिक उपयुक्त मानती हूँ। इस कारण मैं आपको अपना त्यागपत्र आज किसी समय भेज दूँगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इसमें मैं क्या कर सकती हूं?'

'आपको कुछ करना नहीं होगा। केवल मेरा त्यागपत्र अधिकारियों को भेज देना होगा।'

इसका उत्तर मिस रौबर्ट्सन ने कुछ नहीं दिया। वह रोहिणी का मुख देखती रह गयी।

रोहिणी उठी और हाथ जोड़ गुड-ईवनिंग कहकर कमरे से बाहर निकल गयी। इसके उपरान्त उसे क्लास लेनी थी। वह उसमें चली गयी और फिर एक के बाद दूसरी श्रेणियों में जा पढ़ाने लगी।

वह काम से खाली एक बजे के लगभग हई और अपने कमरे में जा त्यागपत्र लिखने बैठ गई। इसी समय हॉस्टल का चपरासी आया और कहने लगा, 'आपका टेलीफोन आया है। आपको कार्यालय में बुलाया है।'

रोहिणी त्यागपत्र लिखने बैठी ही थी कि चपरासी आया था। इस कारण रोहिणी ने कलम मेज पर रखी और अपने कमरे को ताला लगा कॉलेज के कार्यालय में चली गयी। क्लर्क ने कहा, 'मिस्टर बलूजा का टेलिफोन था। उन्होंने कहा है कि आप तुरन्त कोठी में चली आयें।'

'कुछ काम बताया है?'

'जी नहीं। इतना कह उन्होंने टेलीफोन बंद कर दिया था।'

रोहिणी को बहन के विषय में चिन्ता लग गयी और वह कार्यालय से ही अपने जीजा जी की कोठी को चल पड़ी। मार्ग में खाली ताँगा मिला तो उसमें चढ़ कर वह कीलिंग रोड बलूजा लॉज पर जा पहुंची।

बलूजा बरामदे में खड़ा था और उससे मिलने के लिए कुछ लोग आये हुए थे। बलूजा ने रोहिणी को तांगे से उतरते देखा तो बातें कर रहे लोगों को छोड़ रोहिणी की ओर रोनी सूरत बना कहने लगा, 'मोहिनी चल दी।'

रोहिणी की आशंका सत्य सिद्ध हुई और उसकी आँखों के सामने तारे उड़ने लगे। वह अवाक् जीजा जी का मुख देखती रह गयी।

बात बलूजा ने ही कही, 'संस्कार तो कल होगा। माता जी हरिद्वार में हैं। उनको तार कर दिया गया है और मैं आशा करता हूँ कि कल प्रातः काल तक वह आ जायेंगी।'

बलूजा के पिता नहीं थे और उसके अन्य सम्बन्धी तो लाहौर में ही थे। उनको सूचना भेज दी गयी थी। बलूजा के पड़ोसी भी समाचार पा उससे शोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट करने आये हुए थे।

रोहिणी उस कमरे के भीतर चली गयी, जहाँ शव पड़ा था। वहाँ भी पड़ोस की कुछ स्त्रियाँ बैठी हुई थीं।

रोहिणी ने बहन को पलंग पर लेटे हुए और चादर से ढपे हुए देखा। मुख पर से कपड़ा उठाया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह प्रसन्न और सन्तुष्ट सोयी हुई है।

रोहिणी ने उसके माथे पर हाथ रखा। माथा सर्वथा ठण्डा देख चादर से मुख ढाँप कर वह पीछे हट भूमि पर ही अन्य आयी स्त्रियों में बैठ गयी। बगल की कोठी में एक डॉक्टर रला राम रहते थे। डॉक्टर साहब की पत्नी ने रोहिणी से शोक प्रकट करना आरम्भ कर दिया।

वह बताने लगी, 'बारह बजे के लगभग बलूजा साहब का नौकर आया था और डॉक्टर साहब को बुलाकर ले गया था। उस समय बहन मोहिनी को दिल का दौरा पड़ा हुआ था। डॉक्टर साहब ने इंजेक्शन दिया, परन्तु उससे कुछ न होता देख, उन्होंने हाई कोर्ट में फोन कर बलूजा साहब को बुला लिया। परन्तु उनके आने से पहले ही मोहिनी शरीर छोड़ चुकी थी।'

रोहिणी ने पूछा, 'बच्चा कहाँ है?'

'बच्चे को नर्स हमारे घर सुलाने ले गयी है।' डॉक्टर की पत्नी ने बताया।

अगले दिन, संस्कार हो जाने के उपरान्त जब बलूजा साहब कोठी के ड्राइंग-रूम में आकर बैठे तो रोहिणी ने कहा, 'जीजा जी! हम जुड़वां बहनें थीं।'

बलूजा साहब ने कहा, 'हां! उसने बताया था। पहली रात ही जब हम दोनों एकान्त में मिले थे तो उसने कहा था कि आप जुड़वाँ बहनें हैं।

'मैंने पूछा था कि आप दोनों के रूप में पर्याप्त अन्तर है। उसका कहना था कि दोनों में अन्तर है। तुम उससे अधिक सुन्दर हो परन्तु वह सदैव अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ करती थी।'

'हाँ! परन्तु जीजा जी! मैं यह बता रही थी कि दोनों के भाग्य में भी अन्तर स्पष्ट है। इसी से कहा जा सकता है कि शरीर में जीवात्मा भिन्न-भिन्न है। वह बेचारी न जाने अब कहां और किस दशा में होगी। यह कहा जाता है कि पहला शरीर छूटते ही नया शरीर मिल जाता है।'

इस समय नर्स एक मास के बच्चे को लेकर आ गयी। नर्स का कहना था, 'यह भी अनुभव कर रहा है कि इसका अपना कोई दिखाई नहीं देता। यह आज प्रातःकाल से ही भयभीत हो रहा है।' रोहिणी ने बच्चे को नर्स की गोदी से लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाती से लगा, उसका मुख चूमा तो वह आँखें खोल मुख चूमने वाले की ओर देखने लगा।

'इसका दूध ले आओ।' रोहिणी ने नर्स को कहा। नर्स 'नर्सरी रूम' में गयी और वहाँ से पांच मिनट में दूध ले आयी। तब तक रोहिणी बच्चे का ध्यान अपनी ओर करने के लिये उसके गालों पर थपथपाती रही।

रोहिणी ने पहले दिन ही प्रिंसिपल को अपनी बहन की मृत्यु का समाचार बता दो दिन की छुट्टी माँग ली थी। वह उस दिन जीजा जी के घर में रही और जीजा जी की माँ को प्रेरणा देती रही कि अब उनको अपने पुत्र और पौत्र के पास लाहौर में ही रहना चाहिए।

रत्नचन्द की माँ सुहागिन ने कुछ उत्तर नहीं दिया, परन्तु उसके हाव-भाव से यह प्रतीत होता था कि वह हरिद्वार को लौट जाने की लालसा कर रही है।

इन दिनों में रोहिणी को अपने कॉलेज की स्थिति को बताने का अवसर नहीं मिला न ही वह अपने मन में बने निश्चय का कथन कर सकी।

तीसरे दिन वह हॉस्टल के अपने कमरे में पहुँची तो चपरासी उसे एक बड़ा सा लिफाफा, जिसके बाहर 'डायरेक्टर औफ ऐजुकेशन' का नाम छपा था, दे गया।

रोहिणी ने लिफाफा खोला और पत्र निकाल कर पढ़ा। वह समझ रही थी कि उसको कॉलेज सेवा से निकाल देने की आज्ञा होगी।

परन्तु जब उसने खोला तो उसमें यह लिखा मिला, 'आपके कॉलेज के विद्यार्थी यह शिकायत कर रहे हैं कि जो कुछ आप ऐतिहासिक तथ्यों के विषय में बताती हैं, वह प्रतिष्ठित ऐतिहासिक ग्रन्थों में लिखे के विपरीत होता है। इस कारण यह उचित समझा गया है कि आप 'बोर्ड ऑफ ऐजुकेशन' के समक्ष, बीस अक्तूबर को मध्याह्नोत्तर तीन बजे डायरेक्टर के कार्यालय में उपस्थित हो बोर्ड का समाधान कर दें कि आप इतिहास की स्कॉलर हैं।'

बस, इतना ही पत्र था। इसके साथ विश्व-विद्यालय के इतिहास का प्रोस्पेक्टस था।

रोहिणी अब विचार करने लगी कि वह इस तारीख से पहले ही त्याग पत्र दे दे अथवा इस पेशी के पीछे त्यागपत्र दे। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि वह मिस रौबर्ट्सन के प्रिंसिपल रहते हुए उस कॉलेज में कार्य नहीं करेगी।

पूर्ववत उसे निर्णय करने में देर नहीं लगी। इस कारण उसने वस्त्र बदले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रातः का अल्पाहार ले कॉलेज के प्रिंसिपल से मिलने जा पहुंची।

मिस रौबर्ट्सन को विदित था कि रोहिणी को 'डायरेक्टर ऑफ ऐजुकेशन' का पत्र आया है। उसका विचार था कि रोहिणी को सेवाकार्य से निकाल देने का हुक्म होगा। परन्तु वह विस्मय कर रही थी कि सेवा से मुक्त होने के पत्र की प्रतिलिपि कॉलेज के कार्यालय के लिये क्यों नहीं आयी?

इस कारण रोहिणी के उसके कमरे में आते ही उसने पूछा, 'डायरेक्टर साहब का पत्र आपको मिला है?'

'जी।'

'क्या लिखा है?'

'पत्र में कहा है कि बीस अक्तूबर को 'बोर्ड ऑफ ऐजुकेशन' के सामने उपस्थित हो, उनका समाधान करूँ कि मैं पढ़ाई कराने की योग्यता भी रखती हूँ या नहीं?'

प्रिंसिपल परेशानी में रोहिणी का मुख देखती रह गयी।

इस दिन भी प्रिंसिपल ने रोहिणी को बैठने को नहीं कहा। रोहिणी स्वयं ही वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गयी और बोली, 'मैं तो स्वयं सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र देने वाली थी; परन्तु बहन की मृत्यु के कारण मैं अभी तक यह कर नहीं सकी थी अब इस पत्र के आने के उपरान्त मैं समझती हूँ कि इस पेशी के उपरान्त ही त्याग-पत्र दूँगी।'

'और यदि बोर्ड आपको सेवा-मुक्त न करे, तब भी त्याग-पत्र देंगी?'

'मैं अब सरकारी नौकरी नहीं करूंगी।'

'तो इस भेंट से पहले ही त्याग-पत्र दे दें। यह झंझट किसलिये कर रही हैं?'

'केवल इसलिये कि त्याग-पत्र देने के उपरान्त तो यह इन्टरव्यू होगा नहीं और मैं दो-चार खरी-खरी बातें बोर्ड को सुनाना चाहती हूँ। पहले त्याग-पत्र देने से यह सुना नहीं सकूंगी।'

'इससे आपको क्या मिलेगा?'

'बहुत कुछ! कदाचित बोर्ड में कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति हुआ तो वह मेरी बात को समझ सकेगा।'

'सब व्यर्थ नहीं है क्या?'

'यही तो जीवन का सार है। मैं उनको इतिहास का कुछ पाठ पढ़ाना चाहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ। यदि उनमें कोई बुद्धि रखता हुआ होगा तो समझ जायेगा कि वे लोग अज्ञान से विचर रहे हैं।'

'आप कॉलेज से छुट्टी ले लें।'

'क्यों?'

'छात्राएं आपके विरुद्ध हो रही हैं और झगड़ा हो जाने का भय हैं।'

'मैं आज तो क्लास ले रही हूँ और आपके सुझाव पर पढ़ाई के उपरान्त विचार करूंगी। दो दिन पूर्व जब मैं यहां थी तो मुझे छात्राओं में विद्रोह के लक्षण दिखाई नहीं दिये थे।'

'देख लें! यदि आप छुट्टी की अर्जी करेंगी तो मैं आपको एक मास की छुट्टी स्वास्थ्य के आधार पर दे सकूँगी।'

'धन्यवाद! मैं आपसे पुनः मिलूंगी।'

इतना कहकर वह वहाँ से चली आयी। उसने मन में निश्चय कर लिया था कि वह त्याग-पत्र बोर्ड की मीटिंग के पहले नहीं देगी। वह विस्मय करती थी कि प्रिंसिपल क्यों त्याग-पत्र देने के लिए कह रही है।

परन्तु जब वह पहली ही श्रेणी में पहुंची तो उसे एक अन्य बात का पता चला। यह बी. ए. के प्रथम वर्ष की श्रेणी थी। वह उनको 'मोहनजोदड़ो' के विषय में बताने वाली थी। एक लड़की ने खड़े होकर पूछा, 'कोई क्लास में कह रहा था कि आपको कॉलेज से निकाल दिया गया है?'

'अभी नहीं। अभी तो मैं यहाँ आपके सम्मुख कुछ बताने वाली हूँ।'

इस समय तीन-चार लड़कियाँ एकदम खड़ी हो गई। इस पर रोहिणी जो कुर्सी पर बैठी थी, भी खड़ी हो गयी और बोली, 'सब की सब बोलने लगेंगी तो किसी की बात सुनाई नहीं देगी।

'इस कारण एक-एक कर बतायें कि क्या कहना चाहती हैं?'

इस पर खड़ी हई लड़कियाँ एक दूसरे का मुख देखने लगीं। तब एक ने दूसरों को बैठने का संकेत कर स्वयं कहा, 'हमें विदित हुआ है कि आपको डायरेक्टर साहब का एक पत्र मिला है। क्या वह आपको सेवा-मुक्त करने का नोटिस है?'

'नहीं! परन्तु तुम को यह किसनें कहा है कि डायरेक्टर का पत्र मिला है?' रोहिणी ने पुनः कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'फोर्थ ईयर की मिस रैना कह रही थी कि उस चिट्ठी में आपको कॉलेज से छुट्टी का नोटिस है।'

'नहीं! उसमें ऐसी बात नहीं लिखी। मुझे 'बोर्ड ऑफ ऐजुकेशन' के सामने उपस्थित होने की आज्ञा हुई है। कॉलेज से किसी ने शिकायत की है कि मुझे इतिहास नहीं आता और मैं गलत इतिहास पढ़ा रही हूँ। इस कारण मेरी परीक्षा ली जाने वाली है।'

'परन्तु आप इतिहास विषय की एम. ए. तो हैं?'

'हाँ! मैं अपने विषय में प्रथम रही थी।'

'यह अन्याय नहीं हो रहा क्या?'

'न्याय-अन्याय के विषय में अपना-अपना दृष्टिकोण होता है। हाँ, एक ईश्वरीय नियम है। परन्तु आप में से कुछ तो ईश्वर को मानती ही नहीं। इस कारण वह ईश्वरीय नियम बताने से कुछ लाभ नहीं।'

उस खड़ी हुई लड़की ने कहा, 'परन्तु बहनजी! हम जानना चाहती हैं।'

'तो सुनो! एक ईश्वरीय नियम है। वह यह कि जब शासक अयोग्य होते हैं तो प्रजा दुःखी रहती है। आज भारत की यही अवस्था है। शासक अयोग्य हैं। इस कारण वे देश में दुःख की सृष्टि कर रहे हैं।

'यह भी नियम है कि अयोग्य ही अपने को योग्यों से अधिक ज्ञानवान समझने लगते हैं। ज्ञान का लक्षण है—विनम्रता। इसे अंग्रेजी में 'ह्यूमिलिटी' कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि ज्यों-ज्यों मनुष्य ज्ञान में ऊंची से ऊँची सीढ़ी पर चढ़ता जाता है, वह अपने ज्ञान की न्यूनता को अनुभव करता जाता है। इस कारण वह विनम्र होता जाता है। जितने अज्ञानी होते हैं, वे उजड्ड और अभिमानी होते जाते हैं।

वह लड़की सन्तुष्ट हो बैठ गयी। परन्तु उसी समय एक अन्य लड़की उठकर कहने लगी, 'हम लड़कियों ने फैसला किया है कि एक दिन की सांकेतिक हड़ताल करें।'

'क्यों?'

'यह बताने के लिये कि आप पर अन्याय हो रहा है।'

'परन्तु मेरी बहन! मैं इससे उलट समझती हूँ। इस शासन में मैं यहाँ अनाधिकारयुक्त स्थान पर पहुंच गयी हूँ। अनपढ़ों के राज्य में किसी पढ़े-लिखे को नौकरी नहीं करनी चाहिए।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बस, यही तो हम कह रही हैं। वह देखिये...' बरामदे में लड़कियों के एक झुण्ड को खड़े हुए दिखाकर वह बोली, 'अन्य श्रेणियों की लड़कियाँ अपनी श्रेणियों से निकल आयी हैं।'

रोहिणी अभी कुछ पूछने ही वाली थी कि श्रेणी की सब लड़कियाँ उठकर बाहर निकल गयीं।

रोहिणी मुख देखती रह गयी। वह अपनी कुर्सी पर अभी भी बैठी थी।

इस समय स्टाफ की एक अन्य अध्यापिका उसके कमरे में आयी और उससे पूछने लगी, 'रोहिणी जी! अब यहाँ बैठी क्या कर रही है?'

'मैं यह विचार कर रही हूँ कि अब क्या करूं?'

'मैं यही बताने आयी हूँ। स्टाफ रूम में आपकी प्रतीक्षा हो रही है।'

'तो चलो।'

रोहिणी उठी और स्टाफ रूम में जा पहुंची।

:10:

रोहिणी ने अपने कमरे से 'स्टाफ रूम' को जाते हुए देखा था कि कॉलेज की छात्राएँ बाहर लॉन में एकत्रित हो रही हैं। इससे वह समझ गयी कि उसकी दो दिन की अनुपस्थिति में कॉलेज की लड़कियों ने कुछ किया है, जिसकी प्रतिध्वनि ही प्रिंसिपल के व्यवहार में प्रदर्शित हुई है। इस बात के समझ में आते ही वह 'स्टाफ रूम' में कॉलेज की सब अध्यापिकाओं के एकत्रित होने का अर्थ भी समझने लगी।

स्टाफ रूम में प्रिंसिपल के अतिरिक्त अन्य सब अध्यापिकाएँ थीं। इनकी संख्या पन्द्रह थी। इनमें एक श्रीमती खुराना थी। यह उपप्रधानाचार्या थी। वह ही अध्यापिकाओं की इस सभा का प्रधानत्व कर रही थी।

सबसे पहले मिसेज़ खुराना ने ही बात की। उसने कहा, 'हमारी एक सहयोगिन श्रीमती रोहिणी बजाज की बहन के असामयिक निधन पर मैं यह शोक प्रस्ताव कॉलेज के प्राध्यापक-मण्डल की ओर से उपस्थित करती हूँ।'

वह एक कागज पर लिखे प्रस्ताव को पढ़ने ही लगी थी कि एक अन्य अध्यापिका ने सभा की अध्यक्षा से पूछ लिया, 'इस मीटिंग में हमारे कॉलेज की प्रिंसिपल मिस रोबर्टसन नहीं हैं। उनको इस सभा की और शोक के इस प्रस्ताव की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना नहीं दी गयी क्या?'

प्राध्यापिका-मण्डल की सेक्रेटरी ने कह दिया, 'कल जिस विज्ञप्ति द्वारा सभा की सूचना जारी की गयी थी, उसकी प्रति प्रिंसिपल महोदया के पास भी भेजी गयी थी। उन्होंने इसे पढ़ा था, परन्तु उस पर हस्ताक्षर नहीं किये थे।'

इस पर उस अध्यापिका ने जो रोहिणी को बुलाने गयी थी, उठ कर कहा, 'यदि आप मुझे स्वीकृति दें तो मैं प्रिंसिपल महोदया को स्वयं बुलाकर ले आऊँ। अन्यथा हम इस प्रस्ताव में यह नहीं लिख सकतीं कि गवनर्मेंट विमेन्ज कॉलेज का प्राध्यापक मण्डल यह प्रस्ताव पारित करता है।'

इस पर उप-प्रधानाचार्या ने कह दिया, 'मैं बहन नूरी से यह कहूँगी कि वह प्रधानाचार्याजी को यह सूचना दे आये कि शोक सभा हो रही है और उनको इस शोक सभा में उपस्थित होना चाहिये।'

इस पर बेगम नूरी कासिम उठकर प्रिंसिपल के कमरे को चली गयी और अन्य अध्यापिकाएँ नूरी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगीं।

नूरी को लौटने में पन्द्रह मिनट लगे। मिस खुराना बेचैन हो रही थी। जब नूरी को आने में देरी हो गयी तो वह जोश में उठकर कहने लगी, 'मैं समझती हूँ कि किसी कारण से हमारे कॉलेज की प्रिंसिपल महोदया हमारे इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हैं। मैं जानती हूँ कि वे क्यों नहीं आ रहीं, परन्तु मैं उस बात को इस समय न कहकर प्रस्ताव में...।'

मिसेज खुराना की बात समाप्त नहीं हुई थी कि नूरी और रौबर्ट्सन दोनों आ गयीं। प्रिंसिपल के आने पर सब प्राध्यापिकाओं ने खड़े होकर उसका स्वागत किया और खुराना के समीप की कुर्सी उसके लिये खाली कर दी।

मिस रौबर्ट्सन ने खाली कुर्सी पर बैठते हुए कहा, 'मैं अपने को इस प्रस्ताव के साथ सम्बन्धित करना नहीं चाहती थी। आज जो कुछ छात्राएँ कर रही हैं, वह श्रीमती बजाज की शरारत का प्रत्यक्ष परिणाम होने से मैं इस शोक सभा में भी सम्मिलित नहीं होना चाहती थी। परन्तु श्रीमती नूरी हसन ने कहा है कि इस प्रस्ताव का छात्राओं के असन्तोष से कुछ सम्बन्ध नहीं है। इस कारण मैं इसमें सम्मिलित होना मान गयी हूँ।'

यद्यपि वहाँ उपस्थित हुई प्राध्यापिकाओं में से किसी ने भी प्रिंसिपल के इस वक्तव्य को पसंद नहीं किया, परन्तु शोक सभा के स्वरूप की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिये सब चुप थीं। मिसेज़ खुराना ने बिना रोबर्टसन के कथन पर टीका-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणी किये, खड़े होकर प्रस्ताव पढ़ दिया।

प्रस्ताव सामान्य शोक प्रस्तावों की सी पदावली में ही लिखा हुआ था। प्रस्ताव पढ़ने पर किसी ने इस पर एक भी शब्द नहीं कहा और सब ने खड़े होकर प्रस्ताव का समर्थन कर दिया। प्रस्ताव पारित होते ही रोबर्ट्सन उठी और कमरे से निकल गयी। जाते-जाते वह कहती गयी, 'मुझे पुलिस बुलानी पड़ेगी।'

प्रिंसिपल के व्यवहार पर बेगम नूरी हसन ने कह दिया, 'हमें छात्राओं की हलचल पर भी विचार करना चाहिये ।'

मिसेज खुराना ने कह दिया, 'इसका हमारे साथ सम्बन्ध नहीं।'

'हमारा ताल्लुक तो है,' नूरी का कहना था, 'यह अंग्रेज औरत यहाँ कॉलेज में यह समझ रही है कि इस शिक्षा केन्द्र में राजनीति भी चलेगी। हम राजनीति को इससे बाहर चाहती हैं और यह राजनीति को यहाँ भी घुसेड़ रही हैं।'

'कॉलेज की वर्तमान अवस्था में कौन-सी बात राजनीति है?' खुराना का प्रश्न था।

नूरी हसन ने कहा, 'यह अंग्रेज औरत समझती है कि रूहानी विचार, मेरा मतलब है 'स्पिरिचुअल आईडीयाज़' पर भी सरकार का नियन्त्रण होना चाहिये।

'मुझे एक मिस नरूला ने इस पूर्ण झगड़े का इतिहास बताया है। खुदा की हस्ती पर जब मिस रौबर्ट्सन लाजवाब हो गयीं तो मिसेज बजाज की पढ़ाई में दोष निकालने लगी हैं?'

'तो आप खुदा को मानती हैं?' एक अन्य प्राध्यापिका ने पूछ लिया।

'मैं मुसलमान होती हुई खुदा से इन्कार कैसे कर सकती हूँ? परन्तु यह झगड़े का कारण नहीं हो सकता। इस मज़बून पर हम, मेरा मतलब है मुसलमान, ईसाई और हिन्दू एक हैं। हम खुदा को मानने वाले हैं। यह ठीक है कि खुदा के औसाफ, हम अलहदा-अलहदा मानते हैं । परन्तु जहाँ तक खुदा के होने और न होने का सवाल है, हम एक ही जमायत में हैं और यह मिस रौबर्ट्सन तो ऐगनास्टिक हैं।'

इस पर मिसेज़ खुराना ने हाथ के संकेत से बेगम नूरी को चुप कराते हुए कहा, 'शोक-सभा समाप्त हो चुकी है। यदि आप सब चाहती हैं कि कॉलेज की स्थिति पर विचार हो तो हम नयी मीटिंग आरम्भ कर सकती हैं?'

नूरी हसन अभी भी अपने स्थान पर खड़ी थी। इस कारण वह ही कहने लगी, 'मैं आप सब बहनों से अपने जज़बात बयान कर रही थी। मुझ इस पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झगड़े का इल्म है। इसलिये मैं चाहती हैं कि आप मेरी वाकफीयत को सुन लें और पीछे इस पर अपने ख्यालात जाहिर करें।

'यह झगड़ा आज से लगभग पन्द्रह दिन पहले का है। कॉलेज गरमी की छुट्टियों के बाद खुला था कि एक दिन मिस रौबर्ट्सन होस्टल के 'ग्रिल्ड चिकन' माँस खाने वालों के लिए बना था। हॉस्टल की सुपरिटेंडेण्ट ने अपने खर्च पर बादाम की खीर भी बनवायी थी।

'इस पर खाने के समय माँस खाने और न खाने पर बात चल पड़ी। श्रीमती बजाज ने बताया कि वह माँस खाने को पाप मानती हैं। इस पर रौबर्ट्सन ने कह दिया कि पाप-पुण्य कुछ नहीं, न परमात्मा है, न पाप है, इंसान के फायदे की बात ही पुण्य है।

'इस पर मिसेज़ बजाज ने खुदा की हस्ती को एक 'सायंटिफिक फैक्ट' बता दिया। एक ने पूछा कि जो खुदा को न मानें, उसे आप क्या कहेंगी?

'मिसेज़ बजाज का कहना था कि जो उसको कहूँगी जो जमीन को चपटी कहती है। वह भी 'सायंटिफिक फैक्ट' है।

'इस पर लड़कियाँ हँस पड़ीं और मिस रौबर्ट्सन नाराज हो गयीं। उससे दूसरे दिन मिस रौबर्ट्सन ने एक लम्बी चिट्ठी डायरेक्टर साहब को लिखी। उस चिट्ठी में पाप-पुण्य, खुदा आदि की बात तो नहीं लिखी, मगर मिसेज़ बजाज की पढ़ाई की बाबत शिकायत लिखी और सिफारिश की कि मिसेज़ बजाज को नौकरी से निकाल दिया जाये।

'आज डायरेक्टर के दफ्तर से एक खत आया है और रौबर्ट्सन ने समझा है कि उसमें मिसेज़ बजाज को नौकरी से निकाल दिया गया है। रौबर्ट्सन के ख़्यालात लड़कियों को पता चल गये हैं और लड़कियाँ प्रिंसिपल के खिलाफ प्रस्ताव पास करना चाहती हैं। इसके वास्ते उन्होंने एक सभा बुलायी है।'

मिसेज़ खुराना ने पूछा, 'बेगम नूरी! आपकी इस कहानी का सबूत क्या है?'

'यह हकीकत है। इसके सबूत पैदा करने चाहिये। मैं चाहती हूँ कि हमारी यह टीचर्स ऐसोसिऐशन लड़कियों से जाँच कर प्रिंसिपल को 'क्रॉस एग्जामिन' करे और फिर डायरेक्टर साहब के पास एक डेपुटेशन भेजे।'

इस प्रस्ताव का समर्थन अधिकांश अध्यापिकाओं ने कर दिया।

अतः अध्यापिकाओं की एक समिति बनायी गयी और उस समिति से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया कि वह छात्राओं, मिसेज बजाज और मिस रौबर्ट्सन से मिलकर पूछे कि यथार्थ बात क्या है।

खुराना का कहना था, 'इस कमेटी में बेगम नूरी हसन और मिसेज़ रोहिणी बजाज नहीं होनी चाहिये। इनके ही तो बयान लिये जाने हैं।'

अतः मिसेज़ खुराना और दो अन्य प्राध्यापिकाओं की कमेटी बन गयी।

यह निश्चय हुआ कि यह कमेटी तुरन्त जाँच आरम्भ कर दे और सायंकाल से पूर्व अपनी जानकारी बता दे। सायं छः बजे प्राध्यापिका मण्डल की मीटिंग पुनः इसी कमरे में की जाये और उसमें कमेटी की रिपोर्ट पर विचार किया जाये। मण्डल की इस जांच-समिति ने उसी समय पहले लड़कियों की सभा में पहुंचकर जाँच की, पीछे प्रिंसिपल रौबर्ट्सन से भेंट की और तीन बजे के लगभग वह रोहिणी से मिलने आई।

रोहिणी 'बलूजा लौज' को जाने वाली थी जब यह समिति उससे भेंट करने आयी। इस कारण रोहिणी ने संक्षेप में अपना वक्तव्य दे दिया। उसने कहा, 'मैं बेगम नूरी हसन के वक्तव्य को सर्वथा सत्य समझती हूँ।'

इस पर मिसेज़ खुराना ने उस पर जिरह करनी आरम्भ कर दी। उसने पूछा, 'आपने मिस रौबर्ट्सन को मूर्ख कहा था क्या?'

'नहीं; मैंने तो केवल यह कहा था कि मैं ईश्वर को न मानने वालों को वैसा ही समझती हूँ, जैसा पृथ्वी को चपटा मानने वालों को समझती हूँ। मेरा अभिप्राय था अनभिज्ञ व्यक्ति। मूर्ख और अनभिज्ञ में अन्तर होता है। मूर्खता बुद्धि के अभाव को कहते हैं। बुद्धि मस्तिष्क में एक यंत्र होता है और अच्छा-बुरा पूर्व जन्म के कर्मफल से मिलता है।

'परन्तु अनभिज्ञ उस व्यक्ति को कहते हैं जिसको ज्ञान न हो अथवा जिसकी शिक्षा दोष-पूर्ण हुई हो।

'मेरा अभिप्राय यह था कि मिस रौबर्ट्सन की शिक्षा दोष-पूर्ण है।'

इस पर मिसेज़ खुराना ने दूसरा प्रश्न पूछ लिया, 'क्या आप यह मानती हैं कि फिक्शन (काल्पनिक कहानियाँ) इतिहास से अधिक सत्य होती हैं?'

'हाँ! परन्तु दोनों का क्षेत्र पृथक-पृथक है। इस कारण प्रायः दोनों में तुलना करते समय लोग भूल कर जाते हैं।

'मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जिस उद्देश्य से इतिहास लिखा जाता है, उस उद्देश्य को पूरा करने में वह उतना सफल नहीं होता जितना एक उपन्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल होता है। इतिहास घटनाओं के रूप का वर्णन करता है और उपन्यास घटना की आत्मा का वर्णन। घटना का स्वरूप है तिथि काल, घटना का स्थान, घटना से सम्बन्धित व्यक्ति। घटना की आत्मा होती है घटना का कारण और घटना का परिणाम। साथ ही घटना का प्रभाव समाज पर।

'घटना के कारण व्यक्ति के स्वभाव, व्यक्ति के पारिवारिक व्यवहार, समाज में आचार-विचार इत्यादि से सम्बन्ध रखते हैं और परिणाम भी इन्हीं बातों से सम्बन्ध रखते हैं।

'एक उदाहरण चन्द्र गुप्त मौर्य का लिया जा सकता है। इतिहास उहा-पोह कर रहा है कि चन्द्रगुप्त ईसा से तीन सौ वर्ष पहले हुआ अथवा बारह सौ वर्ष पहले। परन्तु उपन्यासकार वर्णन करेगा कि विष्णु गुप्त की राजनीति और महाभारत के काल की राजनीति में क्या अन्तर था और उसमें क्या विशेषता थी कि जिससे महाभारत काल से लेकर चन्द्रगुप्त के काल तक भारत पर आक्रमण की कोई घटना नहीं घटी और अशोक के काल से आज तक भारत पर अनगिनत सफल असफल आक्रमण हो चुके हैं। इस प्रकार मैं इतिहास और उपन्यास में अन्तर मानती हूँ उपन्यासों को मैं प्रमाण मानती हूँ।

'इसी कारण भारत के प्राचीन लेखकों ने पुराण लिखने की शैली का अनुकरण किया था। पुराण घटनाओं के बाहरी स्वरूप पर इतना ध्यान नहीं देते, जितना घटनाओं में मानव उद्गार, मानव स्वभाव मानव-धर्म और फिर घटनाओं के प्रभाव की ओर ध्यान देते हैं। मैं पुराणों को घटना की आत्मा का निरूपण करने वाला मानती हूँ। यही सत्य है।'

मिसेज खुराना विज्ञान की प्राध्यापिका थी। इस कारण वह पूछने लगी, 'तो क्या भूमण्डल को सरकारें, जो लाखों और करोड़ों रुपए इतिहास संकलन में लगा रही हैं, वह व्यर्थ है?'

'व्यर्थ नहीं। उनका अपना प्रयोजन है। प्रायः सब सरकारें जो लाखों पाप कर्म करती हैं, उन पापों को छुपाने के लिए ही यह सब कुछ लिखती हैं।

'प्रायः राजनीतिक व्यक्ति कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। उनका कर्म इतिहास होता है और उनके फल तथा समाज पर प्रभाव पुराणों का विषय हैं। उपन्यासकार इस पिछली बात से सम्बन्ध रखते हैं।'

इस प्रकार की लम्बी चर्चा में रोहिणी को बलूजा लौज जाने में देर हो गयी। उस दिन मोहनी की चौथे की रस्म होनी थी। बिरादरी और सम्बन्धी एकत्रित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुके थे, जब वह वहाँ पहुंची।

रोहिणी को सब एकत्रित हुओं में से लाँघ कर रत्नचन्द और उनकी माता जी के पास जाना पड़ा। रत्नचन्द की माता सुहागिन ने पूछा, 'बहुत देर कर दी है?'

'माता जी! एक झंझट में फंस गयी थी। पीछे बताऊँगी।'

रत्नचन्द सुन रहा था, परन्तु वह उस समय चुप रहा। चौथे के दिन वहां रोहिणी के माता-पिता भी आये हुए थे। उसके सास-श्वसुर भी थे। उनसे पृथक् बैठा था महेन्द्र। उसकी पत्नी सगुनी और माता भी आयी हुई थीं। वे सबसे पृथक् पीछे हटकर बैठी हुई थीं।

मोहिनी के दाह-संस्कार के दिन तो रोहिणी ने आने-जाने वालों की ओर ध्यान नहीं दिया था, परन्तु आज वह देख रही थी और इस प्रकार समस्त परिवार के लोगों को देख समझ रही थी कि लोकाचार के उपरान्त बात-चीत होगी।

ऐसा ही हुआ। जब सब लोगों को विदा कर दिया गया तो घर की स्त्रियां पृथक कमरे में बैठ गयीं। वहाँ रोहिणी की पहले अपने माता-पिता से ही बात हुई। माँ ने पूछा, 'स्वास्थ्य कैसा है?'

'माँ! ठीक है।'

'कॉलेज में काम ठीक चल रहा है?'

'नहीं! प्रिंसिपल से वहाँ झगड़ा हो गया है और मैं नौकरी छोड़ देने वाली हूँ।'

'तब?'

'तब कुछ नहीं। जैसी नौकरी के पहले थी, पुनः वैसी हो जाऊँगी।'

रोहिणी की माँ के पीछे सगुनी और उसकी माँ बैठी थीं। सगुनी की माँ ने व्यंग्य के भाव में कह दिया, 'अब जीजा के घर में काम जो बन गया है!'

सगुनी रोहिणी के मुख से इस व्यंग का उत्तर सुनने के लिये उसके मुख पर देखने लगी। रोहिणी ने इस कथन को सुना तो था, परन्तु उसने ध्यान न दे अपनी माँ से ही कहा, 'मैं इस नौकरी से पहले एक पुस्तक लिखने की योजना बना रही थी। कॉलेज में जाकर वह योजना भूली नहीं थी। हाँ, दूसरे कार्य और दूसरे विषयों पर पढ़ाने के कारण उस पुस्तक का काम ढीला पड़ गया था। अब सरकारी सेवा से मुक्त होने पर अपना पुस्तक लिखने का काम पुनः वेग से चल सकेगा।'

इस समय सगुनी की माँ ने अपने व्यंग को निरर्थक जाते देख वहाँ से चले जाना ही उचित समझा। वह बलूजा की माता से शोक प्रकट कर जाने लगी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगुनी भी उसके साथ जाने को तैयार हो गयी।

इस पर रोहिणी ने ही पूछ लिया, 'सगुनी बहिन! आजकल माता जी से नहीं बन रही प्रतीत होती?'

'उनसे तो कभी भी नहीं बनी।'

सगुनी ने घृणा के भाव में कह दिया। सगुनी की माता और सगुनी चली गयीं। अब कंचन ने कह दिया, 'यदि ससुराल में जाने की रुचि न हो तो हमारे घर में ही आ जाना। अब तुम्हारे पिता तुमसे प्रसन्न प्रतीत होते हैं।'

'परन्तु माँ! पिताजी की प्रसन्नता तो मुझे कॉलेज में काम करते देख हुई थी। अब वहाँ से काम छूट जाने पर प्रसन्नता पुनः विलीन हो जायेगी।'

'उनसे पता करूँगी। मैं ऐसा नहीं समझती। मेरा विचार था कि तुम्हारे पुनर्विवाह न करने पर वह असन्तुष्ट थे।'

'और माँ! वह तो अब भी नहीं हो रहा।'

'मैं चाहती हूँ कि तुम हमारे घर आकर रहो।'

'पिताजी से पूछ लो। कहीं पतिव्रता-धर्म में विघ्न न पड़ जाये।'

माँ चुप कर गयी।

इस समय रत्नचन्द बाहर बैठक घर से भीतर आया और बोला, 'रोहिणी बहन! महेन्द्र मिलने के लिए बैठा है।'

'तो अभी जाऊँ?'

'वह यही चाहता है।'

रोहिणी उठकर बाहर बैठक घर में आ गयी। महेन्द्र के माता-पिता चले गये थे। अन्य लोग भी जा चुके थे। केवल महेन्द्र था।

रोहिणी के वहाँ पहुँचते ही बलूजा ने पूछा, 'देवर-भाभी में बातें पृथक में होंगी अथवा मेरे सामने?'

उत्तर महेन्द्र ने दिया, 'भाईसाहब! बड़ी भाभी माता-तुल्य हैं। मैं इनसे यह पूछने वाला था कि वह कभी हमारे घर में नहीं आतीं। हमसे इनकी क्या नाराजगी है?'

रोहिणी ने कहा, 'भैया! मैं नाराज़ नहीं हैं। एक तो सगुनी नहीं चाहती कि मैं उसके घर में आऊँ। दूसरे, तुम्हारे माता-पिता भी मुझसे रुष्ट हैं।'

'हाँ! यह तो है ही। वे तीनों मुझसे भी रुष्ट हैं। मैं रहता तो घर पर ही हूँ, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें एक-दूसरे का मुख देखे कई-कई दिन हो जाते हैं और कभी अचानक सामना हो जाता है तो सब मुख मोड़कर चल देते हैं।'

'और सगुनी?' रोहिणी ने पूछ लिया।

'हमारी परस्पर बातचीत नहीं है और वह रहती भी माँ के घर पर है।'

'तो पिताजी दुकान पर भी नहीं जाते क्या?'

'नहीं! दुकान पर भी कार्य-नीति में अन्तर उत्पन्न हो गया था और वह दुकान पर नहीं आते।

'मैंने दुकान की टीप-टॉप बदल दी है और बिक्री अच्छी होने लगी है। मैंने एक सहयोगी काम भी आरम्भ कर दिया है। एक छापाखाना खोला है। उसमें आपका इक्कीस हजार रुपया लगाकर आपको पत्तीदार बना लिया है। मैं कार्य करने वाला पत्तीदार हूँ और आप पैसा लगाने वाली हैं। लाभ बराबर-बराबर होगा।'

'मैंने तो वह इक्कीस हजार स्वीकार नहीं किया था। मैं अपने को उसकी मालकिन नहीं समझती।'

'परन्तु मैंने तो उसका प्रोनोट लिखकर आपको भेजा था?

'वह एक कागज़ का टुकड़ा कहीं मेरे बक्से में रखा हुआ है। मैं उसको तुम्हारे स्नेह का स्मृति-रूप ही समझती हूँ। इस पर भी मैं उस पर लिखी रकम को अपने को स्वामिन नहीं मानती।'

'और मैंने पिछले छः मास का सूद तो भेजा था?'

इस पर रोहिणी के कान खड़े हो गये। उसने सतर्क हो पूछा, 'कहाँ भेजा था?'

'बैंक में।'

'कितना था?'

'चार सौ बहत्तर रुपये आठ आने।'

'ओह! तो वह इक्कीस हजार का ब्याज था?'

'हाँ!'

'मैं तो समझी थी कि बैंक वालों ने भूल से मेरे खाते में जमा कर दिया है। जब बैंक की पास-बुक ठीक होकर आई थी, तब से मुझे बैंक जाने का अवकाश नहीं मिला। मैं तो उस रकम को अपने खाते से निकलवाने की बात कहने वाली थी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भाभी! ऐसा नहीं। वह आपकी ही रकम है। परन्तु अब तो छापाखाना की आय हुआ करेगी। मैं समझता हूँ कि वह उस ब्याज से बहुत अधिक होगी।'

'मैं उसे न तो लेने की इच्छा करती हूँ और न ही लेने में कारण समझती हूँ। कारण मैंने अपने पत्र में लिख दिया था।'

इस पर रत्नचन्द ने कह दिया, 'रोहिणी बहिन! तनिक कॉलेज का झगड़ा समाप्त हो जाये, तब इस विषय पर बात करना। मैं समझता हूँ कि तुम्हें महेन्द्रजी की सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इस पर भी कॉलेज से खाली होने पर कुछ करने की आवश्यकता पड़ेगी। छापेखाने की मैनेजरी भी अच्छा काम है।'

'आप मेरे कॉलेज के विषय में क्या जानते हैं ?'

'मोहिनी की बीमारी के कारण मैं बता नहीं सका। इस पर भी वहाँ जो कुछ हो रहा है, उस सबका मुझे ज्ञान है।

'डायरेक्टर का मुझसे परिचय है और वह जानता है कि मेरा शिक्षा-मंत्री से घना सम्बन्ध है। इस कारण उसने मुझे आपके कॉलेज की बात बताई है।

'उसको पता है कि तुम्हारा मुझसे क्या सम्बन्ध है। यह मिनिस्टर साहब ने उसे बताया था। इस कारण वह मुझे तुम्हारे प्रिंसिपल के झगड़े की बात बता रहे थे। यह तो मेरे और मिनिस्टर साहब के कहने पर ही हुआ है कि तुम्हारी पेशी बोर्ड के सामने होगी।

'मैं समझता है कि यह एक 'फौर्मल' कायर्वाही है। तुम्हारे विषय में बहुत अच्छे रिमार्क पास किये जायेंगे।'

'परन्तु जीजाजी! मैं तो नौकरी छोड़ देने का विचार कर चुकी हूँ। जब तक यह प्रिंसिपल वहाँ है, मैं वहाँ रहना पाप समझती हूँ। वह सर्वथा मूर्ख है।'

रत्नचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, 'देखो रोहिणी! त्याग-पत्र मुझसे पूछकर देना और फिर कभी दिया भी तो महेन्द्रजी की बात पर विचार कर लेना। छापाखाना एक अच्छा काम है।'

रोहिणी मुख देखती रह गयी।

इस समय आया बच्चे को लेकर आ गयी। बच्चे को रत्नचन्द ने गोदी में लेकर रोहिणी की गोदी में देते हुए कहा, 'और इसका भी तो कुछ ध्यान करना होगा।'

'हाँ! मैं कॉलेज छोड़ने के विचार के साथ इसके काम को भी जोड़ रही थी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

:1:

'तो आप मानती हैं कि सरकार हमारे देश का इतिहास बिगाड़ रही है?'

'इसमें सरकार की बात नहीं है। यह एक स्वाभाविक चलन है कि मालिक अपने को सेवकों से अधिक योग्य मानने लगता है।'

'सरकार ही तो मालिक है?'

'हाँ! परन्तु उसका मालिक होना उसके शासक होने से पृथक है।'

यह परीक्षा हो रही थी रोहिणी बजाज की पंजाब के सरकारी शिक्षा बोर्ड के द्वारा। कॉलेज की छात्राओं ने प्रस्ताव पारित कर प्रिंसिपल के द्वारा डायरेक्टर के पास भेज दिया था।

छात्राओं का कहना था कि उनको ज्ञात हुआ है कि कॉलेज की प्रिंसिपल महोदया ने कॉलेज की एक प्राध्यापिका के विषय में डायरेक्टर साहब को कहा है कि वह अयोग्य है और दूषित शिक्षा से युक्त है। यह बात मिथ्या है।

'वास्तव में प्रिंसिपल महोदय स्वयं इतिहास नहीं जानतीं जो उस प्राध्यापिका का विषय है जिसकी शिकायत वह कर रही हैं। प्रिंसिपल महोदया अंग्रेजी भाषा और साहित्य की स्नातिका हैं परन्तु आज संसार अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अतिरिक्त भी है।

'श्रीमती रोहिणी बजाज कभी-कभी इतिहास के विवादस्पद स्थलों पर हम को बताती रहती हैं। हम समझती हैं कि ऐसे विवादों के विषय में बताना उनका कर्त्तव्य है। इससे हमारा ज्ञान विस्तृत होता है।'

छात्राओं ने यह भी लिखा था, 'प्रिंसिपल के मिसेज़ बजाज से नाराज होने का कारण दूसरा है। वह कारण है मजहबी और जातीय, परन्तु इसका श्रीमती बजाज की नौकरी और इतिहास के प्राध्यापक होने से कुछ सम्बन्ध नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हम यह प्रिंसिपल महोदया के विरुद्ध कभी न लिखतीं यदि वे अपनी शिकायत में मिथ्या कथन न करतीं।'

इसके अतिरिक्त प्राध्यापक मण्डल का भी एक आवेदन पत्र डायरेक्टर के पास गया था। उसमें यह लिखा था -

'जब छात्राओं ने मिस रौबर्ट्सन के मिसेज़ बजाज के प्रति व्यवहार को पक्षपातपूर्ण, धर्मान्धता और नास्तिक्य से प्रेरित देख एक दिन की हड़ताल की तो हमने उनके विचारों और मनोद्गारों को जानने का यत्न किया। हमने तीन प्राध्यापकों की एक समिति नियुक्त की। इस समिति ने छात्राओं से, मिस रौबर्ट्सन से तथा मिसेज बजाज से भेंट की और वस्तुस्थिति को जानने का यत्न किया ।

'हमारी जांच का निष्कर्ष इस प्रकार है...

नीचे विवादस्पद घटना का पूर्ण वृत्तान्त बताकर लिखा था कि झगड़ा मिसेज़ बजाज और रौबर्ट्सन की योग्यता का नहीं है। दोनों अपने-अपने विषय की पण्डिता हैं। दोनों के विषय भिन्न-भिन्न हैं और उनको एक दूसरे की योग्यता पर कहने का अधिकार नहीं।

'परन्तु इस विचार में योग्यता का विषय किसी दूसरे उद्देश्य से लाया गया है। हमने मिस रौबर्ट्सन से पूछ-ताछ की है और इस परिणाम पर पहुँची हैं कि मिस रोबर्ट्सन अनीश्वरवादी हैं और मिसेज़ बजाज राष्ट्रवादी तथा स्वतन्त्रतावादी हैं। इस विवाद को कॉलेज में खड़ा करने की आवश्यकता नहीं थी। यह मिस रौबर्ट्सन ने किया।

'छात्राओं के कथन, श्रीमती बजाज के कथन और जानकार प्राध्यापिकाओं के कथन से हम इस परिणाम पर पहुंची हैं कि मिस रौबर्ट्सन ने अपने मजहबी और जातीय पूर्वग्रहों से प्रेरित हो एक मिथ्या रिपोर्ट की है।'

इस पृष्ठभमि के साथ बोर्ड रोहिणी से प्रश्नोत्तर कर रहा था।

जब रोहिणी ने कहा कि शासक होना और मालिक होना दो पृथक-पृथक व्यवहार हैं तो इसका अर्थ समझने के लिये बोर्ड के सदस्य उसका मुख देखने लगे।

बोर्ड में प्रान्त की विधानसभा के दो सदस्य, एक विश्वविद्यालय का नामाँकित व्यक्ति और एक गवर्नर का प्रतिनिधि था। इन चार व्यक्तियों के बोर्ड का अध्यक्ष ऑक्सफोर्ड का स्नातक एक मुसलमान था।

डायरेक्टर ने ही पुनः पूछा, 'मिसेज बजाज ! आप अपने वक्तव्य की व्याख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें तभी तो कुछ समझ में आ सकेगा।'

रोहिणी ने कहा, 'मेरा कहना यह है कि अंग्रेज जाति हिन्दुस्तान में शासक अपने गुणों के कारण बनी है। वे गुण इसके इसाई होने अथवा इंग्लैंड में जन्म लेने के कारण नहीं हैं। उन गुणों का सम्बन्ध-अंग्रेज के अंग्रेज होने, ईसाई होने अथवा रंग के गोरे होने से भी नहीं।

'मैं समझती हूँ कि अंग्रेज होने से इसके गुण कुछ ऐसे हैं जिससे यह नाश को प्राप्त हो रहा है। इसके अपने गुण अथवा दुर्गुण इसके साम्राज्य को स्वयं ही बीस-पच्चीस वर्षों में विनष्ट कर देंगे।'

प्रश्न डायरेक्टर महोदय ने ही किया, 'उदाहरण देकर समझायें तो अधिक ठीक होगा।'

'मैं इतिहास की स्नातिका हूँ और इतिहास के तत्त्व को समझती हूँ। इसके आधार पर कहती हूँ कि अंग्रेज़ कौम में अनुशासन तथा राज-नियज्ञता (डिप्लोमेसी) और साथ ही छलना के गुण प्रचुर मात्रा में हैं। इसके कारण ही इस भूमण्डल में उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना कर ली है।

'परन्तु इस कौम में जातीय अभिमान, उजड्डता, मेरा अभिप्राय है 'ऐरोगैंस' तथा काले-गोरे में भेद-भाव भी कम नहीं हैं। ये गुण इस जाति की जड़ों में तेल दे रहे हैं।

'दोनों प्रकार के गुणों का प्रभाव पृथक-पृथक है। पहिले प्रकार के गुणों के कारण इसका साम्राज्य स्थापित हुआ है और इसके दूसरे प्रकार के गुण जो वास्तव में अवगुण हैं, छिपे हुए हैं। परन्तु हिन्दुस्तान को सदा के लिये अपने अनुकूल रखने के लोभ में अंग्रेजों ने अपनी प्रकार की ही शिक्षा हिन्दुस्तानियों को देना आरम्भ कर दी है। इस शिक्षा को देते हुए एक सौ वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि अंग्रेज जाति के दुर्गुण भी हिन्दुस्तानी पढ़े-लिखे ने सीख लिये हैं और वे अंग्रेज़ जिन दुगर्णों को अपने डिप्लोमैटिक व्यवहार में छिपा रहे थे, अब हिन्दुस्तानियों पर प्रकट हो गये हैं।

'मेरा दृढ़ विश्वास है कि इससे यहाँ हिन्दुस्तान में अंग्रेज का शासन नहीं रह सकेगा। परन्तु हिन्दुस्तानियों ने अंग्रेजों के सद्गुण नहीं सीखे। इस कारण ये अंग्रेज का शासन तो समाप्त कर देंगे, परन्तु स्वयं शासन करने के योग्य नही होंगे।

'कारण यह कि शासन करने के गुण अंग्रेजों द्वारा दी जा रही शिक्षा का अंग नहीं हैं। अनुशासन, चित्त की सरलता इत्यादि गुण यहाँ के लोग सीख नहीं रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ का पढ़ा लिखा व्यक्ति अंग्रेज की कूटनीति और शिक्षागत दोषों को ही सीख सका है। अतएव संख्या में अंग्रेज से अधिक होने के कारण ये लोग अंग्रेजों को देश से बाहर कर देंगे परन्तु तब जो कुछ हमें प्राप्त होगा, वह स्थायी, सुखद् और कल्याणकारी नहीं हो सकता।'

'तो क्या होगा?' एक सदस्य ने पूछ लिया।

'तब हमारी अवस्था वही होगी जो एक विधुर की होती है। जैसे विधुर की पत्नी उसको छोड़ चुकी होती है, वैसे ही इस जाति की मेधा, धृति तथा शील इसे छोड़ चुका होगा। मेरा अभिप्राय यह है कि जाति विधुर हो जायेगी।

'हम अंग्रेजी शिक्षा से धी, श्री और सरस्वती से वंचित कर दिये गये हैं और एक पत्नी-विहीन विधुर की भाँति दूसरों की पत्नियों से मनोविनोद करने का यत्न कर रहे हैं।

'हिन्दुस्तानी राष्ट्र रण्डवा बन धी, श्री और ज्ञान से रहित हो, एक कटी पतंग की भाँति डोलने लगेगा।'

'बहुत भयानक चित्र बना रखा है मन में आपने।'

इस समय सरकारी प्रतिनिधि मिस्टर कार्टर ने पूछ लिया, 'क्या हम विषय के बाहर नहीं चले गये?'

डायरेक्टर ने कहा, 'श्रीमान कार्टर! हम किस विषय में जाँच कर रहे हैं?'

'मिस रोबर्ट्सन की शिकायत पर।'

'वह तो झूठी है। मैं स्वयं कॉलेज में गया था और वहाँ मेरी जाँच का परिणाम यही है कि मिस रोबर्ट्सन इतिहास के विषय में कुछ नहीं जानतीं और उन्होंने जो शिकायत की है, उसमें कारण पढ़ाई के विषय से अन्य ही है।'

अभी भी कार्टर ने ही कहा, 'हम हिन्दुस्तान में अंग्रेजी शासन और भविष्य में होने वाले इसके प्रभाव के विषय में जाँच करने नहीं आये। यह बात विषयान्तर है?'

इस पर शिक्षा मंत्री ने कह दिया, 'परन्तु यह विषय इतिहास से तो सम्बन्ध रखता है। यद्यपि मैं मिसेज़ बजाज के निष्कर्षों से पूर्णतः सहमत नहीं हूँ इस पर भी मैं इनकी इतिहास के ज्ञान की विशालता से इन्कार नहीं कर सकता।'

इस पर डायरेक्टर ने कह दिया, 'इस परस्पर की बात से मैं यह समझा हूँ कि श्रीमती बजाज की पेशी समाप्त हुई है। हम अब इनके कथन पर स्वयं विचार करने लगे हैं। इससे मैं समझता हूँ। कि इनको छुट्टी दे दी जाये।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हाँ!' मिस्टर कार्टर ने कहा ।

इस पर डायरेक्टर ने कहा, 'मिसेज़ बजाज! धन्यवाद। अब आप जा सकती हैं।'

'मैं कुछ निवेदन भी करना चाहती हूँ।'

'वह आप लिखकर करियेगा। आपका निवेदन बोर्ड के सम्मुख नहीं हो सकता। बोर्ड तो एक विशेष विषय पर ही जाँच करने के लिये नियुक्त था। अपने विभाग की बात मैं यहाँ नहीं होने दूँगा।'

वास्तव में डायरेक्टर जानता था कि रोहिणी त्याग-पत्र की बात करने वाली है। यह उसे बलूजा से विदित हो चुका था। रोहिणी ने सब को हाथ जोड़कर नमस्कार कही और कमरे से निकल गयी।

हॉस्टल में अपने कमरे में पहुंच कर उसने एक पत्र प्रिंसिपल को लिखा, 'मैं हॉस्टल के सुपरिन्टेन्डेण्ट के काम से अवकाश चाहती हूँ। मेरी घरेलु स्थिति ऐसी है कि मैं अपने घर से बाहर नहीं रह सकती।' पत्र लेकर वह मिस रौबर्ट्सन के पास जा पहुंची। पत्र पढ़ रौबर्ट्सन ने पूछा, 'तो आप विवाह कर रही हैं?'

रोहिणी ने बताया, 'मैडम! नहीं। मेरी बहन का देहान्त हो गया है और उसका लड़का अपनी माँ का अभाव अनुभव करता प्रतीत होता है। मैं उस अभाव को पूरा करना चाहती हूँ।

'हॉस्टल की सुपरिन्टेडेण्ट की नियुक्ति आपके अधिकार में है। इस कारण आपसे अर्जी कर रही हूँ, जिसे स्वीकार करने का अधिकार आप रखती हैं।'

'ठीक है! अभी आप काम करें। मैं शीघ्र ही किसी को आपके स्थान पर नियुक्त कर दूँगी। तब आप जा सकेंगी।' ।

अगले ही दिन बेगम नूरी कासम हॉस्टल की सुपरिन्टेंडेण्ट नियुक्त हुई तो रोहिणी अपनी पुस्तकें तथा वस्त्रादि लेकर बलूजा हाऊस में जा पहुंची।

इस विषय पर बलूजा के साथ रोहिणी का निश्चय पहले ही हो चुका था।

बोर्ड में रोहिणी की पेशी के दो दिन पूर्व ही, एक शाम चाय के समय बेबी को गोदी में लिये हुए रोहिणी ने कहा था, 'इसकी आया कहती है कि यह मां की अनुपस्थिति में रोता रहता है। यह दूध भी पूरा नहीं लेता।'

'हाँ, इस बात की शिकायत इसकी आया ने मेरे पास भी की है। मैं इसे डॉक्टर को दिखाने का विचार कर रहा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परन्तु इसे कोई बीमारी नहीं है जो डॉक्टर की राय की आवश्यकता पड़ गयी है?'

'तो क्या है?'

'इसे माँ का अभाव प्रतीत हो रहा है।'

'इसमें मैं कुछ नहीं कर सकता।'

'मैं कुछ करने का विचार कर रही हूँ।'

'क्या?'

'मैं इसकी माँ का स्थानापन्न बन यहाँ रहने लगूँ।'

'परन्तु रोहिणी! इसकी माँ मेरी पत्नी भी थी?'

'दोनों भाव भिन्न-भिन्न हैं। यद्यपि दोनों का सम्बन्ध इस रूप में है कि आपकी पत्नी ने ही इसे जन्म दिया है। इस पर भी जन्म देने के उपरान्त माँ-पुत्र का सम्बन्ध पति-पत्नी के सम्बन्ध से पृथक हो गया था। बस, इस दूसरे सम्बन्ध से ही मेरा अभिप्राय है। मैं इसकी माँ का सम्बन्ध अपने से बनाने का विचार रखती हूँ।'

'आपको हॉस्टल की सुपरिन्टेंडेण्ट का काम छोड़ना पड़ेगा।'

'वह मैं छोड़ रही हूँ।'

'परन्तु उस काम के न छूटने के लिये तो मैं एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा हूँ।'

'वह प्रयत्न तो मेरे प्राध्यापक कार्य के लिये है।'

'तो तुम प्राध्यापक रहना मान रही हो?'

'अभी तो हॉस्टल का काम छोड़ रही हूँ। शेष के लिये परसों पेशी के उपरान्त विचार करूंगी।'

बलूजा चुप रहा। नियत दिन बोर्ड के सम्मुख पेशी हई। उसके तुरन्त ही उपरान्त रोहिणी ने हॉस्टल के काम से त्याग-पत्र दे दिया और वह अपना सूटकेस तथा पुस्तकों का बण्डल लेकर बलूजा लौज आ पहुंची।

:2:

रोहिणी मध्याह्न के दो बजे पहुंची थी। बलूजा उस समय कोर्ट गया हुआ था। रोहिणी के वहाँ आते ही नर्स बच्चे को लेकर उसके पास आ गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक को गोदी में लेकर रोहिणी ने नर्स को कह दिया, 'मैंने इसका नाम कमल रख दिया है। आज से यह कमल है।'

इतना कह उसने बच्चे को गाल को थपथपाते हुए उसका नाम पुकारा। बच्चा इस थपथपाने को पहचानने लगा था। वह तीन मास का हो चुका था और नर्स तथा रोहिणी के हाथों में अन्तर भी समझने लगा था। इस कारण वह थपथपाने के साथ कमल शब्द सुनने लगा।

नर्स ने ही पूछा, 'आपके लिये चाय मँगवाऊँ?'

'नहीं, अभी नहीं। इसके पिता आएंगे तो लूंगी।

'आप अपना सामान ले आयी हैं। तो क्या आप यहाँ रहने आयी हैं?'

'हाँ! तुम क्यों पूछ रही हो?'

नर्स ने मुस्कराते हुए कहा, 'बलूजा साहब कुछ रंगीली तबीयत रखते हैं?'

'तो उन्होंने तुम्हें रंग लिया है क्या?' रोहिणी ने भी मुस्कराते हुए पूछा।

'उन्होंने रंगने का यत्न तो किया ही है, परन्तु मैं रंगी नहीं गयी। इसमें कारण है। वह कारण आपके साथ तो नहीं है।'

रोहिणी ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं समझती हूँ कि तुमसे अधिक प्रबल कारण मुझ में है और मुझ पर उनका रंग नहीं चढ़ेगा।'

'ठीक है! इन रण्डवे वकीलों से बचकर रहना ही ठीक है।'

'तुम तो बहुत अनुभव रखती हो!'

'हाँ, नर्स का कुछ पेशा ही ऐसा है। अनुभव हो जाता है। साथ ही मैं आप से कुछ बड़ी आयु की भी तो हूँ।'

'क्या आयु है तुम्हारी?'

'मैं इस समय अट्ठाईस वर्ष की हूँ। दो वर्ष से विधवा हूँ। एक वर्ष तक नर्स का काम सीखकर अब एक वर्ष से यह काम कर रही हूँ। मेरा एक लड़का है और माँ भी जीवित है।'

'तब तो ठीक है। तुम वास्तव में मुझसे अधिक अनुभव रखती हो।

'अच्छा, देखो! अभी यहाँ की नौकरी मत छोड़ना। मेरा यहाँ रहने का विचार कुछ पक्का नहीं।'

'तो मेरे कहने से जाने का विचार करने लगी हैं?'

'नहीं, मेरे यहाँ रहने अथवा न रहने का सम्बन्ध तुम्हारे यहाँ काम करने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है?'

नर्स मिसेज रौली स्मिथ को रोहिणी के कथन पर विश्वास नहीं आया। इस पर भी वह चुप रही। रोहिणी बच्चे से बातें करने का यत्न करने लगी तो वह उठकर चली गयी।

रोहिणी को समझ आ गया कि एक विधुर के पास एक विधवा का आकर रहने का अभिप्राय लोग क्या ले सकते हैं। इस विषय पर उसने पहले भी सोचा था। मिसेज स्मिथ के कथन से वह पुनः विचार करने लगी।

लोकापवाद से वह भयभीत नहीं थी। दूसरों के निन्दा-प्रशंसा की उसे कभी भी चिन्ता नहीं हुई थी। अब भी यह विचार नहीं था कि लोग उसका अपने विधुर जीजा जी के घर आकर रहना पसन्द करेंगे अथवा नहीं। मिसेज स्मिथ के कहने पर वह यह विचार करने लगी थी कि क्या वह इस सम्बन्ध को स्वीकार कर सकेगी अथवा क्या यह सम्बन्ध बना लेना उचित होगा?

उसे कुछ ऐसा अनुभव होने लगा था कि उसके मन में कुछ तो आकर्षण अपने जीजा जी के लिये है।

यह ठीक था कि वह दो स्थान पर पुनर्विवाह के विचार को दुत्कार चुकी थी। परन्तु वे दोनों युवक रत्नचन्द से कम सुन्दर और कम ओजस्वी थे। उन दोनों की आर्थिक स्थिति भी अपेक्षाकृत ढीली थी। बलूजा एक सफल वकील था। उसकी वकालत खूब चलती थी। बलूजा का समाज में स्थान भी पहले प्रत्याशियों से उच्च था। एक क्लर्क था और दूसरा दुकानदार।

इस पर भी उसके अन्तरात्मा की आवाज़ यह थी कि विवाह उसके जीवन का लक्ष्य नहीं है। प्रत्युत यह उसके जीवन के लक्ष्य में बाधक है।

वह विवाहित जीवन का कुछ मास का अनुभव रखती थी। उसका वह जीवन भी वासनाविभूत नहीं था। तब वह माता-पिता के यत्न से विवाह दी गयी थी। पिता ने देखा था कि रवि एक समृद्ध दुकानदार का लड़का है तथा स्वयं भी अच्छे वेतन के साथ-साथ अच्छी आय कर रहा है तो उसकी आय का भोग करने के लिये लड़की का विवाह कर दिया था।

दूसरे स्थान पर विवाह तो केवल उसकी स्लेट पर वैधव्य के लिखे को पोंछ देने का प्रयास था।

परन्तु रत्नचन्द बलूजा उन दोनों प्रत्याशियों से शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक दृष्टि से अधिक श्रेष्ठ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तो प्रलोभन थे, परन्तु उसके मन में विवाह से अरुचि किसी अन्य कारण से थी। उसके मस्तिष्क में स्पष्ट था कि उसका जीवन-लक्ष्य विवाह नहीं है। परन्तु मन में मिसेज़ स्मिथ के कहने से यह संशय उत्पन्न हो गया था कि क्या वह अपने निश्चय पर दृढ़ रह सकेगी?

विचार-शृंखला के इस स्थान पर पहुँचते ही वह सचेत और सतर्क हो गयी। एकदम उसके मन में विद्रोह की भावना उठ खड़ी हुई। वह विचार करने लगी कि वह इस प्रलोभन के सामने पराजित हो रही है। परन्तु, अन्तरात्मा की आवाज थी कि वह जीवन के इस संघर्ष में वैसे ही सफल हो जायेगी, जैसे पहले हो गयी है।

बच्चा दूध पी खेलते-खेलते सो गया था। वह उसे पालने में डालने के लिये 'नर्सरी' में ले गयी। वहाँ मिसेज़ स्मिथ गम्भीर विचार में निमग्न बैठी थी। वह उसके मुख पर चिन्ता की रेखाएँ देख उसके अन्तर्भावों को समझ हँस पड़ी।

बच्चे को पालने पर सुला रोहिणी नर्सरी से जाने लगी तो नर्स ने पूछ लिया, 'बहन जी! आप हँसी किसलिये हैं?'

'इसलिये कि मनुष्य इतना दुर्बल मन रखता है कि वह काल्पनिक सुख-दुःख के विचारों से हर्ष और शोक में भटकने लगता है।'

'और मुझमें आपने क्या देखा है? हर्ष अथवा शोक, जिस पर आपकी हँसी निकल गयी है?'

'न हर्ष, न शोक। अनिश्चित भविष्य की चिन्ता।

'देखो बहन! मैं तुम्हें स्पष्ट रूप में बताती हूँ कि मैंने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया है कि यहाँ नहीं रहूँगी। रहने का मेरा अभिप्राय, उस रूप में है जिसमें तुम समझ रही हो। मैं बलूजा साहब के रंग में रंगी जाने के लिये नहीं आयी। न यहाँ रहती हुई रंगी जाने की लालसा करती हूँ।'

रोहिणी खड़ी-खड़ी बात कर रही थी और नर्स भी अपनी कुर्सी से उठ, आदर के विचार से खड़ी हो गयी थी। इस कारण रोहिणी ने कहा, 'बाहर आ जाओ। यहाँ बच्चे की नींद भंग हो जायेगी।'

दोनों पुनः ड्राइंग रूम में आ गयीं। वहाँ कुर्सियों पर बैठते ही रोहिणी ने अपने मन में हुए निश्चय को बताया, 'मैं पुरुष-संगत की भूख नहीं रखती। इस अर्थ से यहाँ आयी भी नहीं। मैं यहाँ इस कारण आयी हूँ कि मुझे अपने जीवन-कार्य के लिये कहीं शान्ति से रहना चाहिये और उसके लिये जीजाजी का मकान अधिक उपयुक्त प्रतीत हो रहा है। उस उपयुक्तता में यौन सम्बन्ध नहीं है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो आप जीवन में क्या करने का विचार रखती हैं?'

'तुम्हारी शिक्षा कहाँ तक है?'

'मैं मैट्रिक पास कर नर्स का काम सीखने लगी थी। इस काम को सीखते-सीखते ही विवाह कर बैठी। बच्चा होने पर बच्चे का बाप प्रभु के घर चला गया। विवाह हुए पाँच वर्ष हुए हैं और बच्चा साढ़े चार वर्ष का है। विधवा हुए दो वर्ष हो चुके हैं। यहाँ मैं पिछले चार महीने से काम कर रही हूँ।'

रोहिणी के मन में यह विचार बैठ रहा था कि स्मिथ का उसके जीजाजी से यौन सम्बन्ध बन चुका है और स्मिथ इसको पसंद न करती हुई भी इसमें लिप्त है। किस कारण से वह इस अरुचिकर कार्य में लिप्त है? वह समझी थी कि यह मानसिक दुर्बलता के कारण ही हो सकता है।

रोहिणी अपने विषय में तो निश्चय कर चुकी थी कि मोहिनी के लड़के की देख-रेख के लिये इस कोठी में रहेगी और बलूजा से भाई-बहन जैसा सम्बन्ध ही रखेगी।

इस कारण वह विचार करती थी कि यदि उसका जीजा मनोविनोद के लिये मिसेज स्मिथ को रखना चाहता है तो उसमें वह आपत्ति नहीं करेगी। अपने मन में वह उसके इस जीवन में किसी प्रकार से भी दखल न देने का संकल्प लिये हुए थी।

पौने पाँच बजे रत्नचन्द आया और आते ही ड्राइंग रूम में एक कोने में रोहिणी का सामान पड़ा देख हँस पड़ा। रोहिणी और स्मिथ अभी भी समझ-समझा रही थीं। दोनों बलूजा को हँसते देख उसका मुख देखने लगीं।

बलूजा ने अपने हँसने को वार्तालाप का विषय न बनाने के लिये कह दिया, 'रोहिणी जी! सेवक को कहिये, चाय ले आये। आज तीन घंटे लगातार कोर्ट में बहस करके आ रहा हूँ और बहुत थका हुआ हूँ।'

रोहिणी ने सोफा के साथ लगी घंटी का बटन दबाया। सेवक तो इस आहवान की प्रतीक्षा ही कर रहा था। इस कारण ट्रे में चाय का सामान लिये हुए वह आ गया। उसने ट्रे सेंटर-टेबल पर रख, उसमें से प्याले और प्लेटें तीनों के सामने लगानी आरम्भ कर दी।

रोहिणी ने सबके लिये चाय प्यालों में बनायी और सब सामने रखी पेस्टरी खाने लगे। खाते हुए रत्नचन्द फिर हँसा और बोला, 'रोहिणी! यह तो मैं जानता था कि तुम इतिहास की स्नातिका हो, परन्तु मुझे विदित नहीं था कि तुम साहित्य में भी सिद्धस्थ हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह किसने आपको बताया है?'

'तुम्हारे वक्तव्य ने, जो कल तुमने बोर्ड के सामने दिया है। उस वक्तव्य की प्रतिलिपि मुझे आज मिली है।'

'कहाँ से मिली है?'

'तुम्हारी पेशी पर हुआ वार्तालाप एक स्टेनो तुम्हारे पीछे बैठा लिख रहा था। उसकी एक प्रतिलिपि मिनिस्टर साहब के पास आयी है। दस फुलस्केप शीटों में वह है। उसी के लिये मिनिस्टर साहब ने मुझे टेलीफोन पर बुलाया था।

'मेरे उनसे मिलने जाने पर उन्होंने मुझे वह वक्तव्य पढ़ने को दे दिया था। अब गाड़ी में आते-आते मैंने उसको पढ़ डाला है। पढ़कर तुम्हारी वर्णन-शैली पर तो दाद देता हूँ, परन्तु तुमसे सहमत नहीं हूँ।'

'उसमें कौन-सी बात पसन्द आयी है और उससे असंतुष्टि भी है?'

रत्नचन्द ने चाय का प्याला उठा, उसमें से एक चुस्की लेते हुए कहा, 'उदाहरण के रूप में तुमने कहा है कि हिन्दुस्तान में राष्ट्र रण्डवा हो गया है और एक विधुर की भाँति अपनी पत्नी से वंचित हो दूसरों की पत्नियों के पीछे भाग-दौड़ कर रहा है।'

'हाँ! यह एक अलंकार है। मैंने इसकी समानता एक विधुर की स्वाभाविक प्रवृत्ति से की है।'

'स्वाभाविक अस्वाभाविक तो इसकी व्यापकता से ही पता लग सकता है। यह सर्वत्र सिद्ध बात नहीं है?'

'क्या सिद्ध बात नहीं है?' रोहिणी ने अभी भी अपने वक्तव्य की प्रतिक्रिया अपने जीजाजी के मन पर जानने के लिये पूछ लिया।

अब रत्नचन्द ने गम्भीर हो पूछ लिया, 'तो तुम श्रीं, ह्रीं, क्लीं को राष्ट्र की पत्नियाँ समझती हो। साहित्य तो इनको माता समझता है?'

'ओह! तो यह बात है? माँ भी तो पत्नी की भाँति घर की स्वामिन होती है। एक स्त्री घर की भी स्वामिन हो सकती है और पति की भोग्या भी। इस पर भी दोनों भाव, मेरा अभिप्राय है कि दोनों कार्य पृथक-पृथक हैं। ये एक ही व्यक्ति के हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते।

'पत्नी शब्द, पति शब्द का स्त्रीलिंग ही है। पति अपनी विवाहिता का भोक्ता भी हो सकता है, परन्तु उसका केवल संरक्षक भी हो सकता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो अब व्याकरण की भी टाँग मरोड़ने लगी हो?'

'व्याकरण कोई दूषित विषय है क्या?'

'व्याकरण ही भाषा के रहस्यों और सौंदर्यों को प्रकट करता है। शब्दकोष तो व्याकरण और वैय्याकरणों के अनुगामी होते हैं। व्याकरणों से मेरा अभिप्राय है व्याकरण का प्रयोग कर भाषा का स्वरूप देने वाले साहित्यकार।'

'देखिये जीजाजी! माँ को कोई घर से निकाल नहीं सकता। परन्तु यहाँ के रहने वालों ने जाति की मेधा, बुद्धि, धन-सम्पदा और कला-कौशल को बाहर कर विदेशीय बुद्धि इत्यादि के पीछे भागना आरम्भ कर दिया है। यही मेरा अभिप्राय था हिन्दुस्तानी राष्ट्र एक रण्डवे की भाँति अपनी इन सुन्दर निधियों की हत्या कर गोरी निधियों के पीछे भाग खड़ा हुआ है।'

'परन्तु हमने तो इनकी हत्या नहीं की, न ही ये मरी हैं ?'

'वह शुभ कार्य अंग्रेज और जर्मन लेखक कर रहे हैं। उन्होंने हमारे साहित्य, कला एवं हमारे उद्योग-धंधों का विनाश कार्य लगभग समाप्त कर दिया है।'

'तुमने यह वहाँ स्पष्ट नहीं किया?'

'यह इस कारण कि इस विषय में पूछने की बुद्धि बोर्ड के सदस्यों में थी नहीं। वे हिन्दुस्तानियों की एक विधुर से उपमा सुन मुग्ध हो गये थे और कदाचित वे अपनी प्रेमिकाओं के विषय में चिन्तन करने लगे थे?'

इस पर बलूजा खिल-खिलाकर हँस पड़ा। वह बोला, 'हाँ! जब मैं मिनिस्टर साहब के घर ग्यारह बजे के लगभग पहुँचा था तो उनकी पी. ए. मिस क्रीणा उनके लिये कॉफी बनाकर लायी थी और वह मुग्ध-भाव में उसके मुख पर देख रहे थे'

'तो मिनिस्टर साहब भी विधुर हैं?'

'रोहिणी जी! आपने तो पूर्ण राष्ट्र को ही विधुर बना दिया है।

इस पर तीनों हँसने लगे। मिसेज़ स्मिथ भी वार्तालाप के भाव को समझने लगी थी।

हँसते हुए मिसेज़ स्मिथ ने कह दिया, 'बहन जी! गोरी लड़कियों में सौन्दर्य तो विशेष होता ही है?'

'हाँ! खाल गोरी होती है। परन्तु सौन्दर्य में खाल का योगदान इतना बड़ा नहीं होता, जितना रूप-राणि और ओज का होता है।'

यह बात मिसेज़ स्मिथ नहीं समझ सकी और चुप कर रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:3:

रत्नचन्द बलूजा इस सफाई से सन्तुष्ट प्रतीत नहीं होता था। वह गम्भीर भाव में रोहिणी का मुख देखता रहा। उसके इस प्रकार देखने को रोहिणी पसंद नहीं कर रही थी। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, 'जीजा जी! मैं हॉस्टल छोड़ आयी हूँ।'

'यह तो देख रहा हूँ। वह कोने में सामान पड़ा देखा है।'

'वह मैंने ठिकाने लगवाया नहीं है। इस कारण कि मुझे पता नहीं कि जीजा जी मुझे यहाँ रहने का निमन्त्रण देते हैं अथवा नहीं?'

'तो तुम निमन्त्रण की प्रतीक्षा में हो?'

'जी! यह ठीक है कि इस समय तक मुझे किसी अन्य स्थान से निमन्त्रण नहीं आया और जहाँ से आने की आशा है, वहाँ मैं जाने में अपना कल्याण नहीं समझती। मेरा अभिप्राय महेन्द्र के मकान से है।'

'और यदि मैं निमन्त्रण दूँ तो फिर यहीं रह जाओगी?'

'निमन्त्रण की आशा में ही तो आयी हूँ और यह भी जानना चाहती हूँ कि मुझे बता दिया जाये कि मुझसे भाड़ा क्या लेंगे?'

'एक भाड़ा तो आपने देने का वचन दे ही दिया है। वह है छुटकु की देख-रेख करना।'

'परन्तु वह अभी तो नहीं कर सकूँगी। अभी मैंने पढ़ाई का काम कॉलेज से नहीं छोड़ा।'

'तो उसे भी छोड़ने का विचार है?'

'बोर्ड और डायरेक्टर के समक्ष हुई मेरी पेशी पर क्या आज्ञा होगी, इस पर निर्भर करता है। मैंने उन सबको खरी-खरी सुनायी।'

'हाँ ! बोर्ड में सरकारी प्रतिनिधि ने इस प्रश्न पर कि अंग्रेज का राज्य जायेगा, बहुत मजेदार प्रतिक्रिया व्यक्त की है। वह मैंने पढ़ ली है।'

'जी! मैंने कहा था कि कोई भी मनुष्यकृत वस्तु अथवा प्रबन्ध स्थायी नहीं होता। यह ब्रिटिश साम्राज्य कुछ मूर्खों ने पशुबल से निर्माण किया है और सब मनुष्यकृत पदार्थों की भाँति यह भी टूट-टूटकर नष्ट होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैंने साथ ही यह भी कहा था कि प्रश्न इसके जाने अथवा न जाने का नहीं है। यह तो जायेगा ही, परन्तु मैं तो यह कह रही हूँ कि बहुत जल्दी जायेगा।

'उनके पूछने पर मेरा कहना था, 'जिस गुण अथवा दुर्गुण से अंग्रेज ने यह राज्य स्थापित किया है, वही गुण अपनी मूर्खतावश वे हम हिन्दुस्तानियों को सिखा रहे हैं। इस कारण, उन दुर्गुणों में अंग्रेज जैसे चतुर न होते हुए भी, संख्या में अधिक होने से हम देश से अंग्रेजों को मुसलमानों की अपेक्षा जल्दी ही निकाल देंगे।

'इस पर डायरेक्टर साहब, जो मुसलमान हैं और मैं समझती हूँ कि एक सही दिमाग़ मुसलमान हैं, पूछने लगे, 'क्या आपका यह अभिप्राय है कि मुसलमानों ने अपने शासन काल में अपने गुण-अवगुण हिन्दुओं को नहीं सिखाये थे?

'मेरा सतर्क उत्तर था, 'मुसलमान इसे सिखाना तो चाहते थे, परन्तु सिखाने की शर्त बहुत कठोर रखी हुई थी। इस कारण वे सिखा नहीं सके। इसी कारण वे सात सौ वर्ष तक राज्य कर गये और अंग्रेज राज्य तो अब दस-बीस वर्ष की बात प्रतीत होती है।

'उन्होंने पूछा, 'तो वह क्या बात थी जो मुसलमान हिन्दुओं को नहीं सिखा सके?

'मेरा उत्तर था, 'चार वर्ष तक विवाह कर भी मोमिन बने रहना; पत्नियों को लौंडियों की भांति समझ बसे घर से ऐसे निकाल सकना जैसे किसी नौकर को नौकरी से निकाल दिया जाता है; गिल्मानबाजी और विरोधी की युक्तियुक्त बात पर भी उसकी हत्या कर देना; मजहब के नाम पर भेदभाव करना; एक हीन चरित्र मुसलमान को एक श्रेष्ठ चरित्रवान गैर-मुसलमान से श्रेष्ठ समझना।

'ये हिन्दू नहीं सीख सके और परिणाम यह हुआ था कि हिन्दू सात सौ वर्ष तक दासता की चक्की में पिसते रहे थे।

'इस पर विधानसभा के सदस्य बोल उठे, 'तो इनको आप सदगुण समझती हैं, जो राज्य छीनने के लिये सीखने चाहिये थे?'

'मेरा उत्तर था, 'नहीं श्रीमान! एक कौम का दूसरी कौम पर राज्य जमाना कोई अच्छा काम नहीं। यह अत्यन्त बुरा काम है। ऐसा बुरा काम कोई दुर्गुणी ही सम्पन्न कर सकता है।

इस पर डायरेक्टर साहब ने हँसते हुए कहा, 'तो राज्य का विस्तार करने के लिये दुर्गुणी बनना ही चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा कहना था-'दुर्गुण पहले आते हैं और एक जाति का दूसरी जाति पर शासन पीछे होता है। दुर्गुण के साथ बल भी हो तो राज्य बन जाता है, परन्तु बल गौण है और दुर्गुण मुख्य हैं।

'जीजाजी! इस प्रकार मैंने सबको खरी-खरी सुनायी हैं और मैं समझती हूँ कि मुझे कॉलेज से निकाल दिया जायेगा?'

'परन्तु मिनिस्टर साहब तो तुम्हारी बहुत प्रशंसा कर रहे थे?'

'आपने कारण नहीं पूछा?'

'नहीं, समय नहीं था। मुझे कोर्ट में बहस के लिये वापस आना था। इस कारण मैंने कहा था कि कल उनको यह रिपोर्ट वापस कर दूँगा और उनकी इस पर राय पूछूँगा।'

रोहिणी ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैं तो कॉलेज की पढ़ाई से भी छुट्टी की आशा कर रही हूँ।'

'देखो रोहिणी! इस समय तो प्रश्न यह है कि तुम यहाँ रहने आयी हो, मुझसे यहाँ रहने की स्वीकृति की आशा लेकर?'

'जी!'

'और मैं पूछता हूँ कि किस कमरे में रहना चाहोगी?'

'जो आपकी कोठी में व्यर्थ पड़ा हो।'

'अच्छा इस विषय में पीछे विचार करूँगा। मैं तुम्हारी आवश्यकताएँ जानकर ही राय दे सकूँगा। इस समय एक अन्य बात विचारणीय है?'

'क्या?'

'वह यह कि उस दिन से ही, जब तुमने कहा था कि बच्चे की माँ बनने का तुम यत्न कर रही हो अथवा करोगी, यह नर्स छुट्टी माँग रही है।'

'मेरी इससे भी बात हुई है। मैंने इसे राय भी दी है कि इसे छट्टी करने की आवश्यकता नहीं। यह इस कारण कि मैं इसके काम को समेट नहीं रही। बच्चे के विषय में भी मैं अपना पृथक क्षेत्र निर्माण करूंगी। वह उसके क्षेत्र से टकराव नहीं करेगा।'

'हाँ! मिस स्मिथ! अब बताओ।'

'मुझे बहन जी ने बताया है। मैं इनके बताये पर विचार कर रही हूँ। विचार एक-दो दिन में बताऊँगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देखो रोहिणी! अब मैं क्लब जाऊँगा। वहाँ से रात के नौ-सवा नौ बजे तक लौटूंगा। तब तक तुम मेरे स्ट्डी-रूम का प्रयोग कर सकती हो। सामान और सोने का प्रबन्ध मैं आकर बताऊँगा।

'यदि कहीं जाना हो तो जा सकती हो। खाने का समय साढ़े नौ बजे होता है। उससे पहले आ जाना। खाना एक साथ लेंगे।'

इसमें उत्तर देने को कुछ नहीं था, इस कारण दोनों स्त्रियाँ उठ हुई। यह इस कारण कि रत्नचन्द भी जाने को तैयार हो गया था।

रत्नचन्द ने अपना टैनिस का बल्ला लिया और घोड़ा-गाड़ी में सवार हो क्लब को चला गया।

बलूजा के चले जाने के उपरान्त रोहिणी ने पूछा, 'बाबू तो तुम्हें निकालने का विचार रखते प्रतीत नहीं होते। इस कारण मेरा विचार है कि तुम्हें जाना नहीं चाहिये। तुम चाहोगी तो वह तुम्हारी उन्नति भी कर देंगे। इसके अतिरिक्त बच्चे की देखभाल का वेतन तो मैं स्वयं देने का विचार रखती हूँ। यह मैं तब तक कर सकूँगी, जब तक कॉलेज में मेरी सर्विस बनी हुई है।'

'तो मैं अपने प्रभु से प्रार्थना करूँगी कि आपका काम बना रहे।'

'ठीक है! कल तक तो मैं यही विचार कर रही थी कि नौकरी छोड़ देनी चाहिये। आज जीजा जी की बात सुनकर मैं यह विचार करने लगी हूँ कि मुझे स्वयं काम नहीं छोड़ना चाहिये। छूट जाये तो छूट जाये, उस पर शोक नहीं करना चाहिये।'

मिसेज़ स्मिथ इससे प्रसन्न थी। वह सन्तुष्ट मन नर्सरी में चली गयी।

अब रोहिणी इस कोठी में रहने पर विचार करने लगी कि उसे यहाँ रहना चाहिये अथवा नहीं। उसने अपनी स्थिति का विश्लेषण किया तो उसने बलूजा लौज को छोड़ कर अन्य ठिकानों पर विचार करना आरम्भ कर दिया।

माँ ने उससे मोहिनी के चौथे दिन पूछा था कि पिताजी से राय कर बतायेगी कि वह उनके घर में जा सकती है अथवा नहीं। वहाँ से उत्तर नहीं आया था। चौथा हुए दस दिन से ऊपर हो चुके थे। महेन्द्र ने मिलने आने का निमंत्रण दिया था। वहाँ आकर पक्का रहने का निमंत्रण नहीं था। यह इस कारण भी हो सकता था कि महेन्द्र को विदित नहीं था कि वह हॉस्टल का काम छोड़ रही है। परन्तु वहाँ रहने में वह कठिनाई अनुभव करती थी। उसे विदित था कि महेन्द्र के माता-पिता उसके व्यवहार के कारण ही तो महेन्द्र से नाराज हैं और साथ ही महेन्द्र की पत्नी उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर छोड़ गयी थी। अतएव उसके घर जाकर रहना उसके लांछन को सिद्ध करने के तुल्य होगा।

प्रश्न था तो फिर कहाँ जाये? जीजाजी की कोठी सुखद् तो थी ही। खुले हवादार कमरे थे। पाँच बड़े रूम थे। ये नर्सरी के अतिरिक्त थे। उन चार में से एक सुगमता से मिल सकता था। परन्तु वह डरती थी कि कहीं जीजा जी भाड़ा इतना न माँग लें, जितना वह दे न सके। रुपये पैसों का विचार नहीं था। कहीं जीजा जी उससे पत्नी बन जाने की माँग न कर दें। यौन सम्बन्ध में उसकी रुचि नहीं थी। उसके अतिरिक्त तो जब वह घर में रहेगी तो घर रहने के सब कर्तव्य पालन करेगी ही और घर के प्रबन्ध में बलूजा साहब ने यदि सहायता माँगी तो वह देगी ही। परन्तु पत्नी, बन रहने में उसकी रुचि नहीं हुई।

इस निष्कर्ष पर पहुंच वह उठी और बाहर टहलने जाने के लिये तैयार हो गयी। वह जाने से पहले मिसेज़ स्मिथ को बताने नर्सरी में चली गयी। यहाँ स्मिथ बेबी को उछाल-उछालकर खेला रही थी। इससे रोहिणी को समझ आया कि वह वर्तमान प्रबन्ध पर बहुत प्रसन्न है।

रोहिणी ने कह दिया, 'मैं तनिक टहलने जा रही हूँ।'

'ठीक है। मैं इसे लेकर बाहर लॉन में बैठूंगी।'

दोनों बाहर को चली तो ड्राइंग-रूम में टेलीफोन की घण्टी खड़की। रोहिणी लौट पड़ी और टेलीफोन का चोंगा उठा, पूछने लगी, 'कौन बोल रहे हैं?'

उत्तर आया, 'महेन्द्र।'

'मैं रोहिणी बोल रही हूँ।'

'भाभी! मैंने आपके विषय में पूछने के लिये ही टेलीफोन किया।'

'मैंने आपके कॉलेज में टेलीफोन किया था। वहां से पता चला है कि हॉस्टल छोड़ गयी हैं। इस पर मैं विचार कर रहा था कि आप कहाँ होंगी। बलूजा साहब से पता करने के लिये टेलीफोन किया था और जिसका पता करना था, वह मिल गयी है।

'देखो भाभी। दुकान पर और छापाखाना पर भी मैंने टेलीफोन लगवा लिया है। इससे दोनों स्थानों का प्रबन्ध करने में सुविधा होगी।

'टेलीफोन आज ही लगा है और उससे पहली काल भाभी के कॉलेज में ही की थी। वहाँ से भाभी का पता न मिलने पर बलूजा साहब का नम्बर घुमाया है।'

'हाँ!' रोहिणी ने उत्तर दिया, 'मैंने हॉस्टल का कार्य छोड़ दिया है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167981

कारण यहाँ चली आयी हैं।'

'परन्तु अपने घर क्यों नहीं आयीं ?'

'वह कहाँ है भैया! यह जान नहीं सकी।'

'तो बलूजा साहब का घर अपना समझा है?'

'अभी विचार ही कर रही हूँ।'

'देखो भाभी! ताँगे में समान रखो और यहाँ चली आओ। आपका कमरा खाली पड़ा है?'

'चित्त नहीं कर रहा। अच्छा, दुकान कब बन्द करोगे?'

'दुकान तो देरी से बन्द होती है। किसलिये पूछ रही हो? कहो तो अभी आ सकता हूं?'

'तो आ जाओ। बलूजा साहब क्लब गये हैं। उनके लौटने से पहले ही आ जाओ?'

'अभी पन्द्रह-बीस मिनट में आता हूँ।

स्मिथ समीप खड़ी रोहिणी की बात सुन रही थी। वह यह समझ गयी थी कि किसी भाई को बुला रही है। इससे उसने पूछा, 'बहन जी! कौन हैं?'

'मेरा देवर है। मुझे अपने घर में रहने के लिये कह रहा है। परन्तु मैं अभी अनिश्चित मन हूँ। वहाँ जाने में कुछ आपत्तियाँ हैं। उनके विषय में ही विचार करने के लिये उसको बुलाया है।'

स्मिथ चुप रही। उसकी गोदी में बच्चा था। रोहिणी बच्चे को गोदी में उठा उसके कान के समीप मुख कर, 'कमल, कमल' कर उसका नाम लेने लगी। रोहिणी ने उसे छाती से लगाया तो बच्चा मुस्कराया।

स्मिथ ने कहा, 'आपकी छाती का स्पर्श इसे अपनी माँ की छाती का-सा अनुभव होता है।'

'मैं समझती हूँ कि मेरी इसके साथ बहुत अच्छी तरह से पटेगी।'

'आप तो अब कहीं नहीं जायेंगी?'

'नहीं! मैं भाई की प्रतीक्षा करूंगी।'

नर्स ने बच्चे को गोदी में लिया और कोठी के बाहर लॉन में टहलने चली गयी। रोहिणी पुनः गम्भीर-विचार में मग्न हो गयी। वह महेन्द्र और रत्नचन्द के मकानों में रहने की तुलना कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्र के वहाँ पहुंचने में देर नहीं लगी। वह बाईसाईकल पर आया था।

नर्स एक व्यक्ति को बाईसाईकल पर आते देख समझ गई कि रोहिणी का देवर होगा। उसने उसको बाईसाईकल कोने की चारदीवारी के साथ खड़ी करते देख पूछ लिया, 'आप रोहिणी देवी से मिलने आये हैं?'

'हाँ।'

'वह आपकी प्रतीक्षा ड्राइंग-रूम में कर रही हैं।'

महेन्द्रनाथ भीतर गया तो रोहिणी ने उसे देखते ही कह दिया, 'तुम तो पन्द्रह मिनट से भी पहले आ पहुंचे हो!'

'हाँ, भाभी! बताओ, हमारे घर में आने में संकोच क्यों है?' महेन्द्र ने सोफा पर रोहिणी के पास बैठते हुए पूछ लिया।

'पहले यह बताओ, चाय लोगे?'

'नहीं! हमारे चाय लेने का यह समय नहीं। इस समय सायं साढ़े छः बजे हुए हैं।'

'तो सुनो! मुझे तुम्हारे पिता जी का घर छोड़ने का कारण विस्मरण नहीं हुआ। बहन सगुनी ने कहा था कि लोग मेरे चरित्र पर संदेह करेंगे।

'मैंने कहा था कि वह असत्य होगा। इस पर माता जी ने पूछा था, कौन विश्वास करेगा इस पर? बस, यही बीज था जिससे मेरा कहीं काम प्राप्त कर माता जी का घर छोड़ने का विचार बन गया था।

'माता जी और सगुनी बहन उस मकान की स्वामिन हैं और वे अभी भी यही विचार रखती हैं क्या? यही मैं पूछ रही हूँ। इस बात को जानकर ही वहाँ जाने का विचार कर सकती हूँ।'

महेन्द्र ने कह दिया, 'तीन-चार दिन से सगुनी वहाँ आ गयी है।'

'अच्छा! पर यह हुआ कैसे?'

'पता नहीं। उस दिन मैं प्रातः का अल्पाहार ले दुकान पर जाने ही वाला था कि वह मकान पर चढ़ आयी और आते ही मुझसे बोली, 'मैं आ गयी हूँ।

'मेरे मुख से निकल गया, तो मुबारिक हो।

'उसने पूछा, माता जी कहाँ हैं?

'मैंने बताया, 'अपने कमरे में पिता जी के साथ अल्पाहार ले रही हैं।' इस पर वह बोली, आप तनिक ठहर जाइये। मैं अभी आ रही हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह पिता जी के कमरे में गयी और दो मिनट में ही बाहर आ गयी और बोली, मैं उनको सूचना दे आयी हूँ कि मैं यहाँ रहने आ गयी।

'भाभी! तब से वह वहाँ है।'

'यह ठीक ही है। अब तुम्हें मेरे विषय में निश्चय करने में सुविधा रहेगी। तुम माता जी से और सगुनी बहन से पता कर बताओ कि मैं उनके घर में अपने कमरे में रह सकती हूँ अथवा नहीं, उसी रूप में जैसे मैं पहले रहती थी एक स्वतन्त्र, स्वछन्द पक्षी की भाँति? मैं अपने कर्मों की स्वयं उत्तरदायी हूँ। उसमें उनका हस्ताक्षेप नहीं होगा।

'एक बात और है। अब पहले की भाँति उनके आपत्ति करने पर वहाँ से भाग कर नहीं निकलूंगी। अब वहाँ गयी तो मरणपर्यन्त रहने के लिये जाऊँगी।'

'परन्तु भाभी! कोई मरे, कोई जिये, सुथरा घोल प्याला पिये। तुम यह सोचकर क्यों नहीं रह सकती?'

'मैं अपने विषय में नहीं कह रही। मैं दूसरे की सम्मति से जीवन नहीं चला रही। इस पर भी जिनके घर में जाकर रहूँगी, उनका भी तो विचार करना ही है।

'पहले भी जो कुछ विघ्न बाधा पड़ी थी, वह माता-मिता, सगुनी बहन और तुम्हारे जीवन में ही पड़ी थी। मेरे जीवन में तो कुछ गड़बड़ हुई नहीं।

'अब मैं यहाँ आयी हूँ और यहाँ रहने पर विचार कर रही हूँ। यह इस कारण नहीं कि मुझे अपने विषय में किसी प्रकार की चिन्ता है। मेरे आने से जीजा जी के जीवन में, विघ्न पड़ने की बात पर विचार कर रही हूँ।'

महेन्द्र ने कह दिया, 'बलूजा साहब की सुविधा-असुविधा तो वह चारा कर लेंगे। मैं तो अपने घर की बात के विषय में कुछ कह रहा था। मेरा मतलब यह है कि यदि सगुनी और माता जी को कुछ बुरा प्रतीत होगा तो होता रहे। तुम अपने विषय में विचार कर लो।'

'नहीं! यह नहीं कर सकती। मैं हॉस्टल छोड़ आयी हूँ। वहाँ से किसी ने निकाला नहीं, न ही वहाँ पर मुझे किसी प्रकार का कष्ट था। मैं इस कारण आई हूँ क्योंकि वहाँ की प्रिंसिपल और कुछ अध्यापिकाओं को पसंद नहीं था। मैं दिन-रात की चख-चख में उनके कष्ट और दुःख की चिन्ता को मिटा कर चली आयी हूँ। मैं कॉलेज की पढ़ाई का काम भी छोड़ने का विचार कर रही हूँ। दो दिन हुए मेरी पेशी बोर्ड के सामने हुई थी और उसमें मैंने सबको खरी-खरी सुनाई थीं। मैं यही विचार कर रही हूँ कि उसको मेरा कॉलेज में काम करना पसंद नहीं होगा और मैं छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूँगी।'

'और फिर क्या करोगी?' महेन्द्र का प्रश्न था।

'यह तब विचार करूंगी। अभी तो रहने के मकान की बात है। मैं मकान वालों की असुविधा में कारण नहीं बन सकती।'

'परन्तु मुझे तो भाभी के वहाँ रहने से प्रसन्नता होगी और दुकान तथा मकान मेरे नाम लिखा हुआ है।'

'वह लिखत-पढ़त की बात वकीलों की रोटी कमाने का साधन है। मेरे लिये भी कुछ लिख कर तुमने दिया है। परन्तु मैं उसको स्वीकार नहीं कर रही। मेरे विचार में मकान जिनका है, उनकी सुख-सुविधा का विचार होना चाहिये।

'देखो भैया! तुम माताजी और बहन सगुनी से राय कर तुरन्त बताओ कि मैं जैसी हूँ, वैसी उस मकान में आकर रह सकती हूँ अथवा नहीं?'

'मैं तो समझ रहा था कि आप और मैं घर वालों से बगावत कर वहाँ रहेंगे।'

'तुम कर सकते हो। मैं नहीं कर सकती। बगावत में दूसरे की प्रभुता को चुनौती होती है, वह मैं नहीं देना चाहती। मैं तो अपने अधिकार और विचार की रक्षा की बात कर रही हूँ। यह बगावत नहीं है। यह स्वरक्षा की भावना है।'

महेन्द्र इस बगावत और सुरक्षा में सीमा-रेखा पर विचार करता हुआ मुख देखता रह गया। उसे मौन टुकुर-टुकुर अपना मुख देखते पा रोहिणी ने कहा, 'भैया! मेरी बात समझ ली है न? तुम अपनी पत्नी और माँ से पूछ कर कल यहीं इस कोठी पर टेलीफोन कर देना। तब उस उत्तर के अनुसार ही मेरा वहाँ आना अथवा न आना निश्चय होगा।'

इस प्रकार आधा घंटा भर बातचीत कर महेन्द्र बाईसाईकल पर ही दुकान को लौट गया।

:4:

महेन्द्र गया तो मिसेज़ स्मिथ ड्राइंग रूम में आ गयी और मुस्कराती हुई रोहिणी के मुख पर देखते हुए पूछने लगी, 'तो आप इन भाई साहब के मकान पर नहीं जायेंगी?'

'तो तुम हमारी बात सुनती रही हो?'

'वे बातें प्राईवेट थीं क्या?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नहीं! इस पर भी यह स्वभाव ठीक नहीं।'

'परन्तु बहन जी! मैं भी तो अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध कर रही हूँ।'

'तुम्हारी रक्षा किस प्रकार होगी? क्या मेरे यहाँ से चले जाने से हो सकेगी?'

'मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।'

'तो किस बात से सम्बन्ध है?'

'देखिए बहन जी! मेरी माँ और मेरा बच्चा दोनों एक वकील साहब की कोठी के आउट हाउस में दस रुपये महीना भाड़ा देकर रहते हैं। उनका रोटी पानी का खर्चा साठ-सत्तर रुपए महीना है। मेरा अपना भी कुछ खर्चा है। वह सब और उससे कुछ अधिक ही यहाँ बाबू साहब से मिलता है। इस खर्च में वृद्धि भी हो रही है। दो वर्ष बाद जॉन पढ़ाई शुरू करेगा तो उसका पढ़ाई पर भी खर्चा होगा। मैं उस सब की चिन्ता कर रही हूँ। किसी भी अस्पताल में मुझे इतना नहीं मिल सकता। यहाँ मिल रहा है और भविष्य में मिल सकने की आशा है। इसके छिन जाने की चिन्ता है।'

'इस विषय पर तो तुम वकील साहब से बात कर सकती हो।

'मैं अपने विषय में ही कह सकती हूँ कि मैं किसी प्रकार भी तुम्हारी इस स्थिति में विघ्न नहीं बनूंगी। यदि विघ्न मेरे कारण हुआ तो मैं यहाँ से चल दूँगी।'

इससे स्मिथ आश्वस्त हो गयी।

नौ बजे बलूजा क्लब से लौटा। वह आया तो तीनों खाने की मेज पर जा बैठे।

बलूजा ने ही बैठते हुए कहा, 'रोहिणी देवी! मिनिस्टर साहब से तुम्हारे विषय में बात हुई है। बोर्ड का सर्व-सम्मत मत है कि तुम्हें कॉलेज के काम से निकालने में कोई कारण नहीं। जहाँ तक पढ़ाई का सम्बन्ध है, विद्यार्थियों का परीक्षा-फल ही तुम्हारी योग्यता का मूल्यांकन कर सकेगा।

'वह प्रिंसिपल नहीं कर सकती। तुम्हारे कॉलेज में प्रिंसिपल 'डिसिप्लिन' की बात कर सकती है। उस विषय में उसको शिकायत नहीं है।

'बोर्ड ने प्रिंसिपल को लिखा है कि वह तुमसे प्रार्थना करे कि तुम हॉस्टल का काम भी न छोड़ो। उस काम में किसी प्रकार का दोष नहीं देखा गया।'

'तब?' रोहिणी ने पूछ लिया।

'तब यह कि मिनिस्टर साहब का कहना है कि मिस रौबर्ट्सन या तो किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य कॉलेज में चली जायेगी, अन्यथा वह इंग्लैण्ड लौट जायेगी। गवर्नर उसके लिये किसी अन्य स्थान पर नौकरी का प्रबन्ध कर रहे हैं।'

'मैं हॉस्टल का काम तो करूँगी नहीं। कमल का काम उससे अधिक आवश्यक समझती हूँ। कॉलेज के कार्य के विषय में बोर्ड का निर्णय जब मिलेगा, तब विचार कर लूंगी।'

'ठीक है। तुम्हारे यहाँ रहने का प्रबन्ध मैं सोने से पहले कर दूँगा।'

इसके उपरान्त बलूजा ने बताया कि दिल्ली सरकार रंगीला रसूल जैसी पुस्तकों के प्रकाशन तथा मुद्रण को रोकने का कानून बना रही है।

रोहिणी ने पूछा, 'क्या कानून बना रही है?'

'कानून का प्रारूप प्रान्तीय सरकारों के पास राय के लिये आया है। उसमें यह विधान किया जा रहा है कि जिस लेख से किसी सम्प्रदाय का दिल दुखे, वह लिखना और छापना अपराध होगा।'

रोहिणी मुस्कुराती हुई पूछने लगी, 'और दिल दुखाने का नापतोल सरकार किस यंत्र से करेगी?'

'समुदाय के घटकों के शोर मचाने से।' बलूजा ने मुस्कराकर कहा।

'और वे झूठ भी बोल सकते हैं। उनका दिल दुखना किसी भी बात से हो सकता है और मुख किसी अन्य कारण से शोर मचाने लगे तो इसका निर्णय कौन करेगा?'

'इसका नाप-तोल तो हो नहीं सकता।'

'तो कानून व्यर्थ हो जायेगा।'

'कानून व्यर्थ नहीं होगा। उसका लाभ तो होगा, परन्तु लाभ वह नहीं होगा जो कानून बनाने वालों का उद्देश्य है।

'मैं समझता हूँ कि इससे झूठ तथा फरेब का विस्तार होगा। सत्य का संसार से लोप होने लगेगा। यह भी लाभ की बात होगी, परन्तु उनके लिये जो झूठ और धोखा-फरेब से जीवन चलाते हैं।'

रोहिणी ने कहा, 'परन्तु 'लेजिस्लेटिव असेम्बली' में तो जनता के प्रतिनिधियों की संख्या अधिक है। उनको इसका विरोध करना चाहिये।'

'जनता के प्रतिनिधि तो मुसलमान भी हैं और हिन्दू भी हैं। इनमें मुसलमान इस कानून का समर्थन करेंगे। केवल इस कारण कि जिस मामले से यह कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने का विचार पैदा हुआ है, वह मुसलमानों के पैगम्बर के जीवन से सम्बन्ध रखता है। अतः मुसलमान सदस्य कानून का समर्थन करेंगे ही। सरकारी सदस्य भी समर्थन देंगे।

'साथ ही हिन्दुओं के वे सदस्य, जो कांग्रेस के टिकट पर वहाँ गये हैं, वे भी सरकार का समर्थन करेंगे।'

'भला वे क्यों करेंगे? उनको तो कुछ ऐसा कानून बनवाना चाहिये कि झूठ लिखने वाले को दण्ड दिया जाये।'

'इस विषय में तो कानून पहले ही है। बोल कर अथवा लिख कर झूठ कथन करने वाले को दण्ड तो दिया ही जाता है। इस कानून में झूठ-सत्य की बात नहीं है। बात है किसी समुदाय का दिल दुखता है अथवा नहीं। इस प्रकार यह कानून झूठा इतिहास लिखने वालों को संरक्षण प्रदान करेगा।'

'मैं तो,' रोहिणी ने अपने विश्वास को बता दिया, 'पहले ही कहती हूँ कि लिखित इतिहास प्रायः असत्य होता है। 'फिक्शन' इतिहास से अधिक सत्य होता है।'

'हाँ! यह तो तुमने अपने वक्तव्य में कहा है कि भूमण्डल की सरकारें इसलिये इतिहास लिखाती हैं, जिससे उनके पाप-कर्म इतिहास में न लिखे जा सकें।'

रोहिणी हँसी तो स्मिथ भी हँस पड़ी। उसे भी हँसते देख बलूजा ने पूछा, 'मिसेज़ स्मिथ! तुम किसलिये हँसी हो?'

स्मिथ ने कहा, 'पिछले वर्ष मैं एक बहुत बड़े अफसर की लड़की को प्रसव कराने गयी थी। पादरी बच्चों की क्रिसनिंग की रस्म करने आये तो बच्चे की माँ ने गिरजाघर के रजिस्टर में लिखाना चाहा कि वह बच्चा अमुक व्यक्ति का है।

'पादरी मुख देखता रह गया। लड़की ने कहा, 'यह सत्य है। आपको संदेह हो तो उससे ही पता कर सकते हैं। मैं लड़के के असली पिता का नाम लिखा रही हूँ।

'पादरी ने कहा, 'मैं जांच करके ही लिख सकूँगा। परन्तु अगले दिन वह लड़की सोयी-सोयी ही प्रभु के घर भेज दी गयी। उसको खाने में विष दे दिया गया था।

'मैंने डॉक्टर से कहा था कि मरणोत्तर शव परीक्षा होनी चाहिये। डॉक्टर नहीं माना और अस्पताल के रजिस्टर में लिख दिया गया कि 'हार्ट फेल्यर' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु हुई है।

'पादरी ने बच्चे के पिता का नाम 'अज्ञात' लिख दिया।

'मुझे,' स्मिथ ने आगे कहा, 'बहन जी के कथन पर इसी कारण हँसी आयी थी?'

इस पर रोहिणी ने कहा, 'जब एक व्यक्ति के हितों के लिये हत्या हो सकती है तो जातीय भेद की बातों के लिये बहुत कुछ हो सकता है। इतिहास लिखाना तो एक सामान्य-सी बात है।

'हाँ! उन सब देशों में जहाँ-जहाँ इस्लामी राज्य कायम हुआ है, पुस्तकालयों को जला देने का अर्थ यही तो हो सकता है कि सत्य को भावी सन्तान की दृष्टि से ओझल कर दिया जाये।'

भोजन समाप्त हुआ। मिसेज़ स्मिथ नर्सरी में बच्चे को दिन की अन्तिम फीड देने के लिये चली गयी। रोहिणी और रत्नचन्द ड्राइंग रूम में गये तो नत्थूराम पूछने लगा, 'हुजूर! सपर यहीं ले आऊँ?'

'हाँ! इनके लिये एक प्याला कॉफी।'

'पर मैं तो पेट भर खा चुकी हूँ?'

'यह कॉफी खाये-पिये को हजम करने के लिये होती है?'

'मैंने कभी पी नहीं।'

'पीकर देखिये! बहुत गहरी नींद आयेगी।'

नत्थूराम चला गया था। रत्नचन्द ने कह दिया, 'अभी तुम्हारा काम करना तो शेष है ही। हाँ तो बताओ, पाँच बेड-रूम में से कौन-सा पसंद करती हो? मैं तुम्हारे लिये नर्सरी के सामने वाला कमरा उपयुक्त समझता हूं।'

'परन्तु वहाँ तो आप सोते हैं?'

'हाँ! परन्तु वहाँ दो बेड लगे।'

इसका अर्थ समझ रोहिणी ने कहा, 'जीजा जी! नहीं। आपके कमरे में दूसरा बेड एक दिवंगत आत्मा की धरोहर है। उसको आप किसी दूसरे को देने का पाप कर्म नहीं कर सकते।'

इस पर रत्नचन्द गम्भीर हो गया और एक क्षण तक आखें मूंद विचार कर बोला, 'तब रोहिणी! तुम स्वयं ही बताओ कि किस कमरे में डेरा लगाने का विचार है? यहाँ सब कमरे डबल बेड वाले है। उनमें से एक का प्रयोग करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अर्जी तो रहेगी ही।'

'परन्तु मैं तो सिंगल बेड वाला कमरा चाहूँगी। एक बेड अपने कमरे से उठवा दूँगी।'

'ओह!'

'और यदि आप इस मकान में यह नहीं करने देंगे तो अपने रहने के लिये कोई अन्य स्थान देखूंगी।'

'परन्तु यह हठ क्यों?' रत्नचन्द का प्रश्न था।

'यह मैं स्वयं नहीं जानती। सुनती हूँ कि कई योगी-सिद्ध पुरुष विवाह नहीं कराते रहे। वे इसे परमात्मा की प्राप्ति का साधन मानते रहे हैं। यह तो उनका अन्तरात्मा ही बता सकता है कि वे ऐसा क्यों करते थे। क्या सत्य ही उनके अन्तरात्मा में विराग था अथवा उनमें किसी बात का अभाव था?

'अपने विषय में मैं जानती हूँ कि मेरे मन में विराग नहीं है। प्रत्युत कुछ अभाव है। और उस अभाव को मैं एक गुण मानती हूँ। किसी दुर्गण का अभाव भी तो अभाव ही है और दुर्गुण का अभाव गुण माना जाता है।'

इस समय सेवक एक ट्रे में बनी हुई काफी ले आया। साथ ही एक हरे रंग की शराब थी। एक प्लेट में दो बिस्कुट भी थे। शराब का गिलास तथा बिस्कुट उसने वकील साहब के सम्मुख रख दिये और काफी का प्याला रोहिणी के सम्मुख।

'तो यह आपका 'सपर' है ?'

'सपर लेने वाले कुछ इसी प्रकार की वस्तु लेते हैं।'

'यह शराब मालूम होती है?'

'हाँ, हल्की-सी। यह शैम्पेन कहाती है। मुझे इसके लेने से बहुत गहरी नींद आती है।'

'यह लेना ठीक नहीं। यह आयु को कम करती है?'

'परन्तु उस लम्बी आयु में भी क्या लुत्फ है, यदि उसमें सुख न हो?'

'यह बूढ़ी हो जाऊँगी तो बताऊँगी। अभी मुझे उस अवस्था का ज्ञान नहीं। अभी तो शरीर में यौवन है और उसका भरपूर प्रयोग करने की रुचि तथा सामर्थ्य है।'

'मैं भी तो इसी बात का निमन्त्रण दे रहा था?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह यौवन का प्रयोग नहीं कहा जा सकता। वह तो उसका भोग करना है। भोग में कुछ व्यय होता है और प्रयोग में व्यय नहीं वरन उसका सदुपयोग होता है।

'वैसे तो जीवन स्वयंमेय क्षरित होता रहता है। परन्तु वह अपनी स्वाभाविक गति से होता है और कोई इस शरीर को कुल्हाड़ी से काट-काटकर चील तथा गीधों के सामने डालना शुरू कर दे तो वह हत्या कहलाती है—आत्म-हत्या। यह मैं नहीं कर रही।'

इस समय तक बलूजा शराब सिप करने लगा था और उसके पीने से उत्तेजना अनुभव करने लगा था। एकाएक उसने कहा, 'तो ठीक है। आप अपनी स्वाभाविक गति से जीवन व्यतीत करिये। मैं तो जब तक यौवन है, इसका भरपूर सुख भोगना चाहता हूँ।'

इसके बाद दोनों मौन हो गये और अपना-अपना पेय लेते रहे। एकाएक रोहिणी ने कहा, 'यदि आपको आपत्ति न हो तो मैं आपकी कोठी का रूम नम्बर चार खुलवा लूं? मैं समझती हूँ, वह आपकी जीवन-चर्चा में विघ्न नहीं डालेगा और उसके साथ जो बालकोनी है, वह मेरा स्टडी रूम बन जायेगा।'

रोहिणी ने घंटी बजाई। नत्थूराम आया तो उसने कह दिया, 'चाचा! वह कमरा जो लॉन में भी खुलता है, मेरे लिये खोल दो।'

नत्थू राम ने वकील साहब के मुख पर देखा। वह कमरा अतिथियों के लिये था। उसमें कोठी में से मार्ग के साथ-साथ सीधा बाहर से प्रवेश का मार्ग भी था।

नत्थू को अपनी ओर देखते पा रत्नचन्द ने कह दिया, 'यह ठीक कहती हैं।'

नत्थूराम गया तो रत्न चन्द ने कह दिया, 'कभी रात को नगर में घूमने की लालसा जाग पड़े तो बिना किसी को बताये जा सकोगी।'

'धन्यवाद।' रोहिणी ने कहा और काफी समाप्त कर वह उठी और एक हाथ में सूटकेस लटका चल पड़ी। वह कमरे में पहुंची तो नत्थूराम अलमारी में से दो नई चादरें निकाल रहा था।

रोहिणी ने वहाँ पहुँचते ही कहा, 'ये नहीं। इनको अलमारी में रख दो। बाहर से मेरा बिस्तर उठा लाओ और वह यहाँ लगा दो।' उसने उस बेड की ओर संकेत कर दिया जो खिड़की की तरफ था।

साथ ही कह दिया, 'इस दूसरे बेड को उठाकर लम्बर रूम में रखवा दो।'

नत्थूराम एक-दो क्षण तक मुख देखता रहा, परन्तु तुरन्त ही समझ उसने कहा, 'ठीक है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने बिछी चादरें इकट्ठी की। उनको पुनः अलमारी में रख बाहर बिस्तर लेने चला गया।

दस मिनट में रोहिणी कमरा ठीक करवा बिस्तर लगा, दोनों द्वारों को भीतर से बंद कर सो गई।

वह प्रातः चार बजे उठने का स्वभाव रखती थी। ठीक समय पर वह उठी और कमरे के साथ ही बनी लेवेटरी में शौचादि के लिये चली गयी। साढ़े चार बजे वह वस्त्र पहन बेड-रूम के एक कोने में आसन लगा अपने पूजा-पाठ में लग गयी। मौन ध्यानावस्थित बैठी-बैठी अपने भविष्य के विषय में वह विचार करने लगी।

रात वह एक उंगली के संकेत से ही अपना विवाह, अपने जीजा से कर सकती थी। अब वह विचार करती थी कि उसने भूल नहीं की।

लालसा न रहते पहले विवाह हुआ था और अब भी बिना किसी प्रकार की लालसा के विवाह हो सकता था। इससे जीजा जी से सम्बन्ध सुदृढ़ हो सकता था। परन्तु यह उसकी प्रकृति के विपरीत था। अब वह पहले विवाह के समय से अधिक अनुभव और अधिक ज्ञान रखती थी। इस कारण उसको समझ आया कि उसने ठीक ही किया है।

आधा घंटा भर चिन्तन के उपरान्त वह आसन से उठी। उसका चिन्तन इसी प्रकार होता था। वह जीवन की किसी समस्या पर विचार करती थी और उस समस्या का समाधान ढूंढ़ने का यत्न किया करती थी। आज वह बलूजा साहब से अपने सम्बन्धों के विषय में विचार कर कुछ दूर तक देखने का यत्न कर रही थी और जो कुछ वह समझ सकी, उसमें अपने व्यवहार का निश्चय कर वह उठी और बालकोनी में साइड टेबल के समीप कुर्सी खिसका उस पर बैठ गयी। उसने टेबल लैम्प जलाया और अपनी पुस्तकों में से एक पुस्तक निकाल पढ़ने लगी।

उसने अपने बक्से में से कागज और कलम निकाले तथा नोट लेने आरम्भ कर दिये।

ठीक साढ़े छः बजे दरवाजे पर किसी ने आवाज की। उसने पूछा, 'कौन?'

'बेड-टी।' नत्थूराम की आवाज आयी।

रोहिणी उठी और दरवाजा खोल मुस्कुराती हई बोली, 'चाचा! इस समय एक दो टोस्ट भी ले आया करो। यह बेड-टी नहीं, प्रत्युत हाफ-ब्रेकफास्ट होगा। मैं तो स्नान भी कर चुकी हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नत्थूराम मुस्कुराया और चाय का प्याला वापस ले गया। जाते हुए उसने कहा, 'बहन जी! अभी लाता हूँ।'

वह गया तो रत्नचन्द नाईट गाऊन में आ गया। उसने कहा, 'गुड मॉर्निंग रोहिणी जी!'

'नमस्ते जीजा जी! अभी उठे हैं?'

'नहीं! मैं तो तीन बजे उठता हूँ और कचहरी का काम इस समय तक समाप्त कर लेता हूँ। चाचा चाय लाया तो पीकर आपको देखने चला आया हूँ।'

'वैसे मैं भी कुछ काम कर ही चुकी हूँ। परन्तु मैं स्नानादि कर पीछे काम करती हूँ।'

रत्नचन्द एक कुर्सी ले मेज के समीप खिसका बैठ गया और रोहिणी के कागजों को देखने लगा। वे उसके कॉलेज में पढ़ाने के नोट्स थे।

तीन कागज थे। तीन श्रेणियों के तीन विभिन्न नोट थे।

उन पर संकेत से नाम, तिथियाँ और पुस्तकों के पृष्ठ लिखे थे ।

रत्नचन्द ने कहा, 'बस, इतनी ही पढ़ाई कराती हो?'

'हाँ! मुझे स्मरण है कि इन-इन पुस्तकों में इन पृष्ठों पर क्या लिखा है। मैं वृत्तान्त बता छात्राओं को पुस्तक और पृष्ठ लिखा देती हूँ और फिर उस पर अपनी विवेचना बताती हूँ। वह विवेचना ही वास्तविक पढ़ाई होती है। शेष तो छात्राएँ पुस्तक में से पढ़ती हैं।'

'तो इतने से काम चल जाता है?'

'नहीं! लड़कियाँ प्रश्नोत्तर करती हैं। कुछ श्रेणी में अधिक योग्य होती हैं। वे बहुत प्रकार के प्रश्न पूछती हैं और मैं बताती हूँ।'

इस समय नत्थूराम एक ट्रे में चाय का पॉट, दूध, चीनी और दो टोस्ट रख ले आया।

'तो इस समय प्रातः का अल्पाहार ले रही हो?'

'नहीं! यह आधा अल्पाहार है। आधा आपके साथ नौ बजे लूंगी।'

'ठीक है।' वह अभी कुछ कहना ही चाहता था कि नर्स बेबी को लेकर वहाँ आ गयी। रोहिणी ने उसे पुकारा, 'कमल!'

कमल आँख उठा आवाज़ पहचान रोहिणी की ओर देखने लगा। रोहिणी ने उसे गोदी में ले लिया और उससे बातें करती हुई खाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:5:

उस दिन रोहिणी कॉलेज में अभी पढ़ाने ही लगी थी कि चपरासी प्रिंसिपल की एक चिट् लेकर आया। रोहिणी ने चिट् लेकर पढ़ी और फिर अपनी पर्स में रख पढ़ाई आरम्भ कर दी।

पैंतालीस मिनट का पीरियड समाप्त हुआ और वह अपना पर्स और नोट बुक उठा जाने लगी तो पूर्ण क्लास की लड़कियों ने उसे घेर कर उसका मार्ग रोक लिया।

रोहिणी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा तो एक, जो सब से आगे खड़ी थी, पूछने लगी, 'बहन जी! आप कॉलेज छोड़ रही हो।

'मैं स्वयं नहीं जानती। मैं छोड़ने की इच्छा नहीं रखती, परन्तु मनुष्य के सब काम उसके अपने अधीन नहीं होते।'

'यह प्रिंसिपल साहब की चिट् में क्या लिखा था?'

'मुझे घर जाने से पहले मिलने के लिये कहा है।'

'सब कह रही हैं कि आपको डिसमिस कर दिया गया है?'

'मुझे पता नहीं। परन्तु यदि ऐसा हुआ तो बताओ, मुझे जाने पर 'फेयर-वेल ऐड्रेस' दोगी।'

'यही विचार करने के लिये हम वस्तु स्थिति जानना चाहती हैं?'

'तो पक्की सूचना मिलते ही बता दूँगी।'

कई लड़कियों ने एकदम कह दिया, 'बहन जी! धन्यवाद।'

रोहिणी विचार कर रही थी कि कफन बेचने वाले मरते प्राणी के मरने की टोह ले रहे हैं। वह मन-ही-मन मुस्कुराई और दूसरी क्लास में चली गयी।

वहाँ भी पढ़ाई के उपरान्त उसे लड़कियों को अपनी अनभिज्ञता बता छुट्टी लेनी पड़ी।

अन्तिम श्रेणी फिफ्थ ईअर की थी। उसमें मिस रैना भी थी। वहाँ दृश्य दूसरा था। लड़कियों ने मार्ग तो रोका, परन्तु उसे बधाई दी। रोहिणी ने विस्मय में पूछा, 'किस बात की बधाई दे रही हो?'

'मिस रैना कह रही हैं कि बोर्ड ने आपके विरुद्ध किसी प्रकार का ऐक्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लिया।'

'यह रैना पंजाब सरकार की महासचिव है क्या?'

सब लड़कियाँ मुस्कराते हुए रैना का मुख देखने लगीं। रैना ने कहा, 'मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आपके विरुद्ध आरोपों में कोई सार नहीं पाया गया।'

'मैं यह नहीं पूछ रही। मुझे सेवा से मुक्त किये जाने का शोक नहीं होगा। इस पर भी मैं जानना चाहती हूँ कि रैना की सूचना का स्रोत क्या है?'

रैना चुप रही। एक अन्य लड़की ने कह दिया, 'इसे बताने में लज्जा लग रही है। मैं बताती हूँ। डायरेक्टर साहब का पी. ए. इसका मंगेतर है।'

'ओह! तब तो रैना की बात विश्वास-योग्य ही होगी। इस पर भी मुझे अभी इसकी अथवा इसके विपरीत बात की सूचना नहीं है।

'प्रिंसिपल ने अपने कमरे में मिलने के लिये कहा है। मैं अभी वहाँ जा रही हूँ और आशा करती हूँ कि मेरी नौकरी के विषय में ही कुछ बात होगी।'

उसी लड़की ने पुनः कहा, 'तब तो हम आपके वहाँ से आने की प्रतीक्षा में स्टाफ-रूम के बाहर खड़ी रहेंगी।'

रोहिणी ने उसका कुछ उत्तर नहीं दिया। वह क्लास-रूम से निकल प्रिंसिपल के कमरे में चली गयी।

मिस रोबर्ट्सन उसकी प्रतीक्षा में थी। रोहिणी ने 'गुड मौर्निंग' कही और मुस्कराते हुए पछा, 'आज्ञा करिये।'

'मिसेज बजाज! मेरी आपके विपरीत शिकायत को सारहीन समझा गया है। कहा गया है कि आरोपों की सच्चाई अथवा उनके मिथ्यात्व की परीक्षा लड़कियों की परीक्षाओं के फल के अनुसार निश्चय की जायेगी।'

'मुझे वहाँ से आज्ञा की प्रतिलिपि मिल जानी चाहिये?'

'वह कार्यालय दे देगा। मैंने आपको इसलिये बुलाया है कि आप एक दिन कह रही थीं कि आप नौकरी छोड़ने का विचार रखती हैं?'

'हाँ! कहा तो था।'

'तो अब क्या विचार है?'

'मैं यह चाहती हूँ कि पहले मुझे बोर्ड से तथा डायरेक्टर से मेरे विषय में आये उत्तर की प्रतिलिपि मिल जाये। पीछे ही मैं सेवा से त्याग-पत्र देने का विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगी।'

'तो सेवा न छोड़ने का भी विचार हो सकता है?'

'जी! मेरे मन में आ रहा है कि यदि बोर्ड की ऐसी चुनौती है। जैसी आपने कही है तो मुझे उस चुनौती को स्वीकार करना चाहिये।

'यह अक्तूबर का अन्त है और विश्वविद्यालय की परीक्षाएं अप्रैल में होंगी। उसके पीछे जुलाई तक परीक्षाफल घोषित होंगे। तब ही मैं निश्चय करूँगी कि मैं सेवा में रहूँ अथवा सेवा-कार्य छोड़ दूँ।'

'तो आप समझती हैं कि आपकी पढ़ाई से लड़कियाँ उत्तीर्ण होंगी?'

'मैं समझती हूँ कि बहुत अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होंगी।'

'तब आप जा सकती हैं।'

धन्यवाद और गुड-नून कहकर वह कमरे से बाहर निकल आयी।

प्रायः लड़कियाँ इस भेंट का परिणाम जानने के लिये कार्यालय के बाहर खड़ी थीं।

रोहिणी स्टाफ-रूम की ओर जा रही थी कि लड़कियाँ उसके पीछे-पीछे चलती हुई पूछने लगीं, 'बहन जी! क्या हुआ है?'

'अभी कुछ निश्चयात्मक नहीं। इस पर भी लक्षण कुछ ऐसे प्रतीत होते हैं कि मिस रैना का अनुमान ठीक है, परन्तु अभी कुछ लिखत-पढ़त में नहीं है।'

'कब तक निश्चय होगा?'

'यह तुम प्रिंसिपल से पता करो।'

'उन्होंने हमें डाँट कर कमरे से निकाल दिया है।'

'तब कल तक प्रतीक्षा करो।'

लड़कियाँ निराश लौट गयीं। रोहिणी कॉलेज से पैदल ही चल पड़ी। वह आशा करती थी कि महेन्द्र का टेलीफोन घर पर आयेगा। इस कारण वह घर के विषय में निर्णयात्मक विचार उसके उपरान्त करना चाहती थी।

यद्यपि प्रातः काल बेड-टी के समय और फिर ब्रेकफास्ट के समय भी रत्नचन्द ने कुछ कहा नहीं था, उसका व्यवहार सामान्य ही था, इस पर भी वह समझ रही थी कि उसका जीजा शराब पीता है। यह पत्नी के वियोग को भुलाने के लिये भी हो सकता है। इसके विपरीत वह अपने को उत्तेजित करने के लिये भी हो सकता है और यदि यह दूसरी बात है तो वह स्वयं को एक भयंकर ज्वालामुखी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख पर खड़ी पाती थी। किसी समय भी ज्वालामुखी फट कर उसको भस्मीभूत कर सकता है।

'तब?'

तब वह पैदल ही बलूजा लौज की ओर चल रही थी। वह सोचने लगी कि यदि कभी उसके जीजा ने उस पर बलात्कार किया और छल से अथवा बल से उसका भोग कर लिया तो उसे क्या करना चाहिये।

दो मार्ग थे उसके लिये। एक तो था कि आत्म-हत्या कर ले। दूसरा यह था कि तुरन्त कोठी छोड़कर चल दे और पुनः बलूजा का मुख न देखे।

तीसरा मार्ग था बलूजा से विवाह कर ले। परन्तु इस तीसरे मार्ग के विषय में वह निश्चित मन थी कि यह नहीं होगा। अब विवाहित जीवन नहीं चलेगा।

इस पर उसको अपनी स्वाध्याय की योजना स्मरण आ गयी। कॉलेज और होस्टल के काम के कारण उस योजना पर कुछ भी काम नहीं हुआ था। वह जनवरी दो को कॉलेज की सेवा में आयी थी और अब अक्तूबर की पचीस तारीख थी। व्यस्तता के कारण वह इतने लम्बे काल में कुछ भी कार्य नहीं कर सकी थी। उसके मन में विचार आया, कम-से-कम होस्टल का झंझट नहीं रहा। इससे वह तीन-चार घंटे नित्य काम में लीन हो सकती है। इस विचार के आते ही लम्बे-लम्बे पग भरती हुई वह कोठी की ओर चलने लगी।

कोठी पर पहुँची तो स्मिथ उसकी प्रतीक्षा में कोठी के द्वार पर खड़ी थी। बेबी उसकी गोदी में था। रोहिणी सड़क पर ही थी कि स्मिथ बेबी का ध्यान उसकी ओर कराने का यत्न करने लगी।

रोहिणी आयी तो उसने बेबी को थपथपाया और ड्राइंग-रूम में पहुंचते ही नत्थू राम को कहा, 'चाचा! एक कॉफी का प्याला बना दो। कॉफी सत्य ही बहुत लाभकारी समझ आई है।'

नत्थूराम गया तो स्मिथ ने कहा, 'आपका एक सरकारी पत्र है।'

'कहाँ है?'

'आपके कमरे में आपकी पढ़ाई की मेज पर रखा है।'

रोहिणी बैठती-बैठती रुक गयी और अपने कमरे में जा मेज पर रखा लिफाफा ले आयी।

वह पत्र डायरेक्टर के कार्यालय से आया था। उसमें लिखा था, 'प्रिंसिपल गवर्नमैण्ट कॉलेज फार विमेन्स को सूचित किया गया है कि मिसेज़ बजाज पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाये गये आरोप निराधार हैं।'

दो पंक्तियाँ ही लिखी थीं। वह इतना पढ़ गम्भीर विचार में निमग्न हो गयी। रौली स्मिथ उसकी कुर्सी के पीछे खड़ी उस पत्र को पढ़ रही थी। वह स्वयं ही बोल उठी, 'बहन जी! आपको मैं बधाई देती हूँ।'

'तो तुमने पढ़ लिया है?' रोहिणी ने पीछे घूमकर देखते हुए पूछ लिया।

रौली मुस्करा रही थी। रोहिणी ने डाँट के भाव से कहा, 'स्मिथ! यह आदत ठीक नहीं है। मैंने रात भी तुमसे कहा था।'

'बहिन जी! मैं कुछ यही आशा करती थी और अपनी आशा के फलीभूत होने को देखने की उत्सुकता रोक नहीं सकी।'

'तो तुम इससे प्रसन्न हो?'

'जी! अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इससे मैं अपना भविष्य सुरक्षित समझती हूँ।

'मुझे वकील साहब ने बताया है कि आपने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है। इस पर मैं समझ रही थी कि यदि आपकी नौकरी छूट गयी तो फिर आप बेकार होने से उसी राह पर चल पड़ेंगी, जिस पर मैं चल रही हूँ। और फिर अवसर पाते ही आप अपनी शिक्षा और सौन्दर्य के बल से मुझे मार्ग से एक ओर कर आगे निकल जायेंगी।'

रोहिणी स्मिथ की वर्णन शैली पर हंस पड़ी। उसने कह दिया, 'तुम तो बहुत अच्छा अलंकार बाँध सकती हो?'

'जी! यह गम्भीरतापूर्वक विचार करते रहने का परिणाम है।'

'देखो! मैं तुम्हें एक बात बताती हूँ। मैंने अपने जीवन में कुछ भी, कभी भी, लुकाव-छुपाव वाली बात नहीं रखी।

'विवाह के उपरान्त पहली रात पति की संगत में रहकर जब अगले दिन मेरी माँ ने पूछा, 'रात कैसी रही?' तो मेरा उलटा प्रश्न था, 'क्या इसलिए ही विवाह किया जाता है ?' मैंने बता दिया कि उनके दामाद ने मुझे अवस्त्र कर मुझसे वह किया जो मैं बताने में लज्जा अनुभव करती हूँ। माँ ने पुनः पूछा, 'पर कुछ रस भी मिला या नहीं?' मैंने कहा, 'स्वाद तो आया है, परन्तु इससे ग्लानि भी हुई है। दोनों में कौन अधिक है, अभी नहीं बता सकती।

'माँ ने तो इतना ही कहा, 'सब ठीक हो जायेगा। सब लड़कियों को ऐसे ही अनुभव होता है।

'परन्तु मैं अपने को सबसे विलक्षण समझती थी। इससे मुझे माँ के कथन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विश्वास नहीं आया और उसके उपरान्त पति की इच्छा तो पूर्ण करती थी, परंतु एक कर्तव्य मानकर ही। माँ ने कहा था कि सब लड़कियों से ऐसा ही होता है। इस कारण चुप थी। परन्तु अब तो दो वर्ष होने जा रहे हैं और पति की संगत नहीं मिली। उसकी लालसा भी कभी हुई नहीं। जो कुछ उसमें रस था, उससे अधिक घृणा अनुभव हुई है।

'मैं तुम्हें यह इस कारण बता रही हूँ कि इस अत्यन्त गोपनीय बात को भी मैं गोपनीय न मान, माँ से, पीछे अपनी बहन से और अब तुमसे कहती हूँ। मुझे इस कर्म में रुचि नहीं है।'

रौली स्मिथ मुख देखती रह गयी। यह एक एंग्लो-इण्डियन समुदाय की लड़की थी। उसका पिता प्रान्तीय सचिवालय में एक अच्छे वेतन पर नौकर था। उसका देहान्त एक घटनावश हो गया था। उस समय रौली दसवीं श्रेणी में पढ़ती थी। पिता की मृत्यु पर जमा पूंजी देखी गयी तो वह कुछ सौ रुपये ही थी। रौली की माँ ने गर्वनर बहादुर से अर्जी की तो उसे विशेष सहायता मिल गयी और उसके बलबूते पर ही रौली की पढ़ाई और फिर काम लगा था। अस्पताल में वह पक्के काम पर नहीं थी। हाँ, लोगों के घरों में नर्स की आवश्यकता पड़ने पर उसे भेज दिया जाता था।

जब वह बलूजा के घर में आयी तो मोहिनी प्रसव के बहुत समीप थी। उसे बलूजा साहब अपने पति से अधिक बल, वीर्य एवं ओज-युक्त समझ आये और वह उनके प्रभाव में आ गयी। यही कारण था कि बलूजा का संकेत मिलते ही वह उससे सम्बन्ध बना बैठी।

अब रोहिणी को देख वह भयभीत थी। उसे डर था कि न केवल बलूजा रोहिणी से सम्बन्ध बना उसे छोड़ देगा, प्रत्युत उसे नौकरी से भी निकाल देगा। पिछले दिन से वह अपने भय का निवारण हो रहा देख रही थी। वह रोहिणी की बातें चोरी-चोरी सुनने और देखने लगी थी। इससे ही उसे अपनी स्थिति सुदृढ़ प्रतीत हो रही थी।

रोहिणी ने डाँटा तो उसने कह दिया, 'बहन जी! मैं सबकी बातों में नहीं झाँकती। आप मेरी 'राइवल' (प्रतिद्वन्द्वी) प्रतीत हुई, तो आपके क्रिया-कलाप में झाँकने की उत्कण्ठा हो उठी थी। मैं क्षमा चाहती हूँ।'

रोहिणी हँस पड़ी। हँसकर बोली, 'मैं तुम्हारी प्रतिद्वन्द्वी नहीं।'

'यह तो देख रही हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिणी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, 'कल वाले भाई साहब का टेलीफोन तो नहीं आया?'

'नहीं! परन्तु एक अन्य मिस ऐमिली का तीन बार फोन आ चुका है। वह वकील साहब के लिये था। मिस ऐमिली ने पहले पूछा था, वकील साहब कहाँ हैं?' मैंने बताया तो टेलीफोन बन्द हो गया। पुनः मध्याह्न एक बजे फोन आया। वही आवाज़ थी और पूछ रही थी कि वकील साहब लंच के लिये आये हैं अथवा नहीं?

'मैंने बताया है कि वह लंच लेने कोठी पर नहीं आते। तब टेलीफोन बन्द हो गया। अभी आपके आने के पांच मिनट पहले फिर आया था। उसने कहा है कि वह वकील साहब से मिलने हाई कोर्ट में गयी थी, वकील साहब वहाँ नहीं थे। इस कारण वह आयें तो उनको कह देना कि मैं पाँच बजे चाय के समय उनसे मिलने आऊँगी।'

'और तुम मुझे यह किसलिये बता रही हो?'

'यह कोई नयी मुर्गी है। यह उनकी 'क्लायेण्ट' प्रतीत नहीं होती?'

'यह किसे कहती हो?'

'क्लायेण्ट होती तो वकील साहब के मुंशी से कोर्ट में मिल लेती और उसे वकील साहब का कार्यक्रम पता चल जाता। कोई अनाड़ी लगती है।'

रोहिणी को समझ आया कि मिसेज स्मिथ युक्ति तो ठीक करती हैं, परन्तु वह केवल अपने हितों, विशेष रूप से आर्थिक हितों की ही चिन्ता करती है।

इस विचार पर उसने स्मिथ में और रत्नचन्द में सम्बन्ध कितना गहरा है, यह जानने के लिये उसने पूछा, 'मिसेज़ स्मिथ! एक बात पूछूं?'

'बहन जी! पूछिये।'

'तुम वकील साहब से प्रेम करती हो?'

'बिल्कुल नहीं।'

'तो तुम किसी दूसरी औरत को अपना प्रतिस्पर्धी जानकर चिन्ता क्यों करती हो?'

स्मिथ एक-दो क्षण तक रोहिणी का मुख देखती रही। वह अपने मन को टटोल रही थी कि उसका सम्बन्ध वकील साहब से किस प्रकार का है। यह प्रेम का है अथवा वासना का। प्रेम और वासना में वह अन्तर जानती थी। रोहिणी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कॉफी आयी तो मिसेज स्मिथ के लिये भी आ गयी। दोनों पीने लगीं।

आखिर स्मिथ ने कहा, 'देखिये बहन जी! मैं अपने मन को टटोल रही थी कि मेरा वकील साहब से कैसा सम्बन्ध है। मैं यह समझी हूँ कि यह सम्बन्ध दो प्रकार का है। यहाँ इस कोठी में आने से पहले मेरी आर्थिक अवस्था बहुत पतली थी। कभी जूता टूट जाता था तो उसे मुरम्मत कराना भी कठिन होता था। मुझे यहाँ आये चार महीने हुए हैं। इस बच्चे के पैदा होने से कुछ ही पहले मैं बुलायी गयी थी। बलूजा साहब ने मेरी अवस्था तो पहले दिन से ही ठीक कर दी थी। अब आप देख रही हैं कि मेरे पहिरावे में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है। यद्यपि यह पहिरावे बहुत कीमती नहीं, परन्तु यह फटा-पुराना भी नहीं। वैसे मेरी पर्स भी अब खाली नहीं रहती और मेरी माँ भी सुख अनुभव करती है। अपने बच्चे के लिये मैं यहाँ से केक, पेस्टरी और मिठाई भी घर ले जाया करती हूँ।

'एक दूसरा सम्बन्ध भी है। वह एक औरत और पुरुष के सम्बन्ध की बात है। मैं वकील साहब की संगत को बहुत ही रस-युक्त पाती हूँ।

'रात भी वह आधा घंटा-भर मेरे पास रहे थे और मैं उनकी संगत का आनन्द उनके जाने के बाद भी अनुभव करती रही हूँ।'

'तो तुम उनसे विवाह क्यों नहीं कर लेती? कहो तो मैं इस विषय में तुम्हारे लिये यत्न करूं?'

'परन्तु बहन जी! विवाह तो मेरा हो चुका है। मैं जोन के पिता से बहुत ही प्रेम करती थी।'

'तो फिर उस प्रेम में यह दूसरे को हस्तक्षेप करने क्यों देती हो?'

'नहीं! आप नहीं समझीं। मेरे पति के प्रति प्रेम में वकील साहब की संगत बाधक नहीं। प्रेम मन का विषय है। जोन के पिता मेरे मन पर छाये हुए हैं। वकील साहब से सम्बन्ध तो शारीरिक ही हैं।'

'और यदि कोई जोन का भाई अथवा बहन बन गयी तो वकील साहब से भी प्रेम हो जायेगा?'

'नहीं बनेगा। मैं उसका द्वार बन्द रखती हूँ।'

'कैसे?'

'एक प्रकार की टोपियाँ होती हैं। उनका प्रयोग करती हैं इससे बच्चा नहीं होगा। इस प्रकार मैं प्रेम तथा शरीर के भोग को पृथक-पृथक कर देती हूँ।'

रोहिणी इस जीवन-मीमाँसा को सुन हँस पड़ी। इस पर स्मिथ ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बहन जी! हँसी क्यों हैं?'

रोहिणी ने अपने हँसने का कारण नहीं बताया। वह कॉफी समाप्त कर चुकी थी। उसे याद आ गया कि कॉलेज से आते हुए मार्ग में उसने आज अपने छोड़े हुए कार्य को पुनः आरम्भ करने का विचार बनाया था। अतः वह उठ खड़ी हुई और बोली, 'मैं अपना पढ़ाई का काम करने जा रही हूँ। मुझे पाँच बजे से पहले मत बुलाना।'

'वकील साहब बुलायें तब भी नहीं?'

'उनको कह देना कि पांच बजे तक अपने काम में व्यस्त हैं।'

इतना कह रोहिणी अपने सोने के कमरे में चली गयी। भीतर से चिटकनी चढ़ा उसने बालकोनी में लगी मेज पर अपनी पुस्तकें रख अपना काम आरम्भ कर दिया।

रोहिणी अपने कमरे में गयी थी। अढ़ाई बजे और साढ़े चार बजे बलूजा हाई कोर्ट से लौटा। उसके साथ तीन-चार व्यक्ति थे।

बलूजा ने आते ही नत्थूराम को चाय और साथ खाने का सामान लगाने के लिये कह दिया। नत्थूराम गया तो स्मिथ आ गयी। पहले तो वह बाहरी लोगों को देख झिझकी, परन्तु फिर बलूजा को प्रश्न-भरी दृष्टि से अपनी ओर देखते हुए, आगे आकर कहने लगी, 'एक मिस ऐमिली का तीन बार टेलीफोन आ चुका है। उसने अपने आखिरी काल में कहा था कि वह पांच बजे आपसे चाय के समय मिलने आयेगी।'

'ठीक है।'

'और रोहिणी बहन जी को भी बताऊं कि चाय आ गयी है?'

'तो वह घर पर हैं?'

'जी! अपने कमरे में हैं। मगर कहती थीं कि पांच बजे से पहले न बुलाऊँ। वह कॉलेज का काम कर रही हैं।' ।

'तो मत बुलाओ। और देखो, बेबी के पास बैठो, यहाँ मत आना।'

चाय पर चार व्यक्ति थे। चाय पीते ही बहस गरमा-गरम चलने लगी। पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल के निर्वाचन होने वाले थे। पंजाब में कौंसिल के पैंसठ स्थानों में चालीस मुसलमानों के लिये रिजर्व थे। शेष पचीस स्थान हिन्दुओं के लिये थे।

उन पच्चीस स्थानों के लिये निश्चय हो रहा था। अभी बातचीत चल ही रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि यूरोपियन पहिरावे में एक स्त्री ने द्वार पर लगी घंटी बजाई। स्मिथ अपने कमरे से निकल देखने आयी कि कौन है। आने वाली ने अपना कार्ड दे दिया तो स्मिथ ने उसे बरामदे में रखी बैंत की कुर्सी पर बैठने को कहा और स्वयं कार्ड ले भीतर जा पहुंची।

बलूजा ने कार्ड देख कहा, 'लो! मिस ऐमिली भी आ गयी हैं। कहो तो उसे भी भीतर बुला लें?'.

ऐमिली भी निर्वाचनों के सम्बन्ध में ही आयी थी। इस कारण उसे भी बुला लिया गया।

बलूजा ने नत्थूराम को ऐमिली के सम्मुख भी चाय लगाने के लिये कह दिया। वह भी बातचीत में भाग लेने लगी।

पाँच बजे रोहिणी ने ड्राइंग-रूम में ऊँचे-ऊँचे बहस की आवाज सुनी तो नत्थूराम को अपने लिये चाय कमरे में ही लाने के लिये कह दिया।

उसने चाय पी और कमरे के द्वार से जो लॉन में खुलता था, निकली। अपने कमरे का द्वार बंदकर बाहर घूमने का विचार बना वह लौरेंस गार्डन की ओर चल पड़ी।

:6:

रोहिणी भ्रमण से साढ़े छः बजे सायं काल लौटी तो बलूजा साहब से मिलने आये लोग जा चुके थे। रोहिणी अपने कमरे में उसी द्वार से दाखिल हुई जिससे वह जाते समय निकली थी। उसने बाहर का दरवाजा भीतर से बंद किया ही था कि उसके कमरे के भीतर के दरवाजे से किसी ने खटखटाया। रोहिणी ने पूछा, 'कौन?'

'नत्थूराम। बाहर साहब प्रतीक्षा कर रहे हैं?'

'आ रही हूँ।'

रोहिणी ड्राइंग-रूम में आयी तो बलूजा सोफा पर बहुत गम्भीर विचार में बैठा था। रोहिणी को आते देख उसने पूछ लिया, 'किधर गयी थीं?'

'काम करती-करती थक गयी तो जरा घूमने निकल गयी थी। आपके पास कुछ लोग बैठे थे। इस कारण आपके काम में विघ्न न डालने के विचार से कमरे के दूसरे द्वार से चली गयी थी।'

'हाँ मगर तुम इतिहास के ठेकेदारों को बताता हूँ कि मैंने विचार किया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं भी इतिहास निर्माण में भाग लूं।'

'समझी नहीं?'

'आगामी जनवरी मास में पंजाब कौंसिल के चुनाव होने वाले हैं और मैंने एक जगह से चुनाव लड़ना स्वीकार कर लिया है।'

'ओह! तो आप पर भी यह पागलपन सवार हो रहा है?'

'हो रहा नहीं, हो गया है। मैंने शेखुपुरा की सीट से खड़े होने की घोषणा कर दी है।'

'किसी पार्टी की ओर से खड़े हो रहे हैं अथवा स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में?'

'मैं हिन्दू महासभा की ओर से चुनाव लड़ रहा हूँ।'

'तो आप असफल रहेंगे।'

'क्यों?'

'यह चुनाव का ढंग हिन्दू मीमाँसा के विपरीत है। यहाँ एक हंस को बगुले के रूप में प्रकट होना पड़ेगा।'

बलूजा खिल-खिलाकर हँस पड़ा। रोहिणी मुस्कुराती हुई उसका मुख देखती रही थी। बात बलूजा ने ही बात चलाई। उसने कहा, 'रोहिणी! बगुले का स्वरूप हिन्दू महासभा है अथवा काँग्रेस? मैं काँग्रेसी तो कभी भी नहीं था और मैं उनको ही बगुला मानता हूँ।'

'मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मैं काँग्रेस और हिन्दू महासभा दोनों को बगुला नहीं समझती। दोनों ठीक-ठीक अपना अभिनय कर रही हैं। मैं तो कौंसिल मेम्बरी को ही बगुलापन समझती हूँ। हंस हैं हिन्दू सभ्यता वाले।'

'और काँग्रेस वालों को क्या समझती हो?'

'रूस के भालू।'

'और अब भालू भी बगुले बन रहे हैं?' बलूजा ने गम्भीर हो पूछ लिया।

'हाँ! एक बहुत बड़ा भालू महात्मा गांधी द्वारा दी रामनाम को ओढ़नी ओढ़े हुए बगुला बना था।'

इस पर तो बलूजा फिर हँसा। हँसते हुए बोला, 'रोहिणी! तुम्हारा मस्तिष्क बहुत उर्वरा है। नई-नई उपमाएं गड़ता रहता है। अच्छा, यह बताओ कि हिन्दू में हंस के क्या गुण हैं?'

'हिन्दू में गुण तो हैं। परन्तु हिन्दू महासभा वाले स्वयं नहीं जानते कि वे हंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान हैं। उनमें हंस और बगुलों में भेदभाव का भी ज्ञान नहीं है। ये बगुले बनकर भी अपने को हंस समझते रहेंगे।'

'और काँग्रेसी अपने को बगुला नहीं समझते क्या?'

रोहिणी ने मुस्कुराते हुए अपनी बात को समझाना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, 'देखिये जीजा जी! सन 1920 तक काँग्रेसी 'गॉड सेव द किंग' गाया करते थे। सन 1920 में गांधी जी ने काँग्रेस को हंस का रूप देने का यत्न किया, परन्तु पण्डित मोतीलाल जी ने महात्मा जी को ऐसी डाँट बताई कि गांधी जी अपना स्वरूप छोड़ इस्लाम के चाँद के रूप में प्रकट होने लगे। महात्मा जी ने पश्चिम की ओर दिखाई देने वाले चाँद की ओर मुख करना शुरू कर दिया, परन्तु सफल नहीं हुए। मोमिनों ने हलाल के चाँद पर से राम-नाम की ओढ़नी फाड़ फेंक दी। यह सन् 1920 से सन् 1924 तक का इतिहास है।

'सन् 1924 में पण्डित जवाहरलाल रूस से एक रीछ का बच्चा ले आये। गांधीजी ने उस रीछ के बच्चे पर अपने राम-राम की ओढ़नी लपेट दी।

'जवाहरलाल काँग्रेस के सर्वेसर्वा हैं। वह स्वयं रीछ रूप हैं और महात्माजी उसे भारतीय स्वरूप देने के लिए उस पर रामनाम की चादर लपेट रहे हैं। इस पर भी वह रहेगा रीछ ही।

'अब हिन्दू महासभा की बात सुन लीजिये। हिन्दू महासभा नहीं जानती कि वास्तविक हिन्दू का स्वरूप क्या है और यह कौंसिल की सदस्यता को ही सब कुछ समझ रही है। इस कारण मैं एक हंस को बगुला बन रहा अनुभव करती हूँ।'

'परन्तु हमारे दल के नेता पण्डित मदनमोहन मालवीय जी को भी तुम बगुला बन रहा समझती हो?'

'वे स्वयं तो ठीक ही हैं, परन्तु दल एक समूह का रूप होता है। अधिक से अधिक यह कहा जा सकेगा कि एक निर्दोष निस्पृह हंस बगुलों की डोर में फंसा हुआ उनके साथ उड़ा जा रहा है।'

'अच्छा, यदि मैं चुना गया तो तुम से राय कर हंस बनने का यत्न करूंगा।'

रोहिणी हंस पड़ी।

बलूजा ने बात बदली, 'देखो! महेन्द्र का आज मुकद्दमा था। उसका एक मकान के विषय में झगड़ा चल रहा है और वह झगड़ा अब हाईकोर्ट में आया हुआ है।

'आज महेन्द्र आया हुआ था और कह रहा था कि उसने घर पर तुम्हारे वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जाकर रहने की बात बताई थी। इस पर उसकी माँ और पत्नी में सुलह हो गई है और दोनों ने यह अल्टिमेटम दे दिया है कि यदि रोहिणी वहाँ आयी तो वे तुम दोनों को, तुम्हें और महेन्द्र को, घर से निकाल देंगी।'

रोहिणी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, 'एक बात तो ठीक हुई है। सास-पतोहू में सन्धि हो गयी है?'

रत्नचन्द हँस पड़ा और बोला, 'महेन्द्र बहुत परेशान था।'

'उसका फोन नम्बर क्या है ?'

'तीन, चार, सात।'

'मैं उसे टेलीफोन कर उसकी चिन्ता मिटाना चाहती हूँ।'

'ठीक है करो।' बलूजा ने कहा।

रोहिणी ने टेलीफोन का चोंगा उठाया और ऐक्सचेंज को नम्बर बता महेन्द्र से सम्पर्क बना लिया। रोहिणी ने अपना नाम बताया तो महेन्द्र ने वही बात बता दी जो रत्नचन्द ने रोहिणी को बतायी थी। रोहिणी ने कहा, 'भैया! चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। मैं यहाँ जीजा जी की कोठी में मनमाना स्थान पा गयी हूँ। और तुम माता जी से कह सकते हो कि मैं उनके घर पर नहीं आ रही।'

महेन्द्र क्षमा माँगने लगा। परन्तु रोहिणी ने कह दिया, 'मैं कुछ इसी प्रकार की प्रतिक्रिया वहाँ होने की आशा कर रही थी। इसी कारण मैंने कल तुम्हें कहा था कि पहले उनसे पता कर लो।

'अच्छा सुनो! मैं हॉस्टल का काम तो छोड़ आयी हूँ। परन्तु कॉलेज में अभी तक हूँ। इससे आर्थिक संकट भी नहीं। अढ़ाई सौ वेतन मिलता है।'

महेन्द्र ने कुछ कहा तो रोहिणी ने कह दिया, 'छापेखाने की आय में से मैं अभी कुछ भी लेने का विचार नहीं कर रही। जब बहन सगुनी के लड़का होगा, तब उसके नाम उस राशि को लिख दूंगी।'

इसके उपरान्त टेलीफोन बंद हुआ। बलूजा जो समीप बैठा रोहिणी की बात सुन रहा था, खिलखिला कर हँस पड़ा। हँसते हुए पूछने लगा, 'रोहिणी! सब को आशीर्वाद देती हो, परन्तु मेरे लिये कुछ नहीं कह रहीं। मैं अपनी मनोकामना पूरी करने के लिये क्या करूँ?'

'आप मतदाताओं की पूजा-सेवा का प्रबन्ध करें। तब आप यथार्थ अर्थों में बगुला बन सकेंगे।'

'वह तो मैं करने की योजना अपने कार्यकर्ताओं को दे चुका हूँ। परन्तु मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तविक इच्छा तो दूसरी थी।'

'उसके लिये मेरी राय है कि आप मिसेज़ स्मिथ से विवाह कर लीजिये। आपके घर में पुत्र-पौत्रों की लहर-बहर लग जायेगी।'

'वह नहीं। मेरी योजना तो कुछ दूसरी है। आज एक तांत्रिक से मिल कर आया हूँ और उसने एक उपाय बताया है। आज रात से उस उपाय को प्रयोग में लाऊँगा।'

'क्या उपाय बताया है?'

'बताऊँगा नहीं। इस पर भी मुझे उसने विश्वास दिलाया है कि मेरी मनोकामना पूर्ण होगी।'

'तब ठीक है। मैं जीजा जी को बधाई दूंगी और उनके मित्रों और सम्बन्धियों में मिठाई बाटूंगी।'

'परन्तु तुम यह छापाखाना की आय क्यों अस्वीकार कर रही हो? मैं मध्याह्न के समय महेन्द्र का छापाखाना देखने गया था। जर्मनी की बनी बढ़िया मशीनें लगवाई हैं और मैनेजर एक अनुभवी व्यक्ति लगा हुआ है। मेरा विचार है कि एक वर्ष में बीस-बाईस हजार की बचत होगी और उसमें से दस हजार रुपया तुम्हारा भाग होगा। पाँच दस वर्ष में तुम एक धनी स्त्री की भांति जीवन चला सकोगी?'

'मुझे उसमें रुचि नहीं है?'

बलूजा ने बात बदल दी। उसने कहा, 'मैं अब चुनावों में व्यस्त हो जाऊँगा। नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी की दस तारीख तक मैं उसमें लगा रहूंगा। मैं चाहता हूँ कि मेरे घर का प्रबन्ध इन दिनों में तुम्हारे अधीन रहे।'

'यदि चुनाव लड़ना है तो दिल लगाकर लड़िये और घर की चिन्ता मुझ पर छोड़ दीजिये।'

इसके उपरान्त बलूजा क्लब चला गया और रोहिणी अपने कमरे में लेखन-कार्य में लीन हो गयी।

अगले दिन रोहिणी कॉलेज पहुंचने से पूर्व ही प्रिंसिपल की शिकायत के रद्द किये जाने का समाचार सबको विदित हो चुका था। यह समाचार मिसेज़ खुराना के प्रिंसिपल के स्थान पर आसीन होने से विख्यात हुआ था। मिस रोबटर्सन ने दो मास की, स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण छट्टी ले ली थी और खुराना को आज्ञा मिली थी कि वह कॉलेज के प्रधानाचार्य का चार्ज ले ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह चार्ज मिस रौबर्ट्सन के कहने पर प्रातः साढ़े नौ बजे लिया गया था और दस बजे कॉलेज खुलने के समय रौबर्ट्सन के बंगले को ताला लगा हुआ था और किसी को पता नहीं था कि वह कहाँ है।

अध्यापक-वर्ग ज्यों-ज्यों आते थे, कार्यालय में अपनी हाजिरी लिखने जाते थे। उनको हैड-क्लर्क से यह विदित हो जाता था कि मिस रौबर्ट्सन बीमारी के कारण छुट्टी पर हैं और मिसेज़ खुराना उनके स्थान पर काम कर रही हैं।

ग्यारह बजे रोहिणी कॉलेज में पहुंची। उसका कार्य साढ़े ग्यारह बजे से आरम्भ होना था। उसे भी हैड-क्लर्क ने बताया तो रोहिणी ने गम्भीर-भाव में समाचार सुना और कह दिया, 'बहुत ही दुर्बलात्मा सिद्ध हुई हैं।'

हैड-क्लर्क ने तो इस कथन को सुना-अनसुना कर दिया था, परन्तु समीप खड़ी गणित की अध्यापिका बेगम नूरी कासिम ने सुन लिया और जब रोहिणी वहाँ से स्टाफ-रूम को चली तो साथ-साथ चलते हुए उसने कहा, 'हम सब यह समझ रही हैं कि मिस रौबर्ट्सन ने बहुत बहादुरी का कार्य किया है। बारह सौ रुपये महीना आमदन वाली सविस को ऐसे ठुकरा दिया है, जैसे दो कौड़ी की वस्तु हो।'

'हाँ, यह भी कहा जा सकता है। जैसे पिछले जर्मन युद्ध में अंग्रेज़ सेना के युद्ध में से पछाड़ खाने को 'और्डी रिट्रीट' का नाम दिया जाता था। यह बुद्धिमत्ता तो कही जा सकती है, परन्तु इसे बहादुरी का प्रतीक नहीं माना जा सकता।'

नूरी कासिम ने मुस्कराते हुए कहा, 'मैंने भी इसे रौबर्ट्सन की जीत नहीं कहा, परन्तु यह उसकी रूहानी ताकत का नतीजा ही कहा है।'

अब रोहिणी ने बताया, 'मुझे प्रधानाचार्य ने कल पूछा था कि मैं कॉलेज का सेवा-कार्य छोड़ रही हूँ अथवा नहीं? मैंने एक दिन उनको इस बात का संकेत दिया था कि मैं कॉलेज का सेवा-कार्य छोड़ रही हूं।

'जब मैंने बताया कि मैं अपनी पढ़ाई में योग्यता का प्रमाण देने के लिये अभी त्याग-पत्र नहीं दे रही तो उनके मुख पर मुर्दनी छा गयी थी। मैं समझती हूँ कि इससे उनकी अन्तिम आशा भी विलुप्त हो गयी थी और वह मोर्चा छोड़ भाग गयी हैं। किसी जाति का दूसरे के देश पर अपना झूठा अधिकार प्रकट कर आक्रमण कर देना और फिर वहाँ से ढ़केलकर वापस लौटा दिया जाना, लौटने वाले की बहादुरी नहीं कही जा सकती। हाँ, बलपूर्वक सन्मार्ग दिखाना कहा जा सकता है।'

इस समय तक दोनों स्टाफ-रूम में जा पहुंची थीं और कुर्सियों पर बैठ गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। कुछ अध्यापिकाएँ जिनके पढ़ाई के पीरियड नहीं थे, वहाँ थीं और रोहिणी देवी को देख समीप आ उसके मन की प्रतिक्रिया सुनने लगीं। रोहिणी कह रही थी, 'मैं इस पूर्ण घटना के लिये ईश्वर का धन्यवाद ही करती हूँ। प्रधानाचार्या जी के आरोप निराधार थे और उनका निराकरण हो गया है।

'मैं यह मानती हूँ कि शिक्षा कार्य पर अनाधिकारियों का अधिकार बना हुआ है और उन्होंने ही प्रधानाचार्या जी को मोर्चा छोड़ने पर विवश किया है। परन्तु यह बात तो उन में और अधिकारियों के बीच में थी। जहाँ तक उनके आत्मा की श्रेष्ठता और बलवान होने का सम्बन्ध है, यदि कल वह मुझे कह देती कि मेरी पढ़ाई के कार्य की जो परीक्षा बोर्ड ने निश्चय की है, वह उसे स्वीकार नहीं करती, इस पर वह भी देखेंगी कि मैं उसमें सफल होती है अथवा नहीं। तब उसका प्रमाण मिल जाता।

'इस प्रकार मुझे चुनौती देतीं और अपने स्थान पर स्थित रह कर परीक्षाओं के परिणामों की प्रतीक्षा करतीं। तदनन्तर यदि मैं उस परीक्षा में भी सफल हो जाती तो फिर हिन्दुस्तान में शिक्षा दोषपूर्ण कहकर यहाँ से त्याग-पत्र दे किसी श्रेष्ठ शिक्षा वाले देश में कार्य करने चली जातीं।

'मैं समझती हूँ कि विजय मेरी नहीं हुई, न ही उनके प्रधानाचार्या के काम में किसी प्रकार का दोष बताया गया है। विजय हुई है देश में प्रचलित शिक्षा और परीक्षा-प्रणाली की। उसके विपरीत विचार प्रकट कर उनको त्याग-पत्र देना चाहिये था।'

अब मिसेज़ नूरी कासिम ने पूछ लिया, 'तो आप अपने देश में चल रही शिक्षा-प्रणाली को ठीक समझती हैं?

'नहीं! परन्तु वह झगड़ा शिक्षा-प्रणाली का नहीं था, न ही प्रधानाचार्या और मुझमें था। वह झगड़ा तो मेरे और शिक्षा-विभाग में है। मैं उसमें भी विजय प्राप्त करने की आशा करती हूँ। परन्तु उसमें मेरी विजय की चालों में 'रीयर ऐक्शन' होगा।

'जानती हैं रीयर-ऐक्शन क्या होता है?

'नहीं।'

'यह चाल होती है कि आगे बढ़ रही सेना के किसी प्रकार पीछे जा पहुंचा जाय और विजय प्राप्त करती सेना को दोनों ओर से मार कर हरा दिया जाये।

'मैं इस शिक्षा-प्रणाली में, विशेष रूप से इतिहास की शिक्षा में दोष जान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गयी हूँ और इस दोष को उसकी अपनी ही युक्तियों से पराजित करना चाहती हूँ। यह मैं छात्राओं को बता रही हूँ।

'देखो बहन नूरी! यूरोपियन नास्तिक टेढ़ी-मेढ़ी युक्तियों से परमात्मा को अमान्य करते हैं। मुझे इनकी युक्ति में दोष समझ आ गया है। ये नास्तिक लोग विज्ञान की धूम मचा रहे हैं। मैंने एक इन द्वारा प्रतिष्ठित वैज्ञानिक के कथन को प्रमाण मानकर ही इनको झूठा सिद्ध कर दिया है। यह है रीयर-ऐक्शन से मेरा अभिप्राय।'

इस समय साढ़े ग्यारह बजे की घंटी बजी और रोहिणी तथा नूरी अपनी-अपनी पढ़ाई कराने चल पड़ी।

उस दिन के आधे समय के अवकाश में रोहिणी तथा मिसेज़ खुराना को बधाई देने के लिये जलसा मनाया गया।

इस सभा में रोहिणी ने अपने मन की प्रतिक्रिया का ठीक-ठीक वर्णन कर दिया। उसका कहना था, 'यद्यपि मैं जानती हूँ कि मिस रौबर्ट्सन एक दुर्बल पक्ष लेकर मोर्चा ले रही थीं, परन्तु इस में उनका अपना दोष नहीं था। वह तो सदा प्रसन्न वदन, खुले दिल से मिलती और बातें करती थीं।

'विवादस्पद बात इतिहास नहीं था। मिस रौबर्ट्सन इतिहास का 'अ-आ' भी नहीं जानती हैं। उनका पक्ष था नास्तिकता का। दुनिया के प्रायः सब आस्तिक लोग अपना दावा श्रद्धा, भक्ति और पीर-पैगम्बरों के कथन पर आधारित मानते हैं और नास्तिक लोग इसे हँसी-व्यंगों से हवा में उड़ा दिया करते हैं, परन्तु मेरा आस्तिकवाद का आधार श्रद्धा, भक्ति अथवा किसी पैगम्बर का कथन नहीं है। मैं वेद को ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ मानते हुए भी उसकी दुहाई नहीं दे रही थी। मेरा कथन इनसे ऊपर उठकर युक्ति तथा तर्क पर आधारित था। जब मैंने एक वैज्ञानिक को परमात्मा के पक्ष में लाकर खड़ा किया तो मिस रौबर्ट्सन दुम दबाकर भाग खड़ी हुई और एक हारे हुए रौली व्यक्ति की भाँति गालियाँ देने लगीं। वे गालियाँ निराधार थीं।

डायरेक्टर महोदय बुद्धि रखते थे और उन पर उन गालियों का प्रभाव नहीं हुआ और यह स्थिति उत्पन्न हो गयी है, जो आपके सामने है।

'यदि मैं मिस रौबर्ट्सन के स्थान पर होती तो मैं उसी रात, भोजन के समय कह देती कि मैं यद्यपि यह समझा नहीं सकती, परन्तु मेरे संस्कार मुझे आपकी बात मानने की स्वीकृति नहीं देते। तब बात समाप्त हो जाती। यह इस प्रकार कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब युक्ति से बात निश्चय नहीं होती तो हम कह देते हैं– 'वि ऐग्री टु डिफ्फर' (हम भेद रखने पर राजी हैं।)'

'इतना कहने का वह साहस नहीं कर सकीं। बस, यही बात है।

'इस पूर्ण घटना में मैं अपनी किसी प्रकार की बहादुरी नहीं समझती। हाँ, मिस रौबर्ट्सन की दुर्बलता मानती हूँ। मानसिक तथा आत्मिक दुर्बलता। वैसे तो शरीर से वह मुझसे अधिक हृष्ट-पुष्ट और सुदृढ़ प्रतीत होती हैं।'

इस प्रकार यह उत्सव रोहिणी के वक्तव्य पर तालियाँ बजा और पीछे चाय और खाना-पीना करते हुए समाप्त हुआ।

रोहिणी कॉलेज की बात इस प्रकार समाप्त होती देख प्रसन्न थी। इस पर भी वह समझ रही थी कि इस सबके पीछे रत्नचन्द बलूजा का हाथ है। रत्नचन्द का मेल-जोल डायरेक्टर से, मिनिस्टर और बोर्ड के प्रायः सब सदस्यों से था।

विस्मयजनक बात यह थी कि सरकार का प्रतिनिधि भी रोहिणी के पक्ष में राय दे गया था। बोर्ड का निर्णय सर्वसम्मत था। यह बात वह समझ नहीं सकी थी। परन्तु इसका रहस्य उसे बलूजा साहब की कोठी पर मिला।

इन दिनों कोठी का ड्राइंग-रूम राजनीतिक लोगों का अखाड़ा बना हुआ था। इस अखाड़े की खलीफा मिस ऐमिली थी।

एक मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगाकर चार क्लर्क उर्दू में छपी सूचियों में से पर्चियाँ लिख रहे थे। शेखुपुरा निर्वाचन क्षेत्र में तीन हजार मतदाता थे। पूर्ण क्षेत्र तीस हल्कों में बाँटा गया था और प्रत्येक हल्के की नामों की पर्चियाँ पृथक-पृथक में बाँधकर लिफाफों में डाली जा रही थीं।

मिस ऐमिली एक हिन्दुस्तानी ईसाई औरत थी और वह स्वयं एक सोफा पर बैठी निर्वाचनों की नियमावली और कुछ अन्य सूचनाएँ पढ़ रही थी।

रोहिणी ड्राइंग रूम में इस प्रकार कार्य होता देख वहाँ से निकल गयी और अपने कमरे में जा कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर अपने काम में लग गयी।

उस दिन बलूजा रात के आठ बजे कोठी में आया। वह अपने निर्वाचन क्षेत्र का दौरा करने गया हुआ था। ऐमिली ने बलूजा से पूछा, 'कितना क्षेत्र घूम सके हैं?'

'ग्यारह बजे दौरा आरम्भ हुआ था और चार बजे तक बहुत कठिनाई से तीन गाँवों में ही जा सका हूँ।' ।

'मेरी राय मानिये। कलकत्ता चले जाइये और वहाँ से एक फोर्ड गाड़ी खरीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइये। दो-ढाई हजार की मिल जायेगी। इससे आप दो-तीन दिन में पूर्ण क्षेत्र में चक्कर काट सकेंगे।'

'मेरा कलकत्ता जाना तो कठिन है। यहाँ माल पर जो कम्पनी है, वह नहीं मँगवा देगी क्या ?'

'मँगवा तो देगी, परन्तु महीना लग जायेगा। इतने काल में तो वारा-न्यारा हो सकता है।'

'तो क्या किया जाये ?'

'आप मुझे भेज दीजिये। मैं आज जाऊँगी तो परसों वहाँ पहुँच जाऊँगी। परसों ही गाड़ी लेकर रेल से बुक करा दूँगी। मेरा अनुमान है कि एक सप्ताह के भीतर ही गाड़ी यहाँ पहँच जायेगी।'।

'ठीक है ! कल चली जाओ। आज तो गाड़ी का समय हो चुका है।'

ऐमिली निर्वाचन-कार्य में सिद्धहस्त थी। परन्तु बलूजा अपना रसूख रखता था। बलूजा के एक मित्र थे गुलाबचन्द, आयरन फाउण्डरी के मालिक उनके पास एक आस्टिन गाड़ी थी। उन्होंने रत्न चन्द को गाड़ी दो महीने के लिये ड्राईवर सहित दे दी।

ऐमिली अभी कलकत्ता से लौटी नहीं थी कि रत्नचन्द इस आस्टिन गाड़ी पर चक्कर लगाने लगा था।

इस प्रकार निर्वाचन कार्य, जो कोठी पर कार्य करने वालों के अतिरिक्त शेखपुरा में लगभग एक सौ से अधिक लोग कर रहे थे, जोर-शोर से चलने लगा था।

इन दिनों रोहिणी को रत्नचन्द से मिलने का अवसर कभी ही मिलता था। वह प्रायः बहुत प्रातःकाल लाहौर से चल देता था और रात देरी से लौटता था। दफ्तर का काम ऐमिली ही करती थी और उसे कोठी में ही रहने के लिये एक बेड-रूम खोल दिया गया था।

यह लगभग दिसम्बर की चौबीस तारीख थी। क्रिसमस की छुट्टियों के लिये जिस दिन कॉलेज बन्द हुआ। रोहिणी नित्य से कुछ जल्दी ही कोठी पर आयी थी। इन दिनों वह अपने कमरे के बाहर के द्वार से ही आती-जाती थी और जाते समय उस कमरे के बाहर के द्वार को ताला लगा जाती थी। इस कारण बलूजा साहब के दर्शन बहुत कम होते थे।

इस दिन वह कॉलेज से एक बजे के लगभग लौटी थी और अपने कमरे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार खोल रही थी कि मिसेज़ स्मिथ अपने कमरे से निकल समीप आ खड़ी हुई। रोहिणी ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि में देखा तो वह कहने लगी, 'बहन जी! आपसे एक बात करनी है।'

'तो आओ! भीतर आ जाओ।' रोहिणी ने द्वार खोला और कमरे के अन्दर चली गयी। स्मिथ उसके पीछे-पीछे थी। मिसेज़ स्मिथ ने द्वार बन्द कर दिया। कमरे की बालकोनी में एक खिड़की थी। उसे हवा के लिये खोल उसने उसका पर्दा गिरा दिया।

रोहिणी ने अपने समीप एक कुर्सी पर स्मिथ को बैठाते हुए पूछ लिया, 'हां, बताओ।'

'बहन जी ! मुझे दिन चढ़ गये हैं।'

'क्या?'

'गर्भ स्थिति के लक्षण दिखाई देने लगे हैं।'

'पर तुम तो कहती थीं कि तुम द्वार पर टोपी चढ़ाकर रखती हो?'

'जी! परन्तु इन दिनों वकील साहब का आना-जाना अनिश्चित समय और दिन को होने लगा है और कई बार उसका प्रयोग नहीं कर सकी।'

'फिर क्या चाहती हो?'

'मैं गर्भपात के लिये अस्पताल गयी थी। परन्तु लेडी डॉक्टर ने कहा है कि यह पाप है और वह यह पाप नहीं करेगी।'

'तो फिर?'

'मैं स्वयं नहीं जानती कि क्या करूँ। दो प्रश्न हैं। एक यह कि क्या इस स्थिति में वकील साहब मुझे सेवा में रखेंगे? दूसरे यह कि यह बच्चा किसका होगा?'

रोहिणी ने मुस्कराते हुए कहा, 'देखो रौली! इलाज तो दोनों बातों का है। परन्तु इसके लिये साहस और अक्ल होनी चाहिये।'

'पहले अक्ल की बात बताइये। साहस तो मुझमें है नहीं। मैं आत्म-हत्या नहीं कर सकती। इस कारण साहस वाली बात गौण है।'

रोहिणी ने मुस्कराते हुए कहा, 'तो तुम समझती हो कि आत्महत्या करना साहस की बात है? मैं इसे भीरुता समझती हूँ। मैं कुछ दूसरी बात कहने वाली हूँ।'

'पहले बुद्धि की बात ही बताती हूँ, क्योंकि तुम पहले ही दुर्बल बुद्धि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कर चुकी हो।

'मेरा अभिप्राय है कि तुमने गर्भपात की बात विचारकर बुद्धिहीनता का परिचय ही दिया है। देखो, मैं समझती हैं कि गर्भपात नहीं कराना चाहिये। बच्चा बना है तो इसकी पालना करनी चाहिये। इसके पालन के लिये इसका और इसकी माँ के जीवन का, कम-से-कम पाँच-छः वर्ष के लिये प्रबन्ध होना चाहिये।

'इसका प्रबन्ध ही बुद्धि का काम है। इस प्रबन्ध का विचार करो। मैं भी इस विषय में कुछ तुम्हारी सहायता कर सकूँगी।

'इस विषय में वकील साहब से भी बात करनी होगी और उनसे भी इस काम में सहायता लेनी होगी।

'दूसरी बात है साहस की। इसके लिये भी मेरी राय है कि तुमको दूसरा विवाह कर लेना चाहिये। दूसरा विवाह करने पर पहले पति से प्रेम छूट नहीं जाता। इस विवाह का उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं।'

'बहिन जी! मैं अपने मन में इस जीवन से ग्लानि अनुभव करने लगी हैं, परन्तु आत्म-हत्या नहीं कर सकती। यह इस कारण कि इस जीवन से ग्लानि से अधिक जौन से मोह है।'

'ठीक है! यह एक अच्छा विचार है। इससे न तुम स्वयं एक पाप-कर्म से बचोगी, प्रत्युत ईश्वर की ओर से दिये गये एक उत्तरदायित्व का भी पालन करोगी।

'देखो रौली! पाप तो यह होगा कि आत्म-हत्या से न केवल अपना जीवन समाप्त करोगी, वरन अपने साथ अपने पेट में बन रहे बच्चे की भी तो हत्या कर डालोगी और जौन का अहित तो करोगी।

'देखो! इस कार्य में भी वकील साहब को तुम्हारी सहायता करनी चाहिये। तुम उनसे स्वयं कहो और उनसे विवाह का प्रस्ताव कर दो।'

'वह मानेंगे नहीं।'

'मैं समझती हूँ कि उनको मान जाना चाहिये।'

'मुझे कठिन प्रतीत होता है।'

'तुम यत्न करो। असफल होने पर मुझे बताना। मैं यत्न कर दूँगी। यदि वह नहीं मानेंगे तो फिर विचार कर लिया जायेगा।'

अब रौली स्मिथ रोहिणी के पाँव पकड़ रोने लगी। रोहिणी ने उसे उठा कुर्सी पर बैठा उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, 'घबराओ नहीं। प्रभु को स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करो और यदि वकील साहब मान जायें तो ठीक है, नहीं तो मुझे बताना। तब मैं विचार करूंगी।'

स्मिथ को ढाढ़स बंधा रोहिणी ने उसे भेजा और बच्चे को ले आने के लिये कह दिया। बच्चा इस समय पाँच मास का हो रहा था और रोहिणी को भली-भांति पहिचानने ने लगा था। इस पर भी ऊ-ऊ के अतिरिक्त अभी कुछ नहीं कहता था। आधा घंटा-भर वह बच्चे को खेलाती रही। पीछे उसे स्मिथ को सौंपकर वह कुछ आराम करने के लिये पलंग पर लेट गयी। स्मिथ गयी तो उसने द्वार बन्द कर लिया।

लेटी-लेटी रोहिणी विचार करने लगी कि बलूजा विवाह के लिये मानेगा अथवा नहीं। उसने रौली को कहा था कि वह उसे विवाह के लिये राजी कर लेगी।

अब वह प्रतीक्षा करने लगी कि देखे बलूजा और स्मिथ में परस्पर बात का क्या परिणाम होता है।

दिसम्बर इक्कतीस को स्मिथ ने प्रातःकाल अल्पाहार के समय बताया, 'आपके जीजा जी नहीं माने।'

'क्या नहीं माने?'

'न तो मुझसे विवाह करना न ही बच्चे के होने की बात। उन्होंने कहा है कि मैं किसी से विवाह कर लूँ और वह मुझे आर्थिक सहायता देते रहेंगे।'

'तो फिर तुम मान आयी हो?'

'जी नहीं! अभी मैं यह आग्रह करती रही हूँ कि वह मुझसे कचहरी में विवाह कर लें।

'आज कल वह अपने निर्वाचनों में लीन हैं। इस पर भी मैं यत्न करूँगी कि उनसे बात करूँ। एक बात तो हो गयी है कि वह आर्थिक सहायता देने के लिये तैयार हैं।'

'परन्तु सहायता की बात जो वह कह रहे थे, ज़बानी है। वह लिखकर तो कुछ देंगे नहीं।'

'अच्छा! मैं उनसे बात करूंगी।'

बात हुई एक अन्य ढंग से। जिस दिन स्मिथ ने उसे अपनी बलूजा से बात का परिणाम बताया था, उससे अगले ही दिन प्रातः पाँच बजे किसी ने उसके कमरे के भीतर का द्वार खटखाया। उस समय रोहिणी अपनी मेज के समीप बैठी कुछ पढ़ रही थी। यह पहली जनवरी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिणी ने पूछा, 'कौन?'

आवाज़ आयी, 'बलूजा।'

'ठहरिये!' रोहिणी ने कहा और उठकर दरवाजा खोल दिया। न बलूजा बाहर जाने के लिये वस्त्र पहन तैयार था। हाथ में उसके एक थैला पकड़ा हुआ था।

कमरे में प्रवेश करते ही बलूजा ने कहा, 'रोहिणी! मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि रौली सेवा-कार्य छोड़ रही है। इस कारण उससे बच्चा तुम ले लो और उसे अपने कमरे में सुलाया करो। उसे बच्चा लेकर अकेले में कहीं आँखों से दूर मत जाने दो।'

'उसने कुछ कहा है क्या?'

'नहीं! वह न जाने कहाँ से पेट में बच्चा ले बैठी है और ऐसी अवस्था में अपने बच्चे को मैं उसके हवाले नहीं कर सकता। अभी तुम ले लो। कल तक मैं उसके लिये दूसरी नर्स का प्रबन्ध कर दूंगा।'

'अपने गर्भ के विषय में उसने आपको बताया है ?'

'हाँ! वह कहती है कि गर्भ मुझसे है, परन्तु मुझे इसका विश्वास नहीं है।'

'अविश्वास में कुछ कारण है?'

'आजकल कई लोग यहाँ आते-जाते रहे हैं। कुछ तो रात का यहाँ सोते भी हैं। इससे कुछ नहीं कहा जा सकता।'

'परन्तु जीजा जी! उस पर अविश्वास का कारण क्या है?'

'वह कुछ कह रही थी। वह मैं मान नहीं रहा और उसके प्रतिकार में वह बच्चे की हत्या भी कर सकती है। इस समय मेरे पास इस विषय पर विचार करने का अवकाश नहीं है। बच्चे की जिम्मेदारी तुम पर है।'

'मैं कल से कॉलेज जाने लगूंगी?'

'मैं कल तक कुछ प्रबन्ध कर दूँगा।'

'मैं इस विषय में आपसे कुछ कहना चाहती हूँ।'

'जनवरी दस तारीख तक मुझे अवकाश नहीं कि इस हरजाई के विषय में माज-पच्ची करूं।' इतना कह वह कमरे से बाहर निकल गया।

रोहिणी विचार करने लगी कि इस तानाशाही को स्वीकार करे अथवा इसके विरुद्ध बगावत कर दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बगावत एक ही ढंग से हो सकती थी। वह कोठी को छोड़ चल दे। ऐसा करने से वह उसके व्यवहार के प्रति अपनी नाराजगी तो प्रकट कर देगी, परन्तु इससे न स्मिथ की सहायता हो सकेगी और न ही उस उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी जिसके लिये वह इस कोठी में आकर रहने लगी थी। इस कोठी में आकर रहने का उसका मुख्य उद्देश्य कमल के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा में योग-दान देना था। यह कोठी छोड़ देने से हो नहीं सकता था।

इस कारण कोठी छोड़ चले जाने का विचार उसके मस्तिष्क में टिक नहीं सका। दूसरा विकल्प था कि वहाँ रहते हुए विद्रोह करे।

इस दिशा में वह विचार करने लगी तो उसके उर्वरा मस्तिष्क ने तुरन्त एक योजना बना ली। उसने दो-तीन क्षण तक ही विचार किया और उठ नर्सरी में चली गयी।

रौली स्मिथ कमल को स्नान कराकर वस्त्र पहिना रही थी। रोहिणी ने रौली से कहा, 'रौली! कमल को लेकर मेरे कमरे में आ जाना।'

'क्या बात है?'

कुछ बात है। आओगी तो बताऊँगी।'

रौली ने समझा कि रोहिणी का जी कमल से प्यार करने को कर आया है। इस कारण वह मुस्कराई और बोली, 'बस, अभी आती हूँ।

रोहिणी अपने कमरे में चली आयी। उसने नत्थूराम को कह दिया, 'मेरा और स्मिथ का अल्पाहार मेरे कमरे में ले आओ।'

'परन्तु बहन जी! उसने अपने कमरे में ही मँगवाया है?'

'उसे कह दो कि मैं और वह इकट्ठे अल्पाहार लेंगे।'

नत्थूराम कुछ न समझता हुआ चला गया। रौली बच्चे के लिये बोतल में दूध और बच्चे को गोदी में उठाये हुए आ गयी। रोहिणी को गोदी में लेकर उसे दूध देना आरम्भ करते हुए कहा, 'रौली! बैठो।'

वह बैठी तो रोहिणी ने इस विशेष बुलावे का कारण बता दिया। उसने कहा, 'अभी-अभी वकील साहब जाने से पहले आये थे और और यह आज्ञा दे गये हैं कि बच्चे को अपने पास ले आऊँ और तुम्हारे पास न रहने दूँ।'

स्मिथ मुख देखती रह गयी। वह समझ गयी कि पिछले दिन उसने अपनी अवस्था का वर्णन किया था और यह आज्ञा उस वर्णन की प्रतिक्रिया ही हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिणी ने ही बात बतानी आरम्भ कर दी, 'मैं समझती हूँ कि तुमने जो कल सायंकाल बताया था कि वकील साहब ने तुमसे विवाह करना स्वीकार नहीं किया, यह उस इन्कार की प्रतिक्रिया ही है।'

'यह तो अन्याय हो रहा है।'

'इसके न्याय-अन्याय के विषय में पीछे विचार करेंगे। पहले इसके मानने न मानने पर विचार करना है। मैंने यह विचार किया है कि वकील साहब की आज्ञा को मान भी लूं और इसके दुष्प्रभाव को न होने दूँ।

'मेरा मतलब यह है कि बच्चे को अपनी देख-रेख में ले भी लूं और उसको तुमसे पृथक भी न होने दूँ। इसी कारण तुम दोनों को ही मैंने अपनी देख-रेख में ले लिया है।

'तुम अब यहाँ मेरे कमरे में ही रहोगी और बच्चा भी यहीं रहेगा।'

'इससे आपको कष्ट होगा।'

'इस पर भी मैंने विचार किया है। आज मुझे कॉलेज नहीं जाना इससे तुम यहाँ मेरी देख-रेख में रहोगी। जब मैं भ्रमण करने जाऊँगी तो तुम और कमल, दोनों मेरे साथ ही जाओगे। बच्चे का खटोला और अपना बिस्तर वहाँ इस कमरे में ले आओ।'

रौली स्मिथ को इस मद पर विस्मय हुआ साथ ही रोहिणी के प्रबन्ध से वह समझ गयी कि वह उससे सहानुभूति रखती है। इस कारण बोली, 'बहन जी! मैं अपनी भूल समझ गयी है। इस कारण जो कुछ भी आप उचित समझें, करें। मैं उसे अपनी भूल का दाया समझूंगी।'

'मैं उसे भूल नहीं समझती। उसे तुम्हारी दुर्बलता समझती हूँ। उस दुर्बलता का दण्ड कितना होना चाहिये, यह विचारणीय है।

'एक बात निश्चय है। वह यह कि यदि दण्ड स्वेच्छा से लिया जाये तो वह दण्ड नहीं कहता। तब वह प्रायश्चित्त कहा जाता है। यदि प्रायश्चित्त के साथ पश्चात्ताप भी किया जाये तो पाप और अपराध दोनों से मुक्ति हो जाती है।'

इस लम्बी बात को सुन स्थिम रोहिणी का मुख देखती रह गयी। कुछ विचारकर उसने कहा, 'मैं समझी नहीं।'

'देखो रौली! अपराध यह हुआ है कि तुमने यौन सम्बन्ध को केवल वासना का साधन समझ रखा था। परमात्मा का विधान यह नहीं है। तुमने परमात्मा के विधान में बाधा खड़ी की थी। इस बाधा में तुम सफल नहीं हो सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह मैं मानती हूं कि तुम्हारी बाधा के असफल होने में कुछ तुमसे ही भूल हुई है। परमात्मा ने इस में कुछ नहीं किया। इस भूल का फल तो बच्चा बन रहा है; परन्तु जो परमात्मा के नियम को न मानने का अपराध है, उसका फल पृथक है।

'परमात्मा के नियम न मानने के अपराध की बात पीछे विचार कर लेंगे। परन्तु जो भूल अथवा असावधानी तुमने की है, उसके फल पर ही विचार करो।

'वकील साहब उस असावधानी का दण्ड तुमको यह दे रहे हैं कि तुमको सेवा से पृथक कर दिया जाये। इसी का प्रारूप है कि बच्चा तुससे पृथक किया जाये।

'मैं अभी इसे उचित नहीं समझती! इस कारण बच्चे को अपनी देख-रेख में लेने के साथ-साथ तुम्हें भी अपनी देख-रेख में ले रही हूँ।'

इस पर स्थिम ने कहा, 'यह तो मैं समझ गयी हूँ। मेरा इसे अन्याय कहने का अभिप्राय भी यही है कि अपराध तो छोटी-सी असावधानी है और दण्ड यह है कि नौकरी से पृथक और बच्चा, जिससे मैं मुहब्बत करने लगी हूँ, मुझसे पृथक कर लिया जाये।'

'मैंने कहा है न कि न्याय-अन्याय पर पीछे विचार करेंगे। पहले जो दण्ड दिया जाये अथवा दिया गया है, उसका जो उल्टा प्रभाव तुम पर और बच्चे पर होने वाला है, उसे सुधार लिया जाये।

'अतः अब तुम, जब तक कोई नया प्रबन्ध नहीं होता, तब तक यहाँ रहो। नये प्रबन्ध के समय न्याय-अन्याय के विषय में विचार कर लेंगी।'

'और मैं सप्ताह में एक बार जो माँ और जोन से मिलने जाती हूँ? वह दिन कल है।'

'तुम जा सकोगी। कमल को नहीं ले जा सकोगी।'

स्मिथ को समझ आया कि कमरे के परिवर्तन से उसे किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो रही। यदि कुछ असुविधा हो रही है तो रोहिणी बहन को ही है। इस कारण वह चुप रही।

रोहिणी अपनी असुविधा समझती थी। यह केवल इतनी मात्र थी कि उसके पठन तथा लेखन कार्य में बच्चे के कारण विघ्न पड़ सकता था। परन्तु कार्य के उद्देश्य को समझ इतना कुछ सहन करने के लिये तैयार हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:7:

मिसेज़ स्मिथ के कमरा बदलने की सूचना नत्थूराम को हुई। वह जब प्रातः का अल्पाहार लेकर आया तो रोहिणी ने उसे कह दिया, 'स्मिथ के कमरे से बेबी का खटोला और उसका सब सामान उठाकर इस कमरे में ले आओ।'

नत्थूराम मुख देखता रह गया। रोहिणी ने उसका समाधान करने का यत्न किया। उसने कहा, 'मैंने बच्चे को अपनी देख-रेख में रखने का प्रबन्ध किया है। इसके लिये बच्चे को आदत डलवाने के लिये अभी उसकी नर्स को भी यहीं रख रही हूँ।'

नत्थूराम ने जब मिसेज़ स्मिथ का समान उठवा कर रोहिणी के कमरे में रखवाना आरम्भ किया तो इसकी सूचना जहाँ कोठी के दूसरे सेवकों को हुई, वहाँ निर्वाचन कार्य की प्रबन्धक मिसेज़ ऐमिली को भी हुई।

ऐमिली एक ईसाई महिला होने के कारण स्मिथ से मेल-जोल रख रही थी।

मध्याह्न के समय स्मिथ, ऐमिली से मिलने जाया करती थी। आज वह नहीं आयी तो ऐमिली स्मिथ को उसके कमरे में देखने गयी। उसका कमरा खाली देख उसने नत्थूराम से पूछा तो नत्थूराम ने रोहिणी के कमरे की ओर संकेत कर दिया।

ऐमिली ने रोहिणी का द्वार खोल देखा कि बालक खटोले में सो रहा है और स्मिथ एक कुर्सी पर बैठी हुई विचार-मग्न है। रोहिणी एक अन्य कुर्सी पर बैठी एक पुस्तक पढ़ रही थी।

ऐमिली ने पूछा, 'मैं भीतर आ सकती हूँ क्या?'

'आइये, आ जाइये!' रोहिणी ने कहा और उसे भीतर बुला लिया। ऐमिली को देख स्मिथ कुर्सी से उठ खड़ी हुई और स्वयं पलंग पर बैठते हुए उसे कुर्सी पर बैठने के लिये कहने लगी। ऐमिली ने बैठते हुए कहा, 'इस समय रौली स्मिथ बहन बेबी को लेकर ड्राइंगरूम में आया करती थी। इसी कारण जब आज नहीं आयी तो मैं उसे ढूंढती हुई यहाँ आ गयी हूँ।'

'बच्चा तो सोया हुआ है। हाँ, रौली जाग रही है।'

'परन्तु ये दोनों यहाँ किसलिये आ गये हैं?'

'यह इन दोनों को दण्ड दिया गया है?'

'किसने दिया है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बाबा के बाप ने ।'

'क्यों ? इस निर्दोष जीव ने क्या अपराध किया है ?'

रोहिणी उत्तर देने के स्थान मुस्करा दी। उत्तर स्मिथ ने दिया, 'बहन जी! अपराध बच्चे ने नहीं किया, इसकी नर्स ने किया है।'

'ओह ! तुमने क्या अपराध किया है ?'

'यह बहन जी कहती हैं कि उनकी संगत में जाते समय मैंने 'चेक पेस्टरी' लगाने में असावधानी की है।'

रौली को इस प्रकार स्पष्ट बात करते हुए सुनकर रोहिणी को विस्मय हुआ। इससे वह प्रश्नभरी दृष्टि में दोनों की ओर देखने लगी। इस पर दोनों हँस पड़ी।

अपने कथन का कारण स्मिथ ने बता दिया। उसने कहा, 'बहन जी! मैं इसलिये कह रही हूँ कि जो भूल मैंने की है, वही इनसे न हो जाये।'

'ओह !' रोहिणी मुख देखती रह गयी। ऐमिली अब और भी जोर से हँस पड़ी। हँसते हुए उसने कहा, 'तो इसमें आपको विस्मय हो रहा है ?'

'हाँ !'

'तो आपको पता नहीं चला कि आपके पति आपसे दगा कर रहा है।'

इस पर तो रोहिणी के कान खड़े हो गये। उसने कहा, 'यह आपको किसने बताया है कि मैं उनकी पत्नी हूँ ?'

'आपके पति ने।'

रोहिणी का मुख क्रोध से लाल हो गया। बड़ी कठिनाई से अपने पर नियंत्रण करते हुए उसने कहा, 'यह झूठ है। मैं उनकी सिस्टर-इन-लॉ, बहन के बच्चे की देख-रेख के लिये यहाँ रहती हूँ।'

'क्षमा करें बहन जी ! मुझे और हमारी पूर्ण पार्टी को यही विदित है कि आप श्रीमती बलूजा हैं।'

'और आपकी पार्टी कौन-सी है ?'

'हम सीक्रेट सर्विस के आदमी हैं। दस लोग इस निर्वाचन में बलूजा साहब को विजयी कराने के लिये नियुक्त किये गये हैं।'

'ओह ! परन्तु सरकार को इसमें क्या दिलचस्पी है ?'

'सरकार की दिलचस्पी कांग्रेस की पराजय में है।'

इस पर रोहिणी मौन हो गयी। मिसेज़ स्मिथ ने कह दिया, 'मैं तो आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलूजा साहब की जेल में कैद हूँ और रोहिणी बहन जी मेरी जेल का दरोगा हैं।'

इस पर ऐमिली ने बात बदल दी, 'हमारी सूचना है कि बलूजा साहब के क्षेत्र में मुकाबिला बहुत कठोर है, परन्तु विजय बलूजा साहब की होगी।'

इस पर चुनाव की चालों पर बातें होने लगीं। ऐमिली ने बताया, 'हम पंजाब में लगभग दस क्षेत्रों में हिन्दू महासभा के लिये काम कर रहे हैं और पन्द्रह-बीस क्षेत्रों में किसान पार्टी के लिये काम कर रहे हैं।

'इसमें सरकार को क्या लाभ होगा?'

'यह हम लोग नहीं बता सकते। इस सब में गूढ़ नीति ऊपर के अधिकारी ही जानते हैं। हम तो युद्ध-क्षेत्र में युद्ध के लिये लड़ने वाले सैनिकों की भांति हैं, साथ ही हमें केवल अपने-अपने क्षेत्र की बात का ही ज्ञान है। न तो हम इस युद्ध में अपने पक्ष की नीति के विषय में जानते हैं, न ही दूसरे क्षेत्रों की स्थिति के विषय में हमें ज्ञान है।

'मुझे तो', ऐमिली ने आगे कहा, 'अपने घर को गये भी एक महीना हो चला है।'

रोहिणी ने भी सार्वजनिक विषय छोड़ निजी विषय में बातचीत आरम्भ कर दी।

उसने पूछ लिया, 'आपके माता-पिता कहाँ रहते हैं?'

'मेरे माता-पिता नहीं हैं। मैं यतीमखाने में पली लड़की हूँ। यतीमखाने में ही ईसाई बना ली गयी थी। मेरी शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त मुझे सरकारी नौकरी मिली तो मुझे अपने काम की शिक्षा के लिये रावलपिण्डी भेज दिया गया। दो वर्ष की ट्रेनिंग के उपरान्त मुझे लाहौर इस विभाग में काम पर लगाया गया है। इन चुनावों में मुझे इस काम करने वालों का सरगना बनाकर शेखुपुरा क्षेत्र में हिन्दू महासभा के दल में कार्य करने के लिये भेजा गया है।'।

'और वकील साहब यह सब कुछ जानते हैं क्या ?'

'जरूर जानते होंगे। मुझे यहाँ भेजने से पहले हमारे चीफ की बात बलूजा साहब से अवश्य हुई होगी। कारण यह कि जब मैं यहाँ पहुंची और मैंने अपना कार्ड निकाल वकील साहब के पास भेजा तो उन्होंने मुझे बुला कर सीधे ही कहा कि मैं अपना कार्यालय इस कोठी में बना सकती हूँ।'

जब मिस ऐमिली गयी तो रोहिणी ने मिसेज़ स्मिथ से पूछा, 'तुम्हारा इस स्त्री से कैसे परिचय है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ऐमिली एक बार जनाना अस्पताल में बीमार होकर आयी थी। तब मैं अस्थाई रूप में अस्पताल में काम करती थी।

'जब यह यहाँ कोठी में आयी तो मैंने इसको पहचान लिया। मैंने अपनी पहचान बताई तो यह मुझसे मेल-जोल बढ़ाने लगी।'

'परन्तु इसे किसनें यह बताया है कि मैं मिसेज़ बलूजा है ?'

'इस विषय में मेरी इससे कभी बात नहीं हुई। यदि होती तो मैं इसकी भूल को सुधार देती। मुझे आपके वकील साहब से सम्बन्ध का पूर्ण ज्ञान है।'

'यह ठीक नहीं हो रहा। मैं तो अब इस कोठी में नहीं रहूँगी।'

'तो कहाँ जायेंगी ?'

'अभी बता नहीं सकती। परन्तु एक-आध दिन में प्रबन्ध करने का यत्न करूँगी।'

उसी दिन रोहिणी ने महेन्द्र को टेलीफोन किया। उसे कहा कि वह शीघ्रातिशीघ्र उससे मिले, एक आवश्यक विषय पर उससे परामर्श करना है। महेन्द्र ने बताया कि सायं पांच बजे वह आयेगा।

ठीक पाँच बजे महेन्द्र आया तो वह उसके साथ कमरे से बाहर लॉन में कुर्सियाँ लगवा बात करने लगी। वहाँ उसने महेन्द्र और अपने लिये चाय मंगवा ली।

वहाँ बैठते ही रोहिणी ने कहा, 'भैया ! मैं यह कोठी छोड़ने का विचार कर रही हूँ।'

'कब ?'

'यह अभी नहीं बता सकती। परन्तु जीजा जी की कोठी छोड़ने का संकल्प कर चुकी हैं।'

'तो कहाँ जा रही हैं ? पुनः होस्टल में जायेंगी ?'

'नहीं ! कोई मकान भाड़े पर लेकर रहना चाहती हूँ। परन्तु अकेले मकान में रहना ठीक नहीं होगा। दिन-प्रतिदिन लाहौर के वातावरण में बदबू फैल रही है। यही बात विचार करने के लिये तुमको बुलाया है।'

'भाभी ! हमारे मकान में तो अब आपका जाकर रहना असम्भव हो गया है। सगुनी को दिन चढ़ गये हैं और मैं उससे झगड़ा करना नहीं चाहता। माता जी और सगुनी दोनों परस्पर हिल-मिलकर रहती हैं। ज्यों ही आप वहाँ आयीं तो वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी समस्या उत्पन्न हो जायेगी।'

'मैं तुम्हारे मकान में जाकर रहना नहीं चाहती? मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे पिता जी से मिलो। यदि वह पसंद करेंगे तो मैं उनके घर में जाकर रहना ही उचित समझती हूँ।'

'हाँ! यह आपके लिये उचित ही है। मेरा विचार है कि यह सम्भव भी है और ठीक भी। मैं आपकी माता जी से मिल कर उनकी प्रतिक्रिया आपको बताऊँगा?'

महेन्द्र के जाने से पूर्व रोहिणी ने उसे बताया कि टेलीफोन पर इस विषय पर बातचीत करना ठीक नहीं, क्योंकि यहाँ सरकारी खुफिया महकमे के लोग जीजा जी की निर्वाचनों में सहायता के लिये डेरा डाले हुए हैं और मैं अभी किसी को बताना नहीं चाहती कि मैं कोठी छोड़ रही हूँ।

बलूजा उस रात घर पर नहीं आया। वह अपने निर्वाचन-क्षेत्र में ही रहा। वहाँ काम गरम हो रहा था। निर्वाचन के ज्वर का वेग बढ़ रहा था।

अगले दिन महेन्द्र ठीक समय पर आया। उसने बताया, 'मैं आपकी माता जी से मिला हूँ। वह कह रही थीं कि वह तो पहले ही यह चाहती थीं, परन्तु आपके पिता जी का मस्तिष्क ठीक काम नहीं कर रहा।

'मैं आपके पिताजी को उनके कार्यालय में मिलने गया था। उनकी आपके विषय में आपत्तियाँ बहुत थीं। परन्तु जब मैंने बताया कि आप हमारे छापाखाने में आधी आय की पत्तीदार हैं तो वह गम्भीर हो गये। आखिर उन्होंने कहा है कि वह माता जी से राय कर ही अपना निर्णय बतायेंगे।'

'भैया! यह तो बहुत ही कठिन समस्या उत्पन्न हो गयी है। तुम्हारा अभिप्राय यह है कि मुझे पिता जी के घर में जाने के लिये तुम्हारे छापेखाने में साझेदारी स्वीकार करनी होगी?'

'मैं तो कुछ ऐसा समझा हूँ कि आपको कॉलेज की सेवा भी छोड़नी पड़ेगी। जब आप बलूजा साहब से झगड़ा कर यहाँ से जायेंगी तो वह आपको उस सेवा कार्य से निकलवाने का यत्न करेंगे?'

'हो सकता है।'

'तब आपको छापेखाने के काम में आपत्ति नहीं होनी चाहिये?'

रोहिणी ने इस सम्भावना पर विचार किया और बोली, 'जब यह स्थिति होगी तो पुनः विचार कर लूंगी।'

दस जनवरी से पहले दो बार रत्नचन्द कोठी में आया, परन्तु दोनों बार ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी की भीड़-भाड़ में रोहिणी से मिलने का अवसर नहीं मिल सका। वह यह भी देखने और जानने नहीं आया कि उसकी आज्ञा कि कमल रोहिणी की 'देख-रेख में रहे' का कितना पालन हो रहा है।

नौ तारीख की सायं चाय के समय वह आया। उस समय रोहिणी और स्मिथ अपने कमरे में चाय ले रही थीं। रोहिणी के कमरे में उसके कॉलेज में चपरासी का काम करने वाली एक स्त्री सरस्वती भी उनके साथ बैठी चाय ले रही थी।

बलूजा एकाएक कमरे में आया तो तीनों औरतें खड़ी हो गयीं। रोहिणी ने ही पूछा, 'आप भी चाय लेंगे?'

'इसीलिये यहाँ आया था, परन्तु यहाँ तो एक बहुत बड़ा मजमा लगा हुआ है?'

'निर्वाचनों की मीटिंग से भी बड़ा?'

'परन्तु रोहिणी! मैं यहाँ व्याख्यान देने नहीं आया। कमल को देखने और आपसे एक बात करने आया था।'

'तो हम बाहर लॉन में कुर्सियां लगवा लेते हैं?'

'हाँ! यह ठीक है।'

रोहिणी बाहर गयी और नत्थू राम से बाहर लॉन में दो व्यक्तियों के लिये कुर्सियाँ लगा, चाय लाने के लिये कहने लगी।

जब नत्थूराम से कह कर वह कमरे में लौटी तो बलूजा कमरे के एक कोने में खड़ा स्मिथ से बात कर रहा था।

रोहिणी ने कहा, 'आइये! बाहर कुर्सियाँ लग गयी हैं और चाय आ रही है।'

बलूजा ने क्रोध में स्मिथ की ओर देखा और कह दिया, 'मैं कल रात यहाँ आऊँगा और तुम्हारी बात सुन इन्तज़ाम कर दूँगा।'

इतना कह वह स्मिथ को कमरे में ही छोड़ रोहिणी के साथ लॉन में लगी कुर्सियां पर आ बैठा।

'यह तुमने अपने कमरे में कबाड़खाना किसलिये एकत्रित कर रखा है?'

'ये कमल की देख-रेख में मेरी सहायता कर रही हैं। आपने कहा था कि कमल के लिये कोई प्रबन्ध कर देंगे। परन्तु प्रबन्ध नहीं हुआ और मुझे कॉलेज पढ़ाई कराने जाना होता है। इस कारण स्मिथ और एक अन्य स्त्री को रखने का प्रबन्ध करना पड़ा है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलूजा को ध्यान आ गया कि उसने कहा था कि स्मिथ के स्थान किसी को बच्चे की देख-रेख के लिये नियुक्त कर देगा। यह बात वह भूल गया था। अब स्मरण आने पर उसका आधा क्रोध शान्त हो गया। इस समय नत्थूराम चाय लेकर आ गया। जब वह चला गया तो रोहिणी ने चाय बनाते हुए कहा, 'आप कल जब जायेंगे तो आपको यहाँ की पूर्ण स्थिति का वर्णन करूंगी।

'मैंने स्मिथ को कह दिया है कि उसे कल तक माँ के घर चले जाना चाहिये और प्रसव तक वहीं रहना होगा।'

'और वह मान गयी है ?'

'नहीं मानेगी तो क्या करेगी?'

'यह मैं नहीं जानती। परन्तु जब कोई छोटे से छोटा जीव भी घेर लिया जाता है तो वह अपनी रक्षा के लिये सब कुछ करने का यत्न करता है। एक च्यूँटी भी काटने का यत्न करती है।'

'परन्तु मैं उसके खाने-पीने का प्रबन्ध कर रहा हूँ।'

'वह उसे यहाँ से विदा करने से पहले बता देना चाहिये और मैं समझती हूँ कि उसे सन्तुष्ट करके ही भेजना चाहिये।'

'तो मैं तुमको ही यह प्रबन्ध करने के लिये कह देता। जो भी प्रबन्ध तुम करोगी, वह मुझे स्वीकार होगा।'

'मैं कुछ ऐसा समझ रही हूँ कि उसका बच्चा आपका ही है।'

'परन्तु इसका विश्वास हो, तब न ?'

'अभी तो यह विश्वास होना ही चाहिये। पीछे यदि कुछ प्रमाण इस धारणा के विपरीत मिला तो आप भी व्यवहार बदल सकते हैं। तब उसकी माँ उसका और उसके होने वाले बच्चे का उचित प्रबन्ध कर देगी।'

'उचित से क्या मतलब?' बलूजा का प्रश्न था।

'जो एक बिना बाप के बच्चे की माँ का होना चाहिये।'

'ठीक है! करो, परन्तु एक बात आवश्यक है।'

'क्या?'

'बच्चा होने तक मेरा उससे सम्बन्ध प्रकट नहीं होना चाहिये।'

'देखिये! मैं यत्न करूँगी। इतना स्मरण रखिये कि आप इन 'निर्वाचनों' के उपरान्त एक ऊँचे स्टूल पर खड़े हो जाने से दूर-दूर तक दिखाई देने लगेंगे। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके शरीर अथवा मुख पर कोई भी अशोभनीय चिह्न आपको बदनाम कर देगा। इस कारण किसी प्रकार की भी बदनामी आपके लिये हितकर नहीं होगी।'

'परन्तु मैं स्टूल पर खड़ा हो रहा हूँ ?'

'जो कुछ मुझे पता चला है, वह यह है कि आप कई सौ वोटों से जीतेंगे?'

'ओह ! किसने बताया है तुम्हें ?'

'मेरे परमात्मा ने।

बलूजा हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'अच्छा ! ऐसा करो । मेरे 'निर्वाचन' के परिणामों के घोषित होने तक अभी उसे यहीं रखो। फिर मेरी स्थिति का विचार कर उसका प्रबन्ध करना।'

:8:

निर्वाचन समाप्त हुए तो उसी सायं मतों की गणना आरम्भ हो गयी। मतदान के दिन ऐमिली और उसके साथ कार्य करने वाले सब लोग शेखुपुरा गये हुए थे।

मध्याह्न के समय रोहिणी कॉलेज से लौटी तो कोठी खाली हो रही थी। नत्थूराम वहाँ चुनाव के प्रबन्ध में ठहरे लोगों का सामान ड्राइंग-रूम से उठवा कर बाहर के एक कमरे में रखवा रहा था और ड्राइंग-रूम का सामान ठीक ढंग से लगवा रहा था।

'चाचा ! क्या हो रहा है ?' रोहिणी ने आते ही पूछा।

नत्थूराम ने कहा, 'शेखुपुरा से कोई आये हैं और यह संदेश लाये हैं कि ड्राइंग-रूम का फर्नीचर ढंग से लगवा देना चाहिये। वकील साहब किसी भी समय आ सकते हैं।'

'और जो लोग यहाँ थे ?'

'वे सब दस बजे के लगभग यहाँ से चले गये थे। वे अपने बिस्तर इत्यादि बाँध कर गये हैं। उनका विचार था कि वे सायंकाल तक आयेंगे और अपना सामान ले जायंगे।' इससे रोहिणी को सुख अनुभव हुआ। वह अपने कमरे में चली गयी। वहाँ सरस्वती और स्मिथ बच्चे को खेला रही थीं।

रोहिणी ने अपने लिये कॉफी मंगवायी और पीकर वह अपने काम में लग गयी।

वह अभी काम पर बैठी ही थी कि नत्थूराम समाचार लाया, 'आपके भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्र जी आये हैं।'

रोहिणी उठ कर बाहर ड्राइंग-रूम में आ गयी। महेन्द्र ड्राइंगरूम को खाली देख विचार कर रहा था कि वे लोग वहाँ क्यों नहीं हैं। रोहिणी आयी तो उसने ही पूछा, 'भाभी! ये लोग गये?'

'हाँ! आज मतदान समाप्त हो जायेगा। ये सब वहीं चले गये हैं।'

दोनों वहीं एक सोफा पर बैठ गये। महेन्द्र ने अपने आने का अभिप्राय बताया। उसने कहा, 'कल आपकी माता जी आपको अपने घर ले जाने के लिए ताँगा लेकर आयेंगी।'

'भैया! ठीक है। उनसे कहना कि मध्याह्न दो बजे के उपरान्त न आयें। मैं कॉलेज से दो बजे आती हूँ। आशा करती है कि बलूजा साहब उस समय घर पर होंगे। मैं उनको बता कर ही यहाँ से जाना चाहती हूँ।'

बलूजा साहब की सफलता का समाचार रात के बारह बजे ऐमिली और उसके साथ दो सरकारी कर्मचारी लेकर आये। बलूजा साहब एक सौ पचास मतों से विजयी हुए थे।

ऐमिली ने जाने से पहले रोहिणी को जगाया और उसे यह समाचार देकर वह अपने घर को चली गयी। एक मोटर ट्रक में ये लोग आये थे और उसी में सामान लेकर चल दिये।

रोहिणी को समझ आया कि बलूजा किसी समय भी आ सकता है और उसे अगले दिन कोठी से चल देना चाहिये। वह अपनी पुस्तकें और कपड़े इत्यादि सब बाँध कर तैयार थी। केवल कॉलेज जाने के वस्त्र बाहर थे।

स्मिथ और सरस्वती भी जाने के लिये तैयार होकर ही सोयी थीं। स्मिथ से रोहिणी की बात हो चुकी थी और वह रोहिणी की बात मान गयी थी।

रोहिणी अभी अपना प्रातः का स्वाध्याय कर ही रही थी कि बलूजा मोटर गाड़ी में कोठी पर आ पहुँचा। इस समय अभी छः नहीं बजे थे।

बलूजा ने आते ही रोहिणी के कमरे में पहुंच सूचना दी कि वह सफल हो गया है।

'हमें इस बात की सूचना रात ही मिल गयी थी कि आप एक सौ पचास मतों से विजयी हुए हैं।'

बलूजा ने झेंपते हुए कहा, 'हाँ! मुझे तेरह सौ पचासी मत मिले है और कांग्रेसी रामकृष्ण को बारह सौ पैतीस। गिनती तो रात साढ़े दस बजे समाप्त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी थी। परन्तु वहाँ कार्यकर्ता जलसा मनाते रहे और मुझे उनके पास ठहरना पड़ा।' बात करते हुए उसने देखा कि रोहिणी के कमरे में सब सामान बंधा रखा है। उसने रोहिणी की पुस्तकें भी बंधी रखी देखीं तो पूछ लिया, 'ये पुस्तकें कहाँ भेज रही हो?'

'मैंने मकान बदलने का प्रबन्ध कर लिया है। माता जी आयेंगी और मुझे ले जायेंगी।'

'तो उस लाहौरी दरवाजे वाले गंदे मकान में जाकर रहोगी?'

'अभी तो माता जी वहीं ले जा रही हैं। परन्तु एक साफ-सुथरा मकान ले लिया गया है। वहाँ सफाई, मुरम्मत इत्यादि हो रही है। वहाँ जाकर रहने का प्रबन्ध है।'

बलूजा मुख देखता रह गया। एकाएक उसने पूछा, 'और कमल?'

'आप इजाज़त देंगे तो मैं उसे भी साथ ले जाऊँगी।'

'देखो, मैं इस समय अत्यन्त थका हुआ हूँ। मैं आराम कर तरोताजा होने पर तुम्हारी बात सुन सकूँगा?

'अभी तो मैं कॉलेज जा रही हूँ। सरस्वती यहाँ रहेगी। आज मैं ठीक एक बजे लौट आऊँगी। तब तक आप आराम कर लें। उस समय रौली से किया प्रबन्ध भी बताना है।'

'और इस सरस्वती को यहाँ रहने का क्या दिया है?'

'वह मेरे स्थान पर यहाँ रहती है और क्योंकि मैं अपने काम का वेतन आपसे नहीं ले रही, इस कारण वह भी आपसे कुछ लेना नहीं चाहेगी।'

'अच्छा! मध्याह्न के समय बात करूँगा।' इतना कह वह अपने सोने के कमरे में चला गया।

ठीक एक बजे रोहिणी आयी। बलूजा अकेला डाइनिंग हाल में बैठा भोजन ले रहा था। बाहर लॉन में शामियाने और उसमें कुर्सियाँ लगाई जा रही थीं। वहाँ बलूजा साहब की निर्वाचन में सफलता का जश्न मनाया जाने वाला था। हिन्दू महासभा के कुछ कार्यकर्ता प्रबन्ध कर रहे थे।

रोहिणी खाने के कमरे में गयी तो उसने नत्थूराम से कह दिया, 'चाचा! एक प्याला कॉफी ले आओ।'

नत्थूराम गया तो रोहिणी ने ही बात आरम्भ की। उसने कहा, 'मैंने यह निश्चय किया है कि रौली को आप एक सौ बीस रुपये महीना देंगे। वह माँ के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रहेगी। जब तक बच्चा नहीं हो जाता और आप उसे देखकर निश्चय न कर लें कि बच्चा आपका है, तब तक वह किसी को बतायेगी नहीं कि बच्चा किसका है।

'रौली कहती है कि उसे विश्वास है कि बच्चा आपका है और उसमें कुछ लक्षण अवश्य आपके होंगे।'

'और यदि न हुए तो?'

'तब वह स्वतंत्र होगी कि जो चाहे करे।'

'वह क्या कर सकेगी ?'

'मिस ऐमिली बता रही थी कि वह आपसे उसे कोठी से निकाल देने के प्रतिकार में हर्जाना माँग सकती है ।

'उसने कोर्ट में झगड़ा किया तो कदाचित मुझे भी साक्षी के रूप में बुलाया जायेगा और मैं सत्य-सत्य वस्तुस्थिति बता दूँगी।'

'और मेरे पक्ष में गवाही नहीं दोगी?'

'आपके पक्ष में ही दूँगी। मैं यह कहूँगी कि यह होने वाला बच्चा आपका ही है, अन्य किसी का नहीं हो सकता।'

'ओह! तो यह मेरे पक्ष में होगी?'

'तो आपका पक्ष क्या है?'

इस समय नत्थूराम एक प्याला कॉफी ले आया। नत्थूराम के चले जाने पर बलूजा ने कहा, 'मेरा पक्ष तो यह है कि स्मिथ एक आवारा औरत सिद्ध हो जाये।'

'परन्तु वह आवारा तो है नहीं?'

'यह तो उसका पक्ष है?'

'यदि मुझे कचहरी में जाना पड़ा तो मैं झूठ नहीं बोलूंगी?'

'तब तो बहुत बुरा होगा।'

'देखिये जीजा जी! आप कुछ ऐसा करिये कि उसे कचहरी जाने का अवसर ही न मिले।',

'उसे कचहरी जाने के लिए मैं नहीं कह रहा?'

'कहने-न-कहने की बात नहीं। आप उससे विवाह करेंगे तो वह नहीं जायेगी।'

'तब तो मुझे उसको कुछ भी नहीं देना चाहिये, जिससे वह कचहरी में जा ही न सके।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वह 'मुफलसी' में कोर्ट से सहायता माँग लेगी। कदाचित उसके लिये वकील भी सरकार देगी।'

'उससे मैं निपट लूंगा।'

'अर्थात सरकारी वकील को रिश्वत देकर अपनी तरफ कर लेंगे। मगर वह किसी काँग्रेसी वकील से सहायता लेने चली गयी तो बहुत बुरा होगा।'

इस पर बलूजा के मुख पर परेशानी के लक्षण दिखाई देने लगे। उसने इस समय बात टालने के लिये कह दिया, 'मगर यह तो तब होगा जब मैं बच्चे के पैदा होने पर उसे अपना नहीं मानूँगा। तब जैसी परिस्थिति होगी, वैसे व्यवहार का विचार कर लूंगा।'

'उसे अभी दो मास का खर्च दे दें और फिर नियमपूर्वक महीना आरम्भ होने से पहले उसके घर पर भेज दिया करें।'

'तो यह तुम मुझे आज्ञा दे रही हो?'

'जी नहीं। आपसे निवेदन कर रही हूँ।'

'तब ठीक हो जायेगा। अब बताओ कि तुमने यहाँ से चले जाने का विचार क्यों बनाया है ?'

'वह इसलिये कि आपने यह विख्यात करना आरम्भ कर दिया है कि मैं आपकी विवाहिता पत्नी हूँ।'

'कौन कहता है ?'

'ऐमिली ने यह बात पहले बतायी थी। इसके उपरान्त मैंने आपके अन्य परिचितों से पता किया है। यह झूठा प्रचार आपने किया है और मैं इस झूठे प्रचार का भण्डा फोड़ने के लिए यहाँ से जाना चाहती हूँ।'

'परन्तु पत्नी का शब्द तो मैंने उन्हीं अर्थों में प्रयोग किया था, जिन अर्थों में एक बार तुमने प्रयोग किया था। तुमने कहा था कि पत्नी का एक अर्थ मालकिन भी होता है और तुम इस घर की मालकिन हो। यही मैंने ऐमिली से कहा है।'

'परन्तु जीजाजी! घर की मालकिन बनने के लिये कोर्ट में शादी नहीं करायी जाती। आपने झूठ तो यह बोला है। कोर्ट में पत्नी को अर्थ भोग्या माना जाता है। वह मैं नहीं हूँ।'

'यह ऐमिली ने ही कहा होगा और डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन मोहम्मद हसन ऐमिली को बहुत ही शरारती मानता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जीजा जी! मुझे डायरेक्टर साहब से कुछ शिकायत नहीं, न ही ऐमिली से है। मैंने अपनी प्रिंसिपल मिसेज़ खुराना से मकान बदलने के विषय में बात की तो उसने कारण पूछा। मैंने यही कारण बताया कि आप जीजाजी से कुछ अधिक बनने की लालसा कर रहे हैं। इस पर मिसेज़ खुराना ने कहा है कि आपने स्वयं उन लोगों से भी यही बात कही है। वह भी मुझे मिसेज़ बलूजा ही मानती है।

'उसको टालने के लिये मैंने यही कह दिया कि आजकल के पढ़े-लिखे लोग पुरुष-स्त्री में पति-पत्नी का सम्बन्ध ही मानते हैं, चाहे स्त्री माँ पद पर हो।

'मिसेज़ खुराना मेरी बात सुन मुस्कुराने लगी थी। अभिप्राय यह है कि उसे मेरी बात का विश्वास नहीं आया।'

'यह सब तुम्हारे दिमाग में कूड़ा-करकट भर गया है।'

'जी! इसे मैं अपने दिमाग से निकाल देने के लिए ही यहाँ से जा रही हूँ। मैं चाहती हूं कि आप स्मिथ को मेरे जाने से पहले विदा कर दें।'

'यह बच्चे की बात एक मुसीबत हो जायेगी?'

'यदि आप चाहें तो मैं इसे माँ के घर ले जाती हूँ।'

'अभी तो ले जाओ। मैं जब कुछ उपयुक्त प्रबन्ध कर लूंगा तो इसे ले आऊँगा।'

'ठीक है, बच्चा आपका है। यद्यपि यह बहुत ही प्यारा है, परन्तु पराई वस्तु पर दावा नहीं किया जा सकता।'

बलूजा खाना समाप्त कर चुका था। दोनों ड्राइंग रूम में आ गये और वहाँ ही उन्होंने रौली को बुला लिया। बलूजा ने दो सौ चालीस रुपये उसे देते हुए कहा, 'तुम अब यहाँ नहीं आओगी। एक सौ बीस रुपये महीना तुम्हें घर पर पहुँच जाता रहेगा।'

रौली रो रही थी, परन्तु मुख से बोल नहीं रही थी। उसे रोते देख रोहिणी की आँखें भी आँसूओं से भर गयीं। बलूजा उन दोनों औरतों को वहीं छोड़ चल दिया।

रोहिणी ने एक बन्द लिफाफा रीली को देते हुए कहा, 'इसे घर जाकर खोलना। इसमें तुम्हारे लिए एक पत्र है। वह समय पर बहुत सहायता करेगा।'

रौली ने सरस्वती की गोदी से बच्चे को लेकर छाती से लगाकर कई बार उसका मुख चूमा और फिर उसे रोहिणी को लौटाते हुए बोली, 'मैं आपके मकान पर कभी-कभी मिलने आया करूंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौली कोठी के बाहर गयी और पाँच मिनट में एक खाली ताँगा लेकर आ गयी। उसमें अपना सामान रख वह चली गयी।

अढ़ाई बजे के लगभग रोहिणी की माँ कंचन आयी। रोहिणी ने अपना सामान ताँगे में रखा और कमल को साथ लेकर माँ के साथ चल दी। सरस्वती भी उसके साथ थी। मध्याह्नोपर चाय के समय बलूजा की कोठी के लॉन में चार-पाँच सौ व्यक्तियों की भीड़ एकत्रित हो गयी। खाना-पीना हुआ, व्याख्यान हुए और बलूजा साहब को बधाइयाँ दी गयीं। अन्धेरा होने पर रात की सभा विसर्जित हुई। बलूजा पुष्प-मालाओं से लदा हुआ कोठी के ड्राइंग-रूम में आया तो कोठी के सब सेवक भी साहब को पृथक में मुबारकबाद देने के लिये एकत्रित हो गये। बलूजा ने एक सौ रुपये का नोट नत्थूराम को दिया और कहा, 'यह कोठी के सब लोग परस्पर बाँट लो। यह मैं आज की खुशी का इनाम देता हूँ।'

नत्थूराम नोट ले ड्राइंग-रूम से बाहर जाने लगा तो अन्य सेवक भी चले गये। अब रत्नचन्द को समझ आया कि कोठी खाली-खाली है।

यद्यपि कमल और रोहिणी उससे बहुत कम मिलते थे, परन्तु उनके कोठी में होने मात्र से वहाँ रौनक थी।

एकाएक उसे उन दिनों की बात स्मरण हो आई, जब मोहिनी जीवित थी। वह जब कचहरी से आया करता था तो मोहिनी उसके स्वागत के लिये ड्राइंग-रूम में तैयार खड़ी होती थी। प्रसव के एक दिन पर्व भी वह उसके स्वागत के लिये ड्राइंग-रूम में उपस्थित थी।

मोहिनी के देहान्त के उपरान्त रोहिणी कोठी में आ गयी थी और वह मोहिनी को भूल गया था। रोहिणी एक साथी के रूप में मोहिनी से अधिक सुखकर सिद्ध हो रही थी। कभी रात के भोजनोपरान्त ड्राइंग-रूम में बातचीत होती तो रोहिणी मोहिनी से अधिक ज्ञानयुक्त बातें किया करती थी।

आज उसे समझ आया कि रोहिणी की सुखद् संगत कब ठण्डी होने लगी थी, जब वह रौली से लड़ा था। उस ठण्डे व्यवहार की अब पराकाष्ठा हो गयी थी और साथ ही रौली भी चली गयी थी।

वह कानून का पण्डित बुद्धि और स्मृति में दुर्बल था। इस कारण वह इस बदलती परिस्थिति की भयंकरता को तब ही अनुभव कर सका जब कोठी में से रोहिणी के साथ कमल और फिर रोली भी चली गयीं। वह मन में विचार करता था कि यदि वह चाहता तो रौली को रोक सकता था, परन्तु रौली की वर्तमान अवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसके कोठी में रहने से घोर बदनामी हो सकती थी। कोठी के सब नौकरों में विख्यात था कि वह कमल की नर्स है। उसके बच्चा होता तो उसका उससे सम्बन्ध तब ही छुप सकता था, यदि वह अपने समुदाय में किसी से विवाह कर लेती।

यह सुझाव उसने रौली को दिया था। उसने कहा था कि वह अपने समुदाय में किसी से विवाह करा ले और वह उसकी पेंशन लगा देगा। परन्तु रोली का यह कहना था कि विवाह यदि करेगी तो पेट में बन रहे बच्चे के बाप से ही करेगी। इसी कारण वह कहने लगा था कि रौली बदकार है और न जाने किसका बच्चा ले आयी हैं।

उसके जीवन का एक-दूसरा ही रूप बन रहा था। वह पहले कभी हिन्दू महासभा के किसी जलसे-जलूस में सम्मिलित नहीं हुआ था। इस पर भी अब उसको जीवन का यह नया पट खुलता दिखाई दे रहा था। उस पट की एक झलक वह उसी दिन सायंकाल की पार्टी में देख चुका था। कुछ समय के लिये ही उसके मन में प्रकाश हुआ। वह समझा कि जीवन उतना नीरस नहीं, जितना वह समझता है। परन्तु पार्टी के बाद पांच बेड-रूम वाली कोठी में वह अकेला अपने को ऐसा अनुभव करने लगा कि मानो वह किसी निर्जन बन में पहुंच गया हो।

इन ही विचारों में डोलते हुए वह ड्राइंग-रूम के सोफा पर बैठा था कि नत्थूराम आया और बोला, 'वह आयी हैं।'

'कौन ?'

'वह मिस साहिबा, जो डेढ़ महीना यहाँ पर रही हैं।'

बलूजा समझ गया कि ऐमिली है। उसने पहले तो कहा, 'उससे पूछो, कुछ काम है?'

अब नत्थूराम जाने लगा तो एकाएक उसके मुख से निकल गया, 'अच्छा ठहरो।'

नत्थूराम ठहर गया। बलूजा ने उसे कहा, 'उसे भीतर ले आओ। कुछ इनाम की उम्मीद में आयी मालूम होती है।'

नत्थूराम गया और ऐमिली को ले आया। ऐमिली ने बलूजा को अकेले बैठे देखा तो पूछ लिया, 'तो वे सब लोग गये?'

'कौन लोग?'

'जिनके लिये बाहर शामियाने और कुर्सियां लगी हैं?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सभा के लोग? हाँ! चले गये हैं।'

'मैं आपको बधाई देने आयी हूँ।'

'तो बैठो। क्या लोगी?'

'भोजन किस समय करेंगे?'

'भोजन तो रात के नौ बजे करता हूँ, परन्तु आज पेट भर चुका।'

'पर मैं तो आपके साथ आज भोजन और 'सपर' लेने के लिये आयी थी?'

बलूजा ने नजर भर कर ऐमिली की तरफ देखा। वह उसका मुकाबला रौली और रोहिणी से करने लगा था।

जब कुछ देर तक वह उसका मुख देखता रहा तो ऐमिली ने पुछा, 'क्या देख रहे हैं?'

'तुम्हारी तुलना रौली से कर रहा था।'

इसपर ऐमिली हंस पड़ी और बोली, 'थोड़ी पी लीजिये तो सब समझ में आने लगेगा।'

बलूजा हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'तब ठीक है। तुम सपर तक ठहर सकती हो। मैं उस समय एक पैग लिया करता था।'

बलूजा को अनुभव हुआ कि उसके मन में जो निराशा उत्पन्न हई थी, वह मिट-सी रही है।

अगले दिन नत्थूराम साहब के लिये बेड-टी ले जाने लगा तो उसे स्मरण आ गया कि रात वह ईसाई औरत यहाँ ही सोयी थी। इस कारण उसने चाय के दो प्याले लिये और साहब के कमरे में जा पहुँचा। बलूजा तो उठकर अपने स्टडी-रूम में जा चुका था।

दो महीने के उपरान्त आज वह अपने कचहरी के काम को देखने गया था। उन दिनों में उसने कोई मुकद्दमा नहीं लिया था। यदि किसी लिये हुए मुकद्दमा की तारीख उन दिनों आयी थी तो अर्जी देकर बाद की अन्य तारीख ले ली थी।

आज वह चार बजे उठा और स्टडी-रूम में आ पहुंचा। इस दिन कोई केस नहीं था। इस कारण वह रात की घटना पर विचार करने लगा। नत्थूराम भूल गया था कि वकील साहब इस समय अपने कार्यालय में होंगे। कारण यह कि पिछले डेढ़ मास से कार्यालय बंद पड़ा था। वकील साहब का मुंशी सायंकाल आया करता था और झाड़-फूंककर आधा घटा वहाँ बैठ लौट जाया करता था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील साहब उस कमरे में कभी गये नहीं थे।

इस कारण वह चाय लेकर सोने के कमरे में जा पहुंचा परन्तु एमिली को अवस्त्र रजाई में लिपटे गहरी नींद में सोये देख वह लौट गया।

अब उसे याद आया कि वकील साहब अपने कार्यालय में हो सकते हैं। इस पर वह ट्रे लिये कार्यालय में जा पहुंचा। वह रात दोनों को शराब पीते देख यह तो समझ गया था कि दोनों इकट्ठा सोये होंगे, परन्तु उसका विचार था कि यदि वह चाय के लिये तैयार नहीं होगे तो बेड-रूम का द्वार बंद होगा। वह बंद नहीं था। बलूजा उठकर कार्यालय में गया था इसी कारण नत्थू राम ने जब द्वार हिलाया तो वह खुल गया था। दरवाजा भिड़ा हुआ था।

जब नत्थूराम ने चाय के प्याले सामने मेज पर रखे तो रत्नचन्द ने पूछा, 'यह दूसरा यहाँ क्यों ले आये हो?'

'लेकर तो वहीं गया था, परन्तु वह अभी सो रही थीं?'

रत्नचन्द मुस्कुराया और बोला, 'तो एक घंटा बाद यह वहाँ ले जाना।'

चाय पी रत्नचन्द बाथरूम में चला गया। वह स्नानादि कर निकला तो ऐमिली उसके स्टडी-रूम में बैठी चाय ले रही थी।

'तो तुम जाग पड़ी हो?'

'यह आपका नौकर बहुत बदतमीज है?'

'कौन?'

'यही जो चाय दे गया है। दरवाजे पर खड़ा हो दरवाजा खट-खटाकर कह रहा था, 'मिस साहिबा! कपड़े पहन लीजिये। बेड टी लाया हूँ।'

बलूजा हंस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'वह एक घंटा पूर्व भी चाय लेकर कमरे में गया था। तब तुम्हें अवस्त्र सोया देख गया होगा।'

'तो यह वहाँ घुस गया था, बिना आवाज दिये?'

'परन्तु मैं अवस्त्र नहीं सोता। हमेशा स्लीपिंग सूट पहने सोता हूँ।'

'तो मुझे भी एक-दो ले दीजिये।'

'तो तुम फिर भी यहाँ आने वाली हो?'

'कदरदानों के पास ही तो हम जाती हैं?'

'परन्तु मैं तुम से नाराज हूँ।'

'क्यों?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुमने रोहिणी से कह दिया है कि वह मेरी पत्नी है।'

'तो वह नहीं है क्या?'

'मैं तो मज़ाक करता था?'

ऐमिली ने मुस्कराकर कहा, 'परन्तु विवाह जो 'कोर्ट' में रजिस्टर हो चुका है?'

'वह भी मज़ाक ही था।'

'तब तो आप बहुत बुरे आदमी हैं। वह कहाँ है, मैं उसके सामने अपनी गलती मान लूंगी।'

'वह इसी कारण रूठ कर चली गयी है?'

'और बच्चे की नर्स?'

'वह भी रूठ गयी है?'

'तब तो मुझे आपकी संगत का फल मिलना चाहिये।'

'वैसे तुम हो मजेदार औरत। रौली तो जब भी मेरे पास आती थी, अपनी छाती पर सलीब रख लेती थी और कहां करती थी कि इसको बीच में रखने से पाप नहीं लगेगा।'

इस पर ऐमिली हँस पड़ी और बोली, 'मैं दो पैग पीकर पाप धो लेती हूँ।'

'परन्तु तुमने मेरा बहुत नुकसान किया है।'

'सब ठीक हो जायेगा। खोये की मिठाई सामने देख तरसते रहने के स्थान गुलाब जामुन खाने में अधिक स्वाद आना चाहिये।'

:10:

बलूजा के घर में स्थिति 'नॉर्मल' होने में एक महीना लग गया। ऐमिली तो सप्ताह में एक दिन, प्रायः शनिवार को ही आती थी। शेष छः दिन बलूजा अकेला रहने का अभ्यास कर रहा था।

वैसे वह डायरेक्टर मुहम्मद हसन से मिल रोहिणी के विषय में पूछगीछ करता रहता था। जब दो-तीन बार बलूजा ने उससे पूछा तो मुहम्मद हसन ने इस विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये उसे मिसेज खुराना का नाम बता दिया।

बलजा का कहना था, 'एक अपरिचित स्त्री से इस प्रकार पूछगीछ करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक प्रतीत नहीं होता।'

मुहम्मद हसन ने कहा, 'परन्तु वह जानती है कि आपकी बीवी आपसे रूठी हुई है।'

'ओह। उसे किसने बताया है?'

'यह तो मुझे मालूम नहीं, परन्तु यह जरूर है कि वह आपकी बीवी के बारे में जानती है। उसे टेलीफोन पर अपना नाम बतायेंगे तो वह आप दोनों में सुलह कराने की कोशिश करेगी। वह एक भली औरत है।'

अगले दिन बलूजा ने कालेज में मिसेज खुराना को टेलीफोन कर दिया। जब खुराना ने फोन उठाया तो बलूजा ने बताया, 'मैं रत्नचन्द बलूजा हूँ।'

'ओह! बलूजा साहब! सुनाइये, क्या हाल-चाल हैं?'

'मुझे डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन ने कहा है कि आप मेरे विषय में जानती हैं?'

'हाँ! यद्यपि कभी दर्शन नहीं हुए, परन्तु आपकी चर्चा यहाँ आपकी धर्मपत्नी से होती रहती है।'

'ओह! ...'

'यदि इच्छा हो तो आपकी उनसे सुलह करा सकती है। वैसे तो वह बहुत ही भली औरत है।'

बलूजा इस प्रकार की बातों की आशा नहीं रखता था। जब खुराना ने कहा कि वह दोनों में सुलह करा सकती है तो बलूजा को मज़ाक सूझा। उसने कहा, 'आप पहले रोहिणी जी से पूछ लीजिये कि वह मुझसे सुलह करना भी चाहती हैं अथवा नहीं?'

खुराना को समझ आया कि उसे एक नेक काम करने का अवसर मिला है तो उसने बलूजा से उसके टेलीफोन का नम्बर और पता पूछकर कहा, 'मैं रोहिणी जी से बात कर आपको टेलीफोन करूँगी।

'आप कोठी पर किस समय होते हैं?'

'मैं रात के आठ बजे से प्रातः दस बजे तक प्रायः घर पर रहता हूँ। कभी किसी सार्वजनिक जलसे-जलूस में जाने पर घर से बाहर होता हूँ।'

'तो ठीक है।'

'आपके घर का नम्बर क्या है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब बलूजा ने मिसेज खुराना से पूछ लिया।

खुराना ने अपने पति का नाम बता दिया तो बलूजा सब समझ गया। उसने कहा, 'ओह! आप श्री आर. एन. खुराना की पत्नी हैं।'

'आप उनको जानते हैं ?'

'बहुत अच्छी तरह।'

'तब तो मैं यह कल्याण का काम कर दूँगी।'

'करिये। मैं आपके घर फोन कर पूछूँगा।'

मिसेज़ खुराना ने एक कागज़ पर दो पंक्तियों में यह लिखा- 'मैं आपसे पढ़ाई के उपरान्त अपने कमरे में मिलकर बहुत प्रसन्न होंगी।'

और वह कागज़ उसने चपरासी के हाथ रोहिणी को भेज दिया।

परिणाम स्वरूप रोहिणी अपनी अन्तिम श्रेणी को पढ़ाई कराकर एक बजे के उपरान्त प्रिंसिपल से मिलने चली आयी। वह समझ नहीं सकी थी कि यह बुलावा किस कारण आया है।

सामान्य वार्तालाप के उपरान्त खुराना ने बुलाने का कारण बताया, 'रोहिणी जी! आजकल आप कहाँ रहती हैं?'

'अनारकली बाजार में प्रह्लाद दत्त स्ट्रीट नम्बर सात के मकान में।'

'तो बलूजा जी की कोठी में नहीं रहती?'

'नहीं! जब से वह कौंसिल के मैम्बर बने हैं, उनसे मतभेद होने पर उनकी कोठी छोड़ आयी हूँ।'

'और वहाँ प्रह्लाद दत्त स्ट्रीट पर कौन रहता है?'

'मेरे माता-पिता रहते हैं।'

'वह तो लाहौरी दरवाजे के भीतर रहते थे?'

'वह मकान उन्होंने छोड़ दिया है। साथ ही मेरी पढ़ाई-लिखाई के काम के लिये वहाँ कोई अच्छा स्थान नहीं था।'

'और पति का घर किस लिये छोड़ आयी हैं?'

रोहिणी को आज एक मास के उपरान्त वही बात सुनने को मिली, जिसे सुनकर वह बलूजा लॉज से भागी थी। इस कारण वह भौंचक्की प्रिंसिपल का मुख देखती रह गयी। एकाएक उसे मजाक सूझा और पूछने लगी, 'वह इस कारण कि वह वहाँ रहता है जहाँ कोई प्राणी मरकर ही जा सकता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'क्या मतलब?'

'उनका देहान्त हो चुका है।'

'परन्तु आपने दूसरा विवाह तो किया था?'

'तो आप मेरे विवाह पर मुझे शगुन देने आयी थीं?' अब रोहिणी ने गम्भीर हो बात की।

मिसेज खुराना रोहिणी का मुख देखने लगी। रोहिणी ने अब पूछ लिया, 'बहन जी! यह आपको किसने बताया है कि मैंने दूसरा विवाह किया है?'

'यहाँ 'स्टाफ' की प्रायः सब मेम्बर यही समझती हैं।'

'वे सब स्वप्नलोक में विचरती प्रतीत होती हैं। मैं अपने जीजाजी के घर में स्वर्गवासी बहन के बालक की देख-रेख के लिये गयी थी। अब बच्चा मुझे भलीभाँति पहचानने लगा है, इस कारण उसे अपनी माँ के घर ले गयी हूँ।'

'परन्तु आपके विवाह की सूचना तो मुझे मेरे पति ने दी थी?'

'और वह बलूजा साहब के दूसरे विवाह की बारात पर गये थे?'

'बारात पर नहीं, परन्तु उनकी कोर्ट में आज से चार-पांच महीने पहले एक शादी दर्ज हुई थी और उस शादी में लड़की थी रोहिणी देवी, प्राध्यापक गवर्नमेंट कॉलेज फार विमेन।'

यह सुन तो रोहिणी के पाँव तले से मिट्टी खिसकनी आरम्भ हो गयी। उसने लाल मुख हो कह दिया, 'वह मैं नहीं थी।'

'अच्छा! मैं पता करूँगी।'

'किससे?'

'अपने पति से। मिस्टर रामनाथ खुराना, ऐडीशनल मैजिस्ट्रेट और शादियों की रजिस्ट्रेशन उनके कार्यालय में होती है।'

'हाँ, पता करियेगा। मैं समझती हूँ कि कुछ भूल हो रही है।'

'परन्तु।' मिसेज़ खुराना कुछ कहती-कहती रुक गयी। वह कहने जा रही थी कि मिस्टर बलूजा से उसकी बात हुई है, परन्तु वह कह नहीं सकी।

रोहिणी ने उठते हुए कहा, 'मैं आपकी बहुत अनुगृहीत रहूँगी, यदि आप मुझे इस विषय में अपनी जानकारी की सूचना देंगी।'

रोहिणी अपने पूर्व ज्ञान की बात भी बताना चाहती थी, परन्तु यह सब वार्तालाप उसको अत्यन्त अरुचिकर लग रहा था। इस कारण वह वहाँ से जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये उठ खड़ी हई।

खुराना अभी विचार ही कर रही थी कि रोहिणी हाथ जोड़ नमस्ते कह कमरे से निकल गयी।

प्रिंसिपल से उक्त वार्तालाप के दो दिन उपरान्त रोहिणी स्वयं मिसेज़ खुराना से मिलने उसके कमरे में गयी और पूछने लगी, 'तो आपने मैजिस्ट्रेट साहब से पता किया है?'

'हाँ, पता किया है। सरकारी रजिस्टर में श्री रत्नचन्द बलूजा, ऐडवोकेट लाहौर हाईकोर्ट और श्रीमती रोहिणी देवी, विधवा मरहूम श्री रवि बजाज के हस्ताक्षर हैं।'

'रोहिणी जी! यदि आप कल सायंकाल चाय के समय मेरे घर पर आएँ तो मैजिस्ट्रेट साहब आपकी सूरत शक्ल को उस औरत की सूरत शक्ल से मिलाने का यत्न करेंगे जो रोहिणी के हस्ताक्षर वहाँ कर गयी है और साथ ही वह रजिस्टर पर हुए हस्ताक्षरों से आपके हस्ताक्षरों का भी मिलान करेंगे।'

'तब मैं आ सकती हूँ।'

अगले दिन रोहिणी सायं पांच बजे मिसेज खुराना के घर पर जा पहुंची। वह भी इस रहस्य को समझने के लिये उत्सुक थी।

मिस्टर रामनाथ खुराना सवा पाँच बजे घर पर आया। उनका पेशकार उनके साथ था और वह एक बड़ा-सा चमड़े की जिल्द वाला रजिस्टर साथ लाया था। मिसेज़ खुराना ने रोहिणी का परिचय कराया तो चाय की मेज पर बैठते हुए रामनाथ ने कह दिया, 'मैं समझता हूँ कि इन बहिन जी को मैंने पहले कभी नहीं देखा। यद्यपि इस विवाह को 'रजिस्टर' हुए तीन मास से ऊपर हो चुके हैं, इस पर भी जहाँ तक मुझे स्मरण है, इन बहिन जी को मैं पहली बार ही देख रहा हूँ।'

इस कथन से रोहिणी का मुख प्रसन्नता से चमक उठा। बात रामनाथ ने ही की, 'चाय के उपरान्त मैं इन बहिन जी से कहूँगा कि वह किसी कागज पर पांच-छः बार हस्ताक्षर कर दें। रजिस्टर पर भी रोहिणी देवी के हस्ताक्षर हैं। दोनों हस्ताक्षरों को मैं मिलाकर देखूंगा। हस्ताक्षर देखने वाले विशेषज्ञों से हस्ताक्षर की पहचान कराऊंगा।'

ऐसा ही किया गया। चाय समाप्त होने पर पेशकार को भीतर बुलाया गया और उससे कहा गया कि एक काग़ज पर रोहिणी जी के पाँच-छः हस्ताक्षर करवा ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्ताक्षर करने के उपरान्त रोहिणी वहाँ से लौट आयी।

इसके दो सप्ताह उपरान्त मिसेज़ खुराना ने रोहिणी को बुलाकर बताया कि उसके पति का यह कहना है कि यदि आप चाहें तो आपके स्थान किसी अन्य व्यक्ति को उपस्थित कराने का, मिस्टर बलूजा पर मुकद्दमा किया जा सकता है।

रोहिणी का उत्तर था, 'मेरी इस विषय में किंचित मात्र भी रुचि नहीं है। यह रुचि तब उत्पन्न होगी, जब मिस्टर बालूजा मुझ पर अपने पति के हक-हकूक प्राप्त करने की माँग करेंगे।'

'वह माँग तो उन्होंने की है। उनका मुझे टेलीफोन आया था कि उनकी पत्नी रोहिणी जी से उनकी सुलह करा दूँ।'

'बहिन जी! आप उनसे लिखित माँगिये कि वह ऐसा अर्थात अपनी पत्नी से सुलह चाहते हैं। अन्यथा वह किसी दिन यह भी कह कि आपको किसी अन्य ने टेलीफोन किया होगा।'

'हाँ।'

'एक बात तो हुई है। उन्होंने मुझसे कहा था कि वह मुझे घर के पते पर टेलीफोन करेंगे, परन्तु उन्होंने मुझसे पुनः सम्पर्क नहीं बनाया।

'बात यह है कि वह वकील हैं और अपने को किसी कानून के फंदे में आने नहीं देंगे। इसी कारण उन्होंने न तो आपसे प्रत्यक्ष में, न ही लिखत-पड़त से बात की है।'

'इसका तो इलाज है।'

'क्या?'

'सरकारी तौर पर उनके नाम सम्मान जारी कराये जायें और उनके विवाह सम्बन्धी ब्यान ले लिये जायें।'

'यह सरकार कर सकती है। मुझे इसमें रुचि नहीं है।'

मिसेज खुराना ने रत्नचन्द बलूजा को टेलीफोन नहीं किया। न ही बलूजा ने पुनः उससे रोहिणी के विषय में कुछ पूछा। वह वास्तव में मिसेज़ खुराना के पति का परिचय प्राप्त कर कुछ भयभीत हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

:1:

पंजाब में हिन्दू महासभा के नाम पर केवल दो विधायक निर्वाचित हुए थे। हाँ, जमींदारा दल में पैंतीस हिन्दुओं में से पन्द्रह हिन्दू सफल हुए थे। ये मुख्य रूप में हरियाणा उप-प्रान्त के प्रतिनिधि थे। कुछ उत्तरी पंजाब के भी थे। मुसलमानों से जमींदार-दल के टिकट पर सफल सदस्यों की संख्या तीस के लगभग थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों को मिलाकर जमींदार-दल का पंजाब में बहुमत हो गया था। इसके नेता झेलम जिला के एक मुसलमान जमींदार मियाँ खिज़र हयात खाँ बन गये और वह मुख्यमंत्री नियुक्त हो गये।

सन 1919 के विधान के अनुसार हिन्दुस्तान के प्रान्तों में दो अमली सरकारें स्थापित हुई थीं। दो अमली का अभिप्राय था कि जिन जिन महकमों का अधिकार प्रान्तों की सरकार के अधीन था, वे दो भागों में बाँट दिये गये थे। शान्ति-व्यवस्था, वित्त विभाग, सरकारी सेवा, सिविल सर्विसिज और देसी रियासतों के विभाग गर्वनर के अधीन थे। इनके लिये मंत्री गर्वनर नियुक्त करता था और शिक्षा, खेतीबाड़ी, उद्योग-धंधे, निर्माण तथा नगरों की प्रबन्ध कमेटियाँ जनता के अधीन थीं। इनके मंत्री मुख्यमंत्री नियुक्त करता था। स्वराज्य दल बन जाने के उपरान्त यू.पी., बिहार, मद्रास, बम्बई, मध्य प्रदेश और असाम में मुख्यमंत्री कांग्रेसी बन गये। इन प्रान्तों में कांग्रेसी सदस्यों का बहुमत था और बंगाल में मुस्लिम लीग का मंत्री-मण्डल बना।

जिस समय की यह कथा लिखी जा रही है, सिन्ध और पश्चिम के सीमाप्रान्त अभी स्वतंत्र प्रान्त नहीं थे। सिन्ध बम्बई के साथ और पश्चिमोत्तरी सीमा-प्रान्त पूर्ण रूप से गर्वनर के अधीन था।

जब मिसेज खुराना का रत्नचन्द बलूंजा को टेलीफोन नहीं आया को रत्नचन्द ने समझा कि मिसेज़ खुराना ने अपने अनुमान से ही उसकी पत्नी कहा है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं है। इस कारण उसके मन में जो किंचिन्मात्र भय उत्पन्न हुआ था वह मिटने लगा। परिणाम यह हुआ कि वह पुनः रोहिणी के राग अलापने लगा। उसकी योजना यह थी कि परिचितों में यह विख्यात हो जाये कि रोहिणी उसकी पत्नी होना स्वीकार कर चुकी है और अब रूठकर उसे छोड़ गयी है। वह समझता था कि यह बात रोहिणी के परिचितों में फैल गयी तो वह विवश हो उसकी पत्नी बन रहना स्वीकार कर लेगी।

एक दिन शिक्षा विभाग के डायरेक्टर मुहम्मद हसन और रत्नचन्द बलूजा दोनों पंजाब क्लब में बैठे ताश खेल रहे थे। खेल में कुछ बाजी भी लग रही थी। छोटी-छोटी रकमें ही लगायी जा रही थीं और रत्नचन्द बलूजा जीत रहा था। बीस-पचीस रुपये के लगभग मुहम्मद हसन हारा तो खेल बंद करने के लिये उसने कह दिया, 'सुनाओ, बीवी कहाँ है? अभी भी माँ के घर में है अथवा तुम्हारे पास आ गयी है?'

'तो यह खेल में हारने का उत्तर है?'

'मतलब यह कि खेल बंद।'

रत्नचन्द ने मेज पर सामने रखे रुपये उठा गिन डाले और बोला, 'तो इसका क्या सदुपयोग करें? इतने में फर्स्ट क्लास डिनर हो सकता है।'

'मतलब यह कि घर में बीवी नहीं है। मेरी तो अभी है। वह भागी नहीं। मैं तो खाना घर पर जाकर ही लूंगा।'

'तो मुझे किसी रण्डवे की संगत ढूंढ़नी चाहिये?'

'रण्डुवे नहीं किसी नामर्द की।' मुहम्मद हसन ने मुस्कराकर कहा।

रत्नरत्नचन्द ने भी हँसते हुए उत्तर दिया, 'यह मैं नहीं हूँ। मिसेज़ हसन को आज रात ही भेज कर पता कर सकते हो।'

'तो ऐमिली अब नहीं आती?'

'उसकी माँग सीमा से अधिक होती जाती थी। इस कारण मेरी उसमें रुचि नहीं रही।'

'उस हरजाई ने अपनी संगत की क्या कीमत आँकी है?'

'वह मुझसे विवाह करना चाहती है और इसके लिये पहली से तलाक की माँग करती है।'

'किस दोष पर तलाक देने को कहती है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कोजुगल राईट्स पर।'

'परन्तु इसके लिये तो कोर्ट में जाना पड़ेगा।'

'हाँ! यदि इस्लामी शरअ से शादी होती तो घर बैठे भी तलाक दिया जा सकता था।'

'तो मुसलमान हो जाओ।'

'बात तो समझ में आती है, परन्तु कौंसिल की मैम्बरी छिन जायेगी। उसमें मैं हिन्दुओं का प्रतिनिधि हूँ।'

'हाँ, यह तो है। यह तुमने पाँवों में फिजूल बेड़ियाँ डाल ली हैं। एक पेड़ से बंध गये हो और उसे छोड़ नहीं सकते।'

इस पर बलूजा ने बात राजनीति पर कह दी, 'कुछ दिन हुए मुख्य मंत्री ने मुझसे पार्टी बदलने के लिये कहा था। उसकी सब से जबरदस्त दलील यही थी कि एक छोटी-सी पार्टी में अपने को बंद कर मैं मेम्बर बनने के लाभों से वंचित रह रहा हूँ। उन्होंने हिसार के एक जाट का उदाहरण दिया था। बताया था कि वह अब एक एकड़ भूमि में फिरोजपुर रोड पर कोठी बनवा रहा है।'

'परन्तु तुम्हारी कोठी तो उसकी फिरोजपुर रोड वाली कोठी से अधिक शानदार स्थान पर है।'

'मेरा उस कोठी में जी ऊब गया है। उस कोठी का रौशन सितारा उसमें दिखाई नहीं देता।'

'तो ऐमिली को वहां 'ऐस्टेब्लिश' कर लो।'

'परन्तु वह चाँद नहीं है। वह तो अमावस की रात है।'

'यह तो नहीं कहा जा सकता। हाँ, दूज का चाँद कह सकते हैं। और जानते हो, दूज का चाँद मुसलमानों को बहुत प्यारा है?'

'तो उसे अपने आसमान पर जगह दे दो।'

'मुश्किल यह है कि मैं अपनी बीवी को छोड़ नहीं सकता। वह अंग्रेज औरत है। उसे बिना छोड़े दूसरी शादी इस्लामी शरअ के मुताबिक ही हो सकती है। वह ईसाई की बच्ची मुसलमान होने के लिये तैयार नहीं।'

जब रत्नचन्द बात कर रहा था, उसके मन के दर्पण में रोहिणी का चित्र बना हुआ था। जब उसके मानस पटल पर रोहिणी की स्मृति आती थी तो वह सब कुछ भूल कर रोहिणी के गुणों पर मुग्ध हो जाया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ ये बैठे थे, वहाँ क्लब का बैयरा आया और एक कार्ड उसके-सम्मुख रख खड़ा हो गया। कार्ड प्रान्त के चीफ मिनिस्टर का था।

बलूजा ने कार्ड पढ़ा तो पूछ लिया, 'यह किसके लिये है?'

'आप दोनों के लिये।'

इस पर मुहम्मद हसन ने पूछ लिया, 'किसका है?'

'चीफ मिनिस्टर साहब का।'

'तब तो चलना चाहिये। कहाँ हैं वह?' हसन साहब ने बैयरा से पूछ लिया।

'डाइनिंग हाल में।'

दोनों उठकर क्लब के हाल में चले गये। जाते हुए हसन ने कहा, 'बलूजा! तुम्हारा सितारा आज ऊपर चढ़ रहा मालूम होता है।

'यही बात तुम्हारे लिये भी तो कही जा सकती है। आखिर बुलावा दोनों के लिये है। मगर मैं सोच रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या तजवीज हो सकती है। तुम्हारा कौंसिल के साथ तो कोई सम्बन्ध नहीं हैं।'

'नहीं।'

'मगर वह आधे से अधिक सूबे का मालिक तो है। हमारा महकमा भी तो उसके अधीन है।'

इससे अधिक बातचीत नहीं हो सकी। दोनों वहाँ जा खड़े हुए जहाँ पर चीफ मिनिस्टर तथा जमींदारा-पार्टी के कुछ हिन्दू तथा मुसलमान सदस्य खड़े थे। इनको आया देख चीफ मिनिस्टर साहब बैठ गये।

चौधरी साहब ने बलूजा को सम्बोधित कर कह दिया, 'आइये बलूजा साहब! आपके विषय में ही बात हो रही थी। आप जमींदारा-पार्टी में शामिल हो जाएँ तो निर्माण विभाग का मन्त्री आपको बनाया जा सकता है। आज तक यह विभाग और शिक्षा-विभाग दोनों एक ही मंत्री के अधीन थे। इस वर्ष हम इस काम के लिए विशेष धन-राशि बजट में रख रहे हैं। इस कारण यह फैसला हो चुका है कि निर्माण विभाग एक पृथक मंत्री के अधीन कर दिया जाये।'

बलूजा ने मुस्कराकर कहा, 'मगर चौधरी साहब! जानते हैं मैं वकालात से क्या आय कर रहा हूँ?'

'हाँ, परन्तु उससे तो बहुत अधिक मियां साहब बना रहे थे। वह अब केन्द्रीय सरकार में ऐग्जेक्टिव कौंसिलर बनकर जा रहे हैं। इस कारण वह स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्त होने वाला है। हमने यह फैसला किया है कि शिक्षा-विभाग और निर्माण विभाग पृथक-पृथक कर दिये जायें।'

बात पुनः जारी रखते हुए चीफ मिनिस्टर ने कह दिया, 'मगर शर्त यह है कि आप पहले जमींदारा पार्टी में शामिल हो जायें।'

किसी ने बताया था कि शिक्षा-मंत्री ने आधा 'बगवानपुरा' मोल ले लिया है। इसका मतलब यह था कि पन्द्रह-बीस लाख की जायदाद बना ली है। यह तीन वर्ष में हुआ था। इससे रत्नचन्द के मुख में लार टपक पड़ी। इस पर भी उसने कुछ उत्तर नहीं दिया ।

चीफ मिनिस्टर ने पुनः कहा, 'मैंने आपसे एक दिन कहा था कि हिन्दू-समुदाय के हित जमींदारा दल के हाथ में सुरक्षित हैं। देखिये, अब आपने हिन्दू-सभा की तरफ से चुनाव लड़कर देख लिया है। काँग्रेस के बीस सदस्य जीते हैं। उनमें छः सिक्ख हैं। उन्होंने अपनी नयी पार्टी बना ली है। इस प्रकार काँग्रेस के अन्य दल और दुर्बल हो गये है।

'अब हिन्दू के लिये सिवाय जमींदारा पार्टी में शामिल होने के अन्य कोई चारा नहीं।

'हमने यह फैसला किया है कि जो कानून पहले मुसलमानों के हक में बन चुके है, उनमे कोई तबदीली न करते हुए आगे से कोई सा नहीं बनने देंगे, जो हिन्दू-मुसलमानों में भेद करता हो। कारण मैं कहता हूँ कि हिन्दू-हितों की रक्षा जमींदारा पार्टी के साथ रहने में है।'

हिन्दू-हितों की रक्षा से अधिक प्रभाव इस सूचना का हुआ था कि शिक्षा-मंत्री ने आधा बगवानपुरा मोल ले लिया है।

इस कारण बलूजा के मुख से निकल गया, 'आपकी बात समझ में तो आ रही है। मगर मुझे अपने साथियों से राय करनी होगी।'

डायरेक्टर हसन ने मुस्कराते हुए कह दिया, 'इनकी परम सलाहकार मिस ऐमिली घर पर इनकी प्रतीक्षा कर रही है?'

इस पर सब बैठे लोग हँसने लगे। चीफ मिनिस्टर ने कह दिया, 'उसे हम समझा देंगे। मिस्टर कार्टर को कहना पड़ेगा।'

मिस्टर कार्टर पंजाब में सीक्रेट सर्विस का 'हेड' था। रत्नचन्द ने कहा, 'तब ठीक है। उसने मेरे चुनावों में भारी मदद की थी।'

मुहम्मद हसन ने कह दिया, 'मगर बलूजा साहब! उसका बदला आप उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त नहीं दे सके क्या? बीडन रोड पर वह अपना मकान बना रही है।'

'हाँ! वह कहती थी कि मकान बनाते ही वह शादी करना चाहेगी।'

इस पर मुहम्मद हसन ने चीफ मिनिस्टर साहब को बताया, 'मिस ऐमिली इनसे शादी करना चाहती हैं। मगर यह पहले एक शादी सिविल मैरिज ऐक्ट से कर चुके हैं। इस कारण दूसरी शादी नहीं कर सकते।'

इस बात से चीफ मिनिस्टर साहब को एक बात स्मरण हो आयी।

उन्होंने कहा, 'मैंने तो सुना था कि उस शादी में चार सौ बीसी की गई अन्य बलूजा बनकर कोर्ट में आपके नाम से शादी कर आया है।'

बलूजा के कान खड़े हो गये। उसने पूछा, 'वह कौन बदमाश का बच्चा है?'

मुहम्मद हसन हंस रहा था और उसकी ओर देख रहा था।

'क्यों? क्या मामला है डायरेक्टर साहब?'

'मुझे मैजिस्ट्रेट साहब की रिपोर्ट का पता है। मुआमला खुफिया पुलिस के पास है और वह उस व्यक्ति की खोज में है, जिसने बलूजा साहब के नाम पर हस्ताक्षर किये हैं।'

इस पर चौधरी साहब बोल उठे, 'उस आदमी का पता चल गया है, परन्तु वह एक सरकारी व्यक्ति है और अपने रसूख से मामला फाईल करवा रहा है।'

बलूजा का मुख विवर्ण हो रहा था। उसके मुख पर घबराहट देख चीफ मिनिस्टर ने बलूजा साहब के सामने दो कागज रख दिये। एक कौंसिल के स्पीकर की चिट्ठी थी कि उसने हिन्दू महासभा की पार्टी को छोड़ जमींदारा पार्टी में शामिल होना स्वीकार कर लिया है। दूसरा पत्र था जमींदारा पार्टी के प्रधान चौधरी साहब के नाम की वह जमींदारा पार्टी में शामिल होना चाहता है।

बलूजा समझ गया कि उसके लिये अन्य कोई चारा ही नहीं रहा। यदि वह हस्ताक्षर नहीं करता तो शादी का मामला खड़ा हो सकता है और मुकद्दमेबाजी हुई तो वह बदनाम हो जायेगा। अतएव उसने दोनों पत्रों पर हस्ताक्षर कर दिये।

हस्ताक्षर होते ही चीफ मिनिस्टर ने घंटी बजायी और बैयरा आ खड़ा हुआ। चीफ मिनिस्टर ने उसे खाना लगाने को कह दिया।

एक घंटा भर खाना-पीना होता रहा। कुछ लोगों ने शराब मंगवाई तो वह पी जाने लगी। चौधरी साहब ने शराब को नहीं छुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब यह खाना-पीना हो रहा था तो चीफ मिनिस्टर साहब मुहम्मद हसन को अपने समीप बैठाकर उससे बातचीत करने लगे।

खाना समाप्त होने से पूर्व उससे भी एक पत्र पर हस्ताक्षर करवा लिये गये और दोनों मित्र, मुहम्मद हसन और रत्नचन्द बलूजा अर्द्ध चेतनावस्था में बाहर अपनी-अपनी मोटर में सवार होकर घर को चल दिये।

यह शनिवार का दिन था। घर पर ऐमिली बलूजा साहब की प्रतीक्षा में बैठी थी। जब रत्नचन्द वहां पहुंचा तो वह पूछने लगी, किसको संगत में पी आये हैं?'

'तुम्हारे रकीब की।'

'मतलब?'

'राईवल की संगत में।'

'ओह! तो रोहिणी से सुलह हो गयी है। वह भी पीने-पिलाने लगी है क्या?'

'नहीं, वह नहीं। एक अन्य नाज़नीन मिली है।'

'कौन है वह?' ऐमिली ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछा।

बलूजा ने बात बदल दी और पूछा, 'खाना खाया है अथवा नहीं?'

'आपकी प्रतीक्षा कर रही थी।'

'तो चलो खाने के कमरे में।'

दोनों कोठी के डाइनिंग-रूम में जा पहुंचे। वहाँ बैठते ही प्लेटें लग गयीं।

बलूजा ने बैयरा को कह दिया, 'मैं खा आया हूँ। इन मिस साहिबा के लिये ही लगाओ।'

बैयरा गया तो ऐमिली ने पूछ लिया, 'किसके साथ बैठकर और कहाँ बैठकर खाया है?'

'क्लब में और जिसके साथ बैठकर खाकर आया हूँ, उसकी बात तुम्हें एक-दो दिन में समाचार-पत्र से पता चल जायेगी।'

इस समय बैयरा ने खाना लगाना शुरू कर दिया।

ऐमिली विचार करते हुए कि कौन है, जिसके साथ यह श्रीमान खाना खाकर आये हैं, खाती रही? जब अनुमान नहीं लगा सकी तो उसने पूछ लिया, 'तो दो दिन तक मुझे आपके सौभाग्य का समाचार जानने को प्रतीक्षा करनी होगी।'

'हाँ! यह कल भी हो सकती है और दो दिन के पीछे भी हो सकती है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'और मुझसे पूछे बिना आपने यह नया इन्तजाम कर लिया।

'इस इन्तजाम में तुम्हारा भी तो स्थान रखा है?'

'क्या स्थान रखा है?'

'यह मैं अपने मुख से नहीं बता सकता। समाचार-पत्र से ही विख्यात होगा।'

'देखिये बलूजा साहब! मेरे कार्यालय में यह सब को पता चल चुका है कि मैं आपके घर प्रति शनिवार रात को रहती हूँ। यदि इसमें कुछ खलल पड़ा तो मिस्टर कार्टर सब रहस्य खोल देंगे।'

'मैं उनसे कल मिलूंगा। मुझे विश्वास दिलाया गया है कि वह मेरे नये प्रबन्ध के विपरीत नहीं है?'

इस पर तो ऐमिली परेशानी में मुख देखती रह गयी। भोजन के उपरान्त दोनों ड्राइंग-रूम में आये और ऐमिली ने अपने लिए मद्य मंगवा ली। बलूजा ने बता दिया कि वह पर्याप्त पी आया है और इससे अधिक पीने पर वह अचेत हो जायेगा।

अगले दिन प्रातः काल जब नत्थूराम बेड-टी लेकर आया तो आठ बज रहे थे। उससे पहले बलूजा साहब के बेड-रूम का द्वार नहीं खुला था।

जब द्वार खुला तो नत्थूराम ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, 'माँ जी हरिद्वार से आयी हैं। इस समय बाथरूम में हैं।'

इस समाचार से रत्नचन्द के मुख का रंग विवर्ण हो गया। उसने नत्थूराम से पूछा, 'माता जी ने मेरे विषय में कुछ पूछा है?'

'हां! उन्होंने आपको जगाने के लिए कहा था।

'मैंने बताया है कि आप रविवार के दिन आठ बजे से पहले नहीं उठते। रात आप देरी से आये थे, इसी कारण अभी जगाने का हुक्म नहीं है।

इस पर अपना सामान अपने कमरे में रखवाकर वे बाथरूम में गयी हैं।'

बलूजा ने ऐमिली को कहा, 'शीघ्र भागो यहां से। कहीं ऐसा न हो कि वह जूतों से पिटवाकर निकलवा दें।'

'और आप मुझे बचायेंगे नहीं?'

'मैं माँ से झगड़ा नहीं कर सकता।'

इस पर ऐमिली उठी और अपने बाहर जाने के वस्त्र पहनने लगी।

इस समय नत्थूराम उस दिन के समाचार-पत्र दे गया। दो पत्र जो लाहौर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही निकलते थे, उनके प्रथम पृष्ठ पर ही यह समाचार मोटे शीषर्कों के साथ छपा था-'हिन्दू सभा के अन्तिम सदस्य भी जमींदारा पार्टी में।' इसके नीचे दूसरी पंक्ति में बताया गया था - 'श्री रत्नचन्द बलूजा शिक्षा मंत्री बनेंगे।' इसके आगे समाचार था कि शीघ्र ही शिक्षा-विभाग निर्माण विभाग से पृथक कर दिया जायेगा। इसके साथ ही एक यह भी समाचार था कि एक मुहम्मद हसन डायरेक्टर की पोस्ट से इस्तीफा देकर बगवानपुरा क्षेत्र से कौंसिल की सीट के लिये खड़े होने वाले हैं।

इस समाचार का अर्थ बलूजा समझ रहा था। वह यह कि मुहम्मद हसन शिक्षा मंत्री बनेगा और वह निर्माण मंत्री होगा।

बलूजा ने समाचार पढ़ते ही ऐमिली को कहा, 'देखो, तुम्हारे राईवल का समाचार छपा है।'

ऐमिली कपड़े पहनते-पहनते समीप आकर समाचार-पत्र देखने लगी। वह अंगिया पहन कर, ब्लाऊज़ हाथ में पकड़े हुए थी। इसी समय बलूजा की माँ कमरे में आ गयी। नत्थूराम ने उसे बताया था कि लड़का उठ गया है। परन्तु कमरे में ऐमिली को अर्द्ध-नग्न अवस्था में देख वह आश्चर्यचकित उसे देखती रह गयी। ऐमिली ने हाथ जोड़कर नमस्कार कह दी और अपने कपड़े पहनने लगी।

सत्यवती चुपचाप उसे कपड़े पहनते देखती रही। बलूजा के पाँव तले से मिट्टी खिसक रही थी। उसने माँ को नमस्कार किया।

सत्यवती ने पुत्र तथा ऐमिली के नमस्कार का उत्तर नहीं दिया और ऐमिली को कपड़े पहनते देखती रही। उसने कपड़े पहन बलूजा साहब को कहा, 'मेरी बधाई स्वीकार हो। इसका इनाम मैं किसी दूसरे समय लूंगी।' और फिर वह कमरे से भागी। वह बलूजा के माथे पर विवर्णता देख चुकी थी।

:2:

ऐमिली गयी तो सत्यवती ने कहा, 'मैं बाहर ड्राइंग-रूम में बैठती हूँ और देखो, भली भाँति साबुन मल इस चुडैल की कालिख धोकर आना। इस कालिख की उपस्थिति में मेरे लिये यहाँ रहना कठिन होगा।'

बलूजा ने बात टालते देख सुख का साँस लिया और बाथरूम में चला गया।

सत्यवती ने नत्थू राम को बुलाया और पूछा, 'तुमने मुझे बताया नहीं कि उसके सोने के कमरे में कोई अन्य भी है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'माताजी! साहब एक बहुत बड़े व्यक्ति हैं। इस कारण मैंने यही ठीक समझा था कि वह स्वयं ही बतायें तो ठीक होगा।'।

'यह कहाँ रहती है?'

'मैं नहीं जानता। तीन-चार महीने से प्रति शनिवार आया करती है।'

'क्या नाम है?'

'मिस साहिबा कही जाती है। नाम नहीं जानता।'

'और रोहिणी कहाँ है?'

'उन्हें यहाँ से गये तीन महीने से ऊपर हो चुके हैं। सुना है वह अनारकली बाजार के एक मकान में रहती हैं।'

'और बच्चा?'

'वह भी उनके पास है?'

'बहुत मूर्ख है!'

यह उसके मुख से निकल गया। परन्तु उसने आगे कुछ नहीं कहा। वह पुत्र की प्रतीक्षा करने लगी।

रत्नचन्द पौने नौ बजे स्नानादि कर, वस्त्र पहन आया तो सत्यवती ने कहा, 'अल्पाहार लूंगी।'

दोनों खाने के कमरे में चले गये। वे बैठे तो सत्यवती ने पुछा।

'यह औरत कौन थी?'

'एक काम चलाऊ प्रबन्ध है।'

'अरे मूर्ख! काम चलाऊ है तो इससे अच्छी कोई नहीं मिली? यह काली-कलूटी कहाँ से ले आये हो?'

'माँ! यह काली-कलूटी तो है नहीं। हाँ, कुछ गन्दमी रंग की।'

'और जो कोठी में चाँद था, उसे निकाल दिया है?'

'मगर वह पत्नी बनने को तैयार नहीं थी।'

'तो उसे तैयार करने के लिये उसके कमरे के बाहर धूनी रमा देनी चाहिये थी। इतनी बढ़िया वस्तु को छोड़ यह नगर-भर का मैला यहाँ ले आये हो। मैं तो तुम्हें बहुत बुद्धिमान समझती थी।'

रत्नचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, 'पर वह तो अन्य लोग भी कह रहे हैं। आज ही समाचार-पत्र में कुछ मेरे विषय में निकला है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पढ़ा है और यह भी पढ़ा है कि तुमको उसके लिये क्या देना पड़ा है।'

'देना तो कुछ नहीं पड़ा।'

'जिस दल का नाम ले-लेकर व्याख्यान दिया करते थे, उसका क्या हुआ? उससे पूछे बिना ही दल बदल लिया है। उससे लड़कर गये हो क्या?'

'मैं आज उसके प्रधान से मिलकर बात कर लूंगा। मैंने दल बदला है तो उसका मूल्य ले रहा हूँ और उसका लाभ हिन्दू समुदाय को मिलने वाला है।'

'यह सब बकवास है। यह औरत जो अभी तुम्हारे कमरे से गयी है, तुम्हारा सब-कुछ ब्लाटिंग पेपर की भाँति चूस जायेगी।'

'तो माँ! तुम यहाँ रह जाओ और रोहिणी को यहाँ ले आओ। तब मैं उसके कमरे के बाहर धनी रमा दूँगा। अब तो समाज में मेरी स्थिति भी बहुत ऊँची हो गयी है।'

'मैं तो यहाँ से गयी ही इस कारण थी कि तुम उसको अपनी पत्नी बना यहाँ रख सको। पर सामने वह संकोच अनुभव करती, ऐसा मेरा विचार था। परंतु तुमने सब गड़बड़ घोटाला कर दिया है।'

'माँ तुम अब यहां रहो और उसके मन में विश्वास पैदा कर उसे यहाँ ले आओ।'

'आज तुम्हारे लड़के को देखने जाऊँगी। क्या नाम रखा है उसका?'

'उसने ही रखा था-कमल। अब वह एक वर्ष का हो रहा।'

'तुम्हे लड़के को देखे कितना काल हो गया है?'

'उसे घर से गये तीन महीने हो रहे हैं। तब से ही उसको नहीं देखा।'

'बिल्कुल बुद्ध हो।'

प्रातःकाल का अल्पाहार लेकर सत्यवती रोहिणी के घर का पता पूछ वहाँ जा पहुंची।

रविवार का दिन होने के कारण रोहिणी घर पर ही थी। द्वार पर घंटी करने पर रोहिणी ने मोहिनी की सास को खड़े देखा तो नमस्कार कर उसे भीतर ले गयी। घर की बैठक में बैठा जल-पान पूछने लगी।

'मैं खा-पीकर आयी हूँ। माँ कहाँ है?'

'ऊपर है।'

'मैं उससे भी मिलने आयी हूँ और कमल को लेने आयी हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल के नाम पर रोहिणी भौंचक्क मुख देखने लगी। कुछ देर विचार कर बोली, 'और उसके लिये कोई आया रख ली है?'

'अब मैं यहाँ लाहौर में ही रहने के लिये आयी हूँ।'

'तब ठीक है। अभी उसे तैयार कर देती हैं।'

रोहिणी उठी और ऊपर की मंजिल पर चली गयी। रोहिणी से पहले कंचन, उसकी माँ आयी।

कंचन आयी तो सामान्य आव-भगत के उपरान्त सत्यवती ने कहा, 'मैं रोहिणी को ले जाने के लिये आयी हूँ।'

कंचन इस माँग को सुनकर टुकुर-टुकुर मुख देखती रह गयी। उसने कुछ विचार कर कहा, 'हाँ, जाती है तो ले जाइये। कदाचित अब वह मान जाये।'

'तो पहले नहीं मान रही थी?'

'पहले तो वह आपके लड़के को जेल में देखने की इच्छा कर रही थी।'

'क्यों? उसने क्या किया है?'

'मैजिस्ट्रेट के साथ धोखा-धड़ी की है। जहाँ तक हमें विदित है। उसके वारण्ट निकल चुके हैं।'

'परन्तु आज का समाचार-पत्र पढ़ा है?'

'जी! इसीलिये तो कह रही हूँ कि कदाचित वह अब मान जाये।'

सत्यवती को इस रोष का कारण विदित नहीं था। उसने नरम हो पूछ लिया, 'परन्तु बहन जी! क्या बात हुई है जिससे आप ऐसी बुरी बात की आशा करने लगी थीं?'

पूर्व इसके कि कंचन उत्तर दे, रोहिणी कमल को लेकर नीचे आ गयी। उसने कमल को गोदी में लिया हुआ था। साथ ही हाथ में एक छोटा-सा अटैची केस था। उस में कमल के वस्त्र थे। एक छोटी-सी टोकरी भी थी। उसमें बच्चे का सामान था। दूध की बोतल थी, ग्लैक्सो पाउडर का डिब्बा था और साथ दूध बनाने का एक मग और चम्मच था।

अटैची केस और दूध बनाने का सामान सत्यवती के सामने रख वह बच्चे को उसकी दादी को देने लगी तो बच्चा रोहिणी से चिपट रोने लगा।

रोहिणी ने जबरदस्ती बच्चे को सत्यवती की ओर करना चाहा तो वह जोर-जोर से रोने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवती ने बच्चे को ले, उसको चुप कराने का यत्न किया, परन्तु वह रोता ही रहा।

सत्यवती को समझ आ गया कि बच्चा रोहिणी से हिल-मिल गया है। इस कारण उसने कहा, 'रोहिणी बेटी! यह कह रहा है कि तुम भी साथ ही चलो?'

'माता जी! बुद्धिमान व्यक्ति कभी भूल करता है तो उसको सुधार कर पुनः उसे न करने का संकल्प कर लेता है। मूर्ख बार-बार भूलें करते हैं और जीवन में दुःख तथा क्लेश भोगते हैं।'

'परन्तु मैं तुम्हें तुम्हारे पति के घर में ले जाने की बात कह रही हूँ। किसी मूर्खतापूर्ण कार्य के लिये नही कह रही।'

रोहिणी को समझ आया कि मोहिनी की सास को पूर्ण घटना का ज्ञान है और वह उस कोर्ट में खेली गयी चार सौ बीसी को जानती है। इस कारण उसने कह दिया, 'आप माँ हैं। पुत्र की दुष्टता को क्षम्य मान सकती हैं, परन्तु मैं उसे भूल नहीं सकती।'

कमल अभी भी जोर-जोर से रो रहा था। इस करण रोहिणी की माँ कंचन उसे अपनी गोदी में ले उसे चुप कराने के लिये दूसरे कमरे में ले गयी।

बात रोहिणी ने ही कही, 'मैं कोर्ट में सौगन्धपूर्वक अपने बयान दे चुकी हूँ और वहाँ से आपके सुपुत्र के वारण्ट जारी हो चुके हैं। उनके साथ उनके सह-अपराधी के भी वारण्ट हैं।'

'पर हुआ क्या है?' सत्यवती ने कुछ न समझते हुए पूछ लिया।

'माताजी! मुझ में वह सब-कुछ बताने का साहस नहीं जो कुछ जीजाजी ने किया है। वह अभी कल तक भी यही जुर्म करते रहे थे।'

'तो तुम पर बलात्कार किया है?'

'करते तो मैं विष खाकर मर गयी होती। यह कुछ ऐसा है जिसमें मैं सम्मिलित नहीं। यह तो उनके और मैजिस्ट्रेट के भीतर की बात थी।

इस समय तक कंचन कमल को चुप कराकर पुनः कमरे में आ गयी। उसने सब बात स्वयं स्पष्ट करने के लिये कहा, 'बहन जी! मैं बताती हूँ। रोहिणी को बताने में लज्जा लग रही है।'

'इस कौंसिल के चुनावों के दिनों में वकील साहब का सम्पर्क कुछ सरकारी लोगों से हुआ था। उनके उकसाने पर उन्होंने एक पुरुष और एक स्त्री को कोर्ट में मैजिस्ट्रेट के सामने विवाह के लिये भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उन्होंने कोर्ट में यह घोषणा की है कि वे रत्नचन्द बलूजा और रोहिणी हैं। उन्होंने अपना पता भी कीलिंग रोड बाली कोठी का लिखवाया है।

'इसके उपरान्त रत्नचन्द ने यह विख्यात करना आरम्भ कर दिया रोहिणी वकील साहब की विवाहिता पत्नी है।

'रोहिणी को इस धोखा-धड़ी का पता चला तो वह कोठी छोड़ चली आयी। रत्नचन्द के पास कमल को रखने का कोई प्रबन्ध नहीं था। इस कारण उसने बच्चे को भी रोहिणी को दे दिया। तब से रोहिणी यहाँ रहती है।

'अब किसी प्रकार उस मैजिस्ट्रेट को, जिसके सामने शादी रजिस्टार हुई थी, पता चल गया है कि कोर्ट के साथ धोखा खेला गया है और उसने यह मामला खुफिया पुलिस के हाथ में दे दिया है। खुफिया पुलिस ने उन व्यक्तियों को ढूंढ निकाला है जिन्होंने रत्नचन्द और रोहिणी का कोर्ट में नाटक किया था। कोर्ट में दोनों के बयान हो चुके हैं।

'हमें पता चला है कि रत्नचन्द के वारण्ट निकल गये हैं।'

सत्यवती जानती थी कि उसका लड़का आज ग्यारह बजे मन्त्री पद की शपथ लेने जा रहा है और कदाचित उससे पहले ही वह पकड़ा जायेगा। इस कारण वह एक भी शब्द और कहे बिना, वहाँ से उठी और मकान से निकल गयी। कंचन और रोहिणी भौंचक्क उसको भागती देखती रह गयीं। कुछ विचार कर रोहिणी हँस पड़ी और बोली, 'वकील साहब की माँ समझती हैं कि क्या होने जा रहा है। यदि वकील साहब ने वारण्ट मिलने से पहले मन्त्री की शपथ ले ली तो पुलिस को उन्हें पकड़ने की स्वीकृति किसी उच्च अधिकारी से लेनी होगी। इस कारण वारण्ट के घर पहुंचने से पहले ही वह उसे सचेत करने जा रही हैं।'

सीक्रेट सर्विस का एक अफसर ए. एच. बुरानी और ऐमिली पकड़े गये थे, परन्तु जब रत्नचन्द के वारण्ट कोठी पर पहुंचे तो वह घर से निकल चुका था। घर से वह सीधा गवर्नर की कोठी पर गया था। इस कारण वारण्टों पर अमल नहीं हो सका।

इस समय सत्यवती कोठी पर पहुंची। नत्थूराम ने बताया, 'माता जी! वकील साहब तो गवर्नर बहादुर की कोठी पर गये हुए हैं। कचहरी के प्यादे तथा पुलिस वाले आये थे और यह जान कि वकील साहब मन्त्री बन गये हैं, कुछ न समझ लौट गये हैं।'

सत्यवती समझ रही थी कि वारण्ट जान-बूझकर रविवार के दिन भेजे गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, जिससे रत्नचन्द कम-से-कम एक दिन-रात जेल में रह सके। रविवार के दिन उसकी जमानत नहीं हो सकती थी।

सत्यवती ने एक कागज़ पर पूर्ण वृत्तान्त लिखकर नत्थूराम के हाथ गवर्नर की कोठी पर भेज दिया।

बलूजा गवर्नर के सम्मुख शपथ ले गवर्नर की कोठी के बाहर निकला ही था और अपनी मोटर में सवार होने ही लगा था कि नत्थूराम ने रत्नचन्द की माँ से भेजा परचा उसके हाथ में दे दिया।

समीप ही मुख्यमन्त्री खड़ा था। उसने पूछा, 'यह क्या है?'

पत्र हिन्दी में लिखा था और मुख्यमन्त्री वह भाषा जानता नहीं था। इसी कारण उसने पूछा था।

बलूजा ने अंग्रेजी में बताया, 'माँ ने सूचना भेजी है कि कोठी पर पुलिस वारण्ट लेकर पहुंची थी।'

'तो आप वहाँ मत जाइये। मेरे घर चलिये। वहाँ से मामला रफा-दफा करवा दूँगा।'

बलूजा ने अपनी गाड़ी खाली लौटा दी और स्वयं चीफ मिनिस्टर के साथ उसकी गाड़ी में उसकी कोठी को चल दिया।

:3:

रत्नचन्द सायंकाल घर लौटा। तब तक सिटी मैजिस्ट्रेट, जिसने वारण्ट जारी किये थे, ने मुख्य मंत्री के निर्देश पर वारण्ट वापस ले लिये थे।

घर पर सत्यवती उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह आया तो माँ ने पूछा, 'जब सरकार को यह पता चल गया कि तुमने यह धोखा-धड़ी की है और कानून भंग किया है तो क्या फिर भी तुम्हें मंत्री बना रहने देगी?'

बलूजा ने मुस्कराते हुए कहा, 'माँ ! यह काम गवर्नर बहादुर का है कि वह देखे कि न्याय व्यवस्था रहती है अथवा नहीं। यह मेरा काम नहीं।'

'अच्छा छोड़ो सरकारी ओहदे की बात। तुम अपनी बात कहो। तुमने यह क्यों किया?'

'यह इस कारण कि रोहिणी को बदनाम कर अपनी बात मानने के लिए जरा विवश करना चाहता था?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'समझती हूँ तुम मुहब्बत से उससे अपनी बात कहते तो अवश्य सफल हो जाते। तुम तो पढ़-लिखकर भी मूर्ख ही बने रहे हो?'

'तो माँ। इस मूर्ख की सहायता कर दी और मेरे स्थान पर जाकर उससे बातचीत कर उसे यहाँ ले आओ।'

'मैं वहाँ गयी थी। उसने ही मुझे बताया था कि तुमने क्या करतूत की है और तुम्हारे वारंट निकले हुए हैं। इस कारण मैं वहाँ से लौट आयी थी, जिससे तुम्हें समय पर सचेत कर दूँ।'

'मैं समझता हूँ कि ठीक ही किया था। अन्यथा गवर्नर की कोठी से लौटकर आते ही पकड़ लिया जाता। पुलिस को यह थोड़े ही पता था कि मैं मन्त्री हूँ और मन्त्री को बिना गवर्नर की आज्ञा के नहीं पकड़ा जा सकता। कम-से-कम एक दिन के लिए तो हवालात में अवश्य ले लिया जाता। पीछे चाहे कुछ भी होता।'

'मैं समझती हूँ तुमने गलत ढंग अपनाया है।' माँ ने कहा।

रत्नचन्द ने माँ के सामने स्वीकार किया, 'मुझसे भूल हो गयी है। इसमें कारण यह है कि एक सुन्दर पत्नी के वियोग पर और एक उससे भी सुन्दर स्त्री को सामने नित्य देखने से बुद्धि भ्रष्ट हो गयी थी। इस कारण भूल पर भूल करता रहा हूँ।

'पर माँ! तुम भी तो उस समय मुझे छोड़ अपना सुख ढूंढने हरिद्वार चल दी थीं। यदि तुम उस समय यहाँ रहतीं और रोहिणी को उचित प्रेरणा देतीं तो काम बन जाता।'

सत्यवती को अब अपने हरिद्वार जाने पर पश्चात्ताप लगने लगा। वह रात-भर विचार करती रही कि किस प्रकार इस स्थिति को सँभाले। वह समझ गई थी कि रत्नचन्द पर मुकदमा तो नहीं चलेगा, पर एक बार यह बात समाचार-पत्रों में छप गई कि रत्नचन्द ने धोखाधड़ी की है तो बदनामी तो होगी ही।

अगले दिन रत्नचन्द मंत्रालय में पहुँच अपने स्थान पर आसीन हुआ तो उसके सामने मुहम्मद हसन का त्याग-पत्र उपस्थित था।

रत्नचन्द ने मुहम्मद हसन को टेलीफोन किया और बुला लिया। मुहम्मद हसन लंच के समय आया और दोनों मित्र एक-दूसरे को देख हंसने लगे।

मुहम्मद हसन ने कहा, 'मैं तो इस समय इस कारण आया हूँ कि दोनों किसी रेस्टोरां में लंच लें।'

'और मैंने भी तो इसीलिए तुम्हें बुलाया है ?'

'तो उठो।' डायरेक्टर ने कहा और दोनों वहाँ से सैसिल रेस्टोरां में जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुंचे। उन्होंने खाने का आर्डर दिया और फिर बात-चीत करने लगे। रत्नचन्द ने कहा, 'उस दिन मैं देख रहा था कि मुख्य-मंत्री महोदय ने तुमसे भी किसी कागज पर हस्ताक्षर कराये थे। तो वह त्याग-पत्र ही था?'

'हां! मुझे यह कहा गया है कि नौकरी से अवकाश पाते ही मुझे पूर्व शिक्षामंत्री के रिक्त स्थान से कौंसिल के लिए खड़ा हो जाना चाहिए। वहाँ से सफल होने पर मुझे शिक्षामंत्री बना दिया जायेगा। तब तक निर्माण विभाग, शिक्षा-विभाग से पृथक कर दिया जायेगा। मैं तुमसे यही कहने आया हूँ कि मेरा त्याग-पत्र तुरन्त स्वीकार कर, किसी को आज ही मुझसे चार्ज लेने के लिए भेज देना, जिससे मैं निर्वाचन की तैयारी आरम्भ कर सकूँ।'

'घर पर मेरी माँ मुझे कोस रही है कि मैं जिस दल के टिकट पर खड़ा हो विजयी हुआ था, उस दल से पूछे बिना क्यों पार्टी बदल रहा हूँ।'

'अरे बलूजा! औरतों की बात राजनीति में नहीं चलने देनी चाहिए। मैं समझता हूँ कि पंजाब में हिन्दू-मुसलमान इत्तिहाद का एक मॉडल उपस्थित किया जा रहा है। इसी वास्ते जमींदारा पार्टी को मजबूत करना चाहिए।'

'हाँ, मुख्यमंत्री कल कह रहे थे कि बंगाल में भी फजललहक हमारी नकल की एक पार्टी बना रहे हैं।'

'बात यह है कि दोनों कौमों में जो सांझी बात होगी, उसके बिना पर ही दल बनाये जायें तो दोनों में इत्तफाक हो सकता है?'

'मगर यह बात महात्मा गांधी के दिमाग में क्यों नहीं आती?' बलूजा का प्रश्न था।

'देखो बलूजा! हिन्दू और मुसलमानों में एक फरक है। हिन्दुओं में जो पढ़े-लिखे लोग अक्लमंद समझे जाते हैं, वे मुसलमान अनपढ़ों से भी बदत्तर हैं। मैं सियासियत की बात कह रहा हूँ। एक बार सन 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का खास इजलास हुआ था। उसमें महात्मा जी ने यह तजवीज़ रखी थी कि सरकार से न-मिलवर्तन किया जाये। हिन्दुओं के सभी नेताओं ने उसका विरोध किया, परन्तु आम इजलास में गांधी जी की यह बात मंजूर हो गई।

'जानते हो, इसका हिन्दू नेताओं पर क्या असर हुआ? सब-के सब मूर्ख बन गांधीजी के पीछे लग गये। जबकि मुसलमान इस न-मिलवर्तन को बेवकूफी समझते थे।

'नतीजा यह हुआ था कि हमने सब सूबों की कौंसिलों में मुसलमानों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फायदे की बातें मंजूर करा ली और हिन्दू जेलों में सड़ते रहे।

'मेरा कहने का मतलब यह है कि हिन्दू लीडर तो आम मुसलमानों का सा दिमाग भी नहीं रखते। इसी वजह से हिन्दुओं की अकसरीयत होते हुए भी वे सब जगह पर घाटे में जा रहे हैं।

'अब स्वराज्य दल ने कौंसिलों में जाने का फैसला किया है तो उनको जो कुछ हक-हकूक मिले हैं, उनका इस्तेमाल मुल्क के फायदे के लिए नहीं कर रहे बल्कि सरकार से झगड़ा करने के लिए कर रहे है।

इस समय तक दोनों खाना लेने लगे थे। रत्नचन्द ने पानी का घूंट पी मुख का ग्रास निगल कर कहा, 'हिन्दू नेता मुकम्मल आजादी के लिए कोशिश कर रहे हैं।'

'तो उससे उनको मना किसने किया है? क्या हिन्दुओं में बस इतने ही लोग हैं जो कौंसिलों में गये हैं? कौंसिलों में जाने वाले कौंसिलों से जो कुछ फायदा हो सकता है, वह उठा सकते थे और महात्मा जी बाहर रहते हुए अपनी कश-मकश जारी रख सकते थे।

'देखो दोस्त! मेरी बीवी इंग्लैण्ड के एक बड़े आदमी की भतीजी है। वह कहती थी कि उसका चाचा गांधी और हिन्दुओं की बातों पर हँसा करता है।

'मेरी बीवी का कहना है कि हिन्दुस्तान खुद-मुख्तार देश होगा। इसमें किसी को शक नहीं। यह बात अंग्रेजी पालिटीशियन सन् 1906 से ही समझ रहे हैं। उसके चाचा कहा करते थे कि छः करोड़ की आबादी का मुल्क पैंतीस करोड़ की आबादी वाले मुल्क पर हमेशा के लिए हुकूमत नहीं कर सकता। इसीलिए यह आजाद तो होगा ही। मगर इस समय अंग्रेज की चाल यह है कि मुल्क के कई टुकड़े कर दिये जायें।

'मुसलमानों को अपना अलहदा मुल्क बनाने दिया जाये, मराठों को अलहदा, साउथ वालों को अलहदा और गांधी अंग्रेज की इस नीति के लिए जमीन तैयार कर रहा है।

'पंजाब के मुसलमान यह बात समझ रहे हैं और बंगाल के मुसलमानों को भी यही बात समझाई जा रही है। मगर कोई हिन्दू नेता इस बात को समझ नहीं रहा। पढ़ा-लिखा हिन्दू तो और भी बदतर है। वह अपनी हर कमजोरी को छुपाने की दलील देने लगता है और बात की तह तक नहीं पहुंचता।'

रत्नचन्द था तो वकील, मगर वह कचहरी के मुकदमे करना ही जानता था। राजनीति की समझ वह नहीं रखता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद हसन ने आगे बताया, 'हमारे पहले ऐजुकेशन मिनिस्टर ने सब सूबों के ऐजुकेशन मिनिस्टरों को लिखा था कि वे एक अपना संगठन बनाकर सारे मुल्क की ऐजुकेशन में सुधार लाने की कोशिश करें। मगर दूसरे सूबों के ऐजुकेशन मिनिस्टर सब हिन्दू थे और वे इस बात को समझ नहीं सके।

'फिर पंजाब के चीफ मिनिस्टर ने दिल्ली में दूसरे चीफ मिनिस्टर मीटिंग में भी कहा था कि उनको एक 'पैरलल' सरकार बना लेनी चाहिए। मगर कोई हिन्दू चीफ मिनिस्टर तैयार नहीं हुआ।

'इससे नाउम्मीद हो हमारे चीफ मिनिस्टर कह रहे थे कि हिन्दू राज्य करने के लायक नहीं है। इस कारण मुसलमानों को अपने फायदे की बात सोचनी चाहिए। बेवकूफों के साथ रह कर न तो वे अपना फायदा कर सकेंगे, न किसी दूसरे का।'

दोनों खाना समाप्त कर चुके थे। नेपकिन से मुख और हाथ पोछते हुए मुहम्मद हसन ने कह दिया, 'वह आपकी एक रिश्तेदारन है न, जो कॉलेज में प्रोफेसर है, एक बार उसने जाँच कमेटी में कहा था कि हिन्दुस्तान रण्डवा हो गया है। अंग्रेज इनकी बीवी को अगवा कर ले गये हैं। उसने यह भी बताया था कि हिन्दुस्तान की एक बीवी थी सरस्वती यानि अक्ल। उसका भी अगुवा हो चुका है।

'मैं समझता हूँ कि उसने यह हिन्दुओं के मुताल्लक सही ही बताया था।'

बैयरा आया और बिल आया तो बलूजा ने जेब से दस-दस के दो नोट निकाल तश्तरी पर रख दिये।

मुहम्मद हसन ने देखा कि बिल नौ रुपये और कुछ आने का था। बलूजा को बीस रुपये देते और फिर उठ कर चलने को तैयार होते देख उसने पूछ लिया, 'तो यह वजीर बनने की खुशी में है?'

बलूजा हंस पड़ा और बोला, 'इसको पता चलना चाहिए कि उसने एक वजीर को 'सर्व' किया है।'

'ठीक है। तुम भी तो रण्डवे हो और तुम्हारी बीवी का भी अगुवा हो चुका है।'

दोनों होटल के बाहर खड़ी मोटर गाड़ी में आ गए। बलूजा ने बैठते हुए पूछा, 'मेरी किस बीवी का अगुवा हुआ है।'

'जिसने तुम्हारे वारण्ट निकलवाये थे? मुझे आज पता चला है कि वह वारण्ट गवर्नर के हुक्म से वापस लिये गये है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तुम सब लोग वह कुछ जानते हो, जो मुझे भी मालूम नहीं?'

'रण्डवों की एक आँख ही तो रह जाती है। वे उससे आधी बात ही देख सकते हैं?'

इस पर बलूजा गम्भीर विचार में मग्न हो गया।

दोनों मन्त्रालय में पहुँचे तो बलूजा ने ही पूछा, 'तो किसको चार्ज देना चाहते हो?'

'देखो दोस्त! मेरा एक सेक्रेटरी कश्मीरी है यासीन बेग। उसने अभी-अभी एक कश्मीरी लड़की से शादी की है। उसको हुक्म दे दो कि मुझसे चार्ज ले ले। डायरेक्टर तो तुम मन्त्री-मन्डल की राय से मुकर्रर कर सकोगे। वह पीछे होता रहेगा।'

बलूजा ने विभाग के सेक्रेटरी को बुलाया और हसन साहब का त्याग-पत्र सामने कर कह दिया, 'इनको कल से ही छुट्टी दे दीजिये और पत्र में नीचे लिख दीजिये कि मिस्टर यासीन बेग को चार्ज दे सकते हैं।

'नये डायरेक्टर की नियुक्ति के लिये मेरा प्रस्ताव एक डॉक्टर जीवनदास पी.एच.डी. के लिये है। उसका नाम भी लिख दो।'

सैक्रेटरी ने कह दिया, 'रिटायर होने वाले वजीर साहब ने यह लिख रखा है कि इस्लामिया कॉलेज के प्रोफेसर गुलाम मुहम्मद को डायरेक्टर नियुक्त किया जाये।'

बलूजा परेशानी में मुख देखता रह गया। विभाग का सैक्रेटरी मुसलमान था। इस कारण उसने कह दिया, 'आपकी तजवीज भी भेजी जा सकती है। मन्त्रीमण्डल में फैसला कर लीजियेगा।'

बलूजा मान गया और सैक्रेटरी आज्ञा लिखाने चला गया।

:4:

इसी दिन सत्यवती तीसरे प्रहर पुनः रोहिणी की माँ के घर जा पहुंची। उसे विदित था कि रोहिणी मध्याह्नोत्तर दो बजे कॉलेज से आती है।

सत्यवती ने मकान के बाहर लगी घंटी बजायी तो रोहिणी, जिसने अपना स्टडी रूम मकान की नीची मंजिल पर ही बैठक घर के बगल में बनाया हुआ था और जो वहाँ बैठी अपना पढ़ाई का काम कर रही थी, घंटी सुनकर उठी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाजा खोलकर देखने लगी कि कौन घंटी बजा रहा है। उसने देखा कि बलूजा साइब की माँ है, तो वह हँस पड़ी।

सत्यवती ने इसे एक अच्छा लक्षण समझा। वह भीतर आ गयी और बोली, 'कल तो मैं तुम से समाचार पा भागी थी। मैं लड़के को पकड़े जाने से पूर्व सचेत करना चाहती थी। इस कारण तुम लोगों से कुछ कहने का समय ही नहीं था। वह कहने के लिये ही आज आयी हूँ।'

रोहिणी ने सत्यवती को अपने स्टडी रूम में ले जाते हुए पूछा, 'अब तो चाय का समय हो रहा है। मंगवाऊँ?'

'हाँ, इसीलिए इस समय आयी हूँ। मैं एक बात से बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने कमल के मन में अपने लिये ज़बरदस्त मोह पैदा कर रखा है।'

'वह मुझे ही अपनी माँ समझता मालूम होता है।'

'यही तो कह रही हूँ। मैं इससे प्रसन्न हूँ।'

दोनों स्टडी रूम में कुर्सियों पर बैठ गई थीं। अब रोहिणी ने कहा, 'मैं आपको आज एक अन्य बात बताती हूँ। मैं अपने कॉलेज के काम से त्याग-पत्र दे आयी हूँ।'

'क्यों?'

मैं आपके लड़के के अधीन काम नहीं करना चाहती। वह अब शिक्षा मन्त्री बन गये हैं। हमारी प्रिंसिपल मिसेज खुराना भी यही पसंद करती हैं और उन्होंने भी त्याग-पत्र दे दिया है।'

सत्यवती भौंचक्क मुख देखती रह गयी। इस समय सेविका को बुलाने के लिये रोहिणी ने मेज पर रखी घंटी बजायी। सेविका आई तो उसने माँ को और कमल को नीचे बुलाने के लिये कह रोहिणी ने पुनः कहा, 'मेरे त्याग-पत्र का कारण यह है कि सरकार ने यह प्रकट किया है कि कोर्ट में किसी प्रकार की छलना नहीं की गयी। इसी कारण आपके पुत्र के विपरीत वारण्ट वापस लिये गये हैं।

'इसका मतलब है कि मेरा विवाह सत्य ही आपके पुत्र से हो चुका है। अब वह किसी भी दिन मेरा अगुवा कर मुझ पर बलात्कार कर सकते हैं क्योंकि पत्नी से यह कर्म जुर्म नहीं। इस कारण मैं अब लाहौर से ही लापता होने वाली हूँ।'

'और उस कोर्ट में स्वीकृति को सत्य ही क्यों नहीं मान लेतीं?'

'माताजी! यह नहीं हो सकता। मैंने दूसरा विवाह न करने का निश्चय किया हुआ है। साथ ही आपके सुपुत्र विवाह करने योग्य रहे नहीं। वे गन्दी नाली में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल पीने का स्वभाव बना चुके। कुछ भी हो। मैं एक जालसाज़ की बीवी नहीं बन सकती।'

'मगर जब अदालत कहेगी कि जालसाजी नहीं हुई तो तुम यह कैसे इनकार कर सकोगी?'

'किसी को कहने की आवश्यकता नहीं। अन्तरात्मा में समझने और कचहरी में लिखे जाने में अन्तर है। कचहरी पर सरकार की मुहर है।

'मैं जीजा जी को भाई मानती थी। अब भी भाई मानती हूँ। यद्यपि पतित हुए भाई में सुधार हो सकता है, परन्तु वह पति नहीं बन सकता।'

सत्यवती भौंचक्क मुख देखती रह गयी। फिर अति दयनीय भाव में उसने कहा, 'इसमें कुछ तुम्हारे सौन्दर्य का भी हाथ है। साथ ही जब तुम उस घर में ऐसे रहने आई थीं मानो तुम्हारा अपना घर हो, तो वह समझा था कि तुम उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लोगी। यह ठीक है कि उसने गलत मार्ग अपनाया है। इसके लिये मैं समझती हूँ कि वह क्षमा के योग्य है।'

'ठीक है माताजी! मैं स्वयं उनके विरुद्ध कुछ नहीं करूँगी, परन्तु वह मुझ पर बलात्कार न कर सकें इसका प्रबन्ध तो करूँगी ही।'

'परन्तु रोहिणी! अब तुमने कॉलेज की सेवा छोड़ दी है, इस कारण किसी पुरुष के संरक्षण में चली जाओ तो ठीक नहीं होगा क्या?

'तुम दोनों का कोर्ट में तो विवाह हो ही चुका है। वैसे हिन्दू रीति से विवाह का प्रबन्ध भी किया जा सकता है।'

इस समय कंचन बच्चे को लिये हुए आ गयी। कमल पहले दिन वाली स्त्री को देख नानी से लिपट गया। सत्यवती हंस पड़ी। उसने हँसते हुए कहा, 'बहुत सिखा रखा है आपने बच्चे को। मैं इसके ले जाने के लिए नहीं आई हूँ।

'एक बात रोहिणी ने बताई है कि इसने कॉलेज की नौकरी छोड़ दी यह तो होना ही चाहिये। अब यह एक गृह-स्वामिन का दायित्व संभाल सकती है।'

रोहिणी ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। सेविका आयी और चाय तथा खाने का सामान मेज पर लगा गई।

चाय पीते हुए कंचन ने कहा, 'देखिये बहन जी! मैं इसे राय नहीं दे सकती कि इस प्रकार छलना खेलने वाले व्यक्ति के घर में जाये। इस पर भी यदि यह जाना चाहे तो मैं इसे रोकूंगी नहीं।'

इस प्रकार कंचन ने संकेत से यह कह दिया कि रोहिणी स्वयं ही अपने मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भाव प्रकट करे। वैसे जब से रोहिणी ने उसे यह बताया था कि वह कॉलेज की नौकरी से त्याग पत्र दे आयी है, तब से वह चिन्ता अनुभव कर रही थी। रोहिणी के पिता तीन सौ बीस रुपये वेतन लाते थे और वह रोहिणी का पालन-पोषण कर सकते थे, परन्तु रोहिणी का पुस्तकों का व्यय और उसके रहने के स्तर को वह सहन नहीं कर सकते थे। ऐसा कंचन का विचार था। रोहिणी का पिता अभी कार्यालय से लौटा नहीं था और रोहिणी के त्याग-पत्र की बात उससे नहीं हुई थी।

रोहिणी अपने त्याग-पत्र से पूर्ण रूप से सन्तुष्ट थी। घर आकर उसका सामना सत्यवती से हो गया तो उसकी बातों को सुन उसके मन की ग्लानि कुछ बढ़ी ही थी।

अब सत्यवती ने कह दिया, 'बहिन जी! मुझे रोहिणी मोहिनी से भी बढ़कर पसंद है। जब यह हमारी कोठी में रहने आयी थी तब ही मैंने सोचा था कि इसे अपनी बहू बनाऊँगी। परन्तु रत्नचन्द तथा इसने इस विषय में कोई बात नहीं की तो मैंने विचार किया कि शायद इसे मेरे सम्मुख लज्जा लगती हो। इसी कारण मैंने हरिद्वार जाने का कार्यक्रम बना लिया, जिससे मेरे पीछे ये दोनों आपस में निर्णय कर लें। परन्तु मैने आकर देखा कि दोनों ही मूर्ख निकले और परस्पर झगड़ पड़े हैं।'

जब रोहिणी ने सत्यवती के भाव सुने तो उसके प्रति उसकी ग्लानि बढ़ गयी। वह समझ गयी कि यह औरत अति कलुषित मन की है। वह यह समझने लगी थी कि अकेले उसके पुत्र की कोठी में रहते उसकी अविवाहित पत्नी बन जायेगी।

इस ग्लानि के कारण उसने सत्यवती की बातों का उत्तर देना अपने समय का अपव्यय करना समझा।

चाय समाप्त हुई तो सत्यवती ने कहा, 'देखो बेटी! मैंने तुमको मार्ग बता दिया है। निःसंदेह रत्नचन्द की आय में वृद्धि होने वाली है। पहले भी उसने बहुत बड़ी सम्पत्ति बना रखी है। तुम्हारे वहाँ से चले जाने पर वह ऐमिली पर अपनी कमाई व्यर्थ गंवाने लग रहा है। तुम आओगी तो यह सब कुछ तुम्हारा ही होगा। तुम्हारे भी बच्चा होगा। स्कूल की तीन सौ रुपये महीना की नौकरी की क्या गणना है। तीन-चार हजार महीना के सामने।

'मैं अब दो दिन उपरान्त आऊँगी और समझती हूँ कि तुम भी अपने मन को तैयार कर लोगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो अब मैं चली।' इतना कह वह उठी और कमल की गाल को थपथपाने के लिये उसने हाथ बढ़ाया तो कमल चिल्लाकर रोहिणी से चिपट गया।

रोहिणी ने उसकी पीठ पर प्यार देकर उसे सांत्वना देनी आरम्भ कर दी। सत्यवती ने ताँगा बाहर खड़ा कर रखा था। वह उसमें सवार हो चल दी।

जब वह जा चुकी तो माँ ने पूछा, 'अब बताओ?'

'माँ! इस गंदी नाली में स्नान नहीं होगा।'

इतना कह वह अपने काम में लग जाने के लिये अपनी मेज पर आ बैठी। कमल को उसने भूमि पर बैठा दिया। उसके सामने कुछ खिलौने रख दिये और अपने काम में लीन हो गयी।

माँ बच्चे को उठा ऊपर की मंजिल पर चली गयी। रोहिणी ने अपनी कलम उठाई ही थी कि पुनः बाहर की घंटी बजी।

रोहिणी ने उठ कर द्वार खोल देखा कि कौन है। महेन्द्र खड़ा था। आज उसके हाथ में एक फाइल थी।

'आओ भैया! अन्दर आओ।' रोहिणी ने उसके लिये मार्ग देते हुए कहा।

महेन्द्र ने कहा, 'भाभी! मैं आज कुछ व्यापार की बात करने आया हूँ।'

घंटी की आवाज सुन कंचन भी ऊपर जाती-जाती रुक गयी और महेन्द्र की आवाज़ पहिचान वहीं आ गयी। उसने पूछ लिया, 'सगुनी कैसी है?'

'माँ जी! खूब मजे में है। चलती-फिरती और खाती-पीती हैं।'

'ठीक है। मैं समझती हूँ कि वह एक लड़के को जन्म देगी।'

'कुछ भी हो।' महेन्द्र ने कह दिया, 'उसका स्वभाव वही होगा, जो उसकी माँ का है। मेरी उसमें रुचि नहीं है।'

रोहिणी ने मेज पर पड़ी घण्टी बजाई तो सेविका भी ऊपर से आ गयी। उसके आते ही उसको चाय लाने के लिये कह दिया। सेविका गयी तो महेन्द्र ने बताया, 'इकतीस मार्च को छापाखाने का व्यापारिक वर्ष समाप्त हुआ है और उसका हिसाब-किताब मैंने तैयार किया है। वह मैं छापाखाने के पत्तीदार को बताने आया हूँ।'

पूर्ववत रोहिणी कहने वाली थी कि उसकी व्यापार में रुचि नहीं, परन्तु जब से उसने त्याग-पत्र दिया था, वह मन में एक योजना बना रही थी और उस योजना में उसके देवर की पुस्तकों की दुकान और छापाखाना एक अंग था। अतएव उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी कुछ नहीं कहा। उसकी अपनी योजना अभी बहुत ही प्रारम्भिक स्तर पर थी। परिणाम स्वरूप वह पूर्ववत् यह नहीं कह सकी थी कि उसकी इसमें रुचि नहीं। वह चुपचाप महेन्द्र का मुख देखती रही।

महेन्द्र ने अपनी फाइल खोल उसमें से एक कागज निकाल रोहिणी के सामने रखकर कहा, 'यह छापेखाने का लाभ-हानि चिट्ठा है। इसमें पूरे बीस हजार रुपये थे। इस समय छापेखाने की कीमत चौदह हजार रुपये है और सामान छः हजार का है। ग्राहकों से लेने और बैंक में जमा अठारह हजार रुपये है। इस प्रकार हमें वर्ष अट्ठारह हजार की आय हुई है।

'इसके लिये मैं नौ हजार का चैक आपके नाम लेकर आया हूँ।' इतना कह उसने फाइल में से चैक निकालकर सामने कर दिया।

रोहिणी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'पिछले वर्ष की भांति यह भी बैंक में जमा क्यों नहीं करा दिया?'

महेन्द्र हँस पड़ा और बोला, 'कराने गया था, परन्तु बैक वालों ने बिना आपके हस्ताक्षर के धन जमा करना स्वीकार नहीं किया। आपने उनको यह निर्देश दे रखा है।'

इस पर रोहिणी भी हँस पड़ी और बोली, 'वह ढंग मुझे पसंद नहीं। साथ ही अब मेरा विचार कुछ बदल गया है। इस कारण यह चैक ले रही हूँ।

'इस पर भी इसके प्रयोग का अभी मैंने विचार नहीं किया। इस विषय में एक योजना बन रही है। वह परिपक्व होने पर तुमको बताऊँगी।'

महेन्द्र ने कहा, 'भाभी! बहुत-बहुत धन्यवाद है। जब आप अपनी योजना बताएँगी तो मैं भी उसमें राय दे सकूँगा।

'अब ऐसा करिये कि बैंक डिपोजिट स्लिप भरकर इस चेक को दर्ज कर नीचे हस्ताक्षर कर मुझे दे दें। मैं बैंक में कल भेज दूँगा। आपको वहाँ जाने का कष्ट नहीं करना होगा।'

इतना कह महेन्द्र ने बैंक की डिपोजिट स्लिप जो वह साथ ले आया था सामने कर दी।

इस समय चाय आयी तो महेन्द्र और रोहिणी पीने लगे। इस सब बात को देख कंचन के मुख पर संतोष की झलक दिखाई देने लगी।

चाय पीते हुए रोहिणी ने बताया, 'भैया! मैंने कॉलेज की नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्र चाय पीता-पीता रुक गया और प्रसन्न हो बोल उठा, 'वैल डन भाभी! अब बताइये, हमारे छापाखाने में काम करेंगी?'

'मेरी योजना इससे भिन्न है?'

'क्या है ?'

'यह अभी परिपक्व नहीं । जब समय आयेगा तो बताऊँगी। अभी तो आज त्याग-पत्र दिया है और इसकी स्वीकृति आने पर ही योजना बन सकेगी।'

:5:

इसके कई दिन उपरान्त की बात है कि रौली स्मिथ रोहिणी से मिलने कॉलेज में आयी। वैसे वह तब से ही उसे और कमल से मिलने आती रहती थी, जब से वे दोनों बलूजा की कोठी छोड़कर आयी थी। रत्नचन्द रौली को नियमित वेतन देता रहा था। रोहिणी भी पचास रुपये महीना की सहायता देती थी। रौली कमल से बहुत हेलमेल रखती थी।

आज वह उसे कॉलेज में मिलने आयी। रोहिणी अपनी पढ़ाई समाप्त कर कार्यालय में हाजिरी लगा जाने ही वाली थी कि वह कार्यालय के बाहर खड़ी मिली। उसने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा, 'रौली! किस कारण आयी हो?'

'आपसे पृथक में मिलने के लिये।'

'तो आओ! वहाँ बाहर पेड़ के नीचे खड़े हो बात करेंगे।'

दोनों बरामदे से निकल लॉन के किनारे पेड़ के नीचे जा खड़ी हई। रौली ने अपने आने का कारण बता दिया।

'लगभग दो सप्ताह से मैं बलूजा हाऊस में रहती हूँ। वहाँ माताजी ने मुझे बुलाकर रख लिया है। वहाँ सब पुरुष सेवक हैं। उन्होंने मुझे अपनी सेवा के लिये रखा है।

'आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे यह कहा है कि मैं आपके घर जाऊँ और कमल को खेलाते-खेलाते लेकर वहाँ कोठी पर पहुँच जाऊँ । यह उनकी आज्ञा है कि मैं आपकी अनुपस्थिति में ही वहाँ जाऊँ और कमल को ले आऊँ।

'मैं वहाँ जाने के स्थान पहले आपको बताने चली आयी हूँ। मैं जानना चाहती हूँ कि मैं यह अपहरण करूँ अथवा न?'

रोहिणी सत्यवती की मानसिक अवस्था का यह रूप देख चकित रह गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर वह विचार करने लगी कि इस कुटिल दादी और छली पिता का पुत्र क्या होगा? पुत्र भी वैसा ही होगा, यह विचारकर उसने एक क्षण में ही निश्चय किया और कह दिया, 'मुझे इसके वहाँ कोठी में जाने पर आपत्ति नहीं है। परन्तु रौली! इस चोरी-चोरी की क्या आवश्यकता है? वे मुझसे इसे माँग लें तो मैं तुरन्त वापस कर दूंगी। इस प्रकार तुम चोरी-चोरी ले जाओगी तो मैं तुम्हें पुलिस में रिपोर्ट कर पकड़वा दूँगी।

'यह तो ठीक है कि मिनिस्टर साहब तुम्हें छुड़ा देंगे, परन्तु यह तुम्हारी और मिनिस्टर साहब की बदनामी का कारण बन जायेगा।

'देखो! तुम कोठी में लौट जाओ। उनसे कह देना कि मैं मिली थी और मैंने कहा है कि बच्चा तुम्हारे पास रह सकेगा, इस कारण मैं बच्चे को देने के लिये तैयार हूँ। मिनिस्टर साहब एक दस्ती चिट्ठी लिख दें कि कमल को रौली के हवाले कर दिया जाये।

'कमल उनकी सम्पत्ति है। उनको सही-सलामत वापस मिल जाये तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है?'

रौली समझ गयी और बलूजा लौज को लौट गयी।

उसी सायंकाल रौली मिनिस्टर साहब का पत्र लायी और रोहिणी ने कमल को उसके हवाले कर दिया। कमल के चले जाने पर रोहिणी ने चित्त में शान्ति अनुभव की। वह यह समझी थी कि मोहिनी के पति से यह अन्तिम तिनका भी टूटा।

परन्तु ऐसा हो नहीं सका। रोहिणी और मिसेज खुराना को त्यागपत्र दिये हुए दो महीने होने जा रहे थे। दोनों ने रिमाइण्डर भेजे थे कि उनको कार्य से शीघ्र मुक्त किया जाये।

एक दिन रोहिणी को प्रिंसिपल खुराना ने बुलाकर बताया, 'रोहिणी जी! हमारे रिमाइण्डर का उत्तर आ गया है। आपको आज ही छुट्टी कर देने की बात लिखी आ गयी है। आप आज ही जा आपके स्थान पर एक नया लेक्चरार कल आयेगा। परन्तु मुझे यह कहा गया है कि मेरे स्थान पर कार्य करने वाला कोई उपयुक्त प्रध्यापक मिला नहीं। इसलिये मैं कुछ दिन और काम पर आने का कष्ट करूँ।'

'ठीक है! मैं आज आप सबको नमस्ते कहकर चल दूँगी।'

उसने अपनी श्रेणियों में यह समाचार सुनाया तो विद्यालय की लड़कियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शिक्षक कमरे से बाहर निकल आये और वही खड़े-खड़े ही एक वृहत् विदाई की मीटिंग हो गयी।

रोहिणी ने सबको हाथ जोड़ उनसे विदा माँगते हुए कहा, 'मैं शिक्षा का कार्य अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर आयी थी। परन्तु मेरे भाग्य में प्रतीत नहीं होता। इस कारण यह घटना घटी है। मैंने स्वयं अपने काम से त्याग-पत्र दिया है।'

इसके उपरान्त उसने सब में अपने जाने का कारण बता दिया।

जब सहयोगियों और विद्यार्थियों को कारण पता चला तो वहीं खड़े-खड़े शिक्षा-मन्त्री रत्नचन्द बलूजा के विपरीत कठोर शब्दों में एक प्रस्ताव पारित किया गया और डायरेक्टर के कार्यालय में भेज दिया गया।

रोहिणी ने अन्तिम नमस्कार कही और घर को लौटी, परन्तु आज वह अपने घर पहुंची तो ऐडीशनल मैजिस्ट्रेट मिस्टर रामनाथ खुराना की मोटर गाड़ी उसके घर के बाहर खड़ी थी। वह विस्मय कर रही थी कि यह गाड़ी क्यों खड़ी है। वह प्रिंसिपल मिसेज़ खुराना को इस गाड़ी में कई बार घर आती-जाती देख चुकी थी।

वह उत्सुकता से भीतर आयी तो मैजिस्ट्रेट साहब बैठक-घर में बैठे मिले। उसने हाथ जोड़ नमस्कार कर पहला ही प्रश्न पूछा, 'तो आप मुझे अरैस्ट करने आये हैं?'

खुराना ने मुस्कराकर कहा, 'नहीं, अभी नहीं। वह करना होता तो पुलिस को साथ लेकर आता। मैं यह बताने आया हूँ कि आज एक वकील के द्वारा मेरे कोर्ट में यह अर्जी की गयी है कि बलूजा साहब की पत्नी, पति का बहिष्कार किये हुए है और उनके पास नहीं जाती। इस कारण उसको अपने पति के घर आने की आज्ञा दी जाए और यदि वह इनकार करे तो कान्जूगल राइट्स के लिये उसे पकड़कर उसके हवाले किया जाये।'

'ओह! परन्तु भाई साहब! मैं तो वहाँ जाऊंगी नहीं। आपकी आज्ञा आने पर भी नहीं जाऊँगी।'

'मैं यही आशा करता था। इस पर भी आपसे यह पूछे बिना मैं आगे कार्यवाही नहीं कर सकता था।

'इस कारण मैं आपके बयान लेने आया हूँ। आपको वहाँ कोर्ट में नहीं बुलाया। इस मुआमले में मुख्यमन्त्री और गवर्नर भी लिप्त होते हैं। इस कारण यह बयान प्राइवेट रूप में लेना चाहता हूँ। यदि इस विषय में कुछ जबरदस्ती की गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं प्रिवी कौंसिल में इस मुकदमे को उठाऊँगा और मैं समझता हूँ कि गवर्नर साहब को वापस इंग्लैण्ड जाना पड़ेगा।'

'भाई साहब! कुछ नहीं होगा। यह मुआमला राजनीति की धुरी बन जायेगा और हो-हल्ला बहुत मचेगा। मुझे तो यह भी संदेह होने लगा है कि मेरी हत्या करा दी जायेगी।'

मैजिस्ट्रेट ने कहा, 'इस पर पीछे विचार कर लेंगे। पहले तो आपके बयान होने चाहिये।'

'तो लिखिये।'

मजिस्ट्रेट ने सम्मन जो वह तैयार कर अपने साथ लाया था, रोहिणी को दिया। रोहिणी ने पढ़ा और फिर उत्तर दिया।

'मैं मिस्टर रत्नचन्द बलूजा, शिक्षा-मन्त्री पंजाब सरकार की पत्नी नहीं हूँ। मेरा उनसे कभी विवाह नहीं हुआ। इस कारण मैं समझती हूं कि यह सम्मन भूल से मुझको भेजा गया है। मेरे पति दिवंगत श्री रवि बजाज थे। उनका देहान्त हुए आज अढ़ाई वर्ष हो चुके हैं।'

'बहुत खूब!' खुराना ने कहा और लिखकर नीचे रोहिणी से हस्ताक्षर करा उसने बयान अपने ब्रीफकेस में रख लिये। तत्पश्चात वह उठकर जाने लगा तो कंचन ने पूछ लिया, 'आप चाय तो लेंगे नहीं। आप सरकारी काम पर हैं न?'

'परन्तु माताजी! सरकारी लोग भी तो चाय पिया करते हैं, इस चाय का बिल सरकार से वसूल नहीं करूँगा।'

रोहिणी ने घंटी बजायी और जब तक सेविका आये, वह मजिस्ट्रेट को बताने लगी, 'मेरा त्याग-पत्र स्वीकार होकर, मुझे अपने कार्य से छुट्टी मिल गयी है।'

'ओह! और आपकी प्रिंसिपल साहिबा को?'

'उनके विषय में लिखा आया है कि उनके स्थान पर काम करने लिये कोई उपयुक्त व्यक्ति मिला नहीं। इस कारण उनको अभी कुछ दिन और काम करना पड़ेगा।'

'तो आज कोर्ट में प्रस्तुत इस अर्जी में और आपके त्याग-पत्र में सम्बन्ध प्रतीत होता है?'

'हो सकता है! मुझे तो कुछ यह समझ आया है कि इस घर पर आज रात छापा मारकर मेरा अपहरण किया जायेगा और मुझसे बलात्कार किया जायेगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो मैं आपके घर को पुलिस की सुरक्षा में ले लेता हूँ।'

'परन्तु पुलिस और मैजिस्ट्रेट साहब गवर्नर के अधीन हैं न? आपका हुक्म नहीं चल सकेगा। देखिये भाई साहब! मैंने एक बार शिक्षा-बोर्ड के सम्मुख किसी अन्य विषय पर बयान देते हुए कहा था कि हमारा राष्ट्र रण्डवा हो गया है।

'मेरा मतलब था कि हमारी जाति की श्रीं, ह्रीं तथा क्लीं अर्थात बुद्धि, लक्ष्मी और सामर्थ्य विदेशियों ने हर ली है। तीन-तीन पत्नियों के हरण से पूर्ण राष्ट्र रण्डवों की भाँति है। यह अब श्रीं, ह्रीं और क्लीं से विहीन हो घूमता है। अब इस रण्डवे-राष्ट्र पर रण्डवे-मिनिस्टर बन गये हैं। इससे यहाँ रहते कल्याण की आशा नहीं।

'इस कारण मैं इस प्रान्त को छोड़ने का विचार रखती हूँ।'

इस उपमा पर खुराना साहब हँस पड़े और बोले, 'तब तो हिन्दुस्तान ही छोड़ देना चाहिये।'

'पंजाब से बाहर इस विधुर मन्त्री महोदय की चल नहीं सकेगी।'

इस प्रकार की बातें हो रही थी कि रौली स्मिथ वहाँ आ पहुंची। वह बैठक घर में रोहिणी को किसी बाहरी व्यक्ति से बातें करते देख द्वार पर खड़ी रह गयी। दूर से ही हाथ जोड़ प्रणाम कर वह ऊपर की मंजिल की ओर जाने लगी तो रोहिणी ने आवाज दे बुला लिया, 'रौली बहन! आ जाओ। कैसे आयी हो?'

'आपसे मिलने आयी हैं। आप खाली हो जाये तो बात करूंगी। अभी मैं आपके स्टडी-रूम में बैठती हूँ।'

'हाँ बैठो।'

रौली स्टडी-रूम में गयी तो रोहिणी ने खुराना साहब को इस स्त्री का परिचय दे दिया, 'यह बलूजा साहब के बच्चे की आया, बलूजा साहब की पैरायर और उनके बच्चे को पेट में लिये हुए है।'

'ओह! तो यह यहाँ किसलिये आयी है?'

'कुछ वहाँ का सन्देश लायी है।'

'तो उसको यहीं बुला लो। तनिक मैं भी सुन लूं कि क्या सन्देश लायी है?'

इस समय सेविका चाय बनाकर ले आयी। साथ ही कंचन भी आयी। रोहिणी ने सेविका को एक अन्य व्यक्ति के लिये प्याला और प्लेट ले आने को कह दिया।

साथ ही माँ से कहा, 'माँ! रौली आयी है और उसे यहीं बुला लो। वह भी चाय लेगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंचन स्टडी-रूम में बैठी रौली को ले आयी।

रौली आयी तो रोहिणी ने बताया, 'यह मेरे भाई साहब है। चाय लेने लगे थे तो विचार आया कि तुम्हें भी पीने का निमन्त्रण दे दूँ।'

रौली ने खुराना को नमस्कार कर दी। इस पर रोहिणी ने रौली का परिचय करा दिया-

'मैं जब वहाँ, मेरा मतलब है बलूजा लॉज में रहने गयी थी तो यह वहाँ उनके और मेरी बहन मोहिनी के शिशु की दायी के रूप में रहती थी। यह विधवा है। इनके पति को मरे तीन वर्ष हो चुके हैं। इनका अपना एक लड़का भी है। नाम जौन है।

'मेरे वहाँ पहुंचते ही मुझे पता चला कि बलूजा साहब इनके साथ पत्नी का-सा सम्बन्ध रखते हैं और फिर इसके गर्भ ठहर गया।

'इसके उपरान्त इसको आज्ञा हो गयी कि यह किसी से विवाह कर उसे अपने होने वाले बच्चे का बाप घोषित कर दे। यह नहीं मानी। इस पर इसको घर से निकाल दिया गया। जब इसने कोर्ट में दावा ने करने की धमकी दी तो इसकी एक सौ बीस रुपये महीना पेंशन नियत कर दी गयी।

'उसी समय मैं उनकी कोठी से अपनी माँ के घर आ गयी थी। बलूजा साहब का बच्चा भी मेरे साथ आ गया था।

'जब बलूजा साहब की माताजी आयीं तो बच्चे को ले जाने लगीं। पर बच्चा चीखें मार-मारकर रोने लगा, वह उसे ले जा नहीं सकीं।

'इस कारण बच्चे की दाई को पुनः बुलाया गया और यह देखने के उपरान्त कि बच्चा उसके पास रह सकेगा, इसे पुनः कोठी में रख लिया गया है।

'यह मैं नहीं जानती कि किस रूप में। हाँ, बच्चे ने इसके साथ जाना स्वीकार कर लिया है।

'यह अब उस कोठी में बच्चे की दाई के रूप में रहती है।'

इस समय तक चारों चाय लेने लगे थे। जब रोहिणी ने रौली का परिचय दे दिया तो रौली बोल उठी, 'बहन जी! नहीं! वहाँ बहुत गड़बड़ हो रही है। इसलिये मुझे यहाँ भेजा गया है।'

'क्या गड़बड़ हो रही है?' रोहिणी का प्रश्न था।

'जिस दिन बच्चा गया था, उस दिन से ही वह उदास-उदास-सा रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी फीड दिन-प्रतिदिन कम होती जाती थी। अब दो दिन से उसने एक बूंद दूध नहीं लिया और अति दुर्बल अवस्था में पड़ा है।'

'तो किसी डॉक्टर को दिखाया है ?'

'हाँ! डॉक्टर मदान के इलाज में है। परन्तु वह बच्चे की अवस्था को सुधार नहीं सका। मुझे आपके घर भेजा गया है कि उसकी जान आपके आने से बच सकती है। जब भी कोई स्त्री वहाँ आती है, वह उसके मुख पर देखने लगता है और फिर उसे वह न पा, जिसकी खोज में वह है, वह मुख मोड़ लेता है। इस समय वह अत्यन्त दुर्बल हो रहा है।'

'तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ?'

'माताजी का कहना है कि आप वहाँ रहने आ जायें और वह शपथपूर्वक कहती हैं कि आपकी सब प्रकार से रक्षा की जायेगी।'

मैजिस्ट्रेट हँस पड़ा और हँसता हुआ रोहिणी से पूछने लगा, 'क्यों रोहिणी बहन! तुम क्या चाहती हो? यदि तुम वहाँ जाना चाहो तो मैं तुम्हें पुलिस की रक्षा में वहाँ भेज सकता हूँ।'

'जी नहीं! मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। बच्चे से मेरा मोह अवश्य है परन्तु उससे अधिक मुझे अपने भविष्य से मोह है।

'देखो रौली बहन! यदि माता जी को स्वीकार हो तो बच्चे को लेकर यहाँ आ जायें। मैं यथा सम्भव उसे स्वस्थ करने का यत्न करूंगी। मगर मैं वहाँ नहीं जाऊंगी।'

खुराना को इस सब में भी कुछ रहस्य समझ आ रहा था। वह इन घटनाओं का सम्बन्ध जोड़ रहा था। आज ही बलूजा के वकील ने यह अर्जी की थी कि उसकी बीवी को उसके पति के घर में रहने की आज्ञा दी जाये और आज ही यह दायी बरगला कर रोहिणी को बलूजा की कोठी में ले जाना चाहती है। वहाँ इसकी दुर्दशा की जा सकती है और पीछे जब उस पर दावा किया जायेगा कि उसने कुछ अनुचित व्यवहार किया है तो कह देगा कि वह उसकी विधिवत शादीशुदा पत्नी है और उससे यह व्यवहार क्षम्य है।

रोहिणी का रौली को उत्तर सुन कर वह समझ गया कि रोहिणी भी इसी दिशा में विचार करती प्रतीत होती है। इस कारण वह बच्चे की दायी का उत्तर सुनने की प्रतीक्षा करने लगा।

रौली ने अपनी चाय समाप्त करते हुए कहा, 'मुझे मंत्री जी की मोटर गाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भेजा गया है जिससे में आपको तुरन्त ले जा सकूं।'

'तो ऐसा करो, 'रोहिणी ने कह दिया, 'तुरन्त गाड़ी में जाओ। इसी में बच्चे को लेकर आ जाओ। उसके आते ही मैं अपने डॉक्टर को बुला कर उससे उसकी चिकित्सा आरम्भ करा लूंगी।'

रौली के मन में क्या विचार आया, उसने बताया नहीं। वह उठी और बाहर निकल गयी।

खुराना ने कहा, 'मैं इस औरत का पीछा करना चाहता हूँ।'

'यह अवश्य बलूजा लौज पर गयी होगी?'

'मैं भी वहीं जा रहा हूँ। तनिक उनसे भी आपके विषय में एक दो प्रश्न पूछना चाहता हूँ।'

:6:

कमल सत्य ही रुग्ण था। उसका रोग डॉक्टर ने वियोग कहा था और सत्यवती इसको समझती थी। इस कारण जब वह चिकित्सा के सब साधनों का प्रयोग कर चुकी तो उसको यह सूझी कि रोहिणी के मन में बच्चे के प्रति मोह जागृत कर उसे बुलाना चाहिये।

पहली रात उसने रत्नचन्द से राय की थी। इस पर बलूजा ने कह दिया, मैं इसका प्रबन्ध करता हूँ और उसने लाहौर के एक वकील खन्ना को बुलाकर एक अर्जी ड्राफ्ट की और उसे ए. डी. एम. के इजलास में भेज दिया।

खन्ना ने ए. डी. एम. मिस्टर रामनाथ की अदालत में अर्जी पेश की तो मैजिस्ट्रेट को पूर्ण मामला स्मरण हो आया। परिस्थिति यह थी कि उसकी पत्नी ने इसी कारण तो प्रिंसिपल के पद से त्याग-पत्र दिया हुआ था। इस कारण उसने अर्जी पढ़ते ही खन्ना साहब से कहा, 'जहाँ तक मुझे स्मरण है इस औरत ने बलूजा साहब से विवाह हुआ स्वीकार नहीं किया। इस कारण आपकी अर्जी पर उन के बयान होने के उपरान्त ही हुक्म जारी हो सकता है।'

इस पर खन्ना साहब ने एक अन्य पत्र खुराना साहब के सामने रख दिया। यह चीफ मिनिस्टर का पत्र था। पत्र पर अर्जेण्ट लिखा था और कहा था, 'इस स्त्री को पुलिस भेज पकड़वा कर इसके पति के सुपुर्द किया जाये।'

खुराना साहब ने अपने पेशकार को कह दिया कि चीफ मिनिस्टर के इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र को भी फाइल में लगा दिया जाये।

इस पर खन्ना ने कहा, 'पर हुजूर! यह डी. ओ. है।'

'हाँ! परन्तु यह सीक्रेट नहीं है। डेमी-औफिशियल को मैं फुल औफिशियल कर रहा हूँ।'

'यह आप नहीं कर सकते। मैं प्रार्थना करूंगा कि इसे मुझे वापस कर दिया जाये?'

'हाँ! तब मैं समझूँगा कि यह मुझे नहीं मिला।'

खन्ना ने चीफ मिनिस्टर का पत्र वापस ले लिया। इस पर खन्ना साहब ने कहा, 'मेरी अर्जी अर्जेण्ट है?'

'मैं इस पर आर्डर के लिये कल की तारीख देता है। इससे पहले की तारीख नहीं दे सकता। मुझे रोहिणी देवी के शपथपूर्वक बयान लेने हैं।'

विवश खन्ना लौट गया। खुराना ने उस दिन का काम जल्दी-जल्दी समाप्त किया और रोहिणी के लिये सम्मन जारी करा स्वयं ही उसे लेकर रोहिणी के घर जा पहुंचा।

वह चाहता था कि रोहिणी शपथपूर्वक यदि यह बयान दे दे कि उसका विवाह बलूजा के साथ नहीं हुआ तो फिर पुराने केस खुल जायेंगे और देश में एक सनसनी पैदा करने वाला मुकद्दमा शुरू हो जायेगा।

वह रोहिणी के घर पहुंचा तो वह अभी कॉलेज से नहीं लौटी थी। उसकी विदाई का जलसा कॉलेज के लॉन में हो रहा था।

खुराना को एक घंटा-भर प्रतीक्षा करनी पड़ी और जब वह रोहिणी के बयान लेकर चाय लेने ही लगा था कि रौली स्मिथ वहाँ पहुँच गयी।

रौली स्मिथ रोहिणी के घर से लौट अभी सत्यवती को रोहिणी का उत्तर सुना ही रही थी कि नत्थूराम भीतर आया और बोला, 'मजिस्ट्रेट साहब वजीर साहब से मिलने आये हैं।'

सत्यवती ने कह दिया, 'कह दो! मिनिस्टर साहब घर पर नहीं हैं।'

नत्थूराम बाहर जाने लगा था कि रौली ने उसे रोक लिया, 'चाचा! ठहरो।'

नत्थूराम रुका तो रौली ने कहा, 'यह मैजिस्टेट अभी जब मैं वहाँ गयी थी, रोहिणी बहन से बातें कर रहे थे। मैंने इनके सामने ही बच्चे की हालत बतायी थी और रोहिणी जी ने इनके सामने ही मुझे यह कहा है जो मैंने कहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं समझती हूं कि यह भी इसी के विषय में कुछ कहने आये हैं। मेरी राय है कि इनसे मिल लीजिये। माँ जी! कमल की जान बच जायेगी।'

सत्यवती ने कुछ विचार किया और नत्थूराम को कहा, 'उनको ड्राइंग-रूम में बैठाओ। मैं आती हूँ और साहब को उनके दफ्तर में टेलीफोन कर दो कि उनसे कोई आवश्यक भेंट के लिये कोठी पर आया है। वह चाहता है कि आप तुरन्त यहाँ आ जायें।'

नत्थूराम बाहर गया तो सत्यवती ने वस्त्र बदले और बाहर ड्राइंग रूम में आ गयी। इस समय तक खुराना स्वयं बलूजा से टेलीफोन करने लगा था।

सत्यवती वहां पहुंची तो खुराना ने ही कहा, 'आपका सेवक मिनिस्टर साहब को टेलीफोन कर रहा था। मैंने उचित समझा है कि मैं स्वयं ही उनको यहाँ बुला लें। मुझे उनसे भी काम है।'

'उनके अतिरिक्त और किससे काम है?'

'आपका परिचय क्या है?' खुराना ने पूछा।

'मिनिस्टर साहब की माँ हूं।'

'तो आपसे भी काम है।'

'बताइये।'

'मैं बलूजा साहब के बच्चे को देखने आया हूँ।'

'किसलिये ?'

'इसलिये की यदि वह मर गया तो आपके खिलाफ हत्या का मामला दर्ज करा दूँगा।'

सत्यवती के पाँव तले से मिट्टी खिसकने लगी। उसने घबराते हए कहा, 'तो आइये! आप ही देख लीजिये।'

खुराना उठ सत्यवती के पीछे नर्सरी में चला गया। वहाँ एक बालक अति दुर्बल अवस्था में, मानो सूखा-रोग का रोगी हो, खाट पर पड़ा था और रौली स्मिथ वहाँ बैठी हुई थी।

रौली मैजिस्ट्रेट को आते देख उठ खड़ी हुई और बोली, 'देख लीजिये।'

खुराना ने बच्चे की गालों पर उँगली लगा देखा तो वह ज्वरग्रस्त प्रतीत हआ। उसने पछा, 'इसे कब से ज्वर आ रहा है?'

'आज पाँच दिन हो गये हैं?' सत्यवती ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'खाने को क्या देते हो?'

'अब तो यह कुछ लेता ही नहीं। ज़बरदस्ती चम्मच से इसके मुख में दूध डालते हैं तो वह इधर-उधर बह जाता है। कोई-कोई बूंद ही भीतर जाती है।'

'देखिये माता जी! मैं इसकी पूर्ण कथा सुन चुका हूँ। आप इसे तुरन्त रोहिणी जी के घर पर भेज दीजिये। यदि चाहें तो आप स्वयं भी साथ चली जायें। उनको आपके वहाँ आने पर आपत्ति नहीं होनी चाहिये?'

'मैं मिनिस्टर साहब से पूछ कर ही जा सकती हूँ।'

'मैंने उनको बताया है कि उनकी आज की अर्जी के विषय में उनसे कुछ प्राइवेट बात करने आया हूँ और उन्होंने कहा है कि वह अभी आ रहे हैं।'

इतना कह खुराना बाहर ड्राइंग-रूम में आ गया। सरस्वती भी बाहर आ गयी। रौली भीतर बच्चे के पास रही।

सत्यवती ने बताया, 'बच्चे को जब भी चेतना होती है तो माँ-माँ करता है।'

'इसी कारण तो कह रहा हूँ कि उसे वहाँ न भेजकर आप बच्चे की हत्या कर रही हैं। यह घोर अपराध है।'

'यह उनके पिता से ही बताइयेगा। हम औरतें इसमें कुछ नहीं कर सकतीं।'

सत्यवती ने नत्थूराम को कॉफी लाने के लिये कह दिया। खुराना ने कहा, 'चाय अभी लेकर आ रहा हूँ। मैं रोहिणी जी के मकान पर गया था। आज बलूजा साहब के वकील ने एक अर्जी की थी। उसकी बाबत ही रोहिणी जी के बयान लेने तुरन्त आवश्यक थे। इस कारण मैं उनके बयान लेने वहां पहुंचा हुआ था। जब बच्चे की दायी ने बच्चे की हालत बतायी तो मैंने समझा, एक पंथ दो काज। दोनों मुआमलों में बात कर लूंगा।'

सत्यवती उत्तर नहीं दे रही थी। खुराना ही बता रहा था, 'आज रोहिणी जी का कॉलेज से त्याग-पत्र स्वीकार हो गया है और वह कॉलेज से छुट्टी कर आयी हैं। मैं समझता है कि बच्चे को वहाँ भेज दिया जाये। आप बच्चे के साथ वहाँ चली जायें और दूसरे मुआमले में मैं बलूजा साहब से बात करूँगा।'

इस समय बलूजा मोटर भगाता हुआ आ गया। वह ड्राइंग-रूम में खुराना को बैठे देख प्रसन्न हो हाथ मिलाने लगा।

'बैठिये!' खुराना ने बलूजा को भी बैठने को कहा। जब दोनों बैठ गये तो खुराना ने पुनः कहा, 'खन्ना साहब ने चीफ मिनिस्टर की डी.ओ. दिखायी थी। इस कारण मैने आपकी अर्जी पर तुरन्त आज्ञा देने से पहले रोहिणी के बयान लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक समझे। उसको कोर्ट में बुलाता तो कम-से-कम तीन दिन की अवधि हाजिर होने की देनी पड़ती। इस कारण मैं उनके घर चला गया था। वहाँ मैंने उन पर सम्मन सर्व किये और फिर उनके बयान ले लिये हैं।

'वह कहती हैं कि उनका विवाह आप से नहीं हुआ। वह आपकी पत्नी नहीं हैं और आपका दावा गलत है।'

'मगर आपके कोर्ट में ही तो शादी रजिस्टर हुई है। क्या वह प्रमाण नहीं?'

'उस पर ही तो आपत्ति थी और उस आपत्ति की जाँच के लिये आपके वारण्ट थे। उस समय गवर्नर बहादुर की आज्ञा से वारण्ट वापस लिये गये थे और डी. एम. साहब ने केस फाइल कर दिया था। फाइल के अर्थ यह नहीं कि मुकद्दमा सिद्ध हो गया है अथवा सिद्ध नहीं हुआ। इसका अर्थ केवल यह होता है कि जब तक कोई पुनः उस केस के विषय में चाराजोई न करे तब तक वह केस बंद।

'अब आपने उस कस को पुनः चालू कर दिया है। इस कारण मैं आपसे मिलने चला आया हूँ। आपका दावा है कि रोहिणी आपकी विवाहिता होने से आपके कागजी राइट्स में बाधक हो रही है।

'इस कारण मुझे उस केस को पुनः चालू करना पड़ेगा। आप क्या चाहते हैं। मैं पूछने आया हूँ। आप जैसे बड़े व्यक्ति को कानूनी स्थिति बताता हूँ।

'यदि तो आप यह दावा न करते कि आप रोहिणी देवी के पति हैं तो उस फाइल को खोलने की आवश्यकता नहीं थी। यदि रोहिणी जो यह बयान न देतीं कि उनका आपके साथ कभी विवाह हुआ ही नहीं, तो भी उस फाइल को खोलने की आवश्यकता न पड़ती।

'या तो आप अपना केस वापस ले लीजिये अथवा रोहिणी जी अपना बयान वापस ले लें। यदि इनमें से कुछ न हुआ तो मैं यह फाइल सैशन कोर्ट अथवा हाईकोर्ट को भेजने पर विवश हो जाऊँगा।'

बलूजा मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने कहा, 'आपकी बात का उत्तर कल खन्ना साहब कचहरी में ही देंगे।'

'तब ठीक है। मैं कल आपकी अर्जी पर हुक्म दे दूँगा। यदि एक बार मुआमला हाईकोर्ट में गया तो फिर यह गवर्नर के अधिकार में भी नहीं रहेगा कि इसे रोक सकें।'

इतना कह खुराना उठ खड़ा हुआ और चलने को तैयार हो गया। इस पर सत्यवती ने कह दिया, 'और दूसरे के विषय में आप क्या कहते हैं?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उसकी रिपोर्ट में पुलिस में करने जा रहा हूँ। यह पुलिस का मामला है। मैं इसमें हुक्म उसके द्वारा भेज सकता हूँ।'।

बलूजा ने पूछा, 'दूसरा क्या मामला है ?'

'मैं चलता हूँ!' खुराना ने कहा, 'माता जी आपको मेरे विचार बता देंगी।'

खुराना कोठी से निकल गया। उसके चले जाने के बाद सत्यवती ने बताया कि उसने बच्चे की हालत देख कर रोहिणी को यहाँ बुलाया था। यह मजिस्ट्रेट वहाँ रोहिणी के बयान ले रहा था। इसने रौली की बात सुनी और यहाँ चला आया। यहाँ बच्चे को देख इसने कहा है कि यदि बच्चे को रोहिणी के पास तुरन्त न भेजा गया तो बच्चे की हत्या करने का दोष हम पर लग सकता है। वह चाहता है कि उसे तुरन्त रोहिणी के घर भेज दिया जाये और चाहूँ तो मैं साथ जा सकती हूँ।'

'यह उल्टी खोपड़ी का व्यक्ति है। इसकी बीवी भी मुझसे नाराज है और रोहिणी के कहने पर अपनी बारह सौ रुपये महीने की नौकरी से त्याग-पत्र दे रही है।'

'तो बेटा! इन उल्टी खोपड़ी वालों की भी बात मान लो।'

'मैं समझता हूँ कि कमल हमारी पहुंच से दूर हो गया है। मुझे अब रौली के बच्चे की चिन्ता करनी चाहिये।'

'तो मैं कमल को लेकर रोहिणी के घर जा रही हूँ।'

रत्नचन्द टुकुर-टुकुर मुख देखता रह गया। सत्यवती लड़के की अनिश्चित मनःस्थिति देख उठी और भीतर कमल के पास चली गई। उसने रौली को कहा, 'कमल को कपड़े में लपेट लो और चलो रोहिणी के घर चलते हैं।'

रौली ने कमल को उठाया और फिर दोनों कोठी से बाहर निकल आये। बाहर बलूजा की गाड़ी खड़ी थी। वे दोनों उसमें जा बैठी और ड्राइवर को चलने के लिये कहने लगीं।

रोहिणी अपने स्टडी-रूम में मन में अत्यन्त दुर्बल अनुभव करती हुई बैठी थी। वह आज अपनी पढ़ाई पर चित्त नहीं लगा सकी थी। ऐसे समय महेन्द्र उसको मिलने आया। वह रोहिणी की योजना के विषय में अन्तिम प्रबन्ध करने आया था।

महेन्द्र ने आते ही कहा, 'मैंने आपकी योजना एक वकील को बता उसे एक ट्रस्ट का डीड बनाने के लिये कह दिया है। साथ ही उसको मैंने ट्रस्टियों के नाम बताये हैं।'

रोहिणी अपनी तत्कालीन मनःस्थिति में महेन्द्र की बात सुन और समझ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी। अब महेन्द्र ने बात समाप्त कर उत्तर की प्रतीक्षा में उसके मुख पर देखा तो रोहिणी ने कह दिया, 'भैया! आज मेरे चित्त की अवस्था ऐसी है कि मैं कुछ भी समझ नहीं सकती। तुम किसी अन्य समय आना तो बात कर सकूँगी?'

'क्यों, क्या बात है भाभी?'

रोहिणी ने मैजिस्ट्रेट और रौली स्मिथ की बात बताकर कहा, 'मुझे अन्तर्मन में तीव्र वेदना अनुभव हो रही है और मस्तिष्क ने काम करना छोड़ दिया है।'

महेन्द्र कुछ देर तक रोहिणी के मुख पर तीव्र विषाद के लक्षण देखता रहा। फिर उठ कर बोला, 'ठीक है! मैं फिर आऊँगा।'

वह कमरे से बाहर निकला ही था कि रौली और बलूजा साहब की माँ बच्चे को कपड़े में लपेटे हुए लेकर वहां आ पहंची। वह उनके साथ ही लौट आया। रोहिणी बाहर आने वालों की आवाज सुन स्टडी-रूम से उठ लपककर बाहर आयी और ज्वर-ग्रस्त बच्चे को गोदी में ले छाती से लगा, उसके मुख को चूमने लगी।

एकाएक उसे विचार आया कि इसकी औषधि का प्रबन्ध होना चाहिये। वह महेन्द्र से बोली, 'भैया! भाग कर जाओ और वैद्य कालीचरणजी को बुला लाओ। जल्दी करना। बहुत ही कच्चे धागे से जान लटक रही प्रतीत होती है!'

रोहिणी के आँसू परल-परल बहने लगे थे। उसने बैठकघर में ही कमल का खटोला मंगवाया और उस पर बिस्तर लगवा उसे उस पर लिटा दिया। कमल ने परिचित स्पर्श अनुभव किया तो आखें खोल वह रोहिणी के मुख पर देखने लगा। रोहिणी को पहिचान उसने अपना मुख खोला, मानो वह माँ कह रहा हो।

कंचन गयी और उसका दूध बोतल में बना ले आयी। जब जक वैद्य आया, बच्चे ने थोड़ा-सा दूध ले लिया था।

वैद्य को वह परिस्थिति बतायी गई, जिसमें बच्चे ने दूध लेना छोड़ा था। चार-पांच दिन से ज्वर की बात सुन उसने औषधि दूध में घोलकर दी और एक नुस्खा लिख दिया। यह कह दिया, 'इसको दूध में घोलकर एक मात्रा दिन में तीन बार दीजिये। कल समाचार दीजियेगा।'

वैद्य जी अपनी फीस ले चले गये तो सत्यवती ने कहा, 'रोहिणी बेटी! बहुत-बहुत धन्यवाद और मैं समझती हूँ कि इसकी जान बच गयी है।

'माता जी! मैं समझती हूँ कि आप इसकी हत्या के दोष से बच गयी हैं। अब आप चाहें तो वापस जा सकती हैं और यदि यहाँ रहना चाहें तो आपके लिये एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक कमरे में आराम करने का प्रबन्ध हो सकता है।'

'मैं अभी तो यहीं रहुँगी और यदि रात तक इसकी अवस्था संतोषजनक हो गयी तो मैं रात खाने के समय कोठी में लौट जाऊँगी।'

'और रौली! तुम्हारा क्या विचार है?'

'मैं तो कमल के साथ रहूँगी। कुछ आपकी और बच्चे की सेवा कर दिया करूंगी।'

'तब ठीक है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करूँगी कि यह शीघ्र ही पूर्ववत स्वस्थ और सबल हो जाये।'

वैद्य की औषधि लेने के उपरान्त बच्चा सो गया था। उस समय सायंकाल के पाँच बजे थे। बच्चा सोया तो रात के आठ बजे जगा। उसका ज्वर हल्का हो रहा था और वह कई दिन के उपरान्त रोहिणी को पहचान पहली बार मुस्कराया।

:7:

अगले दिन रामनाथ, ए.डी.एम. कोर्ट को जाने से पूर्व डी.एम. के पास जा पहुँचा। यह भेंट डी. एम. के घर पर ही हुई थी। जब रामनाथ ने सब बात बताई तो उसने कहा, 'आज प्रातः ही मझे गवर्नर के पी.ए. का टेलीफोन आया है कि मैं बलूजा के विपरीत पुराने केस खोलने की स्वीकृति न दूँ।'

'तो फिर नये केस का निर्णय कैसे हो सकेगा?' रामनाथ ने पूछा।

'और तीसरी सूरत नहीं हो सकती?'

'तीसरी सूरत यह है कि मैं आपकी आज्ञा को अनुचित कहकर मामला हाईकोर्ट को भेज दूँ।'

डी. एम. इस चुनौती को सुन गम्भीर हो विचार करने लगा। चार-पांच मिनट वह अपनी कुर्सी की पीठ का आश्रय लेकर विचार करता रहा।

एकाएक उसने कहा, 'मैं आपकी चुनौती गवर्नर के पी.ए. को टेलीफोन पर बता रहा हूँ और देखता हूँ कि वह क्या कहता है।'

गवर्नर के पी.ए. से सम्पर्क बनाने में आधा घंटा लगा। सम्पर्क बना तो पी. ए. ने कहा, 'इस बात का उत्तर ग्यारह बजे तक ही दिया जा सकेगा। मुझे बड़े साहब के वकील से राय करनी होगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तो उसे कह दीजिये कि दो ही सूरत हो सकती हैं। या तो मुझे डिसमिस करें, जिससे मैं यह केस हाईकोर्ट के पास न भेज सकूँ या फिर खन्ना साहब को कह दें कि अपनी अर्जी वापस ले लें।'

इसके उपरान्त खुराना वहाँ से कोर्ट में जा पहुंचा। वहाँ खन्ना, बलूजा का वकील, पहले ही उपस्थिति था।

खुराना ने कह दिया, 'मैंने आपकी अर्जी पर अभी विचार नहीं किया। आपको एक घंटा भर प्रतीक्षा करनी होगी।'

खन्ना बार-रूम में चला गया। इसके उपरान्त खन्ना, पुनः कोर्टरूम में नहीं आया। खुराना ने चपरासी भेज उसे बार-रूम से बुलाया, परन्तु खन्ना चपरासी को देख बार-रूम के पिछले दरवाजे से निकल गया।

चपरासी ने उसे खिसकते देख वापस खुराना साहब के पास आकर वहाँ की वस्तुस्थिति बता दी।

खुराना साहब ने खन्ना की अर्जी पर लिख दिया, 'अर्जी करने वाले को हुक्म दिया जाता है कि रोहिणी देवी से बलूजा के विवाह का सर्टिफिकेट हाज़िर किया जाये।'

यह आज्ञा पेशकार को लिखा कर उसने इसे अर्जी करने वाले के पास भेजने के लिये कह दिया।

उस सर्टिफिकेट पर भी बलूजा और रोहिणी के जाली हस्ताक्षर थे। वह रत्नचन्द उपस्थित करना नहीं चाहता था और यह भी बयान देना नहीं चाहता था कि वे हस्ताक्षर उसके अपने हैं।

इन बयानों पर उसका मन्त्री पद छिन जाने की सम्भावना थी। जब उस तारीख को जिस दिन विवाह का सर्टिफिकेट उपस्थित करना था, कोई नहीं आया तो बलूजा की खन्ना साहब द्वारा की गयी अर्जी फाइल कर दी गयी। मुकद्दमा अस्वीकार किया गया।

उसी सायंकाल रामनाथ यह समाचार देने अपनी पत्नी के साथ रोहिणी से मिलने जा पहुंचा। उस दिन मिसेज़ खुराना का भी प्रिंसिपल पद से त्याग-पत्र स्वीकार कर लिया गया था। इस कारण वह भी यह समाचार देने के लिये रोहिणी से मिलने चल पड़ी।

रामनाथ तो कमल के विषय में जानना चाहता था।

जब दोनों वहाँ पहुँचे तो बच्चा अभी खटोले में, घर की बैठक घर में था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह खटोले पर बैठा खिलौने से खेल रहा था। रोहिणी और सत्यवती कमल के पास कुर्सियों पर बैठी थीं। रौली वहाँ नहीं थी।

मिस्टर और मिसेज़ खुराना को आया देख रोहिणी ने उठ उनका सत्कार कर उनको बैठाया।

रोहिणी ने कहा, 'मुझे कॉलेज की दो सहयोगिनियों ने बताया है कि आपका त्याग-पत्र भी स्वीकार कर लिया गया है।'

मिसेज़ खुराना ने बैठते ही कहा, 'हाँ! पिछले दो मास से मस्तिष्क पर कुछ बोझा था। वह हल्का हो गया अनुभव करती हूँ।'

सत्यवती इनकी बातों में रुचि नहीं ले रही थी। उसने मैजिस्ट्रेट साहब का धन्यवाद करते हुए कहा, 'उस दिन जब आप हमारी कोठी में आये थे, तो मुझे बहुत बुरा प्रतीत हुआ था, परन्तु आपकी उस दिन की धमकी ने बहत अच्छा परिणाम उत्पन्न किया है?

इतना कह वह बच्चे की ओर देखने लगी। उसने आगे कहा, 'मैं यह समझ ही नहीं सकती थी कि इतना छोटा-सा बच्चा भी किसी के साथ इतनी प्रबल आसक्ति रख सकता है। यहाँ रोहिणी को देखते ही उसका मुख खिल उठा था। वैद्यजी के आने से पूर्व ही वह दूध भी लेने लगा था।'

रामनाथ ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मानव-मन एक अति रहस्यमय यन्त्र है। इसकी कार्य-सीमा बहुत विस्तृत है। इसके पूर्ण रहस्य को हम जान नहीं सकते।'

एकाएक रामनाथ, बच्चे की नर्स की बात स्मरण कर पूछने लगा, 'और बच्चे की नर्स कहाँ है?'

'वह अस्पताल में बच्चा जनने गयी हुई है। आज प्रातः उसके एक लड़का हुआ है।'

'और वह ठीक है?'

उत्तर सत्यवती ने दिया, 'सामान्य से अच्छी है।'

खुराना यह स्मरण कर कि रोहिणी ने बताया था कि रौली के पेट में बच्चा बलूजा का है, मुस्कराते हुए बोला, 'आपके तो एक दूसरा पोता हो गया है। अब आप इसे रोहिणी को दे दीजिये।'

'दी तो वह वस्तु जाती है जो अपनी हो। यह तो कभी भी अपना प्रतीत नहीं हुआ। पहले दिन जब मैं इसे लेने यहाँ आयी थी। यह मुझे देखते ही रोने लगा था।

'जब रौली की सहायता से मैंने इसे वहां बुलाया तो यह खानापीना छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्याग्रह कर बैठा था। इसे तो रोहिणी ने जबरदस्ती छीन लिया है।'

'ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये कि उसने आपको एक और दे दिया है।'

'मगर वह भी अपना होगा क्या?'

'हाँ ! अपना बनाने के लिये कुछ त्याग, तपस्या और ईश्वर का धन्यवाद करें तो अपना होता है।' मिसेज़ खुराना ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कह दिया।

इस पर सत्यवती परेशानी में मुख देखती रह गयी। वास्तव में वह मन में विचार कर रही थी कि उसके लड़के में ये बातें हैं क्या? क्या वह त्याग, तपस्या और ईश्वर का धन्यवाद कर सकता है?

अब रोहिणी ने कह दिया, 'मैं माताजी से कह रही हूँ कि यह अपने मिनिस्टर पुत्र को समझा-बुझाकर रौली से उसका विवाह करा है।

'मैंने मध्याह्न भोजन के समय रत्नचन्द से यह बात कही थी। वह नाक चढ़ाकर कहने लगा कि रोहिणी के मुझे 'रिजेक्ट' करने से मेरा मन बुझ गया है। उसके उपरान्त किसी से भी विवाह करने को चित्त नहीं करता।

'और यह रौली भी तो गिरजाघर में जाकर विवाह करना चाहती है। यह वह कभी भी स्वीकार नहीं करे।'

'माताजी ! प्रसव के चालीस दिन पश्चात रौली को मेरे पास भेज दीजियेगा। मैं उसकी गिरजाघर जाकर विवाह की शर्त को बदलवा दूँगी। परन्तु पहले जीजाजी तो तैयार हों।'

सत्यवती मुख देखती रह गयी। बात रोहिणी ने ही की, 'मैं यह विश्वास से जानती हूँ कि रौली एक सच्चरित्र औरत है। यह तो जीजाजी ने उसमें कामना उत्पन्न की, तो वह उनके चंगुल में फंस गयी थी।

'उसने मुझे बताया था कि उसके मन में दो बाधाएँ थीं। एक तो उसने मदर मरियम के सामने यह वचन दिया था कि वह जौन के पिता के साथ जीवन-भर 'मैन एण्ड वाईफ' बनकर रहेगी। दूसरी बाधा थी मज़हब की। वह समझती थी कि यह पाप है और परमात्मा इसका दण्ड देगा।

'पहली बाधा के उल्लंघन का उसने अपने मन में एक बहाना ढूँढ लिया। वह यह कि वह सन्तान नहीं होने देगी। यह बाधा प्रकृति ने उल्लंघन करा दी। किसी समय असावधानी के कारण वह बच्चा बना बैठी। दूसरी बाधा का समाधान उसने यह निकाला कि वह छाती पर सलीब रख लेती थी। इस पर भी वह अति सरल-चित्त स्त्री है। मैं समझती हैं कि वह समझाने पर समझ जायेगी और जीजाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पतिव्रता पत्नी बनकर रह सकेगी।'

सत्यवती ने अपनी सूचना बता दी, 'मैंने भी रत्नचन्द से इस विषय पर बात की है। यह तब की बात है, जब अभी रौली गर्भ से थी। मैंने उससे पूछा था कि इस रौली में क्या दोष है? अच्छी सुन्दर, गौरवर्णीय लड़की है? उसका कहना था, अप्राप्त की प्राप्ति के लिये इच्छा उत्पन्न होती है। मैं रोहिणी से ही विवाह करूंगा।'

इस समय कंचन सेवक के हाथ चाय और खाने-पीने का सामान ले आयी। सब चाय पीने लगे तो रोहिणी ने बताया, 'मेरे देवर महेन्द्र ने अपने बड़े भाई का कहीं बीस हजार रुपया पड़ा मेरे नाम करवा दिया था। मैं उस पर अपना अधिकार नहीं समझती थी। इस कारण मैंने उस बीस हजार का ट्रस्ट बनवा दिया है।

'वह रुपया 'ओरियण्टल आर्ट्स प्रेस' में लगा हुआ है। उसमें प्रबन्ध मेरे देवर का है और सारा कार्य स्वयं करने से उसकी आधी आय का मालिक है। शेष आधी आय उस ट्रस्ट की होगी। इस वर्ष के नौ हजार रुपये लाभ मुझे मिला था। उसके साथ अपने पास से एक हजार रुपये मिलाकर मैंने ट्रस्ट की सम्पत्ति तीस हजार कर दी है। यह ट्रस्ट मेरे स्वगर्वासी पति के नाम है।'

'और यह ट्रस्ट करेगा क्या?' मिस्टर खुराना ने पूछ लिया।

'यह अपने धर्मशास्त्र छपवाकर लागत मूल्य पर बेचेगा। मैंने अनुमान लगाया है कि एक सौ पृष्ठ की पुस्तक हम चार आने में बेच सकेंगे।'

'ओह !' सत्यवती के मुख से निकल गया, 'परन्तु तुम्हें क्या मिलेगा?'

'मरने के समय मन को सन्तोष होगा कि मैंने भी जीवन में कुछ उपकारी काम किया है।'

'पर रोहिणी जी!' मिसेज़ खुराना ने पूछ लिया, 'आप अपना समय किस प्रकार व्यतीत करती हैं?'

रोहिणी ने कहा, 'अभी कुछ दिन तो कमल की सेवा में रही हूँ। परन्तु अब यह मेरी माताजी के चार्ज में चला जायेगा। तब मेरी योजना है कि मैं शास्त्र अध्ययन में लग जाना चाहूँगी।

'मेरे संस्कार यह हैं कि प्राचीन भारत के लोग बहुत ज्ञानवान थे। मैं इसी की खोज करना चाहती हूँ। मैं जानना चाहती हूँ कि किस बात में वे उन्नति किये हुए थे और क्या वह वर्तमान की उन्नति से श्रेष्ठ थी?'

'बात तो ठीक है, परन्तु यह करेंगी कैसे?'

'मैं इस दिशा में कुछ काम कर भी चुकी हूँ। अब जब सब प्रकार के कामों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से छुट्टी पा गयी हूँ तो इसमें पूर्ण जीवन लगा देना चाहती हूँ। यदि मरने से पहले मैं कुछ भी खोज कर सकी तो मैं समझती हूँ कि देश और जाति की कुछ सेवा कर ही सकेगी।'

:8:

सत्यवती ने कमल को जब सर्वथा स्वस्थ देखा तो उसने उसका ध्यान छोड़ा और अपने पुत्र के कल्याण की बात विचार करने लगी।

जब रौली का बच्चा छः दिन का हुआ तो उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। वह अपनी माँ के घर जा पहुँची। माँ ने बच्चे को देख प्रसन्नता प्रकट की। साथ ही कह दिया, 'इसके पालन के लिये अब इसके बाप को ढूंढना चाहिये?'

'ज़रा चलने-फिरने योग्य हो जाऊँ तो यह काम भी कर दूँगी।'

माँ इसका अर्थ यह समझी कि लड़की 'हस्बैण्ड हण्टिंग' का अभियान चलायेगी। वह इस विचार से काँप उठी। परन्तु रौली ने माँ को धीरज बँधाया और कह दिया, 'माँ! चिन्ता न करो। जिसने इसको दिया है, वह इसके पालन का भी प्रबन्ध कर देगा।'

'तो ठीक है। उसी से इसके प्रबन्ध के लिये कहो।'

बच्चा चालीस दिन का हुआ तो उसे लेकर रौली रोहिणी से मिलने आयी। रोहिणी खुराना-दम्पती के साथ स्टडी-रूम में बैठी हुई थी।

मिसेज़ खुराना को रोहिणी की योजना पसंद आयी थी और वह भी नित्य दोपहर बाद दो बजे से पांच बजे तक, तीन घंटे रोहिणी के साथ बैठ अध्ययन और विचार-विनिमय करने के लिये आने लगी थी।

दोनों पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के प्रयोग की स्वीकृति ले चुकी थीं और वहाँ से पुस्तकें लाया करती थीं और उनसे अपना स्वाध्याय चलाने लगी थीं।

सायं पाँच बजे मिसेज़ खुराना चली जाती थी। कभी-कभी मिस्टर खुराना कोर्ट से लौटते हुए उसे ले जाते थे।

उस दिन, जिस दिन रौली रोहिणी से मिलने आयी, मिसेज़ खुराना जाने के लिये तैयार बैठी थी। रौली को आये देख वह पुनः बैठ गयी और उसके स्वास्थ्य तथा बच्चे के विषय में पूछने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौली ने सामान्य समाचार बताकर आने का प्रयोजन बता दिया। उसने कहा, 'बहन जी! मैं यह जानने के लिये उत्सुक हूँ कि मेरा निर्वाह कैसे होगा?'

रोहिणी ने कहा, 'मेरा विचार है कि अब तुम बलूजा साहब से उनकी माताजी के सामने मिलो। तुम्हारा कुछ-न-कुछ प्रबन्ध हो जायेगा।'

अब मिसेज़ खुराना ने अपनी जानकारी बतायी। उसने कहा, 'मुझे यह विदित हुआ है कि बलूजा साहब तथा चीफ-मिनिस्टर में मतभेद खड़े हो गये हैं और बलूजा साहब मन्त्री-मण्डल से त्याग-पत्र देना चाहते हैं।'

'मतभेद किस बात में है?' रोहिणी का प्रश्न था।

'भीतर की बात तो मैं जानती नहीं। प्रत्यक्ष में तो उनका कोर्ट में झूठा विवाह रचाने की बात कही गयी है।'

मिसेज़ खुराना ने आगे बताया, 'यह बात दिखावे के लिये कही जा रही है। वास्तव में बात यह है कि मुहम्मद हसन जो मिनिस्टर बनने के लिये डायरेक्टर के पद से त्याग-पत्र देकर चुनाव लड़ने गये थे, चुनाव में सफल नहीं हो सके। उनके स्थान पर मुहम्मद गनी सफल हो गया है। मुहम्मद गनी कुछ पढ़ा-लिखा है नहीं। इस कारण शिक्षामन्त्री नहीं बन सकता। मुसलमानों में अन्य कोई भी इस योग्य नहीं है। गवर्नर बहादुर बलूजा साहब को शिक्षामन्त्री बनाना चाहते हैं और मुसलमान ऐसा नहीं चाहते। इस कारण बलूजा साहब को बदनाम करने के लिये उनकी नकली शादी का मुआमला उठा रहे हैं। बलूजा साहब इस मुआमले के बढ़ने से पहले स्वयं ही त्याग-पत्र देकर बाहर हो जाना चाहते हैं।'

इस पर रौली ने बात को पुनः अपने विषय पर लाकर कह दिया, 'मैं चाहती हूँ कि वकील साहब की माताजी मुझे पुनः अपनी सेवा में ले लें।'

रोहिणी ने सुझाव दे दिया, 'तुम बच्चे को लेकर स्वयं ही उनकी कोठी में चली जाओ। बच्चा तुम्हारी सबसे बड़ी सिफारिश होगी। ऐसे सुन्दर गोल-मटोल बच्चे को देख माताजी प्रसन्न हो जायेंगी।'

रोहिणी की बात रौली के मन लगी।

इस बात को एक मास से ऊपर हो चुका था कि एक दिन पुनः रौली आयी। रोहिणी ने देखा कि वह अत्यन्त प्रसन्न प्रतीत हो रही है। उसने उसका स्वागत करते हुए कहा, 'आओ रौली! कैसे आना हुआ है?'

इस दिन भी मिसेज़ खुराना आयी हुई थी। मिस्टर खुराना उसको घर ले जाने के लिये आये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौली ने नमस्कार करते हुए रोहिणी से कहा, 'मैं आपका धन्यवाद करने आयी हूँ।'

'क्यों, क्या हुआ है?'

'कल हम कोर्ट में जाकर विवाह-बन्धन में बँध रहे हैं। बहिन जी! यह आपके प्रयत्न से ही हुआ है। मैं विधवा से पुनः सधवा होने जा रही हूँ।'

मिसेज़ खुराना ने हँसते हुए कहा, 'पर तुम कभी विधवा थीं क्या?'

पहले तो रौली इसका अर्थ नहीं समझी, परन्तु जब उसे समझ में आया तो वह भी हँसने लगी। रोहिणी ने कहा, 'मैं समझती हूँ कि तुम अब ठीक स्थान पर पहुँच गयी हो।'

मिस्टर खुराना हैरान था कि शादियाँ कोर्ट में उसके इजलास में रजिस्टर होती हैं और उसे इस शादी की अर्जी की सूचना क्यों नहीं मिली? इस पर भी उसने कुछ कहा नहीं।

रौली ने अपने आने का प्रयोजन बताया, 'मैं आपसे निवेदन करने आयी हूँ कि आप कोर्ट में मेरी ओर से साक्षी के रूप में उपस्थित हों।'

'और तुम्हारी माँ?'

'वह कोर्ट में विवाह के विरुद्ध है।'

'ठीक है, मैं चलूंगी। इन बहिन जी को भी निमन्त्रण दे दो।' रोहिणी ने मिसेज खुराना की ओर संकेत करते हुए कहा। इस पर प्रार्थना के भाव में रौली मिसेज़ खुराना का मुख देखने लगी।

मिसेज़ खुराना ने हँसते हुए कहा, 'हाँ, यदि मुझे निमन्त्रण दोगी तो मैं अवश्य चलूंगी।'

रौली बोली, 'मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। कल ग्यारह बजे का समय निश्चित हुआ है। हमने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट को यह प्रार्थना की है कि यह रस्म ए.डी.एम. के इजलास में न हो। इस कारण डी.एम.के इजलास में ही उपस्थित होना होगा।'

'तभी,' रामनाथ खुराना ने कहा, 'मैं हैरान था कि शादियाँ मेरे इजलास में रजिस्टर होती हैं और मुझे इनकी अर्जी का ज्ञान क्यों नहीं?'

'जी!' रौली ने कहा, 'शायद आपके इजलास में जाने में बलूजा साहब को लज्जा लगती होगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नहीं, मैं समझता हूँ कि बलूजा साहब डर रहे होंगे कि उनकी पहली अर्जी की जानकारी रखने के कारण मैं इस समय बाधक हो सकता हूँ।'

रौली ने कहा, 'पर उनका कहना है कि जब उनकी कथित बीवी ने यह बयान दे दिया है कि उसकी उनसे शादी ही नहीं हुई तो फिर किसी प्रकार की बाधा नहीं होगी।'

रामनाथ ने कहा, 'उसने ठीक कहा है। तब चोरी-चोरी विवाह करने का कारण लज्जा ही हो सकती है।'

'तब भी ठीक कर रहे हैं।' रौली का कहना था, 'उनको आपके सम्मुख आने में लज्जा लगनी ही चाहिये।'

'और तुम मेरी पत्नी को साक्षी के रूप में ले जाना चाहती हो? तब उनको लज्जा नहीं लगेगी क्या?'

इससे रौली परेशानी अनुभव करने लगी, परन्तु रोहिणी ने बात स्पष्ट कर दी। उसने कहा, 'लज्जा आँखों का विषय है। लोग जिस कार्य को किसी के सम्मुख करने में लज्जा अनुभव करते हैं, उसे आँखों से ओझल होकर करने लगते हैं। परन्तु मुझे विस्मय इस बात पर हो रहा है कि मेरे सामने शादी करने में उन्होंने लज्जा क्यों नहीं मानी?'

मिसेज़ खुराना बोल उठी, 'मैं समझती हूँ कि वह बताना चाहते थे कि वह इतने निर्धन नहीं हैं कि उनको पत्नी मिल ही नहीं सकती। इसी कारण अपनी प्रतिष्ठा तुम्हारे मन में बैठाने के लिये तुम्हें साक्षी मान वहाँ आने में आपत्ति नहीं कर रहे।'

इस पर रौली ने एक अन्य रहस्योद्घाटन कर दिया। उसने कहा, 'मैंने जब उनसे साक्षी के रूप में रोहिणी बहन के विषय में पूछा तो वह गम्भीर हो विचार करने लगे। परन्तु उनकी माताजी, जो मेरे विवाह में रुचि ले रही हैं, बोल उठीं, 'यह उचित ही है। उस अभिमान की पुतली को समझ आना चाहिये कि रूप के अतिरिक्त भी कुछ गुण होते हैं पत्नी में और रौली में वे गुण उससे अधिक हैं।'

रोहिणी ने अपने को वार्तालाप का विषय न बनने देने के लिये पूछ लिया, 'तो माताजी तुम्हारे विवाह में रुचि ले रही हैं?'

'जी! मैं समझती हूँ कि उनके प्रयत्न ने इसमें बहुत सहायता की है और मैं इस पद को प्राप्त कर रही हूँ।'

रोहिणी ने गम्भीर होते हुए कहा, 'माताजी को मेरी नमस्कार कहना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना कि मुझे तुम्हारे तथा जीजाजी के विवाह से किसी प्रकार भी रोष नहीं, वरन मुझे इससे बहुत प्रसन्नता हुई है। मैं कल कचहरी में समय पर पहुँचकर इस संयोग की साक्षी बनना स्वीकार करती हूँ।'

अगले दिन मिसेज खुराना रोहिणी को अपनी मोटर में लेकर डी. एम. के कोर्ट के बाहर जा पहुंची। वहाँ रत्नचन्द बलूजा अपने कुछ मित्रों और माँ के साथ कोर्ट-रूम के बाहर खड़ा था। रौली भी आज नयी और बहुमूल्य हिन्दुस्तानी स्त्रियों के-से वस्त्रों में सजी बलूजा साहब के साथ खड़ी थी।

खुराना और रोहिणी जब पहुंची तो रौली ने बलूजा साहब के वकील मिस्टर खन्ना को कह दिया, 'मेरी ओर के साक्षी आ गये हैं।'

खन्ना रोहिणी को नहीं पहचानता था। न ही उसने कभी मिसेज़ खुराना को देखा था। इससे उसने रौली से कहा, 'इनका परिचय तो करा दीजिये।'

बलूजा समीप खड़ा अन्य मित्रों से बातें कर रहा था। उसने खन्ना के प्रश्न को सुना तो हँस पड़ा और बोला, 'खन्ना साहब! मैं परिचय कराता हूँ।'

बलूजा अपने मित्रों को छोड़ आगे बढ़ रोहिणी और खुराना को आते देख मुस्कराता हुआ हाथ जोड़ नमस्कार कर बोला, 'कल जब रौली ने कहा कि तुमने उसकी ओर से साक्षी बनना स्वीकार कर लिया है तो मैं चकित रह गया। मैं समझ रहा था कि तुम रौली को इनकार कर दोगी।'

'तो आप मेरे विषय में बहुत ही हीन राय रखते हैं। मैं वैसी हूँ नहीं।'

इनके समीप आने पर बलूजा ने रोहिणी का परिचय करा दिया, 'यह श्रीमती रोहिणी देवी, एम. ए. हैं। आप आजकल इतिहास पर शोध-कार्य कर रही हैं और मेरी स्वर्गीय पत्नी की बहन हैं। और इनके साथ हैं मिसेज़ रुक्मिणी खुराना। आप अभी तक सरकारी लड़कियों के कॉलेज की प्रिंसिपल थीं और आप हमारे एक डी. एम. साहब की धर्मपत्नी हैं।'

बलूजा ने अपने रोहिणी के साथ झगड़े की बात नहीं बतायी।

इस समय खन्ना अदालत के कमरे में गया और मैजिस्टेट साहब से पूछकर बाहर खड़े लोगों को बुलाकर भीतर ले गया। भीतर डी. एम. के साथ की कुर्सी पर श्री रामनाथ खुराना, ए. डी. एम. भी बैठा था और वह बलूजा की ओर देख मुस्करा रहा था।

'ब्राईड और ब्राईडग्रूम' को अपने सामने कुर्सियों पर बैठाकर डी.एम. ने कहा, 'नियम से शादी का रजिस्टर ए.डी.एम. के पास रहता है। इस कारण मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको रजिस्टर लेकर यहाँ ही आ जाने के लिये कहा है।'

इसके उपरान्त डी.एम. ने कानून की सम्बन्धित धाराएँ पढ़कर सुनायीं और वर-वधू को शपथ लेने के लिये कह दिया।

शपथ के उपरान्त छपे सर्टिफिकेट के फार्म पर दोनों के नाम और पता तथा उनका कारोबार लिखकर उनके हस्ताक्षर करा लिये गये। इसके उपरान्त दोनों ओर के साक्षियों के हस्ताक्षर हुए और उपस्थितजनों ने बलूजा को बधाईयाँ दीं।

इस पूर्ण कार्यवाई में चार-पांच मिनट से अधिक नहीं लगे। सर्टिफिकेट पेशकार को देकर डी.एम. उठा और बलूजा से हाथ मिला उनको विदा करने लगा।

सब बाहर आये तो सत्यवती ने वहाँ आये सभी उपस्थित जनों को कोठी पर विवाह के भोज के लिये आमन्त्रित कर दिया। उसने बताया कि भोज का समय एक बजे है।

जब रोहिणी और रुक्मिणी खुराना रौली बलूजा को बधाई दे विदा होने लगीं तो सत्यवती ने रोहिणी और खुराना को कहा, 'रोहिणी! भोज में अवश्य आना और कमल को भी लाना।'

'पर माताजी! हिन्दुओं में तो वधू-पक्ष के लोग वर के घर खाने नहीं जाते?'

'पर विवाह हिन्दू रीति-रिवाज से नहीं हुआ।' समीप खड़े बलूजा ने कह दिया, 'और मैं तुम्हें मोहिनी के नाते से तो बुला ही सकता हूँ।'

रोहिणी हँस पड़ी और बोली, 'हाँ, अब ठीक है।'

भोज के पूर्व बलूजा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'कमल को नहीं लायीं?'

'वह अभी इस भोज का महत्त्व नहीं समझता। जब समझने लगेगा तब वह यहाँ आया-जाया करेगा।'

'और रोहिणी! तुम इसका अर्थ समझती हो?' बलूजा का प्रश्न था।

'जी! बिल्कुल समझ रही हूँ। हिन्दुस्तान को मिल रहे स्वराज्य की भाँति ही आपकी अवस्था हो रही है।

'आंशिक स्वराज्य विधुर हिन्दुस्तान को मिल रहा है। पत्नी तो मिली है, परन्तु विदेशीय। मेरा अभिप्राय है विदेशीय शिक्षा-दीक्षा से ओत-प्रोत! देश की श्रीं, ह्रीं और क्लीं को तो विदेशी ले गये हैं। इसी प्रकार जीजाजी का विधुरपन दूर हो रहा है एक ऐंग्लो इण्डियन पत्नी प्राप्त होने से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'इस पर भी आप अब विधुर नहीं रहे।'

रौली मुस्कुराती हुई बोल उठी, 'परन्तु बहन जी! मैं तो आपकी शिष्या बन चुकी हूँ।'

सत्यवती हँसकर बोली, 'रौली के टीचर ने कैसी पत्नी दी है, वह अभी देखना है।'

खन्ना ने हँसते हुए कह दिया, 'कुछ भी हो, बलूजा अब विधुर नहीं रहे।'

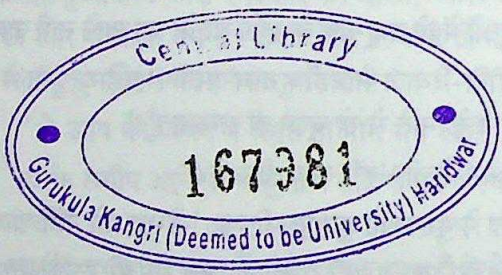

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Signature Date
Access No.
Class No.
Cat No.
Tag etc.
E.A.R.
Recomm. by.
Data Ent. by
Checked

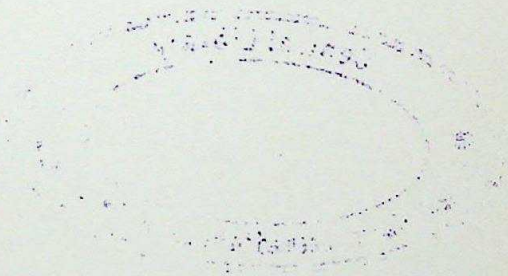

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 आगत संख्या 167981
GUR-V

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
B.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

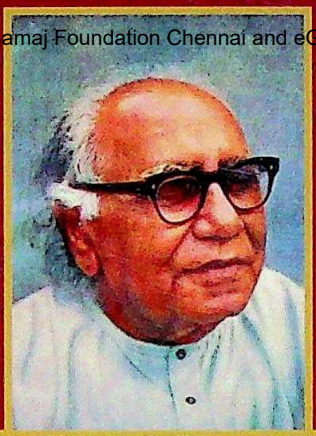

गुरुदत्त (1894-1989) शिक्षा : एम. एस-सी.

8 दिसम्बर, 1894 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में जन्मे, श्री गुरुदत्त हिन्दी साहित्य के एक दैदीप्यमान नक्षत्र थे। प्रथम उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं। विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये। वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है। साहित्य के माध्यम से वेद-ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का उनका प्रयास निस्सन्देह सराहनीय रहा है।

वह उपन्यास-जगत के बेताज बादशाह थे। अपनी अनूठी साधना के बल पर उन्होंने लगभग दो सौ से अधिक उपन्यासों की रचना की और भारतीय संस्कृति का सरल एवं बोधगम्य भाषा में विवेचन किया। उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नही जा सकता।

श्री गुरुदत्त के साहित्य को पढ़कर भारत की कोटि-कोटि जनता ने सम्मान का जीवन जीना सीखा है। उनके सभी उपन्यासों के कथानक अत्यन्त रोचक, भाषा अत्यन्त सरल और उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं, अपितु जन-शिक्षा भी है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के साहित्य-संस्कृति संगठन 'यूनेस्को' के अनुसार श्री गुरुदत्त हिन्दी भाषा के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले लेखक रहे।

सत्यबोध
उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशन

ISBN: 978-93-91411-60-2

9 789391 411602

₹250

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar